* श्रीः *

व्याख्यानदिवाकरः ।

तस्यैवोत्तरार्द्धे

प्रथमांशः ।

विधवाविवाहनिर्णयः ।

कालूरामशास्त्रिणा निर्मितः ।

पं० कामताप्रसाद दीक्षितेन
प्रकाशितः ।

प्रथमवार ३००० } संवत् १९८५ { मूल्यम् १)

नोट—भूमिका पढ़िये, दोनों अंशों के तोषदायक खण्डन करने वाले को १०००) रुपया इनाम ।

प्रकाशक—
पं० कामताप्रसाद दीक्षित
मु० पो० अमरौधा
जि० कानपुर

मुद्रक—
पं० वेदनिधि मिश्र
बी. एन. फाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग वर्क्स
इटावा यू० पी०

श्रीजगद्गुरु श्री ११०८ वल्लभाचार्य्य के कांकरौलीस्थ तृतीयपीठाधीश्वर

आचार्यचरण श्री १०८ व्रजभूषणलालजी महाराज

मरचेंट प्रेस, कानपुर ।

॥ श्रीः ॥

समर्पण ।

श्रीजगद्गुरु श्री ११०८ वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के

कांकरोलीस्थ तृतीय पीठाधीश्वर आचार्यवर्य

श्री १०८ व्रजभूषणलाल जी

एवं

गोस्वामी श्री १०८ विट्ठलनाथ जी महाराज

के

कर कमलों में समर्पित ।

आचार्यचरण !

आप महानुभाव पुष्टि मार्ग के प्रसिद्ध आचार्य हैं। वर्तमान समय में जब कि सनातनधर्म पैरों के नीचे कुचला जा रहा है आप धर्माचार्य इसकी रक्षा करते हैं अतएव यह छोटा सा ग्रन्थ आप श्रीमानों के कर-कमलों में समर्पित करता हूं।

ग्रन्थकर्त्ता ।

श्रीजगद्गुरु श्री ११०८ वल्लभसम्प्रदाय के आचार्यचरण

श्रीगोस्वामी श्री १०८ विट्ठलनाथजी महाराज
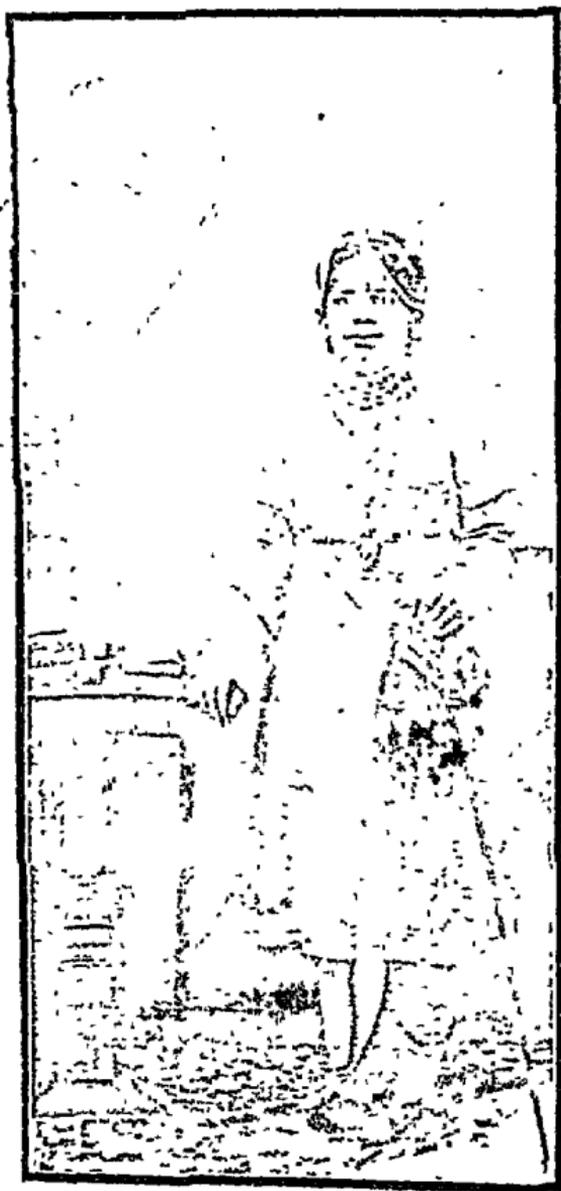
मरचेंट प्रेस, कानपुर।

सहायता।

इस पुस्तक की तैयारी में कुछ धार्मिक लोगों ने हमको सहायता दी है, हम ईश्वर से उनके कल्याण की इच्छा करते हुये सहायकों को धन्यवाद देते हैं, सहायता और सहायकों की नामावली यह है।

२२५) माननीय धर्मवीर श्री १०५ कुंवर क्षत्रपतिसिंह जी रईस कालाकांकर स्टेट

२००) माननीय श्री १०५ पं० रोशनलाल जी प्रधानाध्यापक सनातनधर्म पाठशाला नैरोबी (अफ्रीका)

१५०) माननीय श्री १०५ सेठ पं० हरिशङ्कर जी रईस हरदा

१०१) माननीय धर्मप्राण श्री १०५ बा० रामनन्दनप्रसाद नारायणसिंह जी सेहड़ा नरेश

१०१) पूज्य महन्त श्री १०८ रामदास जी वैष्णव पिंडोरी महंताम

१०१) माननीय श्री १०५ बा० सागरमल जी अग्रवाल रईस खगड़िया

१०१) माननीय श्री १०५ स्वर्गीय पं० श्यामलाल जी शुक्ल ताल्लुकेदार शाहपुर के नाम से उनके धार्मिक पुत्र पं० भगवानदीन जी शुक्ल ताल्लुकेदार ने दिये

५१) माननीय श्री १०५ वीर क्षत्रिय बा० ब्रह्मदेव नारायण सिंह जी तथा श्री १०५ बा० हरवंशनारायणसिंह जी रईस थतिया (दर्भंगा)

२५) पूज्य आचार्य श्री १०८ गोस्वामी चि० बाबा पुरुषोत्तम लाल जी महाराज मथुरा

१०) माननीयश्री १०५ सेठ गणेशराम मुर्लीधरजी रईस सोलापूर

—ग्रन्थकर्त्ता

श्रीकृष्णचरणानुरागी

श्री १०५ सेठ पं. हरिशङ्करजी तालुकेदार

हरदा (मध्यभारत)

मरचेंट प्रेस, कानपुर।

श्रीहरिः।

भूमिका।

असहयोग के समय में अंग्रेजी शिक्षितदल और उनके पिठलग्गू लीडर वन गये। देश की उन्नति के गीत गाकर इन लोगों ने गरीव भारतवासियों के खून से कमाये हुये रुपये को हड़प करना आरम्भ कर दिया, सभी लीडरों ने अपने कार्य व्यापार को छोड़ दिया और गरीव पवलिक के धन का अपहरण कर मौजें उड़ाने लगे, इसी रुपये से लीडरों के मकानों की मरम्मतें हुईं, नवीन मकान वनाये गये, मोटरें खरीद लीं, दुकानें खोल दीं, लेन देन करने लगे, भाव यह है कि ये खूंख्वार लीडर गरीव पवलिकके कई करोड़ रुपया हजम कर के माला माल वन गये। जव नौकरशाहीका दमन चक्र चला तव लीडरीसे इस्तीफा दे, माल समेट घर में वैठ रहे, वास्तव में दूधिया मजनू कभी खूनी मजनू नहीं हो सकता। स्वार्थी लोग कभी भी देश को स्वतंत्र नहीं कर सकते।

जव असहयोग स्थगित हुआ तव इन खद्दरधारी लीडरों ने गरीव हिन्दूओं की वहू वेटियों का अपहरण कर उनको पंजावी सिक्ख और सिंध के मुसलमानों के हाथ वेंचना आरम्भ कर दिया। इस द्रव्य प्राप्ति के लोभ से अव ये धर्माचार्य वन कर धर्म के नाश पर टूट पड़े। धर्म की आड़ में धर्म का शिकार करना यही इनका लक्ष्य होगया, शास्त्रा

नभिज्ञ मूसलचंद सुधारकों ने विधवाविवाह रूपी व्यभिचार को धार्मिक रूप देना आरम्भकिया, विधवाविवाह पर किताबें लिखी जाने लगीं, ये किताबें विद्या के बल पर नहीं लिखी गई वरन् चोरी के बल पर लिखी गई हैं। एक लेखक ने दूसरे लेखक के प्रमाण और अभिप्राय को चुरा कर अपने नाम की पुस्तक बना दी है।

साधारण मनुष्य इन पुस्तकों को पढ़ कर इन चाल बाजों के जालमें फंस कर विधवाविवाह को शास्त्रसम्मत कहने लग गये, इन पुस्तकों से भारतवर्ष में इतना जहर फैल गया कि द्विजातियों में प्रत्येक जाति की महती सभा अपने उत्सव पर विधवाविवाह को प्लेटफार्म पर रखने लगी; इधर धर्म कर्म हीन हिन्दूलीडरों ने मौका देख कर हिन्दू सभा के प्लेटफार्मों से विधवाविवाह पासकर दिया। दूसरों के पीछे दौडने वाली आर्यसमाज स्वामी दयानन्दके विधवाविवाह निषेध को बूट से कुचल विधवाविवाहके राग गाने लगी। देश के कोने २ में यह आवाज फैल गई कि कमजोर हिन्दू विधवा विवाह से जोरदार बनेंगे, देश का उत्थान यदि होगा तो विधवा विवाह से होगा, पराधीन भारतवर्षको स्वराज देने वाली भूतल पर यदि कोई वस्तु है तो वह विधवाविवाह है। सुधारकों की इस बेहूदा आवाजको सुनकर गो घातक मिस्टर गांधी भी मद्रास में विधवाविवाह के गीत गाने लगे, इस दुष्ट आन्दोलन ने हिन्दुओं की शान्ति का चकनाचूर कर प्रत्येक घर में द्वेषाग्नि का प्रज्वलन कर दिया।

साधारण जन समुदाय इस नाशकारी आन्दोलन से घबरा गया और अपनी अपनी जाति में इस आन्दोलन को मिटाने के लिये उपाय सोचने लगा तब तक धर्मवीर अग्रवाल मारवाड़ी वैश्यों ने अग्रवाल पंचायत का उद्घाटन कर विधवा विवाह को रोकने की ठान दी।

इसी अवसर पर भिन्न भिन्न स्थानों से हमारे नाम कई सहस्र पत्र इस आशय के आये कि आप विधवा विवाह के विवेचन पर अपनी लेखनी से कोई बृहद्ग्रन्थ लिखें, पत्रों की आधिक्यता को देख कर हम भी घबरागये अन्त में इस विषय का विवेचन करने का विचार कर लिया।

तैयारी के लिये हमने स्वर्गीय ईश्वरचन्द विद्यासागर निर्मित 'विधवाविवाह' एवं बद्रीदत्त जोशीकृत 'विधवोद्वाह-मीमांसा' तथ गंगाप्रसादउपाध्याय संकलित 'विधवा विवाह मीमाँसा' और गोस्वामी राधाचरण लिखित 'विधवा विवाह विवरण' इसी प्रकार स्वर्गीय लाला नानकचन्द भूतपूर्व मिनिस्टर इन्दोर संपादित 'विधवाविवाह' प्रभृति संग्रह पुस्तकें देखीं; इन पुस्तकों के लेखकों में से बाज बाजको तो हिन्दी भी लिखना नहीं आता तो भी वेद के विवेचन पर टूट पड़े। विद्यासागर, उपाध्याय, जोशीजी प्रभृति लेखक अंग्रेजी के विद्वान् होने पर भी श्रुति-स्मृति के ज्ञान से शून्य हैं। आप लोग योरुपीय आचरण के भूत से जकड़े गये हैं उसी से देश का अभ्युत्थान मान बैठे हैं इस हेतु से आप लोगों को विधवा

विवाह जैसा पाप धर्म दीखता है, शेष कई एक लेखक अंग्रेजी नहीं पढ़े तो भी अंग्रेजी वालों के पिछलग्गू बन कर भारत को योरुप और हिन्दुओं को ईसाई बनाना चाहते हैं, इसी सिद्धि के लिये ये लोग विधवाविवाह की पुस्तकें लिख बैठे।

जितनी भी विधवाविवाह विधायक पुस्तकें हैं उन में वेद और धर्मशास्त्रका न कोई अच्छा विवेचन है और न प्रमाणों के ठीक अर्थ ही लिखे गये हैं। पुराण इतिहासोंकी आख्यायिकाओं के कतिपय खण्डभाग लेकर सर्वथा विधवा विवाह का डिमडिम पीटा गया है।

हां-इन ग्रंथों में यदि कोई बात ध्यान देने के योग्य है तो वह यह है कि न्याय को तिलांजलि दे, प्रमाणों के गले घोंट उस्तादी चालबाजी धोखा पालसी बेईमानी का अवलम्बन कर विधवाविवाह को धर्म बतलाया गया है इस प्रकार के अनर्थ करने वाले लोगों को, हमको मनुष्य कहने भी शर्म आती, है ये लोग स्वतः कोरे चालीस सेरे नास्तिक हैं, लोगों को जाल में फांसने के लिये संसार से धर्म उड़ाने के निमित्त इन्होंने वेद शास्त्र का बनावटी अवलम्बन लिया है, इनकी जालसाजियों का इस पुस्तक में हमने पूर्ण भंडा फोड़ कर दिया है, जो मनुष्य एक बार 'विधवाविवाह निर्णय' को पढ़ लेगा वह कभी किसीकी चाल में न आवेगा। हिन्दुओ! तुम ऐसे ऐसे अत्याचारियों को धर्म निर्णायक मानते हो तुम्हारी इस बुद्धि पर सहस्र बार धिक्कार है।

चैलेंज ।

विधवाविवाह विधायक ग्रन्थों के लेखकों ने चालबाजी, जालसाजी, धोखादेही और बेईमानी को आगे रख जो संसार में विधवाविवाहका प्रचार उठाया है यह अत्याचार है, घृणित है, मनुष्य के लिये चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है। इस समय इनको यही उचित है कि अपनी पोजीशन को साफ करें, संसार को यह दिखला दें कि कालूराम हमको मिथ्या इलजाम लगा रहा है और हमने उपरोक्त अत्याचारोंका आश्रय नहीं लिया, इसके सबूत में हमारे बनाये 'विधवाविवाह निर्णय' नामक ग्रन्थ का खण्डन करदेना ही पर्याप्त हो सकता है किन्तु हमारा दावा है कि भारत जननी ने एक भी वीर सुधारक ऐसा पैदा नहीं किया जो 'विधवाविवाह निर्णय' का पूर्ण रूप से खण्डन कर सके। आज हम पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० एवं अपने मित्र पं० बद्रीदत्त जी जोशी तथा पं० रामसेवक जी शास्त्री प्रधानाध्यापक कान्य-कुब्ज संस्कृत पाठशाला अनवरगंज कानपुर और बाबूराव विष्णु पराडकर संपादक दैनिक 'आज' प्रभृति समस्त सुधारकों को एक बार नहीं, सहस्र बार चैलेंज देते हैं कि अब तुम स्त्रियोंकी भांति चूडियां पहिन कर घरमें मत घंसो, वीरों की भांति मैदान में कूद कर 'विधवा विवाह निर्णय' का खण्डन करो किन्तु यह कब हो सकता है कि व्यर्थ 'हां हां' करने वाला गीदड़ बहादुरी के काम पर कूद पड़े। सुधारको !

आंख खोलो, हमारी भूमिका को पढ़ो, अपने काले कारनामों के कलंक को धो डालो, नहीं तो चुल्लू भर पानीमें डूब मरो।

इनाम।

हम ऐसा खण्डन नहीं चाहते कि कुछ का कुछ लिख दिया, या कुछ लिखा और कुछ छोड़ा, हम चाहते हैं कि आरंभ से अन्त तक 'विधवाविवाह निर्णय' का यह खण्डन किया जावे जिसको देख कर वेदज्ञ तथा धर्मशास्त्रज्ञाता दंग रह जावें एवं इस प्रकार खण्डन करने वाले को हम बड़ी प्रसन्नता के साथ एक सहस्र रुपयां पारितोषिक देंगे। किन्तु हमारी यह अभिलाषा मन की मन ही में रहेगी, भला धोखाबाज, मूर्खानन्द सुधारक कैसे लेखनी उठा सकेंगे।

निवेदन--

आज हम प्रत्येक धार्मिक मनुष्य से प्रार्थना करते हैं कि तुम्हारे यहां जो भी विधवाविवाह का ठेकेदार बनकर बैठा हो उसके आगे इस पुस्तक को रक्खो और नम्र प्रार्थना करो कि इस पुस्तक का खण्डन आप अवश्य करें, यदि आप नहीं कर सकते तो किसी दूसरे सुधारक से करवावें यदि किसी में भी सामर्थ्य नहीं तो फिर तुम्हारे कैसे मूर्खों का कोई अधिकार नहीं है कि विधवा विवाह के निर्णय में जबान खोलें। यह होटलों का मांस नहीं है जो चट कर जाओगे, यह विलायती शराब नहीं है जो फौरन गले के नीचे उतार लोगे यह हैट नहीं है जो शिर पर धर लोगे यह असहयोग नहीं है जो पबलिक

को धोखे में डाल लोगे, यह धर्म निर्णय है इसके विवेचनमें सुधारकों की नानी मर जाती है—यह सब समझाकर पुस्तक के खण्डन का आग्रह करो देखें क्या फल निकलता है

चेतावनी—

धार्मिक वृन्द! विधवाविवाह इसलिये नहीं चलाया जाता कि श्रुति स्मृतियों में इसका उल्लेख हैं श्रुति-स्मृति का अव लम्ब करके विधवाविवाह का चलाने वाला न कोई पैदा हुआ है न आगे को हो सकता हैं यह तो पापी पेटके भरने के लिये सुधारकों ने रोजगार निकाला है विधवा विवाह के गीत गा कर गरीब हिन्दुओं की वहू बेटियों को बेच खाने वाले अत्याचारी सुधारकों से तुम कोशों दूर रहो बस इसी में आनन्द कन्द प्रभु कृष्णचन्द्र जी आपका कल्याण करेंगे।

ग्रन्थकर्ता—

वैदिक विवाह की उत्कर्षता—

१ मंगलाचरण १
२ प्राचीन अर्वाचीन सभ्यताओं का संघर्ष २
३ पति पत्नी का कच्चा जोड़ ३
४ वर वधू का पक्का जोड़ ६
५ विवाहमें धर्मद्योतक कृत्य १०
६ स्त्रीशुद्धि से लाभ १३
७ पाश्चात्य शिक्षा का सूत्रपात १६
८ लार्ड मेकाले की सूझ २०
९ अंग्रेजी शिक्षा से नास्तिकता २०

वेदोद्घोष—

१० यजुर्वेद का "इयंनारी,, मंत्र २२
११ मंत्रार्थ विवेचन २२
१२ 'इयंनारी, मंत्र का सायणभाष्य और उसका भाषा २३
१३ यजुर्वेद का 'उदीर्ष्वनारी, मंत्र २४
१४ 'उदीर्ष्व नारी' मंत्र के अर्थका विवेचन २५
१५ 'उदीर्ष्वनारी, मंत्रका सायण भाष्य और उसका भाषा २५
१६ ऋग्वेदका 'उदीर्ष्वनारी, मंत्र २६
१७ 'उदीर्ष्वनारी, मंत्र के अर्थ का विवेचन २७
१८ 'उदीर्ष्व नारी, मंत्र का सायणभाष्य और उसका भाषा २७

श्रीभूमिहार-ब्राह्मणवंश-भूषण-धर्मप्राण

श्री १०५ रामनन्दनप्रसादनारायणसिंहजी

सेहड़ा-नरेश।

—मरचेंट प्रेस, कानपुर।

१६ अथर्ववेद का 'इयंनानरी' मंत्र २८
२० 'इयंनारी' मंत्र के अर्थका विवेचन २८
२१ 'इयनारी, मंत्र पर सायणभाष्य और उसका भाषा ... २८
२२ अथर्ववेद का 'उदीर्ष्वनारी' मंत्र ३०
२३ 'उदीर्ष्व नारी' मंत्र के अर्थका विवेचन ३०
२४ 'उदीर्ष्वनारी' मंत्र का सायणभाष्य और उसका भाषा ... ३०
२५ 'इयंनारी' मंत्र में कहे सहगमन की पुष्टिमें धर्मशास्त्रों केप्रमाण ३२
२६ 'उदीर्ष्वनारी' मंत्रमें कहे ब्रह्मचर्यकी पुष्टिमें धर्मशास्त्रोंके प्रमाण ३२
२७ स्त्री के सहगमन और ब्रह्म चर्य पर श्रुतिस्मृति की ऐक्यता ... ३४
२८ धर्मकर्म का स्वाहा ३४

विधवाविवाह के ठेकेदारों की उस्तादी—

२९ विधवा विवाह चलाने के लिये 'इयंनारी, और उदीर्ष्व नारी मंत्र पर प्रथम चालाकी ३६
३० एवं द्वितीय चालाकी ३७
३१ तृतीय चालाकी ३८
३२ चतुर्थ चालाकी ३८
३३ पंचम चालाकी ३९
३४ षष्ठ चालाकी ३९
३५ सप्तम चालाकी ३९
३६ अष्टमचालाकी ४०
३७ नवम चालाकी ४३

३८ दशम चालाकी······ ··· ··· ··· ···४४
३९ एकादश चालाकी··· ··· ··· ··· ···४७
४० 'दिधिषोः, पद पर विवेचन··· ··· ··· ···४८
४१ इसके अर्थ पर नास्तिकों की खैंचातानी··· ··· ···४९
४२ नास्तिकों के कपट जाल का भंडाफोड़··· ··· ···५०
४३ नीचों के द्वारा घृणित विवाह का आविष्कार ··· ···५३
४४ चालबाजी से घृणितविवाह की लीपापोती ·· ··· ···५७
४५ उपाध्यायजी का सुफेद झूंठ··· ··· ··· ···५८
४६ विधवाविवाह और दयानन्द के चलाये नियोगमें भेद··· ···५९
४७ दयानन्द कृत विधवाविवाह का निषेध······ ··· ···६०
४८ उपाध्याय जी की झूठी गप्पों पर एक दृष्टान्त··· ··· ···६३
४९ पातिव्रत धर्म पालन में पतिव्रता का दृष्टान्त ··· ··· ···६५

इति प्रथम व्याख्यानम्

विधवाविवाह का जाल—

५० मंगलाचरण··· ··· ··· ··· ··· ···६८
५१ स्वरूप रक्षा में दृष्टान्त··· ··· ··· ··· ···६८
५२ ऋग्वेदका 'कुहस्विद्दोषा' मंत्र और इसमें विधवा विवाह की बू···७२
५३ 'कुहस्विद्दोषा' मंत्र के अर्थ पर विवेचन ··· ··· ···७३
५४ देवर किसको कहते हैं इसका निर्णय ··· ··· ···७६
५५ देवर भौजाई का शास्त्रोक्त धर्म··· ··· ··· ···७६
५६ नास्तिकों द्वारा संसार को अन्धा बनाये जाने में दृष्टान्त ···८३
५७ अथर्ववेद का 'अदेवृघ्न्यपतिघ्नी' मंत्र··· ··· ··· ···८५
५८ 'अदेवृघ्न्यपतिघ्नी' मंत्र के अर्थ का विवेचन ··· ··· ···८५
५९ अघोरचक्षुः मंत्र के अर्थ का विवेचन ··· ··· ··· ···८७

६० 'उत्यत्पतयः' अथर्ववेद के मन्त्र में एकस्त्री के दश पति ···८८
६१ 'उतयत्पतयः' मंत्र के अर्थ का विवेचन··· ··· ···८६
६२ दश देवताओं का वर्णन··· ··· ··· ···६६
६३ पतिव्रता गान्धारी का दृष्टान्त ··· ··· ···६६

इति द्वितीय व्याख्यानम्

वेद विवेचन—

६४ मंगलाचरन··· ··· ··· ··· ··· ···१०६
६५ ध्येय पदार्थ के विस्मरण से हानि······ ··· ···१०७
६६ पतन पर पतन··· ··· ··· ··· ···११०
६७ ऋग्वेद का 'इमानारीरविधवाः' मंत्र ··· ··· ···११२
६८ 'इमानारीरविधवाः' मंत्र का सायणभाष्य और उसका भाषा ११२
६६ 'इमानारीरविधवाः' मंत्र के अर्थ का विवेचन··· ···११३
७० 'यापूर्वं पतिंवित्वा' प्रभृति अथर्ववेद के दो मंत्र ···११८
७१ इन दो मंत्रों के अर्थ का विवेचन··· ······ ···११८
७२ जिस पर प्रायश्चित्त है वह विधि नहीं··· ··· ···१२२

वेद में विधवाविवाह का निषेध—

७३ 'यदेकस्मिन्यूपे' श्रुति ··· ······ ··· ···१२६
७४ 'सोमः प्रथमो विविदे का विवेचन······ ·· ···१३१
७५ 'सोमोददद्गन्धर्वाय' मंत्र का अर्थ··· ······ ···१३३
७६ वेद में देवताओं का वर्णन··· ··· ··· ···१३८
७७ 'येनाग्नि' प्रभृति वैवाहिक विधिके मंत्र··· ··· ···१४३

७८ इन मंत्रों के अर्थ ··· ··· ··· ··· ···१४४
७९ इन मंत्रों में विधवा विवाह का निषेध··· ··· ···१४५
८० 'अयंमग्नाम्' मंत्र··· ··· ··· ··· ···१४६
८१ 'अयंमग्नाम्' मंत्र का अर्थ··· ··· ··· ···१४६
८२ 'अयंमग्नाम्' मंत्र में विधवा विवाह का निषेध··· ···१४६

वेद प्रकरण समाप्तम् ।

तर्क निर्णय—

८३ मंगलाचरण··· ·· ··· ··· ··· ···१५३
८४ 'विधवाविवाहके विना व्यभिचार फैलेगा' इस शंका का विवेचन १५८
८५ 'विधवाविवाह न होनेसे भ्रूणहत्या होगी' इस शंकाका निराकरण १६१
८६ 'विधवा विवाह के विना स्त्रियों का अपहरण नष्ट न होगा' इस शंका का चकनाचूर ··· ··· ··· ···१६४
८६ विधवाविवाहके विना हिन्दूजातिकी न्यूनता' इस शंकाकीचटनी १६६
८८ 'स्त्री पुरुषों का तुल्य स्वत्व है' इस शंका का कचूमर··· ···१६७
८९ 'स्त्रियाँ काम का विजय नहीं कर सकतीं' इस शंका का मटियामेट··· ··· ··· ··· ··· ···१७४
९० 'न्यूनावस्था के विवाह होने से विधवाविवाह न रुकेगा' इस शंका का मूलोच्छेद··· ··· ··· ··· ···१७५
९१ 'विधवाविवाह से कोई हानि नहीं' मूर्खों की इस शंका का दूरीकरण ··· ··· ··· ··· ···१७६
९२ विधवाविवाह के प्रचार में चार हेतुओं का वर्णन··· ···१७८
९३ वेद के आगे तर्क की निःसारता··· ··· ···१८८

नष्टेमृते मीमांसा—

९४ मंगलाचरण २०६
९५ स्वार्थ से पाप में प्रवृत्ति २०६
९६ स्मृतियों का वेदानुकूलत्व २०६
९७ वाग्दत्ता, विवाहिता, पुनर्भू, स्वैरिणी स्त्रियों के चार भेद ...२११
९८ वाग्दान का लक्षण २१२
९९ वाग्दत्ता के विवाह की आज्ञा २१३
१०० विवाहिता के विवाह का निषेध २१५
१०१ 'नष्टे मृते' श्लोक २१६
१०२ 'नष्टे मृते' श्लोक के अर्थ का विवेचन २१६
१०३ सुधारकों द्वारा पाराशर स्मृति के महत्त्व का गान २१६
१०४ सुधारकों की दृष्टि में पाराशर स्मृतिकी निःसारता २२१
१०५ 'पतौ' शब्द पर व्याकरण के सूत्रका सर्वथा खण्डन ...२२२
१०६ नष्टेमृते श्लोक में वाग्दत्ता का विवाह २२८
१०७ पाराशर स्मृति में विधवाविवाह का निषेध २३१
१०८ पाराशर स्मृतिमें मनुवाक्यका महत्व २३७

वाग्दत्ता का विवाह

१०९ मंगलाचरण २४१
११० 'अद्भिर्वाचा' प्रभृति वसिष्ठ स्मृति के श्लोक २४२
१११ इनके अर्थ से वाग्दत्ता का पाणिग्रहण २४३
११२ वसिष्ठ स्मृति में विधवा विवाह का निषेध २५०

११३ इसकी पुष्टि में मनुका लेख··· ··· ··· ···२५१
११४ वसिष्ठ स्मृति में अविवाहिता से विवाह करने की आज्ञा···२५४
११५ 'वरयित्वा' इत्यादि कात्यायन के वचन··· ··· ···२५६
११६ इनके अर्थ में वाग्दत्ता का विवाह··· ··· ···२५६
११७ इसके अर्थ की पुष्टि में गृह्यसूत्र के प्रमाण··· ···२६०
११८ याज्ञवल्क्योक्त 'सकृत्प्रदीयते कन्या' श्लोक··· ···२६६
११९ श्लोकार्थ विवेचन··· ··· ··· ··· ···२६६
१२० वाग्दान की व्यवस्था··· ··· ··· ··· ···२७०
१२१ वाग्दत्ता के विवाह पर मनुका फैसला··· ··· ···२७३
१२२ इसकी पुष्टि में अग्नि पुराण का प्रमाण··· ··· ···२७३
१२३ बौधायनोक्त वाग्दत्ता का विवाह··· ··· ··· ···२७५
१२४ वाग्दत्ता के विवाह पर नारदका फैसला··· ··· ···२७५

ॐ प्रथमांश सूची समाप्त ॐ

धर्मवीर कालाकांकर-राजवंशावतंस

श्री १०५ कुंवर क्षत्रपतिसिंहजी
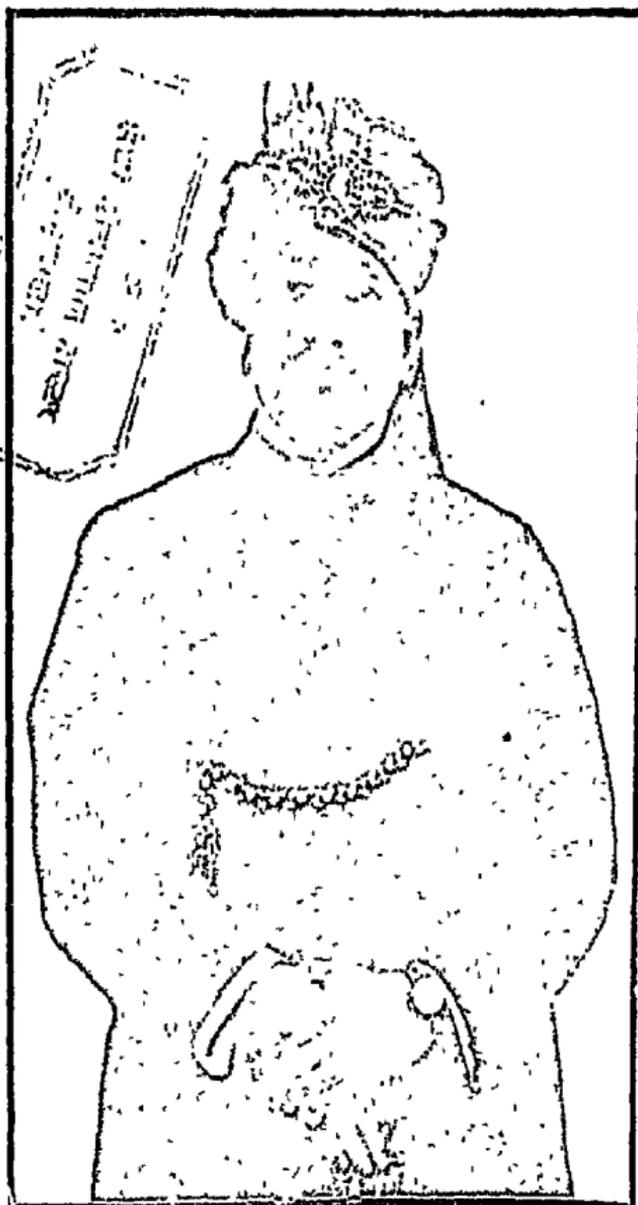
मरचेंट प्रेस, कानपुर।

श्रीगणेशाय नमः ।

व्याख्यानदिवाकर

तस्यैवोत्तरार्द्धे प्रथमांशः ।

विवाहविवाहनिर्णयः ॥

वैदिकविवाह की उत्कर्षता ।

यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा ।
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां-
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ १

जलौघमग्ना सचराचरा धरा,
विपाणकोट्याखिलविश्वमूर्तिना ।
समुद्धृता येन वराहरूपिणा,
स मे स्वयम्भूर्भगवान्प्रसीदताम् ॥

तीर्थ यज्ञ हरि भक्ति अरु-त्याग मनुज के कर्म ।
अविचलपद पावत तिया-रत पातिव्रत धर्म ॥ २

लख सीता के धर्मको-होत हिये अतिहर्ष।
ऐसे पावनचरित पर-गर्वित भारतवर्ष॥ ४॥

षाढ़ के महीने में जब प्रथम पानी बरसता है यदि वह पानी अधिक बरस जावे और बहता हुआ तालावों में प्रवेश कर जाय। जिन तालावों में कुछ पानी पुराना हो और कुछ अधिक पानी यह नूतन जा मिले तो इन दोनों पानियों के मिलने से विष उत्पन्न हो जाता है, आज बाज समय में यह विष इतना भयंकर हो जाता है कि तालाव की मछलियाँ मर जाती हैं।

बस आज कल यही दशा भारतवर्ष की होरही है। भारतवर्षरूपी तड़ाग में प्राचीन वैदिक सिद्धान्तों को पुरातन पानी समझिये और पाश्चात्यशिक्षा से फैलते हुये सिद्धान्तों को नूतन पानी, इन दोनों के संघर्ष से पवित्र भारतवर्षरूपी तड़ाग में विष पैदा हो गया है। प्राचीन शैली के मनुष्य नवीन शिक्षा से शिक्षित मनुष्यों को नास्तिक समझते हैं और न्यूलाइट के लोग प्राचीन सिद्धान्तों को ओल्डफूल समझते हैं, दोनों ही अपने अपने सिद्धान्त को सच्चा समझकर दूसरे के सिद्धान्त को मिथ्या मान बैठे हैं। न्यूलाइट के लोग प्राचीनों की बात नहीं सुनना चाहते और उनके कथन पर विचार करने को भी तैयार नहीं हैं, इन महात्माओं की दृष्टि में पूजा पाठ, धर्म कर्म श्राद्ध-यज्ञ, जप-तप, दया-दान ये सब गपलीला हैं, वर्ण-जाति

देश की अवनति का मुख्य कारण है । इनकी दृष्टि में पुराण पोपों के मन गढ़न्त ढकोसले और गड़रियों के गीत हैं ये समझते हैं कि हमारे पूर्व पुरुषा सर्वथा मूर्ख, कृषक, भेड़-बकरी चराने वाले, तिब्बती अर्धमनुष्य थे हिन्दूजाति में यदि कोई विज्ञानी, तत्ववेत्ता, फिलास्फी का आचार्य, संसार की दृष्टि में मनुष्य कहलाने के योग्य हुआ है तो वह केवल हम हैं । हम भारतवर्ष के धर्म को पैरों के नीचे कुचल इसकी जाति-पाँति को तोड़ उन्नति पर ले जावेंगे । इन्हीं महानुभाव होटल-बोतल प्रेमियों का कथन है कि "विधवाविवाह अवश्य होना चाहिये जब कि मुसलमान-ईसाई, यहूदी पारसी आदि समस्त जातियों में विधवाविवाह होता है तब हिन्दू कौम में क्यों न हो ?"

वास्तव में इन्होंने वैदिकविवाह की फिलास्फी और वैदिक विवाह के जोड़ को नहीं समझा-यही कारण है कि ये विधवा-विवाह होने की सम्मति देते हैं, यदि इनको वैदिक विवाह के जोड़ का परिज्ञान हो जाता-तो ये फिर कभी भी विधवाविवाह की आवाज न उठाते, किन्तु ये जोड़ के ज्ञान से अनभिज्ञ हैं इसी कारण से विधवाविवाह के प्रचार में जान तोड़ परिश्रम कर रहे हैं ।

कच्चा—जोड़

हम यह दावे के साथ कहेंगे कि अन्यजातियों में जो पति पत्नी का जोड़ मिलाया जाता है वह जोड़ कच्चा रहजाता है और कच्चा जोड़ खुल जाया करता है । जोड़ के ऊपर आजकल

एक हिश्टचट्टा रोग चलगया है, आप ने देखा होगा कि एक बाबू अपने मित्रके नाम चिट्ठी लिख उसको साढ़े लिफाफे में रख बन्दकर डाकखाने जाता है और पोस्टमाष्टर से एक आने का टिकट मांगता है। जब ये महात्मा टिकट पाजाते हैं तो उस टिकट को अंगुली पर रख सरकारी गोंददानी से गीला कर देते हैं, इनको इस बात की परवाह नहीं है कि टिकट के नीचे गोंद लगा है या मुर्गे के अण्डे की चिकनाहट है यह कुछ फिक्र नहीं फिक्र केवल जीभ से चाट कर टिकट को गीला करने की है। जब वह थूक के लगने से टिकट गीला हो जाता है तब ये बाबू साहब उस टिकट को लिफाफे पर बड़ी जोर से चस्पां करते हैं-इनको फिक्र है कि कहीं टिकट का जोड़ कच्चा न रह जावे नहीं तो टिकट छूट जायगा और चिट्ठी बैरंग हो जावेगी।

सच पूछिये तो कच्चे जोड़ से कुछ भी काम नहीं चलता। जब तक तार के साथ में तार का जोड़ पक्का न लगेगा खबरों का काम नहीं चल सकेगा-जोड़ का लगना और न लगना बराबर है किन्तु जिस समय तार का जोड़ पक्का लग जावेगा फिर क्या है फौरन गटगट्ट की आवाज देगा।

संसार की समस्त जातियां प्रत्येक जोड़ को मजबूती से लगाती हैं किन्तु पति पत्नी का जोड़ कच्चा ही रख देती हैं। किसी जाति में अपने धर्म के आफीसर के यहाँ रिपोर्ट लिखवाकर कुछ आदमियों को इकट्ठा करते हैं उनके समक्ष वर कन्याको माला पहिना देता है और कन्या वरको माला पहिना देती है, दोनों ने परस्पर हाथ मिलाया, बैठे हुये लोगों

ने ताली पीटदीं–बस विवाह होगया। कैसा अच्छा विवाह है "पुवा न पापड़ी पटाक वह आपड़ी" तथा किसी जाति में कौम के कुछ मनुष्य इकट्ठे होगये और लड़के ने कुछ रुपये या कुछ जायदाद दुलहिन को दे दी. दुलहिन ने कहा मैं तुझे कबूल करती हूँ दुलहा ने कहा मैं तुझे कबूल करता हूं–बस विवाह होगया "हर्रा लगा न फटकरी रंग चोखा आया"।

इस प्रकार के विवाह करके जो जोड़ मिलाये जाते हैं वास्तव में वे जोड़ कच्चे हैं और खुल जाया करते हैं तब ही तो दूसरी जातियों में यह रिवाज है कि स्त्री जब चाहे दुलहा को छोड़ दे और वर जब चाहे स्त्री को छोड़ दे।

सन् १९१० में अमेरिका में एक स्त्री ने अपने पति को नोटिस दिया कि मैंने आज से आपको छोड़ दिया। उस पति ने अदालत में दावा किया, अदालत ने स्त्री को तलब किया और पूछा तुम अपने पति को क्यों छोड़ती हो? स्त्री ने कहा कि मेरा पति ड्राइवर है वह कोयले का काम करता है मुझको इसके हाथ से पत्थर के कोयले की बू आती है इस बू से मेरी सेहत बिगड़ती है बाज बाज समय सेहत बिगड़ कर मृत्यु तक की सम्भावना हो जाती है–इस कारण से मैंने अपने पति को छोड़ दिया। अदालत ने फैसला दिया कि पति के छोड़ने की वजह माकूल है अतएव अदालत हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

इस स्त्री ने जो पति को छोड़ दिया उसके छोड़ने में पत्थर का कोयला कारण नहीं, हाथ की बू भी कारण नहीं, कारण

है तो केवल यह है कि जोड़ कच्चा मिला था-खुल गया।

सनातनधर्म में इस प्रकार से न तो स्त्री पतिको छोड़ सकती है और न पति स्त्री को छोड़ सकता है। स्त्री के लिये तो शास्त्रों ने यहाँ तक लिखा है कि-

भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां-परो धर्मो ह्यमायया।
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः-प्रजानां चानुपोषणम्॥
दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो-जड़ो रोग्यधनोऽपिवा।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो-लोकेप्सुभिरपातकी॥

श्रीमद्भा० स्कं० १०

निष्कपट होकर पति और उसके माता पिता की सेवा करना तथा प्रजा का पालन करना—यह स्त्रियों का धर्म है। पति दुष्टस्वभाव हो, ऐश्वर्यहीन हो, वृद्ध हो, मूर्ख हो, रोगी निर्धन कैसा भी पति हो, स्त्री अपने पतिको तब तक नहीं छोड़ सकती जब तक कि वह पातकी न हो जावे।

दूसरे धर्मों में स्त्री बदबू के कारण पतिको छोड़ सकती है परन्तु सनातनधर्म में धनहीन, रोगी, कुष्ठी होने पर भी नहीं छोड़ सकती-इसका कारण केवल यही है कि दूसरे धर्मों में जो जोड़ मिलते हैं वे जोड़ कच्चे हैं और सनातनधर्म में जो वर बधू का जोड़ मिलाया जाता है वह जोड़ पक्का है।

पक्का जोड़।

सनातनधर्म में वर वधू का जोड़ मिलाते हुये भगवान् मनु इस प्रकार लिखते हैं।

हीनजातिस्त्रियं मोहादुद्वहन्तो द्विजातयः ।
कुलान्येव नयन्त्याशु स सन्तानानि शूद्रताम्॥१५॥
मनु॰ अ॰ ३

भगवान् मनु का कथन है कि यदि लड़का ब्राह्मणजातिका है तो कन्या भी ब्राह्मणजाति की होनी चाहिये, यदि लड़का क्षत्रिय का है तो कन्या भी क्षत्रिय की, यदि लड़का वैश्य का है तो कन्या भी वैश्य की—यह प्रथम मेल वर्ण मेल है।

मनु जी लिखते हैं कि जो इस प्रकार के मेलको तोड़ कर मोह से हीन जाति की कन्या से विवाह करता है वह अपनी सन्तान को शूद्र बनाता है यह पहिला जोड़ है।

अथ दूसरा जोड़ सुनिये—

असपिंडा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः ।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने ॥५॥
मनु॰ अ॰ ३

जिस कन्या से विवाह किया जावे वह कन्या माता के सात पीढ़ी की नहो और वर के पिता के गोत्र की न हो। इन दोनों को त्याग कर जो कन्या विवाही जाती है वही द्विजातियों को श्रेयस्कर है।

तीसरा जोड़ शास्त्र ने इस प्रकार लिखा है।

शुद्धां गोत्रकुलादिभिर्गुणयुतां कन्यां वरश्चोद्वहेत्।
वर्णो वश्यभयोनिखेचरगुणां कूटंच नाड़ी क्रमात्॥
मुहूर्तमार्तण्ड।

जिस समय गोत्र, कुल, जाति आदि समस्तगुण मिल जावें तब वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमित्रता, भकूट, नाड़ी, गण ये आठ प्रकार के जोड़ और मिलाने चाहिये। इन जोड़ों के मिलाने से कन्या का वाग्दान (फलदान) होता है। फिर विवाह के समय जो जोड़ मिलाया जाता है वह यह है-

मम व्रते ते हृदयं दधामि,
मम चित्तामनुचित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकमनाजुषस्व।

गृह्य।

वेद मंत्रों द्वारा उत्पन्न अलौकिकशक्ति से स्त्री के अंगों का मेल होता है -ऐसा होने के पश्चात् फिर वर कहता है कि मेरा और तेरा व्रत एक हो, मेरा और तेरा चित्त एक हो, मेरी और तेरी वाणी एक हो। वस आज से स्त्री पुरुषका इस प्रकार जोड मिल जाता है कि दोनों अंगों का मिलकर एक शरीर और दोनों शरीरों का एक संकल्प, एकव्रत, एकवाणी होती है।

यहां पर देखने में दो शरीर हैं परन्तु शास्त्र की दृष्टि में स्त्री वामाङ्ग और पुरुष दक्षिणाङ्ग-दोनों अंगमिलकर एक शरीर होता है-यह तो होगई शास्त्र सिद्धि। लोक में भी विवाह होजाने पर स्त्री के गुण पुरुष में और पुरुष के गुण स्त्री में आजाते हैं। इसको इस प्रकार समझिये। अगर वर है सेठ-तो वह भई सेठानी, और वर हैं पंडित-तो वधू भई पंडितानी, यदि दूल्हा है राजा-तो दुलहिन भई रानी, यदि दूल्हा हैं डिप्टी-तो दुलहिन

भई डिप्टाइन। कहिये तो सही-यह कौनसी यूनिवर्सिटी में परीक्षा पास करने गई थीं जो डिप्टाइन हो गई। या दो चार मुकद्दमे रोज़ तय कर देती हैं जो डिप्टाइन बन बैठी हैं? नहीं, नहीं पति का गुण पत्नी में आगया उस गुण के प्रकट करने वाले ये लौकिक शब्द हैं।

अब आप ही बतलावें कि इतना गहरा जोड़ किसी धर्म में मिलाया जाता है? इस जोड़ का ही प्रताप है कि हिन्दू धर्म में न तो पुरुष स्त्री को छोड़ सकता है और न स्त्री पुरुष को ही छोड़ सकती है। फिर छोड भी कैसे सकती है-यदि छोड़े तो उन्हीं के यहाँ छोड़ सकती है कि जिनके मत में एक मुट्ठी खाक से या बाईं पसली से स्त्री बनी हो? या कि जिनके मत में आसमान से बर्पी हो? यहां तो आधे शरीर से स्त्री बनी है।

द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत्प्रभुः॥

मनु० अ० १

सृष्टिके आरम्भ में अपने शरीरके दो भाग किये, दक्षिणार्ध-अंग से पुरुष हुआ, वामार्ध अंग से स्त्री हुई-दोनों ने मिलकर ही विराट् उत्पन्न किया।

जिनके यहां स्त्री पुरुष का इतना पक्का जोड़ और इतना घनिष्ट सम्बन्ध हो उस धर्म को अन्यधर्मों की तुलना देकर अन्यों की भांति विधवाविवाह करने की सम्मति देने को जो

कमर बांध बैठे हैं उनके लिये हम इतना अवश्य कहेंगे कि वे वैदिकविवाह के गौरव को नहीं समझते।

धर्मद्योतक।

सनातनधर्म में स्त्री को चूड़ियां पहिनाना यह शास्त्र सिद्ध है। आजकल के जैंटिलमैन चूड़ियों का पहिनाना मूर्खता की पराकाष्ठा समझ बैठे हैं, आजकल स्त्रियों का चूड़ी पहिनना बुरा और बूट पहिनना गौरव की पराकाष्ठा समझी जाती है। चूड़ियां इस कारण नहीं पहिनी जातीं कि घर में चाँदी सोने के जेवर की शक्ति नहीं है। चाहे जड़ाऊ सुवर्ण के जेवर से स्त्री का गला और दोनों हाथ भरे हों किन्तु कांच की चार चूड़ियां हाथ में अवश्य पहिननी पड़ेंगी-यह सनातनधर्म है, इसका कोई अभिप्राय है, यह मूर्खता नहीं है-शास्त्र के गंभीर विषय को प्रतिक्षण दर्शनीय बनाया गया है।

जिस समय माता अपनी कन्या को चूड़ियां पहनाती है उस समय यह उपदेश करती है कि पुत्री! ये चूड़ियां बड़ी सावधानी से रखनी होंगी-यदि कहीं जरा भी ठसक लग गई तो फिर तेरी ये चूड़ियां ठण्डी हो जावेंगी। माता का अभिप्राय यह है कि इन चूड़ियों की भाँति तेरा पातिव्रतधर्म बड़ा कोमल है यदि तैंने उसके पालन में सावधानी न रक्खी और तेरा मन भी कहीं अन्यत्र चला गया तो फिर इन चूड़ियों की भांति तेरे धर्म का पतन हो जायगा। पातिव्रतधर्म की रक्षा को चूड़ियों की रक्षा से समानता देकर रक्षणीय समझकर चूड़ी पहिना

कर चूड़ियों के द्वारा रक्षा का उपदेश दिया जाता है।

कंगना खेलना भी सनातनधर्म विधायक विवाह का एक अंग है। जिस समय कन्या वधू बनकर अपने पति के घर आती है वहां कंगना खेला जाता है। एक परात में पानी भर कर उसके आसपास स्त्रियां बैठ जाती हैं, एक तरफ वधू को बिठलाती हैं-दूसरी तरफ वधू के सन्मुख वर को बिठलाया जाता है फिर कन्या वर की तरफ को हाथ करती है, कन्या के हाथ में एक डोरा बंधा है और उसमें गाठें लगीं हैं। कन्या हाथ का इशारा करके वर से कहती है कि इन गाठों को खोल दो वर अपने हाथ को कन्या की तरफ करना है उसके हाथके डोरे में भी गाठें लगी हैं, वह भी इशारे से कहता है कि तू इन गाठों को खोलदे। इस कंगना के खेल को आजकलके जैंटिल-मैन डुकरियां पुराण या बेवकूफी की रश्म के नाम से याद करते हैं किंतु यह खेल बड़ा गहरा अभिप्राय रखता है, यह कंगना का खेल सच्चे खेल का अनुकरण है. इसमें शास्त्रों का गहरा तत्व भरा पड़ा है। कन्या वर की तरफ को हाथ करके कहती है कि भगवन्! स्वामी! देख, मैं जन्म जन्मान्तर के कर्मबन्धनों से जकड़ी हुई हूं और आज तेरी शरण में आई हूं आप इतने पवित्र चरित्र कर्मकाण्डी बनना कि आपके शुभ चरित्र से मेरा कर्मबंधन टूट जाय और मैं मोक्षको चली जाऊं। वर कहता है कि प्राण वल्लभे! जिस प्रकार तू कर्मबंधन से जकड़ी है इसी प्रकार मैं भी अनेक जन्मोंके कर्मबन्धनों में बंधा हुआ हूं, तू

इतनी सच्ची पतिव्रता रहना कि तेरे पतिव्रत धर्म के प्रभाव से मेरा कर्मबंधन टूटजाय और मैं मोक्ष को चला जाऊं।

जिस धर्म में पतिपत्नी के जोड़े का अभिप्राय संसारबंधन टूटना ही माना गया हो फिर उसमें विधवाविवाह की आवाज़ उठाना या तो मूर्खता की पराकाष्ठा है या कामदेव की वृद्धि से मनुष्य पशु बन गये हैं--इन दो बातों को छोड़कर तीसरी बात अनुमान में आ नहीं सकती।

विवाह में अरुन्धती नामक तारे का दर्शन कराया जाता है जिसका अभिप्राय यह है कि अरुन्धती एक पतीत्व के प्रभाव से सप्तर्षियों के मण्डल में स्थान पागई--अतएव कन्ये! तू एक पतीत्व धर्म का पालन करना। विवाह विधि में ध्रुवतारे के भी दर्शन कराये जाते हैं। जिसका अभिप्राय यही है कि ऐसे ऐसे उच्च स्थान उन्हीं वीरों को मिलते हैं जिनकी माताएं पतिव्रत धर्मका पालन करती हैं।

हमें शोक है कि किताबों की अलमारियां उथल देने वाले, अपने को गम्भीर विद्वान् मानने वाले विवाह की फिलास्फी को तनक भी नहीं समझते, धन्य है भारत की रमणियो! तुमको, तुमने हिन्दूविवाह के तत्व को समझा है। वरके तरफ की स्त्रियां विवाह में रामचन्द्र के गीत गारही हैं और कन्या पक्ष की स्त्रियां सीता के विवाह के गीत गा रही हैं, पिता कन्या के दान करने का संकल्प बोल रहा है कि "इमां कन्यां सालंकारां लक्ष्मीस्वरूपिणीं विष्णुस्वरूपिणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे"। इस संकल्प में जो यहाँ पर कन्या का दान हुआ है

वह विष्णु रूपधारी वर को हुआ है, यह विष्णु की दुलहिन बनी है अतएव इसवर को छोड़ कर अन्यों के लिये यह माता है तभी तो नीति कहती है कि "मातृवत्परदारेषु" दूसरे की स्त्रियों को माता समझो, यह संसार में एक की पत्नी है और सबकी माता। जब तक पति जियेगा--यह पति को ईश्वर मानेगी और जब पति मर जायेगा तब यह ईश्वर को पति मानेगी। ऐसा कौन सा अधर्मी मनुष्य होगा कि जो संसार की जननी, ईश्वर की पत्नी अपनी माता के साथ विवाह करने के लिये उद्यत हो जावे। सच बात तो यह है कि आज मनुष्य काम के पंजे में पड़ गये हैं, धर्म को तिलांजलि दे चुके हैं, आज विवाह करने के लिये माता के साथ भी तैयार हैं।

कलिकाल बिहाल किये मनुजा।
नहिं माने कोई अनुजा तनुजा॥

क्षेत्रशुद्धि।

खेतशुद्ध और पवित्र रहने पर यदि उसमें कमजोर बीज भी बोया जावेगा तो क्षेत्रशक्ति से फल बलिष्ठ होगा और क्षेत्र की अपवित्रता से बोया हुआ बलिष्ठ अन्न भी कमजोर होजाता है-इस उदाहरण को आगे रख हिन्दू शास्त्र ने एक पतीत्वव्रत द्वारा क्षेत्र की पवित्रता रक्खी है, उनका अनुमान है कि यदि किसी समय में हिन्दूलोग धर्मबल और शारीरिकबल से हीन भी हो जावेंगे तो यह योनि की पवित्रता उन्हें पुनः बलिष्ठ बनावेगी। इसके ऊपर एक हिन्दी का कवि कहता है कि-

उठेंगे खाक के तूदों से दस्तगीर अपने।
जमीन हिन्द की उगलेगी शूर बीर अपने॥

इस कवि की कविता का यही अभिप्राय है कि जमीन पवित्र रहेगी तो फिर शूरवीर पैदा होंगे, यदि जमीन की पवित्रता मारी गई तो फिर खाओ, पियो, मजा उड़ाओ, धर्म को संसार से बहाओ, कहने वाले धार्मिक निर्बलता को लेकर आगे आवेंगे।

त्यागी, योगी और धर्मशास्त्र-स्त्री को माया का रूप तथा संसार बंधन देनेवाला कहते हुये स्त्री की निन्दा करते हैं किंतु एक कवि इस निन्दा को पतिव्रतधर्मविहीन नारियों में स्थान देकर एक पतीत्व्रत रखने वाली स्त्रियों की प्रशंसा में लिखता है कि-

नारीनिन्दा मत करो-नारी नर की खान।
नारी से नर होत हैं-ध्रुव प्रह्लाद समान॥

आरंभ से अन्त तक उत्तम रीति से टटोल डालिये-विवाह के प्रत्येक कृत्य में यह दिखलाया गया है कि वैदिकविवाह-कामदेव को जीतने के लिये, मनुष्य को धार्मिक बनाने के लिये, वैदिकगृहस्थ की स्वीकारता से संसार बंधन तोड़कर उत्तम गति प्राप्ति के निमित्त हिंदुओं का विवाह है इसमें इतनी उत्तमता दी है कि प्रत्येककृत्य में यह बात झलकती है कि वैदिक विवाह अन्य जातियों की भाँति कामपूर्ति का हेतु नहीं है।

सृष्टि के आरंभ से हिंदू साम्राज्य की समाप्तितक जितने भी ऋषि,मुनि, आचार्य और पंडित हुये उन सबको यह वैदिकज्ञान रहा कि द्विजातिस्त्रियों के लिये विधवाविवाह घोर पाप है। वे लोग वेदों के अवलोकन से यही जानते रहे कि पति मरजाने पर द्विजाति स्त्री के दो धर्म हैं या तो पति के साथ सती हो जावे या ब्रह्मचर्य धारण करके विधवा के नियम पालन करती हुई संसार में जीवन निर्वाह करे। इस बात को वेद - धर्मशास्त्र तथा पुराणों में वार वार दोहराया गया है। पुस्तकों के अवलोकन और विद्वानों की आज्ञाद्वारा भारतवर्ष के समस्त द्विजातियों का यही बिश्वास रहा कि द्विजातियों में विधवाविवाह निन्दनीय और द्विजातियों को वर्णसंकर बनाने वाला है।

मुसलमान साम्राज्य में जब कि हिन्दुओं पर घोर आपत्तियां थीं-कहीं पर यज्ञोपवीत तोड़े जाते थे और कहीं संस्कृत के अमूल्य ग्रंथ हिस्मामों का पानी गर्म कर रहे थे, किसी किसी स्थान में हिन्दुओं के रक्त से चूना साना जाता था, हिन्दुओं के लिये अत्याचारी मुसलमान एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में कुरान रखते थे-या कुरान का धर्म स्वीकार करो या शिर दे दो। यद्यपि इस प्रकार का दुष्ट व्यवहार करने वाले समस्त बादशाह नहीं थे तो भी कई बार इन आपत्तियों को झेलना पड़ा, ऐसे घोर कष्ट में बादशाहों के द्वारा हिन्दूधर्म छोड़ने पर बड़ी बड़ी सम्पत्तियों के मिलने के लोभ ने हिन्दुओं के धार्मिक विश्वास में कुछ भी न्यूनता

न की-उस समय में भी हिन्दुओं का धार्मिक विश्वास ज्यों का त्यों बना रहा अतएव उस समय के हिदुओं का यही विश्वास रहा कि द्विजातियों में विधवाविवाह का होना द्विजातियों को शूद्र बनाना है। इस अटल विश्वास बने रहने का प्रधान कारण यह था कि हमारी शिक्षापद्धति हमारे हाथ में थी।

पाश्चात्य--शिक्षा

दैवयोग से मुसलमान साम्राज्य का पतन हुआ और भारत योरुप के शासन में चला गया, योरुप ने शिक्षापद्धति की लगाम अपने हाथ में रख कर भारत में इंगलिश पढ़ाना आरंभ किया, इस दुष्ट शिक्षा के फैलते ही भारत ने धार्मिक बन्धनों का तोड़ना आरम्भ कर दिया-पूजा-पाठ, जाति-पांति सब बेवकूफों की मिथ्या कल्पना जान पड़ी। इसी अवसर पर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आर्यसमाज के जन्मदाता दयानन्द जी प्रभृति मनुष्य वर्त्तमान थे, संवत् १९२१ में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने यह आवाज उठाई कि धर्मशास्त्रों में विधवा-विवाह लिखा है—इस विषय की पुष्टि के लिये उन्होंने "विधवाविवाह" नामक ग्रन्थ लिखकर संवत् १९२६ में "श्रीलक्ष्मी प्रिंटिङ्ग वर्क्स" नामक प्रेस में मुद्रित करवाया। विद्यासागर जी का दावा था कि वेदों में तो विधवाविवाह है ही नहीं किन्तु धर्मशास्त्रों में विधवाविवाह की विधि अवश्य है। यह दावा वैसा ही था जैसा कि कुछ दिन पहिले

मिस्टर गांधी का दावा था, गाँधी का कथन था कि मैं पूर्ण सनातनधर्मी हूं, सनातनधर्म के एक २ अक्षर को मानता हूं; मैंने धर्मशास्त्र को खूब देखा और पढ़ा है, 'धर्मशास्त्रों में कहीं पर भी किसी मनुष्य को अस्पृश्य नहीं लिखा गया, अपने इस दावे को अखबारों में लिखा, लेक्चरों में कहा, साथ ही साथ यह भी कहा कि हमारा यह कथन सर्वांश में सत्य है, फिर शास्त्र विरुद्ध अस्पृश्यता संसार में क्यों चल रही है? जब गांधी ने सोलह आने झूंठ बोलने और संसार को धोका देने में कमर बांधली तब इनके आगे "चाण्डालश्वपचानां तु" इत्यादि मनु के दशवें अध्याय के श्लोक और "चाण्डाल दर्शने सद्यः" आदि पाराशर स्मृति के श्लोक रख दिये गये, श्लोकों को पढ़ कर मिस्टर गाँधी कह उठे कि ओ हो! 'धर्मशास्त्रों में तो शैतानी भरी है' जिस प्रकार से संसार को धोका देकर गांधी जातिभेद मिटाना चाहता था उसी प्रकार से धर्मशास्त्र का धोका देकर स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हिन्दूजाति में वर्णसंकरता बढ़ाना चाहते थे किन्तु भारतवर्ष में अंग्रेजी शिक्षा बहुत कम फैली थी इस कारण विद्यासागर की आवाज भारतवर्ष में अपना प्रभाव न डाल सकी। ईश्वरचंद्र विद्यासार के चलाने पर जब विधवा विवाह न चला तब आर्यसमाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द जी ने अपने बनाये ग्रंथों में विधवा विवाह का घोर खण्डन लिख दिया।

स्वर्गीय ईश्वरचंद्र जी का यही दावा था कि धर्मशास्त्रों में

विधवा विवाह विधि है किन्तु वेदों में नहीं? इसी कारण से विद्यासागरजीने अपनी बनाई "विधवा विवाह" में धर्मशास्त्रों से पुष्टि लिखी है वेदों का एक मंत्र भी लिखा। हम पूर्वोक्त पंडित जी के मायाजाल को पबलिक के सामने रखकर किसी व्याख्यान में उसकी धज्जियां उड़ावेंगे।

जब भारतवर्ष के घर घर में पाश्चात्यशिक्षा फैली तब विद्यासागर संसार की दृष्टि में मूर्ख सिद्ध हुआ और संसार को वेदों के मंत्रों में स्पष्टरूप से विधवा विवाह दीखने लग गया। इस विषय में हमारे मित्र पं० बद्रीदत्त जोशी ने 'विधवोद्वाहमीमांसा' नामक पुस्तक लिखकर यह सिद्ध किया कि वेदों में विधवाविवाह की विधि टपा टप भरी है। इनके पश्चात् गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० ने "विधवाविवाह मीमांसा" नामक पुस्तक लिखकर चांद कार्यालय इलाहाबाद से प्रकाशित करवाई इसमें भी यही लिखा है कि वेदों में विधवाविवाह कि विधि मौजूद है; वेदों की अनभिज्ञता से पंडित लोग उसको पाप समझते हैं। इसके पश्चात् अब क्या था अब तो सैकड़ों मनुष्य मैदान में कूद पड़े और जिनके बाप दादाओं ने भी वेद नहीं देखा वे भी नई नई पुस्तकें लिख कर वेदों से विधवाविवाह सिद्ध करने लग गये जैसे एक गीदड़ के बोलने पर सैकड़ों शोर गुल मचा देते हैं विचार कुछ नहीं करते कि यह गीदड़ क्यों बोला? इसी प्रकार आज समस्त सुधारक देशोद्धारक लीडर गीदड़; आर्यसमाजी तथा

धर्म कर्म हीन पाजी; जाति पाँति तोड़क- हिन्दू मुसलिम की नातेदारी जोड़क सभी विधवाविवाह विधवाविवाह चिल्ला उठे- यह है अंग्रेजो शिक्षा का प्रभाव। कहिये भारतवासियों को कैसा उल्लू बनाया? होटलों में भृष्ट भोजन खिलाया? चुटिया का सफाया करवा कर हैट' बूट कोट पहिनाया?। आज अंग्रेजीशिक्षा भारतवर्ष को बन्दर की भाँति नचा रही है नाचते नाचते जब तक गुलाम न बन जावेंगे तब तक डण्डे के जोर से नचावेगी- यह है अंग्रेजीशिक्षा का मजा। चक्खो मेरे प्यारे भारतवासियो! चक्खो। हिन्दू संस्कृति को मार कर ईसाई बनो- तभी तुम्हारी तरक्की होगी।

जिस प्रकार दयानन्द जी भंगियोंको वेद पढ़ाना धर्म बतलाता है, जिस प्रकार डाक्टरगौर हिन्दू मुसलमानोंकी रिश्तेदारियाँ होना धर्म कहता है, जिसप्रकार भाई परमानन्द हिन्दू मुसलमान तथा ईसाइयों की एक जाति बनाना धर्म समझाता है, जिस प्रकार हिन्दू लीडर भंगी- ब्राह्मण को एक बनाने में धार्मिक व्यवस्था देते हैं, जिसप्रकार सुधारक होटलों में शराब मांस उड़ाना धार्मिक तरकी मानते हैं- जिसप्रकार मिस्टर गांधी गोवधको धर्म मानते हैं-उसीप्रकार कुछ धर्म कर्म विहीन हिन्दूजाति और हिन्दू धर्मके परमशत्रु हिन्दूजाति को वर्णसंकर बनाने के निमित्त, विधवाविवाहको श्रुति स्मृति इतिहास प्रतिपादित धार्मिकरूप दे रहे हैं।

धन्य है योरप के दूरदर्शी विद्वान् लार्डमेकाले को जिन्हों

ने हिन्दूजाति को नकली ईसाई बनाने के लिये वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया था। शिक्षापद्धति के फैलने से पूर्व ही लार्डमेकाले ने कह दिया था कि हमने ऐसी शिक्षा पद्धति भारत के आगे रक्खी है कि-

A people which takes no pride in the noble acheivoments of remote ancesters will never acheive any thing worthy to be remembered with pride by remote descendants.

इस अंग्रेजी शिक्षा द्वारा ऐसा एक मनुष्यदल तैयार होगा जो रक्त तथा रंगमें हिन्दुस्तानी होगा किन्तु आचार, व्यवहार, चरित्र, चिन्ता तथा विचार में गैर हिन्दुस्तानी होगा।

लार्डमेकाले की युक्ति सफल हुई और अंग्रेजी शिक्षा ने हिन्दुओं को ही हिन्दूधर्म तथा हिन्दूजाति का शत्रु बना दिया। आज प्रत्येक अंग्रेजी शिक्षित पुरुष हिन्दूसभ्यता का गला काटने के लिये भाँति भाँति के छुरे लिये फिरता है, उन्हीं छुरों में से विधवाविवाह भी एक छुरा है। अंग्रेजी शिक्षित समुदाय चाहता है कि द्विजातियों में विधवाविवाह चलाकर उसके जरिये से द्विजातियों को वर्णसंकर बना सर्वदाके लिये द्विजत्व का सर्वनाश कर दिया जाय, फिर वर्णसंकर रह जावेंगे वे प्रकृति भ्रष्ट होने के कारण अपने आप ही ईसाई बन जावेंगे—यह आन्तरिक अभिप्राय विधवाविवाह चलाने वालों का है किन्तु वे इसको स्पष्टरूप में पबलिक के आगे नहीं रख

सकते, स्पष्ट रखने पर पबलिक उनको हिन्दुजाति का शत्रु समझ इनसे असहयोग कर बैठेगी-अतएव विधवाविवाह वैदिक है' यह कहकर पबलिकको धोकेमें डाल हितैषी और लीडर बन हिन्दुओं को ईसाई बनाने का उद्योग करते हैं, हिन्दुओं को इनके इस गहरे जाल कूट नीति से बचकर हिन्दू सत्ताकी रक्षा करनी चाहिये।

कौन कहता है कि वेदों में विधवाविवाह की विधि है? वेद तो विधवाविवाह के परम शत्रु हैं। आज जो वेदों से विधवाविवाह सिद्ध किया जाता है वह मामूली तरीके से सिद्ध नहीं होता, कहीं पर वेद मंत्रोंके नाक कान काट कचूमर निकाल, नया अर्थ बनाया जाता है, कहींपर वेद मंत्रों को छोड़ टीका को पकड़ा जाना है कहीं पर वेद मंत्रका देवता (वर्णनीय विषय) उड़ाकर अनोखा अर्थ गढ़ा जाता है, कहीं पर वेद को अप्रमाण मान स्मृति का नया अर्थ बना लिया जाता है, कहीं पर इतिहास का चित्र खैंच झगड़ू धोबी की माता के ग्यारह पति सिद्ध कर विधवाविवाह को वैदिक बतलाया जाता है-इस प्रकार के जाल बनानेवाले जालसाजों के पंजे में फंस वेदशास्त्रानभिज्ञ मनुष्य समुदाय आज विधवाविवाह को वेदविधि कहनेको तैयार हो गया है। आज हम भी तैयार हो गये हैं कि विधवाविवाह को वैदिक धर्म कहने वालों की समस्त चालाकियां, चोरियां तथा बेईमानियों को पबलिक के आगे रख दें और पबलिक इनके असली गुणों

से परिचित होकर जांच करें कि वास्तव में ये वेदके मानने वाले हैं या वेदको मिटाने वाले हैं ।

वेदोद्घोष.

श्रुति-स्मृति प्रभृति समस्त ग्रन्थों में स्त्री समूह का मुख्य धर्म एक पतिही कहा गया है । पति मरने पश्चात्‌भी अलौकिक विज्ञान वेद, ज्ञानका भण्डार वेद द्विजाति स्त्रियों के लिये एक पत्नीव्रत धर्मका उपदेश करता हुआ मृतक पतिकी स्त्रीके लिये दो उपाय बतलाता है (१) तो सहगमन पतिके साथ सती होना (२) यदि संसार में जीवित रहे तो फिर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके शेष आयुको पूरी करे । इन दो आज्ञाओं को वेद भगवान् एक साथ लिखते हैं प्रथम आज्ञा का उद्घोष यह है ।

यजुर्वेद

इयं नारी पतिलोकं वृणाना,
निपद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम् ।
विश्वं पुराणमनुपालयन्ती,
तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥

कृष्णयजु० तैत्ति० ६ । १ । १३

इस मंत्र का और इसके आगे जो मंत्र लिखा जावेगा उस का 'संकुसुक ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, पितृमेध देवता और अन्त्येष्टि कर्म में विनियोग है । मंत्र का जो देवता होता है

उसी का वर्णन मंत्रमें होता है तथा मंत्रका जो विनियोग होता है उस कार्य में मंत्र लिया जाता है, यहाँ पर पितृमेध देवता है अतएव मृतक शरीर के फूंकने के प्रसंगका इन मंत्रोंमें वर्णन है, अन्त्येष्टि कर्म में विनियोग है इस कारण ये मंत्र अन्त्येष्टि कर्मको छोड़कर भिन्न अर्थको नहीं कहेंगे। देवता और विनियोग के अनुकूल ही मंत्रों का अर्थ-अर्थ कहलाता है इस से भिन्न विषयका कहने वाला अर्थ मंत्रार्थ न होकर अनर्थकारी बन जाता है। अब देवतानुकूल अर्थ सुनिये—

"हे मर्त्य मनुष्य! पतिलोक को चाहने वाली यह स्त्री प्राचीन धर्मका पालन करती हुई मरे हुये जो आप हैं आप के समीप प्राप्त होती है इसकी जो प्रजा सन्तान और द्रव्य उन की आप रक्षा करें"।

उपरोक्त मंत्र का जो अर्थ हमने किया है हूबहू वही अर्थ सायण लिखते हैं।

सायण भाष्य।

(अथ) अब (अस्य) इस की (भार्याम्) स्त्री को (उपसंवेशयति) समीपमें बिठलाया जाता है (इयं नारीति) "इयंनारी" इस मंत्र से। (हे मर्त्य मनुष्य) हे मर्त्य मनुष्य! (या) जो (नारी) स्त्री (मृतस्य तव भार्या) मरे हुये आप की पत्नी (सा) वह (पतिलोकं वृणाना कामयमाना) पतिलोक की इच्छा रखने वाली (प्रेतं मृतं त्वां) मरे हुये जो आप हैं (उपनिपद्यते समीपे

नितरां प्राप्नोति) आपके समीप में प्राप्त हुई है (कीदृशी) कैसी यह स्त्री है (पुराणम्) प्राचीन (विश्वं अनादिकाल प्रवृत्तं) अनादिकाल से प्रवृत्त (कृत्स्नं स्त्रीधर्मं) पूर्ण स्त्री धर्म को (अनुक्रमेण) क्रम पूर्वक (पालयन्ती) पालन करती हुई (पतिव्रतानां स्त्रीणां) पतिव्रता स्त्रियों का (पत्यासहैव वासः) पति के साथ ही निवास करना (परमो धर्मः) परम धर्म है (तस्यै) उस (धर्म पत्न्यै) धर्म पत्नी को (त्वं) तू (इहलोके) इस लोक में (निवासार्थं) आगे को रहने के लिये (अनुज्ञां) आज्ञा (दत्वा) देकर (प्रजां पूर्व विद्यमानां पुत्रादिकां) पूर्व विद्यमान जो पुत्रादिक हैं (च) और (द्रविणं धनं) धन को (धेहि सम्पादय अनुजानीहि) रक्षा करो ।

नोट—यहां रहने के लिये स्त्री को आज्ञा नहीं है पुत्रों को है ।

मंत्र का जो अर्थ हमने किया था वही सायण ने किया है । हमने सायण के संस्कृत भाष्य के प्रत्येक पद का भाषा किया है, इस भाषा में अपनी तरफ से कुछ भी मिलावट नहीं की । प्रथम मंत्र का भाष्य तथा भाषार्थ आप सुन चुके अब इसके आगेके मंत्रको भी सुननेकी कृपा करें ।

उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं,
गतासुमेतमुपशेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्त्वमेत-
त्पत्युर्जनित्वमभिसंबभूव ॥

कृष्णयजु० तैत्ति० ६।१।१

इस मंत्र का भी पितृमेध देवता और अन्त्येष्टि कर्म में विनियोग है। इसके ऊपर गृह्यसूत्र लिखता है "उत्तरतः पत्नीम् १६। धनुश्च क्षत्रियाय १७। तामुत्थापयेद्देवरः पतिस्थानीयोन्तेवासी जरद्दासो वोदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकमिति १८। कर्ता वृषले जपेत् १९।" मृतक पति के उत्तर की तरफ पत्नी बिठलाई जावे १६। मृतक शरीर क्षत्रिय हो तो उत्तर की तरफ पत्नी न बिठला कर उसके स्थान में धनुष रख दिया जावे १७। फिर उस स्त्री को देवर, पतिस्थानीय अन्तेवासी या कोई बूढ़ा नौकर उठावे और उठाता हुआ "उदीर्ष्व नारी" इस मंत्र को पढ़े १८। क्षत्रियों के यहां स्त्री उठाने के बदले धनुष उठाया जावेगा और "उदीर्ष्व नारी" मंत्र पढ़ा जायगा। यदि उठाने वाला शूद्र हो तो वह स्त्री या धनुष को उठावे और आचार्य एक तरफ बैठकर मंत्र का जप करे। १९।

हे नारी! प्राण रहित पति के पास तू सोती है, इस पति के समीप से उठ. जीता हुआ जो प्राणि समूह पुत्र पौत्रादिक है उसको लक्ष्य में रखकर यहाँ आ, हस्त ग्रहण करने वाले जो तेरे साथ फिर से विवाह करेंगे उस पतिकी जो यह सन्तति है इसके सन्मुख अच्छी तरहसे तू प्राप्त हो।

सायण भाष्य।

(तां प्रतिगतः) उसके पास जाकर-(सव्येपाणावभिपाद्य) सव्य हाथ पकड़ कर (उत्थापयति) उठाता है (उदीर्ष्व)

उदीर्ष्व, इस मंत्र से। (हे नारि) हे स्त्री! (त्वं) तू (इतासुं गत प्राणं) गत प्राण (एतं पतिं) इस पति के (उपशेषे उपेत्य शयनं करोषि) समीप में लेटी है (उदीर्ष्व अस्मात्पति समीपादुत्तिष्ठ) इस पति के समीप से उठ (जीवलोकमभि जीवन्तं प्राणिसमूहमभिलक्ष्य) जीते हुये प्राणि समूह को देख कर (एहि-आगच्छ) आ (त्वं) तू (हस्तग्राभस्य पाणि ग्राहवतः) पाणि ग्रहण करने वाले (दिधिषोःपुनर्विवाहेच्छोः) जो तुझ से फिर विवाह करेगा [पत्युः] उस पतिकी [एत ज्जनित्वं जायात्वं] यह जो सन्तति है [अभिसम्बभूव-आभि मुख्येन सम्यक् प्राप्नुहि] इसके सन्मुख प्राप्त हो।

ऋग्वेद।

'उदीर्ष्व नारी' यह मंत्र कुछ पदों के हेर फेर को लेकर ऋग्वेद में भी आया है। ऋग्वेद में संकुसुक ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, पितृमेध देवता, अन्त्येष्टि कर्म में विनियोग भी ज्यों के त्यों हैं, साथ ही साथ आश्वलायन गृह्य सूत्र के सूत्रचतुष्टय विहित स्त्री या धनुष उठाया जाता है। मंत्र यहहै

उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं,
गतासुमेतमुपशेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं,
पत्युर्जनित्वमभिसंबभूय।

ऋ० अष्ट० ७ अ० ६ व० २७।

हे नारी! प्राणरहित पति के पास तू सोती है इस पति के समीप से उठ, जीता हुआ जो प्राणि समूह पुत्रपौत्रादिक है उसको लक्ष्य में रखकर यहां आ, हस्त ग्रहण कर्ता तुझे गर्भधारण करवाने वाले पतिकी जो यह सन्तति है इसके सन्मुख अच्छी तरह से तू प्राप्त हो।

सायण भाष्य

[हे नारि] हे स्त्री [मृतस्य पत्नि] मृतकवधू! [जीव लोकं जीवानां पुत्रपौत्रादीनां लोकं स्थानं गृहमभिलक्ष्य] जीते हुए पुत्र पौत्रादिकों के घर को दृष्टि में रख कर [उदीर्ष्व अस्मात्स्थानादुत्तिष्ठ] इस स्थान से उठ [गतासुमपक्रान्त प्राणमेतं पतिमुपशेषे तस्य समीपे स्वपिषि] गत प्राण पति के पास तू सोती है [तस्मात्त्वमेह्यागच्छ] इस स्थान से तू यहां आ [यस्मात्त्वं हस्तग्राभस्य पाणिग्राहं कुर्वतः] पाणि ग्रहण करने वाला तथा [दिधिषोः गर्भस्यनिधातुः] गर्भ धारण करवाने वाला [तवास्य पत्युः सम्बन्धादागतमिदं जनित्वं जायात्वमभिलक्ष्य] तुम्हारा जो यह पति है इसके सम्बन्ध से आई हुई जो यह सन्तान है इसको दृष्टि में रक्खो [सम्यभूय संभूतासि-अनुमरणनिश्चयमकार्षी] और तुमने जो मरने का निश्चय किया है [तस्मादागच्छ] इस निश्चय को छोड़कर तू आ।

अथर्ववेद

ये दोनों मंत्र अथर्ववेद में भी आये हैं। दोनों मंत्रों में

ऋषि, देवता, विनियोग ज्यों के त्यों और गृह्य सूत्र के चारों सूत्र उसी प्रकार पत्नी उठाने के कर्तव्य को, वैसा ही कह रहे हैं जैसा यजुर्वेद और ऋग्वेद के मंत्रों पर कहा है। मंत्र ये हैं

इयं नारी पतिलोकं वृणाना,
निपद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती,
तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥ १

अथर्व १८।३।३

हे मर्त्य मनुष्य? पतिलोक को चाहने वाली यह स्त्री प्राचीन धर्म का पालन करती हुई मरे हुये जो आप हैं आपके समीप प्राप्त होती है इसकी जो प्रजा सन्तान और द्रव्य उनकी आप रक्षा करें। १।

सायण भाष्य।

(इयं पुरोवर्तिनी नारी) यह जो आगे खड़ी हुई स्त्री है (पतिलोकम्—पत्युर्लोकः पतिलोकः पत्या अनुष्ठितानां यागदानहोमादीनां फलभूतं स्वर्गादि स्थानं तं पतिलोकम्) पति जिस लोक में गये हैं उसको पतिलोक कहते हैं पति से अनुष्ठित जो याग दान होमादि उनका फलभूत जो स्वर्गादि लोक उस पतिलोक को (वृणाना सहधर्मचारिणीत्वेन सम्भजमाना-एवंभूता स्त्री) साथ रहना ही धर्म होनेसे पतिलोक जानेकी इच्छावाली ऐसी जो यह स्त्री है (हे मर्त्य मरणधर्मन्मनुष्य) हे मृतक

शरीर-मनुष्य (प्रेतम्-प्रकर्षेण ततमस्मात्भूलोकाद्विनिर्गतं त्वा त्वामुपनिघ्नते समीपे नितरां गच्छति] इस भू लोक से गये हुये जो आप हैं या आपके समीप में आती है [अनुमरणार्थं प्राप्तेत्यर्थः] अर्थात् मरने को तैयार हुई है [कस्मा द्धेतोरित्याह] क्यों-इसके ऊपर लिखा है [पुराणम् पुरातन मनादिशिष्टाचारसिद्धं स्मृतिपुराणादिप्रसिद्धंवा] प्राचीन अनादि काल से शिष्टाचार सिद्ध, स्मृति पुराणों में प्रसिद्ध [धर्मम्-सुकृतमनुपालयन्ती आनुपूर्व्येण सम्प्रदायाविच्छेदेन परिपालनमनुपालनं तत् कुर्वती] पवित्र धर्म को सम्प्रदाय के अविच्छेद से पालन करती हुई [स्मृतिपुराणादिप्रसिद्ध धर्मस्यानुमरणजनस्यानुपालनार्जेतोरित्यर्थः] अर्थात् स्मृति पुराणादि में प्रसिद्धधर्म पति के पीछे नारी का मरण उसमें तयार हुई है। [स्मर्यतेहि] स्मृति में कहा है कि [भर्त्तारमुद्धरेन्नारी प्रविष्टा सहपावकम् । व्यालग्राही यथा सर्पं बलादुद्धरते बिलात्] जैसे सर्प का पकड़ने वाला बांबी में बैठे हुये सर्प को अपनी शक्ति से पकड़ कर खैंच लेता है इसी प्रकार पति के साथ अग्नि में जली हुई स्त्री नीच गति को जाते हुये पति को अपनी प्रबल शक्ति से खींच कर उत्तम लोक को ले जाती है [तस्यै तथा विधायै-अनुमरणं कृतवत्यै स्त्रियै त्वम्] इस प्रकार की आप के साथ मरने वाली जो यह स्त्री है [अस्मिन्भूलोके जन्मान्तरं लोकान्तरेपि] इसको इस भूलोक में अथवा जन्मान्तर

लोकान्तर में [प्रजां प्रजायत इति प्रजानां पुत्रपौत्रादि-रूपां द्रविणं धनंच धेहि प्रयच्छ] पुत्र पौत्रादिरूप संतान और धन दीजिये(अनुमरणप्रभावाज्जन्मान्तरेपि स एव तस्याः पतिर्भवतीत्यर्थः) साथ में मरने के कारण से जन्मान्तर में उसका वही पति होता है ।

उदीर्ष्व-नार्यभिजीवलोकं,
गतासुमेतमुपशेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दधिषोस्तवेदं,
पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥ २ ॥
अथर्व० १८ । ३ । ३ ।

हे नारी ! प्राणरहित पतिके पास तू सोती है, इस पति के समीप से उठ, जीता हुआ जो प्राणि समूह पुत्र पौत्रादिक है उसको लक्ष्य में रखकर यहां आ. हस्त ग्रहण करने वाले गर्भ-धारण करवाने वाले पतिकी जो यह सन्तति है इसके सन्मुख अच्छी तरह से तू प्राप्त हो । २ ।

सायण भाष्य ।

(हे नारि धर्मपत्नि) धर्म से विवाही हुई स्त्री (जीवलो-कम्) जीवलोक (जीवानां जीवतां प्राणधारिणां लोकः) जीव जीते हुये प्राणधारियोंका लोक(लोक्यते अनुभूयते जन्मान्तरकृत धर्माधर्मफलम्)जहांपर अनुभव किया जाता है जन्म जन्मान्तर के किये हुये धर्म अधर्मका फल (सुखदुःखात्मकम्) सुख दुःख

रूप (अग्निमजिनि लोकः) उसको लोक कहते हैं (भूलोकः) वह यह भूलोक (तथाविधं जीवलोकमभिलक्ष्य) ऐसे जीवलोक भूलोक को देखकर (उदीर्ष्वांदृगच्छ) तू यहां से उठ (पत्युः सकाशादुत्तिष्ठ) अर्थात् पतिके पास जो तू लेटी है यहांसे उठ (गतासुम्-गता असवः प्राणा यस्मात् स तथोक्तस्तथाविधमेतंगतिम्) चले गये हैं प्राण जिसके ऐसा जो पति (उपशेषे उपेत्य तेन सार्धं शयनं करोषि) उसके पास तू लेटी है (पूर्वमदृष्टार्थमनुगमनमुक्तम्) पहिले मंत्र में अदृष्टार्थ पति के साथ अनुगमन सती होना कहा (इदानीं शास्त्राविरोधिदृष्टफलानुरोधेन तत उत्थानं प्रतिपाद्यते) अब शास्त्रसे अविरोध रखने वाले दृष्टफल के अनुरोध से उसके उत्थान को कहते हैं (दृष्टफलाभावप्रतिपत्यर्थंगतासुमिति विशेषणम्) दृष्ट फल का जो अभाव उसके ज्ञानके लिये 'गतासुं' कहा है अर्थात् पति के मर जाने पर इस लोकमें दृष्ट फल का भी अभाव हो जाता है (उपशयने दृष्टप्रयोजनं नास्तीत्यतः-पहि पत्युः सकाशादागच्छ) लेटनेमें कोई भी प्रयोजन दिखलाई नहीं देता इस कारण पति के पास से उठ आ। (जीवनावस्थायामेव पतिसकाशात्सर्वं ऐहिकं पुत्रादिलक्षणमभिप्राप्तमतोपिहेतो रागच्छेति प्रतिपाद्यते) जीवन अवस्थामें ही पतिसे समस्त ऐहिक पुत्रादिक प्राप्त हो गये इस हेतु से भी तुम आओ (हस्तग्राभस्येति-हस्तं गृह्णातीति हस्तग्राभः पाणिग्रहणकर्ता) तुम्हारा पाणि ग्रहण करने वाले (दधिषोः धारयितुः) गर्भ धारण

करवाने वाले (तत्र पत्युः—इदं जनित्वं-अपत्यादि रूपेण जन्म-त्वम्) तेरे पतिकी पुत्रादि रूपसे जो यह संतानहै (अभि संबभूथ अभिसंप्राप्तासि) इसको तू प्राप्त हो ।

श्रोत्रिय वर्ग ! आप लोगोंने वेदोंकी व्यवस्था सुनली, आप समझ गये होंगे कि द्विजाति विधवा स्त्री के लिये वेदोंने दो ही मार्ग बतलाये हैं एक तो सहगमन सती होना (२) ब्रह्मचर्य व्रतधारण करके संसार में जीवित रहना । जो व्यवस्था कारुणिक भगवान् वेद ने दी है वही व्यवस्था धर्म शास्त्रों ने लिखी है कृपा कर धर्मशास्त्रों की व्यवस्था को भी सुनें ।

धर्मशास्त्र-निर्णय ।

मृते भर्तरि या नारी, ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।
सा मृता लभते स्वर्गं, यथा ते ब्रह्मचारिणः ॥३३॥
तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटी च, यानि लोमानि मानवे ।
तावत्कालं वसेत्स्वर्गे, भर्तारं याऽनुगच्छति ॥३४॥
व्यालग्राही यथा व्यालं, बलादुद्धरते बिलात् ।
एवं स्त्री पतिमुद्धृत्य, तेनैव सह मोदते ॥ ३५ ॥

पाराशर स्मृति अ० ४ ।

पति के मरे पीछे जो स्त्री ब्रह्मचर्यव्रत में स्थित रहती है वह मरकर स्वर्गमें इस प्रकार जाती है जैसे वे ब्रह्मचारी गये ।३३।

जो स्त्री पति के संग अनुगमन (सती होना) करती है वह साढ़े तीन करोड़ मनुष्य के शरीर में जो लोम हैं उतने ही वर्ष तक स्वर्ग में बसती है ॥ ३४ ॥ सर्पको पकड़ने वाला जैसे बिल में से सांप को निकाल लेता है ऐसे ही वह स्त्री भी नरक से अपने पतिका उद्धार करके उस पतिके संगही स्वर्गमें आनन्द भोगती है ॥ ३५ ॥

पतिव्रता निराहारा, शोष्यते प्रोषिते पतौ।
मृतं भर्तारमादाय, ब्राह्मणी वन्हिमाविशेत् ॥ ५२ ॥
जीवन्ती चेत्त्यक्तकेशा, तपसा शोधयेद्वपुः।
सर्वावस्थासु नारीणां, न युक्तं स्यादरक्षणम् ॥५३॥
व्यास स्मृति अ० २ ॥

पतिके परदेश जाने पर पतिव्रता स्त्री स्वल्पाहार खाकर अपने शरीरको सुखा दे और मरे हुये पति को लेकर ब्राह्मणी अग्निमें प्रवेश करे। यहां पर ब्राह्मणी शब्द द्विजाति स्त्रीका उपलक्षण है। ५२। यदि जीवित रहे तो केशों को कटवा दे एवं ब्रह्मचर्य रूप तप से शरीरको शुद्ध करे। किसी अवस्था में भी स्त्री को स्वतंत्रता नहीं है॥ ५३ ॥

मृते भर्तरि या नारी समारोहेद्धुताशनम्।
सा भवेत्तु शुभाचारा, स्वर्गे लोके महीयते ॥१७॥
व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते बिलात्।

तथा सा पतिमुद्धृत्य तेनैव सह मोदते॥ १८ ॥

दक्ष स्मृति अ० ४।

पति के मरने पर जो स्त्री अग्निमें भस्म हुई सती होती है वह शुभ आचरण वाली होती और स्वर्गमें पूजा को प्राप्त होती है। १७। जैसे सर्पों को पकड़ने वाला बिलमें से सांपको बल से निकाल लेता है वैसे ही वह स्त्री भी अधोगतिको प्राप्त हुये अपने पति का उद्धार कर के उसी पतिके संग स्वर्ग में आनन्द भोगती है। १८।

जो व्यवस्था द्विजाति विधवा स्त्रियों के लिये वेदने लिखी थी वही धर्मशास्त्र ने लिखी है, तिल भर फर्क नहीं-इंच भर अन्तर नहीं। जब श्रुति स्मृति विधवा स्त्रियों के लिये सती होना या पतिव्रत धर्मका पालन करते हुये जीवन धारण करना लिखती है तब फिर कोई भी विचार शील मनुष्य अपने मुंहसे यह नहीं कह सकता कि द्विजाति स्त्रियोंके लिये विधवा विवाह श्रुति स्मृति प्रतिपाद्य धर्म है।

धर्म कर्म स्वाहा।

अंगरेजी शिक्षा ने धर्म कर्म का स्वाहा कर डाला। एक तरफ आर्य समाजी भंगियोंको वेद पढ़ाना मानते हैं तो दूसरी तरफ हिन्दू लीडर होटलों में ईसाई मुसलमानों के हाथ का भोजन खाके उन्नति समझ बैठे हैं। एक तरफ भंगी चमार ब्राह्मण क्षत्रियों को हिन्दू सभा एक बना रही है तो दूसरी

तरफ भाई परमानन्द जी जाति पांति तोड़क मंडल खोल बैठे हैं। एक तरफ हिन्दू मुसलमानों का परस्पर में विवाह संबंध करवा कर डाक्टर गौर फूले नहीं समाते तो दूसरी तरफ मिस्टर गांधी गोहत्या को धर्म मानते हैं। एक तरफ मूछें मुड़वा और चुटिया कटवा हैट बूट लगा हिन्दू लीडर बनते हैं तो दूसरी तरफ विधवा विवाह का ठेका ले बैठे हैं हम तो यही कहेंगे कि अंग्रेजी शिक्षित समुदाय अपनी अक्ल को नीलाम कर लार्ड मेकाले को गुरु मान, 'मेकाले वचनं प्रमाणम्' इस वाक्य को अंतःकरण में रख हिन्दूजाति और हिन्दू धर्म को मिटा भारतवर्ष को ईसाई बनाने पर कमर बांध बैठा है। जो हिन्दुजाति वेदों पर प्राण न्योछावर कर देती थी वही हिन्दू जाति आज वेदों को कतल कर वेदों से योरुपीय सिद्धान्त निकाल रही है।

इसी डाइन पश्चिमीय शिक्षा के प्रभाव से उपरोक्त वेद मंत्रों को मार कूट अनेक चाल बाजियाँ कर यह सिद्ध किया जाता है कि वेदों में विधवाविवाह लिखा है। आज हमारे आगे सत्रह पुस्तकें ऐसी आगई हैं कि जिनमें वेदों से विधवाविवाह की सिद्धि दिखलाई गई है किन्तु उनमें चांद में छपी हुई विधवा विवाह मीमांसा और पं० बद्रीदत्त जोशी की बनाई हुई विधवोद्वाहमीमांसा दो बड़ी हैं। इन पुस्तकों में किस अन्याय और बेरहमी के साथ विधवा विवाह को वेदोक्त सिद्ध किया गया है इसका चित्र मैं आज श्रोताओं के आगे रखता हूँ।

उस्तादी।

विधवा विवाह के प्रेमी स्वतः तो सर्वथा ही धर्म और वेद को तिलांजलि दे चुके हैं। ये लोग तो वेद का एक अक्षर भी प्रमाण नहीं मानते। वेदों से विधवा विवाह इस कारण सिद्ध करते हैं कि कुछ हिन्दू वेदों को अपना प्राण समझते हैं। वे विधवा विवाह को वेद से प्रतिपाद्य धर्म समझ कर चालू कर दें इस अभिप्राय से विधवा विवाह को वेद से दिखलाया जाता है। वेद में विधवा विवाह है नहीं और वेद से विधवा विवाह निकालना है। इस कारण इनको उस्तादी पोलसी या चालाकी तथा बेईमानी का आश्रय लेना पड़ता है।

प्रथम चालाकी।

'इयंनारी' और 'उदीर्ष्व नारी' इन मंत्रों का संकुसुक ऋषि त्रिष्टुप् छन्द, पितृमेध देवता और अन्त्येष्टि कर्म में विनियोग है। मंत्रका जो देवता है मंत्र में उसी विषय का वर्णन होता है और जो विनियोग है उस कृत्य में मंत्रका अर्थ होता है। इन मंत्रोंमें मृतक शरीर फूंकने का प्रसंग है और मृतक को श्मसान में ले जाने के लिये उसके साथ पत्नी का सहवास सहगमन तथा पत्नीको उठाना है। अब इनको इन मंत्रोंसे विधवाविवाह सिद्ध करना है इस कारण देवता विनियोग उड़ा दिये। इन दोनों को गुम करने के लिये ऋषि और छन्द भी उड़ाये-इस

उस्तादी से किसी ने एक मंत्र से और किसीने दोनों मंत्रों से विधवाविवाह निकाले, क्या मजा है—

ऋषी और विनियोग उड़ाया, उगा देखना चाह।
इन तीनों का संपट कीन्हा, निकला विधवा ब्याह॥ १॥
सींग कान और पूंछ काट कर, काट पांव यह कैसा।
छील छाल कर हाथी कर दिया, बिना सींगका भैंसा॥ २॥
विषय उड़ाकर अर्थ गढ़ा है, यह पंडितपन चोखा।
नहीं वेदको जनता जाने, सो ऐसो है धोखा॥ ३॥

द्वितीय चालाकी।

"उदीर्ष्व नारी" इस मंत्र पर आश्वलायन गृह्यसूत्र ने चार सूत्र लिखे, ब्राह्मण और वैश्य इन दो जातियों में मृतक के उत्तर की तरफ पत्नी का बैठना तथा क्षत्रिय जातिमें धनुष रखना है और बैठी हुई स्त्रीको वे विधवाविवाह करनेका आर्डर देतेहैं तो क्षत्रिय जाति की स्त्री विधवाविवाह से बच गई। सब जातियों में विधवाविवाह चालू हो जाय इस कारण इन्होंने गृह्यसूत्र को उड़ा दिया इस प्रकार से वैदिक क्रिया का लोप कर विधवा विवाह सिद्ध किया जाता है—क्या मजा है।

इसी मंत्र पर गृह्यसूत्र ने, सूत्र लिखे हैं चार।
उनकी लीपा पोती करके, करते बंटाढार॥ १॥
गृह्यसूत्र को दूर फेंक दो, तब यह काम बनेगा।
नहीं धनुषके साथ कौन नर, विधवा ब्याह करेगा॥ २॥
गृह्यसूत्र जो रहे जगत में, स्त्री का पती न दूजा।
इसको जल्द मिटाओ जगत से, यह लीडरपन सूझा॥३॥

तृतीय चालाकी।

विधवाविवाह के प्रेमी सहगमन और पतिव्रत धर्मपालन विधायक-धर्मशास्त्रोंकी आज्ञाको छिपा देना चाहते हैं, यदि कोई इनको धर्मशास्त्रोंके प्रमाण सुनावे तो ये एक बात नहीं सुनना चाहते पाराशर स्मृतिके 'नष्टे मृते' इसश्लोक को लेकर खूब उछलने कूदते और कहते हैं कि इसमें विधवाविवाह है। पाराशर स्मृतिकी अत्यन्त प्रसंसाकरतेहुये 'नष्टे मृते' इस श्लोकका बनावटीअर्थ लिखकर फूलेनहीं समाते किन्तु जब हम 'नष्टे मृते' के आगे के तीन श्लोक जिनमें सहगमन और ब्रह्मचर्य की आज्ञा है इनके आगे रखते हैं तब ये उन श्लोकों के कथन को सुनना ही नहीं चाहते—कोईभी विचारशील मनुष्य इस प्रकारके निर्णय को निर्णय नहीं कह सकता, इस दशा में तो यही कहना पड़ता है कि इनके मनमें विधवाविवाह बस गया है और विधवा विवाह के बहाने से इनको टके मिलते हैं इसी कारण से वेद शास्त्रों में दियासलाई लगा; संसार की आंखमें धूल झोंक इनको जबर्दस्ती से विधवाविवाह चलाना है।

चतुर्थ चालाकी।

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० एम० ने 'इयंनारी' और 'उदीर्ष्वनारी' इन दोनों मंत्रोंका अपनी तरफ से अर्थ नहीं लिखा; इसका कारण यह है कि हजार बार चालाकियां करने पर भी वेद के अक्षरों से विधवा विवाह नहीं निकल सकता। सायण भाष्य का अर्थ किया है, वहां पर कहीं के पद कहीं

जोड़ कुछ का कुछ अर्थ कर विधवा विवाह का डिम डिम पीटा है यह डिम डिम वेद मंत्रों के पदों से नहीं निकल सकता था इस कारण अर्थ करना छोड़ दिया और सायण भाष्य को प्रमाण मान पदों को तोड़ मरोड़ जबर्दस्ती से विधवा विवाह निकालने का साहस किया।

पंचम चालाकी।

'इयं नारी' और 'उदीर्ष्व नारी' ये दोनों मंत्र एक स्थान में वेद में लिखे हैं, एक स्थान में रहने से विधवाविवाह का अर्थ नहीं देते-इसकारण'विधवाविवाह मीमांसा'में इनको तोड़ फोड़ कर दो स्थानमें रक्खा तब इन मंत्रोंसे विधवाविवाह निकला।

षष्ठ चालाकी।

पं० बद्रीदत्त जी जोशी ने बहुत परिश्रम किया किन्तु "इयंनारी" इस मंत्र से "विधवाविवाह" न निकल सका तब उन्हों ने इस मंत्र को ही "विधवोद्वाह मीमांसा" में न रक्खा और "उदीर्ष्व नारी" इस अकेले मंत्र से ही विधवा विवाह मान लिया।

सप्तम चालाकी।

अथर्ववेद में "इयंनारी" इस मंत्र का जो सायण भाष्य है वह बड़ा विकट है उस भाष्य से कोई भी मनुष्य विधवा विवाह निकाल नहीं सकता यह बात समझकर पं० बद्रीदत्त जी ने सायण भाष्य को सर्वथा ही छोड़ दिया और अपनी

तरफ से मन माना अर्थ बनाकर लिख दिया कि 'सायण भाष्य का यह अर्थ है' जब जोशी जी के अर्थ पर दृष्टि डालते हैं तब हंसी आजाती है और कहना पड़ता है कि—

ऊंट शब्द का अर्थ किया है, माधवने खरबूजा।
जैसे दिनका अर्थ कुल्हाड़ी, ऊधवको यह सूझा ॥ १ ॥

जैसे कोई मनुष्य 'ऊंट' शब्द का अर्थ खरबूजा और दिन शब्दका अर्थ कुल्हाड़ी करदे-बस जोशीजीने ऐसे समस्त शब्दोंके नये २ अर्थ लिख कर इस मंत्र से विधवा विवाह निकाला है, यह वेदों का अर्थ करना है कि वेदों को फांसी पर लटकाना है इसका निर्णय श्रोताओं पर छोड़ता हूँ।

अष्टम चालाकी।

उपाध्याय जी ने 'इयं नारी' इस मंत्रके भाष्य पर दूसरी गवड्डी खेली है। आपने 'इयंनारी' इस अथर्व वेदका सायण भाष्य तो 'विधवाविवाह मीमांसा' में लिखा नहीं किन्तु लिखा कैसे? एक दृष्टि उसपर भी डाललें तो उपाध्यायजी का न्याय मूर्तिधारण करके सामने आजावेगा। भाष्य सुनिये—

सायण लिखते हैं 'इयं पुरोवर्तिनी नारी' उपाध्याय जी लिखते हैं कि 'इयंनारी'। सायण कहते हैं 'पतिलोकम्–पत्युर्लोकः पतिलोकः पत्या अनुष्ठितानां यागदानहोमादीनां फलभूतं स्वर्गादिस्थानं तं पतिलोकम्' उपाध्याय जी कहते हैं कि 'पतिलोकं'। सायण–भाष्यमें बोलते हैं "वृणाना–सहधर्मचारिणीत्वेन संभजमाना-एवं-भूता स्त्री" उपध्याय जी "वृणाना"।

सायण भाष्य में लिखा है " हे मर्त्य मरणधर्मन्मनुष्य प्रेतं प्रकर्षेण गतमस्माद्धलोकाद्विनिर्गतं त्वा त्वामुपनिपद्यते समीपे नितरां गच्छति-अनुमरणार्थं प्राप्नोतीत्यर्थः । कस्माद्धेतोरित्याह पुराणं पुरातनमनादिशिष्टाचारसिद्धं स्मृतिपुराणादिप्रसिद्धं वा धर्मं सुकृतमनुपालयन्ती-आनुपूर्व्येण सम्प्रदायाविच्छेदेन परिपालनमनुपालनं तत कुर्वती स्मृतिपुराणप्रसिद्धधर्मस्यानुमरणजनस्यानुपालनाद्धेतोरित्यर्थः । स्मर्यते हि-भर्त्तारमुद्धरेन्नारी प्रविष्टा सहपावकम् । व्यालग्राही यथा सर्पं बलादुद्धरते विलात्। इति। उपाध्याय जी ने लिख दिया कि "प्रेतमनुमर्त्य उपत्वा निपद्यते पुराणं धर्मं पालयन्ती"। भाष्यकार सायण कहते हैं कि "तस्यै तथाविधायै अनुमरणं कृतवत्यै स्त्रियै सहास्मिन्भूलोके जन्मान्तरे लोकान्तरेपि प्रजायत इति प्रजा तां पुत्रपौत्रादिरूपां द्रविणं धनं च धेहि प्रयच्छ । अनुमरणप्रभावाज्जन्मान्तरेपि स एव तस्याः पतिर्भवतीत्यर्थः । उपाध्यायजी ने लिखा कि "तस्येह प्रजां द्रविणं च धेहि" ।

उपाध्यायजी ने "उदीर्ष्व नारी" इस मंत्र पर सायणभाष्य देकर सिद्ध किया है कि सायण के मत से विधवा विवाह वैदिक है। जब "इयं नारी" मंत्र आया तब उपाध्याय जी ने सायणभाष्य को दूर फेंका और अपने मन से मंत्र का फर्जी अर्थ गढ़ लिया यह क्यों ? सायण के भाष्य में मृतक पति के साथ स्त्री का सती होना साफ साफ लिखा है। वाह ! उपाध्याय जी ! कड़ुवा कड़ुवा थू-मीठा मीठा हड़प्प! यदि

हमारी चलती होती तो हम गवर्नमेंट से अनुरोध करते कि उपाध्याय जी को हाईकोर्ट का जज बनाया जावे क्योंकि इनको इंसाफ खूब आता है। 'उदीर्ष्व नारी'-मंत्र पर जिस सायणभाष्य को लेकर उपाध्याय जी विधवा विवाह सिद्ध करने का पान चबाते हैं उसी सायण के 'इयं नारी' मंत्र पर लिखे हुये भाष्य को वाहियात समझ कर छिपा देते हैं और उसके स्थान में मनमाना अर्थ लिख संसार की आंख में धूल झोंक देते हैं, पूछो उपाध्याय जी से कि इसी का नाम धर्म निर्णय है? यही वेदों का विवेचन है? सच पूछिये तो अंग्रेजी शिक्षा मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती। कोई भी संस्कृतज्ञ लज्जा के भय से इस अनुचित कार्य को नहीं करेगा जो कार्य यहां उपाध्याय जी ने किया है यह अंग्रेजी शिक्षा का फल है जिसके आरंभ में ही 'जी ओ गो' पढ़ाया जाता है, गो माने जाता हूं धर्म कर्म, पाठ-पूजा, जाति-पांति, लज्जा निर्णय सब से जाता हूं

फिर अन्वय भी कैसा' मर्त्यप्रेतं त्वा उपनिपद्यते' इसके स्थान में उपाध्याय जी ने ' प्रेतं-अनु-मर्त्यं उपत्वा निपद्यते' लिख दिया। भाषावाले इसको यों समझें, एक मनुष्य ने अपने किसी मित्र से कहा कि दो घोड़े और सैकड़ों बैल जाते हैं; मित्र साहब इस वाक्य का अन्वय करने लगे, दो का अन्वय लगाया बैलों के साथ और सैकड़ों का अन्वय लगाया घोड़ों के साथ, मित्र साहब अन्वय लगाकर बोले

कि दो बैल और घोड़े सैकड़ों जाते हैं। उपाध्याय जी का अन्वय मित्र साहब के अन्वय से कुछ चढ़ बढ़ कर है ऐसे अन्वय को आगे रख वेदों में से चाहे जो कुछ निकाल लो ज़रा भी इधर का उधर हो जावे तो कुछ का कुछ होजाता है।

मिट्टी का गणनाथ बनाने, लग गया एक कुम्हार।
हाथ पैर और पेट बनाकर, गणपति किया तयार ॥१
केवल सूंड़ रही है बाकी; उसको खूब सजा कर।
मुखपर धरनी भूलगया है, धरी नितम्ब पर जाकर ॥२
खूब सजाकर उसको अब यह, ले जावेगा मन्दिर।
भई सूंड़ की पूंछ इसी से, गणपति हो गया बन्दर ॥३
इस भांती से काट पदों को, विधवा व्याह करा है।
वेद मंत्र से वह निकला, जो मन इनके में भरा है ॥४

नवम चालाकी।

'इयं नारी, इस वेद मंत्र और इसके सायण भाष्य में पति मृतक है तथा स्त्री सती होने केलिये उससे प्रार्थना करती है। मंत्र को खूब टटोलिये, भाष्य को भी टटोल लीजिये दोनो में स्त्री एक और पुरुष एक है किन्तु उपाध्याय जी के अर्थ में दो पुरुष हैं एक मृतक है और एक जीवित है जिससे वह व्याह करेगी। मालूम होता है कि ईश्वर अपनी बे समझी से मंत्र में एक पुरुष लिख गये उपाध्याय जी ने ईश्वर की गलती दूर करने के लिये उसमें दो पुरुष रक्खे, अब बतलाइये ईश्वर विद्वान् या उपाध्याय जी विद्वान्। एक पुरुष के दो पुरुष बनादेना सिद्ध करता है कि उपाध्यायजी घोर नास्तिक

हैं और इनको वेदार्थ से कोई मतलब नहीं, मतलब विधवा विवाह चलाने से है, वाह उपाध्याय जी!यह विद्वत्ता, इन्हीं चालाकियों से आप वेद को फाँसी पर लटका देना चाहते हैं? धन्य है आपके निर्णय को और हजार वार धन्य है उनको जो आप की लिखी चालाकी युक्त इबारत को वेदार्थ मानते हैं।

दशम चालाकी।

उपाध्याय जी ने उपरोक्त चालाकियों के साथ "इयंनारी" इस मंत्र से विधवा विवाह सिद्ध करके छपवा दिया। अब उदीर्ष्व नारी इस मंत्र से जो उपाध्याय जी ने विधवा विवाह सिद्ध किया है जरा उसका भी नग्न नाच देख लें। मंत्रका अभिप्राय यह है कि मृतक शरीर के पास पड़ी हुई जो पत्नी रो रही है उसको तुम यह समझाओ कि यहां से उठ, ये देख तेरे छोटे२ बच्चे हैं, तू पति के साथ सती होना चाहती है तो फिर ये बच्चे क्या करेंगे? ये विचारे भूके मर जावेंगे तुम अन्तःकरण में धीरज धर के उठो तुम्हारे उठने से ये बच्चे पलकर जवान हो जावेंगे और अब यह मृतक शरीर अन्त्येष्टि क्रिया करने के लिये श्मसान में पहुँचाया जावेगा यह मंत्र का भाव था, उपाध्याय जी की दिव्य दृष्टि से इसमें विधवाविवाह दीख पड़ा। कैसे दीखा जरा इस भव्य फिलास्फी कोभी देखिये। मन्त्रमें 'जनित्वं' पदहै 'जनित्वं, का अर्थहैसंतान,। सायणने 'जनित्वं,का अर्थ'जायात्वं,लिखाहै इसका अर्थभी

संतान, ही है। और अथर्ववेद भाष्य में 'जनित्वं, का अर्थ करते हुये सायण लिखते हैं कि 'जनित्वमपत्यादिरूपेण जन्मत्वम्, पुत्रपौत्रादि रूप से संतान को उपाध्याय जी का अन्वय 'जायाभाव को प्राप्त हो, औरत बन जा। यहां संतान पद वाच्य 'जनित्वं, शब्द को स्त्री भाव में लगा लिया उपाध्याय जी की दृष्टि में संतान औरत होती है। एक मनुष्य ने अन्वय किया कि ,जनित्वं संबभूत्र, जनित्वं नाम मूली को तू प्राप्त हो अर्थात् तू मूली खा जा, यह अर्थ सुनकर हमको हंसी आई, हमने पूछा कि इसमें मूली खाना लिखा है? अर्थ करने वाला बोला जी हाँ। हमने कहा क्या 'जनित्वं, का अर्थ मूली है ! उसने कहा ठीक मूली अर्थ है। हमने पूछा इसमें प्रमाण क्या है? जवाब दिया कि उपाध्याय जी से तो प्रमाण पूछो जिन्होंने 'जनित्वं, शब्द का अर्थ 'औरत' किया है। वास्तव में 'जनित्वं, शब्द का अर्थ औरत करने वाला वेदों की गरदन काटता है। अन्वय में 'एतज्जनित्वं, 'यह संतान, था संतान को अंगुली से दिखलाया गया था—उपाध्याय जी ने 'एतत् को उड़ा दिया और एतत्, पद को अपने मन से षष्ठी बना उसका पत्युः शब्द, के साथ समन्वय कर दिया। सच पूछिये तो ईश्वरको जराभी अक्ल नहीं वह 'एतत्, पदको प्रथमा रख गया इस गलती को उपाध्याय जी ने सुधार दिया—'एतत्, को षष्ठी बना दिया अब कहिये ईश्वर विद्वान् या उपाध्याय जी

विद्वान्?। एक मनुष्य ने कुछ गावों के नाम लिखे थे वे नाम ये हैं विसवा, हसवा धगवा, विजावर, यह लिख कर एक गंवार आदमी को चिट्ठी देदी और कह दिया कि यह चिट्ठी फतेहपुर में हमारे दोस्त गिरधारीलाल को दे देना। वह चिट्ठी वाला गिरधारीलाल का नाम भूल गया उसने दो लिखे पढ़े मनुष्यों को देख कर चिट्ठी दिखलाई एक आदमी ने पढ़ी-दूसरा बोला इसमें क्या लिखा है? पढ़ने वाला बोला कि इस में 'विधवा विवाह' लिखा है। उसने देखा और देखकर बोला कि इसमें तो "विसवा, हसवा, धगवा, विजावर लिखा है? विधवा विवाह नहीं लिखा। वह चालाक मनुष्य बोला कि तुमको पढ़ना नहीं आता हम कहें जैसे पढ़ो, पहिले 'विसवा का वि पढ़ो फिर धगवा का ध पढ़ो और इसके बाद ग तो छोड़ दो धगवा का वा पढ़ो देखो विधवा हो गया फिर विजावरका व पढ़ो और हसवा का वा पढ़ो पश्चात् हसवा का ह पढ़ो-यह विवाह होगया अब तो "विधवा विवाह" हुआ? जैसे इस चालाक मनुष्य ने गावों के नामसे विधवा विवाह बना लिया-बस इसी प्रकार "उदीर्ष्व नारी" इस मंत्र के कहीं के कहीं पद लगा कर पदों को मार कूट कचूमर निकाल 'विधवा विवाह' निकालते हैं यह इनकी वेद पर श्रद्धा है? और यह इनका वेदार्थ है तथा इनकी दृष्टि में इसी का नाम 'मीमांसा' है।

'उदीर्ष्व नारी इस मंत्र में एक स्त्री और एक पुरुष लिया गया है, पुरुष मरा पड़ा है-स्त्री रो रही है किन्तु उपाध्याय जी दो पुरुष लेते हैं एक जो मरा हुआ पड़ा है और एक जो गर्भधारण करवावेगा। वेद मंत्र में तो एक ही था उपाध्याय जी ने एक इलाहाबादी पुरुष पकड़ कर अर्थ में और घुसेड़ दिया यह मजा है। धन्य है उपाध्याय जी तुमको तथा धन्य है तुम्हारी "विधवा विवाह मीमाँसा" को हम आपको मित्र भाव से पूछते हैं कि जिस प्रकार की चालाकियाँ आपने की हैं इस प्रकार की चालाकियां वेदों के साथ कोई आस्तिक कर सकता है?

एकादश चालाकी।

पं० बदरीदत्त जी जोशी ने "उदीर्ष्व नारी" इस मंत्र का ऋग्भाष्य और यजुर्भाष्य ये दो भाष्य तो सायण के लिखे हैं किन्तु अथर्व भाष्य नहीं लिखा। लिखे हुये दोनों भाष्यों में विधवा विवाह की गंध नहीं-इस कारण दोनों भाष्यों का भाषा नहीं किया विधवा विवाह की पुष्टि में सायणभाष्य दिया किन्तु जब उससे विधवा विवाह सिद्ध न हुआ तो फिर मनमाना अर्थ करके तैत्तिरीय संहिता से विधवा विवाह सिद्ध किया और ऋग्वेद मंत्र पर जो इन्होंने भाषा लिखा है उसमें अब भी विधवा विवाह नहीं। ऋग्वेद यजुर्वेद के इन दोनों मंत्रों पर भाषा तो मनमाना लिखा किन्तु ऊपर यह लिख दिया कि ये सायणभाष्य के अनुवाद हैं

जोशी जी को यह न जान पड़ा कि जब हमारे अर्थों को सायण भाष्य से कोई मिलावेगा और जब वे नहीं मिलेंगे तब हमको कोई क्या कहेगा। जोशी जी ने धर्म और शर्म दोनों को ताक में रख अपने अर्थ को सायण का अनुवाद बतलाया है यह संसार को धोका दिया है। हमको शोक है कि आज मनुष्य विद्या पढ़कर विद्या से संसार को धोका देना ही अपना मुख्य कर्तव्य समझ लेते हैं यह अंग्रेजी शिक्षा का फल है। जोशी जी भी तो कुछ अंग्रेजी जानते हैं फिर वह कौन कारण है जिससे धर्म में धोका न दें।

जैसे उदई वैसे भान। न उनके चुटिया न उनके कान॥

जिस प्रकार से उपाध्याय जी वेदों को फांसी पर लटकाते हैं उसी प्रकार से हाथ में छुरा लेके जोशी जी वेदों का गला काट रहे है। लिखे पढ़ों के लिये यह है अनुचित किन्तु क्या करें आखिर विधवा विवाह तो चलाना ही है।

द्विविधः

वेद और धर्मशास्त्र का सिद्धान्त है कि जो स्त्री सती होती है या ब्रह्मचर्य धारण करती है दूसरे जन्म में उस स्त्री को वही पति मिलता है जो उसका पहिले पति था। इसके ऊपर मनुजी लिखते हैं कि—

अपत्यलोभाद्यातुस्त्री-भर्तारमतिवर्तते
सेहनिन्दामवाप्नोति-पतिलोकाच्च हीयते॥१६१

मनु० अ०। ५

संतान के लोभ से जो स्त्री पत्यन्तर स्वीकार करती है, वह इस लोक में निन्दनीय और मर कर पतिलोक से वंचित रह जाती है।

इस श्लोक से सिद्ध है कि जो स्त्री ब्रह्मचारिणी रहती है वह पति लोक को जाती है और पति के साथ उसका फिर सम्बन्ध होता है। पाराशर स्मृति ने भी सती होने वाली स्त्री के लिये "तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च" इस श्लोक से कह दिया कि साढ़े तीन करोड़ वर्ष वह स्त्री अपने पति के साथ स्वर्ग में वास करती है। इन सब श्लोकों का अभिप्राय यह है कि ब्रह्मचर्य धारण करने वाली और सती होने वाली स्त्री का उसी पति के साथ सम्बन्ध होता है अन्य से उसका विवाह होता ही नहीं। इस विषय में 'इयं नारी, के भाष्य पर सायण लिखते हैं कि "अनुमरण प्रभावाज्जन्मान्तरे हि स एव तस्याः पतिर्भवति" साथ में मरने के कारण से जन्मान्तर में उनका वही पति होता है। पति की इच्छा यही रहती है कि फिर भी मेरा इसी के साथ विवाह हो–इस इच्छा की पूर्ति को स्पष्ट करनेके लिये 'उदीर्ष्वनारी, इस मंत्रमें 'दिधिषोः, पद दिया है सायण ने यजुर्वेद के मंत्र में आये हुये 'दिधिषोः, पदका अर्थ 'पुनर्विवाहेच्छोः, किया है जिस का अर्थ यह है कि वहां मृतक पति इस स्त्री के साथ फिर विवाह करने की इच्छा रखता है किन्तु ऋग्वेद और अथर्ववेद के मंत्रों में आये हुये 'दिधिषोः, पद का अर्थ सायण ने 'गर्भ धारण करवाने वाला'

लिया है। इसको उपाध्याय जी ने छिपा लिया, नहीं तो कलई खुल जाती। स्मृतियों का प्रमाण न मान सायण के भाष्य को छिपाकर विधवा विवाह वाले 'पुनर्विवाह की इच्छा रखने वाला अन्य पुरुष' 'दिधिषोः, पद का अर्थ कर देते हैं, इनकी यह चालाकी अत्यन्त निन्दनीय ठहर कर इनको फस्टक्लास का चालबाज सिद्ध कर रही है। ये लोग उपरोक्त प्रमाणों को छिपा कर 'वेद के' 'दिधिषोः, पद का अर्थ 'दूसरा पति' कर लेते हैं और इसकी पुष्टि अमर कोश के इस प्रमाण से करतेहैं।

पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषुःपतिः।
सतुद्विजोऽग्रे दिधिषुःसैव यस्य कुटुम्बिनी॥२३॥

अमर० कां०२ व०६

जो स्त्री दो बार वरी गई है वह पुनर्भू, दिधिषु संज्ञक है और वह दो बार वरी हुई का पति 'दिधिषु, है तथा दो बार वरी हुई जिसकी कुटुम्बिनी अर्थात् पुत्रादिक पोष्य वर्गवाली स्त्री वह द्विज 'अग्रेदिधिषु, कहलाता है।

इस श्लोक के अर्थ में लोगों को उलझा कर जैसे तांबे के पैसे पर पारा चढ़ाकर अठन्नी बना लोगों को धोके में डालते हैं इसी प्रकार अपने बनावटी जाल में फांस विधवा विवाह का बनावटी रूप दिखला देते हैं और बेसमझ मनुष्य इनकी बनावट को न जानकर 'दिधिषोः' पद का अर्थ पुनर्विवाहित स्त्री का पति मान लेते हैं किन्तु सभी अन्धे नहीं हैं सभी अज्ञानी नहीं, ऐसे भी शास्त्रवेत्ता पुरुष संसार में मौजूद हैं

जिनके आगे ये समस्त चालबाजियाँ धूल में मिल जाती हैं, इनका अर्थ धोका देनेवाला और बनावटी है इसकी पुष्टि में हम कुछ हेतु देते हैं उनको श्रोता ध्यान से सुनें (१) स्मृतियों और सायणभाष्य ने यह माना है कि जो पति मर गया है जन्मान्तर में इसी स्त्री के साथ विवाह करने की इच्छा रखता है इससे उसको 'दिधिषुः' कहते हैं, इसका सप्रमाण विवरण हम ऊपर कह आये हैं श्रुति-स्मृति और भाष्य को छिपा कर मनमाना अर्थ करना यह हठी मनुष्यों का काम है, ऐसा क्यों किया गया ? जो जानबूझ कर ऐसा करते हैं क्या उनके मानसिक भाव दूषित नहीं हैं ? क्या वे वेद और धर्मशास्त्र में घपला मचाकर शास्त्र का गला घोट जबर्दस्ती से विधवा विवाह चलाना नहीं चाहते ? (२) जब स्त्री के दो पति नहीं हुये, अभी पहिला ही पति मरा है, दूसरे के साथ अभी किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं हुआ तो बिना सम्बन्ध हुये मनुष्यकी 'दिधिषोः, संज्ञा कैसे हो जायगी ? अमर कोश तो यह कहता है कि जो स्त्री दो बार वरी जायगी उसका पति 'दिधिषु' होगा—यह स्त्री दुबारा अभी वरी नहीं गई फिर उसका पति 'दिधिषु' कैसे होगा ? ऐसे तो सारा संसार 'दिधिषु' हो जायगा ? इस प्रकार के धोके दे कर जबर्दस्ती से दो बार विवाही हुई औरत का पति बनाया गया है । शाबास है, अच्छा निर्णय किया जाता है दिन दहाड़े संसार की आँखों में धूल झोंकी जा रही है (३) अमरकोश से वेदका अर्थ करना यह हमने विधवा-

विवाह वालों के यहां ही देखा है, क्या वेद के अर्थ बतलाने वाले निरुक्त, निघण्टु, कल्पसूत्र, शतपथादि ब्राह्मण तथा सायणादि भाष्य संसार में नहीं रहे जो अमरकोश से वेदों के पद का अर्थ किया जाता है ? यदि अमरकोश से वेदों का अर्थ होने लगेगा तब तो वेदों के अर्थ बदल कर गाय की भैंस और बकरे का हाथी बन जावेगा, इस विषयमें हम एक उदाहरण पबलिक के आगे रखते हैं सावधानता से सुनें। 'प्रजापतिश्चरति गर्भे० यजु०३१। १९, के मंत्र में योनि शब्द आया है, मंत्र का अर्थ है कि ईश्वर के योनि स्वरूप को धीर पुरुष देखते हैं, अब इस मंत्र का अमरकोशके अवलम्ब से अर्थ सुनिये। अमर कोशमें लिखा है कि" भगंयोनिर्द्वयोः शिश्नो० कां०२ वर्गमनुष्यं श्लो० ७६" भग और योनि ये दो नाम स्त्रियों की मूत्रेन्द्रिय के हैं, इस को लेकर मंत्र का अर्थ होगा कि ईश्वर की मूत्रेन्द्रिय के दर्शन धीर पुरुष करते हैं। अमर कोश से वेदके अर्थ करने में यह मजा निकला, अमरकोश का अवलम्बन करके जो प्रजापति मंत्र का अर्थ किया है क्या उपाध्याय जी इसको ठीक अर्थ मानेंगे ? यदि नहीं मानते तो फिर हम अमरकोश से 'दिधिषोः' पदका अर्थ दोबार स्वीकारकी हुई स्त्रीका पति कैसे मानलें ? उपाध्याय जी तथा जोशी जी आप लोग विधवा विवाह का निर्णय नहीं कर रहे वरन् वेद शास्त्रों के गले पर छुरा फेर शास्त्रों के साथ जबर्दस्ती कर विधवा विवाह चाहने वालों के पक्ष को चालाकी से वैदिक बतला रहेहैं, ऐसा करना

मनुष्य के लिये निन्दनीय ही कहा जाता है। क्या मजा है।

अमरकोश को लेकर 'दिधिषोः' पद का अर्थ बताते हैं।
बेवा के पतिको दिधिषोः कह हमको खूब सिखाते हैं॥ १॥
वेद अर्थ में कोश सहायक नहीं आज तक हुआ कभी।
ब्राह्मण और निरुक्त निघण्टू बने सहायक कहें सभी॥ २॥
अमरकोश से वेदों के अर्थों का निर्णय जो होगा।
अर्थ अनर्थ बनेंगे सब ही फैलेगा भारी गौगा॥ ३॥
नारी की इन्द्रिय को योनी अमरकोश बतलाता है।
योनि शब्द से ब्रह्मरूप को वेद हमें समझाता है॥ ४॥
अमर कोश से ईश रूप को मूत्रेन्द्रिय बतलावेंगे।
नूतन अर्थ बनेंगे ऐसे वेद आप मिट जावेंगे॥ ५॥
इसी दोष से अमरकोश को वेद अर्थ में कभी न लें।
काव्य पुराणों के अर्थों में पंडित अमर कोश को दें॥ ६॥
लीडर किसी की बात न सुनते जी चाहे लिख जावेंगे।
इस कर्तव्य से हिन्दुजाति का वैदिक धर्म मिटावेंगे॥ ७॥
भारत को योरूप करेंगे तब ये मौज उड़ावेंगे।
नष्ट हुये पर याद करेंगे शिर धुन धुन पछतावेंगे॥ ८॥

घृणित विवाह।

जिस समय स्त्री का पति मर गया है और स्त्री उसके पास पड़ी हुई रो रही है आज इस स्त्री को स्वर्ग तुल्य घर भी यमराज का घोर नरक दीख रहा है, प्राण प्यारे पति की ल्हाश आँखों के सामने है इस दारुण समयमें वह कौन निर्दयी पुरुष है जो स्त्री से यह कहे कि तू विवाह करले और विवाह के बाद हम तेरे पतिकी ल्हाश उठावेंगे। जिन जातियोंमें विधवाविवाह

का प्रचार है उन जातियों में भी ऐसे दारुण समय में विवाह नहीं होता वरन् मुर्दे की लाश फुंकने के बाद स्त्री कुछ दिन विधवा रहती है और फिर कुछ समय बीत जाने पर विवाह करती है किन्तु विधवा विवाह वालों को यह असह्य दीख पड़ा इन्हों ने तो इसी में देशोन्नति समझी कि पहिले स्त्री का विवाह हो और फिर लाश उठे ऐसा न हो उस स्त्री को कोई दूसरा उड़ा ले जावे, पूछना यह है कि इस अयोग्य और घृणित विवाह से हिन्दू जाति की नाक जड़से कटेगी या कुछ बाकी रहेगी। इस में श्रोता लोग खूब विचार करें।

जिस स्त्री का पति मर गया है उस स्त्री को मृतक सूतक लिखा है, मृतक सूतकमें धर्मशास्त्र विवाहादि कृत्योंका निषेध करते हैं, जब धर्मशास्त्र इस समय में विवाह का निषेध करते तो फिर धर्मशास्त्रों को तिलाञ्जलि दे, नास्तिक बन किस शास्त्र के आधार पर विवाह किया जावेगा? धर्मशास्त्र तो वह देखे जिस को धार्मिक बनना हो यहाँ पर तो काम के सताये हुये कामियों को स्त्री प्रसंग की जल्दी पड़ी है धिक्कार है, ऐसे विवाह को। सच यह है कि अब हिन्दूजाति ने लज्जा को तिलाञ्जलि देकर बेशरमी का जामा पहिना है, हमें तो ऐसे विवाह को सुनकर कंपकंपी हो उठती है, वाहरे विवाह सच यह है कि यह दुष्ट अंग्रेजी शिक्षा संसारमें जितने अनर्थ करवा दे वे सब थोड़े हैं।

सूतक मृतक लगा पत्नी को, जिसका पती मरा है।
उसका व्याह होय अब कैसे, कैसा लग्न धरा है॥ १॥

धर्मशास्त्र कहे हाथ उठा कर, सूतक में नहिं ब्याह कभी।
लीडर इसको नहिं मानेंगे, धर्मशास्त्र मिटजांय सभी ॥२॥
धर्मशास्त्र को दूर फेंक दो, रहे न लज्जा खास।
हो विवाह विधवा का पहिले, फेर उठेगी ल्हाश ॥ ३ ॥
जिस विधवा की आँखों से, आंसू की हैं नदियां बहतीं।
धिक् धिक् जनता है कठोर तू, दुखिया को कैसे कहती ॥४
जिसका घर अब शून्य हुआ है, शून्य हुआ संसार।
उसके साथ पट्टी बिठलावें, हो कर दूल्हा त्यार ॥ ५ ॥
नहीं समय यह है विवाह का, घरमें मृतक धरा है।
क्या नहिं कर सकते हैं कामी, जिनके काम भरा है ॥६॥
ईसाई यवनों के ह्याँ पर, होती विधवा की शादी।
शूद्र जाति में विधवाओं को भी, है ऐसी आजादी ॥ ७ ॥
पती मरे तब ल्हाश उठावें, अन्त क्रिया करवावें।
कुछ दिन औरत रहती विधवा, फिर वे ब्याह रचावें ॥८॥
लीडर कहते प्रथम ब्याह हो, फिर हम मृतक उठावेंगे।
ब्याह हो लेगा तो मुर्दे को, मरघट में ले जावेंगे ॥ ९ ॥
जो तू ब्याह नहीं करती है, मुर्दा नहीं उठावेंगे।
नूतन अर्थ गढ़ें वेदों के, जाल नये फैलावेंगे ॥ १० ॥
मुसलिम क्रिश्चिन शूद्र तुम्हें फिर, बहुतही बुरा बतावेंगे।
धार्मिक वैदिक द्विज जाती का-ऐसे नाक कटावेंगे ॥ ११ ॥
लज्जा कहां गवांई तुमने-घृणित कार्य मन ठान लिया ॥
लज्जा को भी लज्जा आती-कैसे तुमने मान लिया ॥ १२ ॥
ऐसे व्यभिचारी दुष्टों से-कॉप उठेगी यह धरनी।
धर्म छोड़कर कंजर होगये--महिमा जाय नहीं बरनी ॥ १३ ॥

'इयंनारी' और 'उदीर्ष्वनारी, इन दो मन्त्रों के हमने जो अर्थ किये उन अर्थों की पुष्टि में पाराशर, व्यास, दक्ष इन तीन

स्मृतियोंके प्रमाण दिये, इसी प्रकार क्या उपाध्याय जी 'पति की ल्हाश घर में पड़ी रहने पर स्त्री अपना विवाह करले, इस की पुष्टि में किसी स्मृति का प्रमाण दे सकते हैं ? हमारा दावा कि सात लाख जन्म में भी उपाध्याय जी अपने मन गढन्त घृणित विवाह की पुष्टि में स्मृति प्रमाण नहीं दे सकते।

यदि वेदों का यही अभिप्राय है कि पति की ल्हाश घर में धरी रहे और उसी समय पहिले स्त्री विवाह करले तब मुर्दे की ल्हाश उठाई जावे तो फिर उपाध्याय जी बतलावें कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक कोई ऐसा विवाह हिन्दूजाति में हुआ है ? हम दावे से कहते हैं कि ऐसा विवाह एक भी नहीं हुआ। क्यों नहीं हुआ-क्या कोई भी ऋषि-मुनि आचार्य-पंडित 'उदीर्ष्व नारी, इस मंत्र के अर्थ को नहीं समझा ? क्या हमको यह मानना पड़ेगा कि सृष्टि के आरंभ से जितने भी विद्वान् हुये वे समस्त वेद तत्व से अनभिज्ञ रहे और वेदों के पूर्णज्ञाता यदि कोई हुये हैं तो वे केवल उपाध्याय जी हुये हैं? उपाध्याय जी ! आप ये ताजे ताजे जाल बनाकर इसमें शास्त्रज्ञों को फंसाना चाहते हैं· क्या ये फंस जांयगे ? आप के मन गढन्त अर्थों से तो यही सिद्ध होता है कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से नास्तिक बन, वेदों को कुचल, योरूपी बनना चाहते एवं औरों को भी बनाना चाहते हैं इससे अन्य कोई भी अभिप्राय आपके लिखे नवीन अर्थों से नहीं निकलता।

जूते से काटी और दुशाले से पोछी।

उपाध्याय जी इस घृणित विवाह को छिपाने का भी उद्योग कर रहे हैं। आप लिख रहे हैं कि वेद में बहुत से शब्द सांकेतिक अर्थ में आते हैं और लोक में भी यही बात है। जैसे स्त्री का पति के साथ 'सहवास, सम्भोग के अर्थ में प्रयुक्त होता है। कोई कहे कि 'सहवास, का अर्थ केवल साथ रहना है तो यह उसका प्रकरणानुकूल अर्थ न होगा। यदि माता अपने पुत्र के साथ कहीं सो रही है तो उसको कदापि न कहेंगे कि वह पुत्र के साथ सहवास कर रही है। इसी प्रकार यहाँ यह तात्पर्य नहीं है कि चिता में अग्नि प्रवेश करने के पूर्व ही दूसरे पति से विवाह या नियोग कर लिया जावे किन्तु आशय यह है कि यदि विधवा दुःखित है या सन्तानोत्पत्ति चाहती तो लोग इस मंत्र को पढ़ सकते हैं। उपाध्याय जी हैं 'युक्तिबाज़' पहिले तो जूते से काटते हैं और फिर बनावटी प्रेम दिखला कर दुशाले से पोंछ देते हैं यह चालाकी तो की किन्तु यह न दिखलाया कि 'उदीर्ष्व नारी, इस मँत्र में वेद के कौन कौन पद सांकेतिक हैं आपके अर्थ से तो इस मंत्र में विधवा विवाह की विधि है,विधि विधायक वाक्य त्रिकाल में भी सांकेतिक नहीं होते। विधि विधायक मंत्र 'उदीर्ष्व नारी' के पदों को सांकेतिक मानना यह सिद्ध करता है कि या तो उपाध्याय जी संस्कृत के कोरे एम० ए० हैं सांकेतिक पद का लक्षण नहीं जानते या साधारण मनुष्यों को अपने जाल में फाँसने के लिये विधिवाक्य विधायक पदों को सांकेतिक बना

रहे हैं। विधि विधायक वाक्य सांकेतिक होते ही नहीं और लिखने को चाहे जो लिखदो स्याही कलम अपनी है। जिस समय कोई विद्वान् यह देखेगा कि उपाध्याय जी विधि वाक्य को सांकेतिक बना रहे हैं उस समय उपाध्याय जी को कौन डिगरी मिलेगी? श्रोताओ! इस निर्लज्ज विवाह से उपाध्याय जी घबराये इस कारण 'उदीर्ष्व नारी, के पदों को सांकेतिक लिख गये। हमारा दावा है कि इस मंत्र में एक भी पद सांकेतिक नहीं हैं अब तो उपाध्याय जी को और उनके साथियों को प्रथम विधवाविवाह करवाके उसके पश्चात्‌ही उसके मृतक पति की ल्हाश उठानी पड़ेगी। धन्य है उपाध्याय जी! तुमने ही वेदों को कंजरों का धर्म पुस्तक बनाया है इस कारण ऐसे न्यायकर्ता को हजार बार धन्यवाद है।

सफेद झूठ।

एक दिन हमने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि अमेरिका में एक स्कूल ऐसा खुला है जिसमें झूठ बोलना सिखलाया जाता है। हमें सन्देह होता है कि क्या उपाध्याय जी उसी स्कूलमें शिक्षा ग्रहण कर 'विधवा विवाह मीमांसा' लिखने लगे हैं। आप लिखते हैं कि "उदीर्ष्वनारी" इस मंत्र से पं० भीमसेन जी ने नियोग सिद्ध किया और फिर अपनी लेखनी से इस नियोग का कभी भी खण्डन नहीं किया—बस यही सफेद झूठ है पं० भीमसेन जी ने ब्राह्मण सर्वस्वके प्रथम वर्ष के अंकों

से नियोग का खण्डन आरंभ किया है और उस को चतुर्थ वर्ष के अंकों तक लिखा है इसमें 'उदीर्ष्व नारी, इस मंत्र के नियोग का भी खण्डन है, फिर आप कैसे कहते हैं कि भीमसेन जी ने फिर कभी खण्डन नहीं लिखा? उपाध्याय जी! सोच विचार कर लिखते तो अच्छा होता, क्या आप नियोग और विधवाविवाहको एकही समझे हैं? यदि ऐसा समझे हैं तो आपने बहुत गलती खाई है पं० बदरीदत्त जी जोशीने नियोगका सविस्तर खण्डन कर सनातनधर्म पताका में छपवाया और विधवा विवाह के विषय में 'विधवोद्वाह मीमांसा' पुस्तक लिखी पं० बदरीदत्त जी नियोग और विधवा विवाह को पृथक् २ कार्य मानते हैं-आपने दोनों को एक कैसे समझा? आपने लिखा था कि वेदव्याख्याता पं० भीमसेन जी ने नियोग लिखा, किन्तु उन्ही, वेदव्याख्याता जी ने 'विधवा विवाह मीमांसा' लिख कर विधवा विवाह का घोर खण्डन किया, यह पुस्तक आज भी सनातनधर्म पुस्तकालय इटावा से मिलती है, फिर नियोग और विधवा विवाह एक कैसे हो जावेंगे? नियोग तो आजकलके महर्षियों ने कई प्रकारका लिख दिया (१) विवाहित पति बना रहे और नियोग का पति दूसरा हो जाय, क्या आप विधवा विवाह में भी ऐसा करेंगे? (२) पति परदेश गया हो तो स्त्री नियोग करले, जब असली पति आजावे तब नियोग का पति छूट जावे—क्या आप परदेश गये हुये पति की स्त्री का विधवा विवाह करादेंगे और जब असली पति आजावेगा

तब विधवा विवाह वाला छूट जावेगा (३) नियोग में एक पति से दो संतान पैदा करनी लिखी हैं, तीसरी सन्तान की इच्छा हो तो किसी अन्य पुरुष से नियोग करना होगा, क्या विधवाविवाह में भी यही रीति है, दो सन्तान के बाद यदि तीसरी सन्तान की इच्छा हो तो वह पति छुड़ा दिया जायगा और उसका अन्य के साथ फिर विधवाविवाह होगा (४) नियोग में सन्तान बराबर२ बंटती है अर्थात् दो पुत्र पैदा होने पर एक स्त्री ले ले और एक पुरुष ले ले, क्या विधवा विवाह की सन्तान भी बाँटी जायगी ? (५) आप समस्त सत्यार्थ-प्रकाश को टटोल लीजिए नियोग में कन्या पैदा ही नहीं होती, तो क्या विधवा विवाह वालों के भी कन्या पैदा न होगी ? । नियोग और विधवाविवाह कभी भी एक नहीं हो सकता उपाध्यायजी का एक मानना सिद्ध करता है कि उपाध्यायजी वेदशास्त्रों के भाव को किञ्चित् भी नहीं समझते—सन्निपात ग्रस्त मनुष्य की भांति जो जी में आता है लिख देते हैं ।

दयानन्द ।

आर्य समाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द जी नियोगको वैदिक मानते हैं इन्हों ने नियोग की पुष्टि में खूब विस्तृत लेख लिखा, प्रमाण में कई एक वेद मंत्र रक्खे, नियोग के जितने प्रबल मित्र स्वामी दयानन्द जी हैं इतना मित्र न कोई हुआ और न है, न आगे को होगा। नियोग के लीडर स्वा० दयानन्द जी अपनी लेखनी से विधवा विवाह का घोर खण्डन लिखते हैं इस खण्डन को सुनिये ।

(१) जिस स्त्री वा पुरुष का पाणिग्रहण मात्र संस्कार हुआ हो और संयोग अर्थात् अक्षतयोनि स्त्री और अक्षतवीर्य पुरुष हो उनका अन्य स्त्री वा पुरुष के साथ पुनर्विवाह न होना चाहिये किन्तु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्णों में क्षतयोनि स्त्री और क्षतवीर्य पुरुष का पुनर्विवाह न होना चाहिये (प्रश्न) पुनर्विवाह में क्या दोष है ? (उत्तर) स्त्री पुरुष में प्रेम न्यून होना क्यों कि जब चाहे तब पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष छोड़ कर दूसरे के साथ सम्बन्ध करले (२) जब स्त्री वा पुरुष पति वा स्त्री के मरने के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे तब प्रथम स्त्री वा पूर्व पति के पदार्थों को उड़ा ले जाना और उनके कुटुम्ब वालों को उनसे झगड़ा करना (३) बहुत से भद्रकुल का नाम वा चिन्ह भी न रह कर उस के पदार्थ छिन्न भिन्न हो जाना (४) पतिव्रत और स्त्री व्रत धर्म नष्ट होना इत्यादि दोषोंके अर्थ द्विजों में पुनर्विवाह वा अनेक विवाह कभी न होना चाहिये।

सत्यार्थप्रकाश चतु० समु० पृ० १११।

कुमार्य्योः स्त्रीपुरुषयोरेकवारमेवविवाहः स्यात्—पुनरेवं नियोगश्च, नैव द्विजेषु द्वितीयवारं विवाहो विधीयते, पुनर्विवाहस्तु खलु शूद्रवर्ण एव विधीयते तस्य विद्याव्यवहार रहितत्वात्। स्वामी जी के इस संस्कृत लेख की हिन्दी यह है कि स्त्री और पुरुष का एक ही वार विवाह होता है, फिर विवाह नहीं होता, नियोग होता है, द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों) में

दूसरी वार विवाह नहीं होता, पुनर्विवाह तो केवल शूद्रवर्ण में होता है क्यों कि उसको विद्या व्यवहार नहीं है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृ० २२२

एक स्त्री के लिये एक पति से एक वार विवाह और पुरुष के लिये भी एक स्त्री से एक ही वार विवाह करने की आज्ञा है जैसे विधवा हुये पश्चात् स्त्री नियोग से सन्तानोत्पत्ति कर के पुत्रवती होवे वैसे पुरुष भी विगत स्त्री होवे तो नियोग से पुत्रवान् होवे।

संस्कार विधि पृ० १६५

महानुभाव! आपने स्वा० दयानन्द के लेख को सुन लिया अब कोई भी विचारशील मनुष्य यह नहीं कह सकता कि विधवा विवाह और नियोग एक ही बात है। हमको नहीं मालूम कि उपाध्याय जी जान बूझ कर संसार को क्यों धोके में डालते हैं। इसका उत्तर तो वही देंगे किन्तु इतना तो साधारण मनुष्य भी समझ जावेगा कि यहां पर धर्मनिर्णय नहीं किया जाता वरन् संसार की आंख में धूल झोंक कर अंधा बनाया जाता है।

उपाध्याय जी अपने लेख को सत्य और वैदिक बनाने के लिये वेदव्याख्याता पं० भीमसेन के लेख से पुष्ट करते हैं किन्तु इनका ऐसा करना भी धोका देना है। काम पड़ने पर उपाध्याय जी अपने इस नियमको भी बदल देंगे, यदि विधवा विवाह मण्डन में वेदव्याख्याता के लेख से कोई क्षति पहुँचेगी

तब वेदव्याख्याता जी का लेख अप्रमाणिक और अमान्य कर दिया जावेगा। उपाध्याय जी ने 'इयंनारी' इस मंत्र से विधवा विवाह को वेद विहित बतलाया है, इनके विरुद्ध वेद-व्याख्याता जी 'इयंनारी' इस मंत्र से अपनी बनाई 'विधवा विवाह मीमांसा' में विधवा विवाह का खण्डन लिख रहे हैं, क्या इस खण्डन को उपाध्याय जी स्वीकार करेंगे? कभी न करेंगे। बस सिद्ध हो गया कि अनुकूल की बातें मानेंगे और विरुद्ध होने पर उपाध्याय जी किसी के लेख को भी नहीं मानेंगे इनकी दृष्टि में यही न्याय और यही निर्णय है।

उपाध्यायजीने किञ्चित् भी धर्म निर्णय तथा वेद मंत्रों के अर्थका लिहाज नहीं रक्खा, आपने जाल बना, वेद मंत्रोंका गला घोट, झूठ लिख 'विधवा विवाह मीमांसा' में विधवा विवाह को वैदिक सिद्ध कर दिया और जो लोग वेद को सफा उड़ा कर बाइबिल को धर्म पुस्तक बनाना चाहते हैं इन्हों ने उपाध्याय जी की लिखी हुई गप्पों का सोलह आने पाव रत्ती सत्य मान विधवा विवाहको वैदिक समझ लिया, इसका नाम है स्वार्थ तथा इसको कहते हैं पक्षपात, यह है धर्मद्वेष जो मनुष्य को पशु बना देताहै। झूठ की भी कोई हद होती है, उपाध्याय जी ने हद को भी तोड़ दिया इसके ऊपर आज हम एक दृष्टान्त पबलिक के आगे रक्खेंगे उस से उपाध्याय जी की सत्यता का फोटू आगे आजावेगा।

दृष्टान्त यह है कि एक दिन स्वर्गवासी लोकेन्द्र शाह

जगम्मनपुर नरेश शिकार खेलने के लिये पंचनदा पर पहुँचे, इस स्थान में चम्बल, सिंध, कुमारी, पहूज और यमुना ये पांचों नदियां मिली हैं इसी से इसका नाम पंचनद है जब नरेश यहां पर शिकार खेलने के लिये पहुँचे तो इनके साथ में कामदार, प्राइवेट सेक्रेटरी, डाक्टर एवं कुछ सिपाही भी थे और कुछ मजदूर भी थे, तीन चार मजदूर कोरी जाति के भी साथ में थे, मछली का शिकार कर रहे थे, एक मछली पानी के ऊपर आगई, राजा ने चाहा कि इसका शिकार तलवार से ही करलें राजा ने खैंच कर तलवार को मछली पर चलाना चाहा, मछली पानी में उतर गई किन्तु तलवारका हाथ रुक न सका हाथ वहक गया, पासमें एक कोरी खड़ा था उसके वह तलवार पेटमें बैठी, तलवारने पेटसे कोरीके दो टुकड़े कर दिये, राजा घबरा गये बहुत अक्ल दौडाई कुछ सूझ न पड़ा, अन्त में एक अनोखी सूझ सूझी। यमुनाके किनारे बकरियाँ चरती थीं नरेश ने एक भारी सी बकरी के तलवार मार कर बीच से दो टुकड़े कर दिये एक टुकड़ेमें शिर और आगे के पैर रहे, दूसरे टुकड़े में पूंछ, पिछले पैर, तथा थन रहे। इस पिछले टुकड़े को लेकर कोरी का धड़ इस टुकड़े में जोड़ दिया गया, डाक्टर साहब ने टांके लगा दिये, इलाज होता रहा, कुछ दिन में कोरी अच्छा हो गया। इस कोरी का ऊपर भाग तो मनुष्य का है और नीचे का बकरी का, यह दिन भर कपड़ा बुनता रहता है बारह तेरह गज कपड़ा बुन लेता है और प्रातः काल दो सेर

तथा सायंकाल दो सेर नीचे के भाग से दूध देता है-जो असंभव माने वह जगम्मनपुर में जाकर देख आवे।

कई एक मनुष्य कह उठावेंगे कि यह गैर मुमकिन है और सर्वथा झूठ है। इसके ऊपर हमारा यह उत्तर है कि सर्वथा असम्भव और मिथ्या वे लोग कह सकते हैं जिनके पास अक्ल है, बुद्धि है, विचार है निर्णय है और न्याय है, किन्तु जो लोग इस गप्प से भी अधिक गप्प उपाध्याय जी के सर्वथा असंभव तथा मिथ्या लेखों को सत्य मानने के लिये अक्ल, बुद्धि, विचार, निर्णय और न्याय को तिलांजलि देकर उपाध्याय जी की इससे भी असंभव एवं सर्वथा मिथ्या बातों को सत्य मानचुके हैं वे किस मुख से हमारी गप्प को गप्प कहेंगे।

प्रिय श्रोताओ. "वेदमें विधवा विवाह है" इसको कोई भी विचार शील मनुष्य अपने मुखसे निकाल नहीं सकता। आज वेद मंत्रों की चटनी बनाकर जो उनमें से विधवाविवाह निकाला जाता है यह अंग्रेजी शिक्षा के मसाले का असर है इन धर्म कर्म हीन अंग्रेजी शिक्षा से शिक्षित भूतों के जाल से बचकर प्रत्येक मनुष्य को पातिव्रत धर्म का गौरव स्मरण रखना चाहिये बस इसके ऊपर में एक कथा सुना कर अपने व्याख्यान को समाप्त कर दूंगा।

एक मनुष्य अपने गांव से किसी अन्य गांव को गया था उसने अपना कार्य्य किया और रातको वहां से चल दिया चार बजे प्रातः काल घर आया, शौच स्नान से निवृत्त होकर इसने संध्या की इसके पश्चात् पत्नी सहित बैठ कर अग्नि-होत्र किया। अग्निहोत्र से उठ जल पान किया, गर्मी का

मौसम था ठंडी२ हवा चल रही थी शरीर में थकावट थी इस को नींद आने लगी, पत्नी ने शिर के नीचे अपनी जाँघ लगा दी.ये महात्मा सो गये। थोड़ी देर के पश्चात् इसका एक छोटा सा दश महीने का बच्चा खेलता २ अग्नि कुंड के पास पहुँच गया. यह अग्निकुण्ड में गिरना चाहता था इसी समय इस बच्चे की माता की दृष्टि बच्चे पर आ पड़ी, दुर्घटना को देख बच्चे की माता घबराई और किं कर्तव्य विमूढ़ हो गई, थोड़ी देर में चित्त की चंचलता रुकी, विचार करने लगी कि इस समय मेरा कर्तव्य क्या है। यदि बच्चे को नहीं उठाती हूं तो बच्चा अग्नि में जल जावेगा और यदि बच्चे को उठाती हूं तो पति की नींद भंग हो जावेगी, कच्ची नींद के भंग होने पर पतिको कष्ट होगा, मैं क्या करूं, अन्ताः यह निश्चय किया कि-

अप्रियं नैव कर्त्तव्यं पत्युः पत्न्या कदाचन ।

मनुने लिखा है कि पत्नी कभी भी ऐसा कार्य न करे जिस के करने से पति को क्लेश हो। इसीको ध्येय मानकर विचार करने लगी कि मेरा पतिव्रत धर्म बना रहेगा तो और बच्चे हो जावेंगे, बच्चे के जीवन के लोभ से मैं अपने पतिव्रत धर्म को कलंकित नहीं करूंगी-यह विचार कर वह अपने स्थान पर बैठी रह गई और लड़का अग्निकुण्ड में गिरा। धार्मिक जन समस्या पूर्ति में बोलउठे कि—

सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्य पावके,

न बोधयामास पतिं पतिव्रता ।

पतिव्रता शापभयेन पीडितो,
हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः ॥

अग्निमें गिरते हुये अपने लड़के को देखकर पतिव्रता स्त्री ने अपने पति को नहीं जगाया? अग्नि ने देखा कि यह लड़का अंग्रेजी शिक्षित स्त्री का नहीं—सच्ची पतिव्रता का है यदि यह जल गया और इस पतिव्रता को क्रोध आगया तो यह स्त्री तुझे सर्वदा के लिये कोई दारुण शाप दे देगी, इस शाप भय से घबरा कर अग्नि इतना ठंडा हो गया कि जितना घिसा हुआ चन्दन होता है, लड़का न जला। धार्मिक मनुष्यों का धर्म ही रक्षक होता है।

श्रोताओ! वेदों की मर्यादा, पातिव्रत धर्म की रक्षा, पातिव्रत धर्म का गौरव, भारतवर्ष की स्त्रियों की लज्जा, द्विजों की प्रतिष्ठा और पतिव्रताओं का धर्म रखना तुम्हारा काम है, तुम इस पर कमर बाँधो, मैदान में उतरो, विधवा स्त्रियों की प्रतिष्ठा रखते हुये उनका पालन पोषण करो उनको विधवाओं के धर्म सिखलाओ, यदि तुम ऐसा नहीं कर सकोगे तो ये बाइबिल के भक्त घरघर में रंडियों के चकले बनाकर द्विजाति को कंजर जाति बना देंगे। मेरा कर्तव्य समझाना है और तुम्हारा कर्तव्य धर्म की रक्षा करना है, तुम मरते हुये भी धर्म रक्षा करते हुये मरो—यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। एक बार बोलिये प्रभु रामचन्द्र की जय।

कालूराम शास्त्री।

श्रीहरिःशरणम् ।

विधवाविवाह का जाल

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा,
यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं,
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥१॥
तव शक्त्यादिशक्त्यंतसिंहासनस्थं,
मनोहारिसर्वांगरत्नादिभूषम् ।
जटाहीन्दुगंगास्थिशश्यर्कमौलिं,
परं शक्तिमित्रं नमः पञ्चवक्त्रम् ॥२॥

पातिव्रत पालक त्रिया—सुख पावे चहुँ ओर ।
इससे वंचित-यातना भोगें कठिन कठोर ॥३॥

माननीय सभापति! पूज्य विद्वन्मण्डलि!! आदरणीय सद्गृहस्थ वृन्द!!! आज मैं अपने व्याख्यान के आरम्भमें एक दृष्टान्त रक्खूंगा, इसी दृष्टान्त के ऊपर से मेरा व्याख्यान आरम्भ होगा कृपा कर सावधानता से सुनें ।

एक दिन किसी राजा के यहां एक बहुरूपिया अंग्रेज का

वेष धारण करके पहुँचा, राजा को झुक कर प्रणाम किया, प्रणाम करते ही राजा जान गया कि यह अंग्रेज नहीं है, बहुरूपिया है, राजाने उससे कुछ बात चीत की अन्तमें बहुरूपियाने राजा से इनाम मांगा, इनाम के प्रश्न को सुनकर राजा ने उत्तर दिया कि ऐसे इनाम नहीं मिलता, इनाम उस दिन मिलेगा जिस दिन हम तुम्हारे धोखे में आजावेंगे, इस राजाज्ञा को सुनकर बहुरूपियाने प्रणाम किया और वहां से फौरन चल दिया एवं किसी दूसरे देशमें पहुँच गया वहां जाकर उसने केशों को बढ़ाना आरम्भ किया नित्य केशों को धोवे और उन में नारियल का तेल लगावे, पांच सात वर्ष में केश इतने बढ़ गये कि वे नितम्बों तक आने लगे, इसने उन केशों का जटा जूट बनाया और उसी राजा के राज्य में राजधानी के समीप आकर बैठ गया, दिन में न जल पिये, न भोजन करे, न शौच जाय. इस दशा को देखकर साधु का महत्व नगर नगर में प्रसिद्ध हो चला कि एक महात्मा ऐसा आया है न खाता है न पीता है न कभी शौच जाता है किन्तु यह सब काम रात्रि में कर लेता था और किसी को भी पता नहीं चलने देता था। महत्व को सुन कर अब बड़े बड़े रईस आने लगे, खास राजा का दीवान भी आया, दीवानने देखा कि साधु शान्त है, निरीह है, इच्छा रहित है, दीवान साहब थोड़ी देर बैठे अन्तमें प्रणाम करके चल दिये किन्तु साधु की समता और उदारता तथा त्याग और निष्कामता दीवान के मन में बस गई, दीवान ने

राजा से आकर साधु की प्रसंसा की, राजा की इच्छा हुई कि हम भी साधु के दर्शन करें। राजा ने रानी से जिक्र किया रानी भी दर्शन करने को तैयार होगई, दूसरे दिन राजा और रानी गाड़ी में बैठकर साधु के पास पहुँचे, दो फर्लांग इधर गाड़ी रोक दी गई रानी तथा राजा पैदल चलकर साधु के पास पहुँचे एवं साधु को प्रणाम किया, प्रणाम करते देख साधु ने पीछे को मुख कर लिया, रानी तो वहाँ ही बैठ गई किन्तु राजा पीछे को मुख की तरफ आगये। साधु ने बराबर का मुख कर लिया, अन्ततो राजा बैठ गये, राजाने अनेक बातें छेड़ीं किन्तु साधु ने किसी बात पर ध्यान नहीं दिया इस त्याग पर राजा और रानी बड़े प्रसन्न हुये, रानीने प्रसन्न होकर अपने गले से एक रत्नजटित सुवर्ण का चार लाख का हार निकाला और वह साधु के चरणों पर रख दिया, साधु ने चिमटे से हार को उठाया और दहकती हुई धूनी में फेंक दिया, अग्नि के जोर से सब जवाहिरात टूट टूट कर टुकड़े हो गये- इस त्याग को देखकर राजा और भी प्रसन्न होगया, अन्त में प्रणाम करके राजा रानी दोनों ही चल दिये, रास्ते में साधु के त्याग की प्रसंशा करते हुये गाड़ी पर आकर बैठ गये तथा गाड़ी चली। इतने में बाबा जी उठ कर भागे और दौड़ती हुई गाड़ी के आगे आकर राजा को प्रणाम किया एवं कहा कि सरकार! इनाम दीजिये। राजा भी जान गये कि यह बहुरूपिया है किन्तु राजा को गुस्सा आगया, क्रोध के मारे लाल लाल आंखें करके बोले कि हटजा पाजी सामने से, बेवकूफ कहीं का

यदि तू हार को अग्नि में न डालता तो उस हार की बदौलत तुम्हारी कई पीढ़ियाँ वंशी बजाती हुई मौज से दिन बिताती, इतने कीमती हार को तो तुमने अग्नि में डाल दिया और अब इनाम मांगता है, क्या हार के बराबर तुमको इनाम मिल सकता है? तुम बेवकूफ हो-सामने से हटजाओ। बहुरूपियाने प्रार्थना की कि राजन्! मेरी एक अर्ज सुन लो, राजा दयालु था सुनने लगा, बहुरूपिया बोला कि जिस समय सरकार ने मुझे हार दिया उस समय मैं त्यागी साधुके वेष में था, उस समय यदि मैं हार ले लेता तो मेरा साधु का स्वाँग पूरा न उतरता साधु के स्वरूप की रक्षा के लिये मैंने हार को अग्नि में झोंक दिया और अब मैं बहुरूपिया के रूप से आगे आया हूँ, अब सरकार जो देंगे मैं लूंगा।

सज्जनो! जब एक बहुरूपिया साधुका नकली वेष बनाता है तो उस वेष की रक्षा के लिये चार लाख के कीमती हार को अग्निमें झोंक देता है, यह नकली स्वरूप की रक्षाका त्याग है किन्तु तुमने नकली वेष नहीं बनाया है तुमने तो हिन्दूजाति के असली वीर सच्चे धर्मात्माओं की सन्तान का सच्चा वेष धारण किया है, अब आप बतलावें कि सच्चे स्वरूप की रक्षा के लिये आप क्या क्या त्याग करेंगे और किस त्याग से आप अपने असली स्वरूप को संसार में रख सकेंगे इसका विचार कीजिये। स्वरूप रक्षा यों ही नहीं हो जाती, स्वरूप रक्षा के लिये बड़ी बड़ी भेटें देनी पड़ती हैं तब स्वरूप रक्षा होती है।

प्यारे भारतवासियो ! आज तुमको अपना स्वरूप नाश-कारी और योरुप का स्वरूप उन्नति कारक दीखने लग गया, अब हिन्दू सन्तान तुम्हारे भाई ही हिन्दू स्वरूप को पैरों से कुचल योरूपीय बनना चाहते हैं, उन्हीं को वेदोंमें ईशा-मसीह का धर्म दीखने लग गया, अब दूसरे धर्म की तो क्या चर्चा करें भारत के जिस पातिव्रत नारी धर्म को सुनकर संसार भारत के आगे शिर झुका देता था आज उस पातिव्रत धर्मका वेदों में चर्चा ही नहीं किन्तु उस के विरुद्ध ईसाई धर्म का सिद्धान्त विधवा विवाह आज वेदों के सैकड़ों मंत्रों से निकल पड़ा।

विधवा विवाह की बू।

आज विधवा विवाह चलाने वाले, जिन्हों ने स्वप्न में भी वेद नहीं पढ़ा वे वेदों को टटोलते और सूंघते जाते हैं, खूब खोज करते हैं कि किसी वेद मंत्र में विधवा विवाह की गन्ध मिल जावे, इस खोज में पं० बद्रीदत्तजी जोशी को नीचे लिखे वेद मंत्र से विधवाविवाह की बू आई है। जो वेद मंत्र विधवा विवाह की गंध दे रहा है वह यह है।

कुहस्विद्दोषा कुहवस्तोरश्विना,
कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं,
मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ ॥

ऋग्वेद १०।८।४०।२।

हे अश्विनी देवताओ! तुम रात में और दिन में कहां रहे, कहां तुमने आवश्यक पदार्थों को पाया और कहाँ तुम बसे? किस यजमान ने यज्ञशाला में तुम्हारी सेवा की जैसे शय्या में विधवा देवर की और स्त्री मैथुन काल में पुरुष की सेवा करती है।

इस मंत्र के अर्थ में विधवा विवाह का नाम नहीं (१) इस मंत्र के देवता अश्विनी कुमार हैं अतएव मंत्र में अश्विनी कुमार देवताओं का वर्णन है (२) निरुक्त ने इस मंत्र के अर्थ में विधवाविवाह नहीं लिखा, सायण भाष्य और जोशी जी के वेदार्थमें भी विधवा विवाह नहीं है वेद मंत्र में अश्विनी कुमारों की उपमा से याद किया गया है कि तुम रात को कहां रहे जैसे विधवा देवरके पास रहे। बस 'विधवेव देवरम्' इसी पद पर विवाद है, जोशी जी लिखते हैं कि विधवा का देवर के पास रहना ही विधवा विवाह सिद्ध करता है। निरुक्त ने देवर शब्द के दो अर्थ किये हैं, जोशी जी एक तो छिपा देते हैं और दूसरे को लिख देते हैं कि—

देवरः कस्माद् द्वितीयो वर उच्यते।

जोशी जी ने प्रथम तो यह चाल खेली कि देवर के एक अर्थ कहने वाले निरुक्त को दबा दिया, दूसरी चालाकी यह खेली कि "देवरः कस्मात्" इस निरुक्त को तो लिखा किन्तु इसका भाषा टीका नहीं लिखा, भाषा टीकाके लिखने से विधवा विवाह की सफाई होती थी-इस कारण उसको भी छिपाया

वस लिख दिया कि "विधवेव देवरम्, इसमें विधवा विवाह कहा है।

देवरः कस्मात्, इस निरुक्त का अर्थ यह है कि देवर क्यों कहा गया ? वह दूसरा पति है- इस कारण देवर कहलाता है। अब यहां पर एक विवेचन उठता है कि दूसरे पति को देवर कहते हैं या पति का छोटा दूसरा भाई देवर ही दूसरा पति हो जाता है, यदि दूसरे पति को देवर कहते हैं तो इसमें शास्त्र का विरोध आगे आजाता है,श्रुति-स्मृति, पुराण-इतिहास में कहीं पर भी यह नहीं लिखा कि दूसरे पति का नाम देवर है. हां इसके विरुद्ध यह लिखा है कि पति का छोटा भाई देवर होता है। जब दूसरे पति का नाम देवर ही नहीं और देवर के साथ विवाह लिखा है तव अन्य के साथ विधवा विवाह का होना ऐसा गया जैसे गधे के शिर से सींग। यदि 'देवरः कस्मात्' इस निरुक्त का हम यह अर्थ करें कि देवर ही विधवा से विवाह कर लेता है तव विधवा विवाह की सफाई हो गई, क्यों कि आज कल जितने विवाह हो रहे हैं वे सब अन्य पुरुषों के साथ हो रहे हैं, मृतक पति के छोटे भाई के साथ एक भी नहीं हुआ। निरुक्त का भाषा टीका होने पर विधवा विवाह में झगड़ा पड़ जावेगा-इस कारण जोशी जी ने 'देवरः कस्मात्' का भाषा टीका नहीं किया, समझ लिया कि 'न उपजेगा बांस न वजेगी बांसुरी, 'न नौ मन तेल होगा-न दुल्लो गौने जावेगी' न लोग भाषा समझेंगे न झगड़ा उठावेंगे। निरुक्त के संस्कृत की वानगी दिखला कर विधवा विवाह लिख दिया, जोशीजी ने

निरुक्त का अच्छा गला घोटा ऐसा तो आज तक किसी मुस-लमान ने भी नहीं किया क्यों न हो विधवाविवाह जो चलानाहै

निरुक्त ने देवर शब्द का दूसरा निर्वचन किया था कि 'देवरो दीव्यति कर्मा, इसको यदुदत्तजी ने छिपा लिया, मानों यह निर्वचन निरुक्त में है ही नहीं, या यदुदत्त जी को दीखा नहीं अथवा इरादा किया होगा कि कौन पाठक निरुक्त टटोलेगा ? इस अन्याय पूर्ण चालाकी को सोचकर कर लिख दिया कि 'कुहस्विद्दोषा, में विधवाविवाह है' देवरो दीव्यति कर्मा, इस निर्वचन पर निरुक्त का भाष्य करते हुये दुर्गाचार्य लिखते हैं कि

सहि भर्तृभ्राता नित्यमेव तया भ्रातृभार्यया देवनार्थं क्रीयतइति देवर इत्युच्यते।

अर्थात् भाई की स्त्री की सुश्रूषा करनेसे इसका नाम देवर है। इस निरुक्त से देवर के साथ विवाह नहीं हो सकता इसी कारण से जोशी जी ने इस निरुक्तको ऐसा छिपाया कि जैसे बाजीगर पिटारे में कबूतरों को छिपाता है। "देवरः कस्मात्" यह निरुक्त नया है, दुर्गाचार्य के समय में यह पाठ निरुक्तमें नहीं था इसी कारण से दुर्गाचार्य ने इस निरुक्त का भाष्य नहीं किया और देवरो दीव्यतिकर्मा, यह निरुक्त दुर्गाचार्य के समय में मौजूद था इसी कारण से इस पर भाष्य किया है, जोशी जी ने प्राचीन निरुक्त को छोड़ दिया नवीन को ले लिया—यह तीसरी चालाकी है। इस प्रकार की चालाकियों

से जो संसार को धोखा दिया जाता है विधवा विवाह वालों की दृष्टि में इसका नाम धर्म निर्णय है। कौन कहता है ये धार्मिक हैं, इनकी नश नश में चालाकियां है उन चालाकियों द्वारा धर्म के बहाने से हिन्दुओं को ईसाई बनाना ही इनका ध्येय है। इस प्रकार की चालाकी से विधवा विवाह सिद्ध करते समय जोशीजी को किञ्चित् भी लज्जा न हुई यह और भी आश्चर्य जनक है।

देवर निर्णय

जोशी जी के अर्थ में यह निर्णय नहीं हुआ कि विधवा के दूसरे पति को देवर कहते हैं या देवर ही विधवा का दूसरा पति बन जाता है। निर्णय से कौन प्रयोजन, वेद का बहाना ले लो और विधवा विवाह करलो। क्या विधवा विवाह के प्रेमियों में भारत जननीके कोई एक ऐसा मनुष्य पैदा कियाहै जो यह स्पष्ट कह दे कि दूसरे पति का नाम देवर है या देवर दूसरापति है-इस उलझन को विधवाविवाह वाले कभी सुलझा नहीं सकते, कारण यह है कि आज तक जितने विधवा विवाह के लेखक हुये हैं वेद से सर्वथा अनभिज्ञ हैं जबर्दस्ती से वेद पाठी बनकर निर्णय करते हैं ऐसे मूसलचन्द उलझनों को नहीं सुलझा सकते।

देवर-भौजाई।

देवर-भौजाई के साथ किस प्रकार का व्यवहार रक्खे इस को छिपाने के लिये और मनु के गहरे अभिप्राय को संसार से

उड़ा देने के लिये जोशी जी ने निरुक्त और वेद मंत्र की लीपा पोती की है, आज हम उस लीपा पोती को तो श्रोताओं के आगे रख चुके अब मनु जी के फैसले को सुनिये।

यदि किसी वर का फलदान हो गया हो और विवाह न हुआ हो। इस फलदान को भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न नामोंसे याद करते हैं किसी देशमें सगाई कहते हैं और किसी देश में लड़का पक्का करना कहते हैं, अन्य देशों में फलदान, किन्तु धर्मशास्त्र इसको वाग्दान कहता है। धर्मशास्त्र की दृष्टि में कन्या का पिता वर के पिता के यहाँ जाकर यह वचन देता है कि मैं अपनी कन्या को आप के पुत्र के साथ विवाहूंगा-इस वचन का नाम "वाग्दान" है। मनु जी इस वाग्दान के ऊपर लिखते हैं कि—

यस्या म्रियेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पतिः।
तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः॥ ६९॥

मनु० अ० ९।

वाग्दान होने के अनन्तर जिस कन्या का पति मर जावे उस कन्या को इसी विधान से देवर विवाह ले।

उस कन्या का वाग्दान होने पर देवर क्यों विवाह ले, इसके ऊपर मनु जी लिखते हैं कि—

न दत्वा कस्यचित्कन्यां पुनर्दद्याद्विचक्षणः।
दत्वा पुनः प्रयच्छन्हि प्राप्नोति पुरुषानृतम्॥७१॥

मनु० अ० ९।

कन्या का वाग्दान-एक को देकर फिर दूसरे से कन्या का विवाह न करे, करने पर कन्या के पिता को मिथ्या भाषण का दोष लगता है।

कन्या के पिताने लड़के के पिता से यह कहा है कि मैं अपनी लड़की का विवाह तुम्हारे लड़के से करूंगा, फलदानके पश्चात् वह मर जावे तो कन्या को उस लड़के के छोटे भाई देवर से ब्याह दे, ऐसा करने पर कन्याके पिता को झूठ बोलने का कलंक नहीं लगेगा, बस सिद्ध होगया कि कन्या का वाग्दान होने के अनन्तर यदि पति मर जावे तो उस कन्या को देवर विवाह ले।

मनु के इस भाव पर निरुक्त लिखता है कि–

देवरः कस्माद्द्वितीयो वर उच्यते।

पतिका छोटा भाई देवर क्यों कहा जाता है वाग्दान के अनन्तर और विवाह से पहिले वह दूसरा पति बन जाता है इससे उसका नाम देवर है; इसमें विधवा विवाह नहीं। विवाह होने से पहिले देवर दूसरा पति हो सकता है यह अभिप्राय मनुका है और यही निरुक्तका है, अब विचार शील मनुष्य विचारें कि इस निरुक्त में विधवा विवाह कहां है?

जब बड़े भाईका विवाह होजावे तो विवाहित भौजाईके साथमें देवरका कैसा व्यवहार हो इसके ऊपर मनु जी लिखते हैं कि–

भ्रातुर्ज्येष्ठस्य भार्याया गुरुपत्न्यनुजस्य सा।
यवीयसस्तु या भार्या स्नुषा ज्येष्ठस्य सा स्मृता॥५७

मनु० अ० ६।

बड़े भाई की जो स्त्री है वह छोटे भाई की माता है और छोटे भाई की जो स्त्री है वह बड़े भाई की पुत्रवधू है।

इसी भाव को स्पष्ट करने के लिये निरुक्त लिखता है कि "देवरो दीव्यति कर्मा" अर्थात् भाई की स्त्री की सुश्रूषा करने से इसका नाम देवर है। भाईके साथ विवाह होने पर भौजाई का देवर पुत्र तुल्य होता है और उस समय वह सेवा करता है, उस समय में भौजाई के साथ मातृ भाव रहता है, यह विषय जैसा मनु और निरुक्त से मेल खाता है उसी प्रकार इतिहास से भी मिलता है।

जिस समय राम लक्ष्मण सुग्रीव के यहां पहुँचे तब राम जी ने सुग्रीव से सीता का चुराया जाना कहा, यह सुन कर सुग्रीव बोले कि एक दिन हम यहां बैठे थे, एक स्त्री रोती हुई आकाश से जाती थी उसने हमें देखकर कुछ आभूषण डाल दिये ये रक्खे हैं पहिचानिये, सीता के ही ये आभूषण तो नहीं हैं। आभूषण सामने आये, रामचन्द्र जी ने देखे और देख कर कहा कि हम तो सीता को पहिचानते हैं आभूषणोंको नहीं पहिचानते, इन आभूषणों को लक्ष्मण जी को दो ये पहिचानेंगे। इसको सुनकर लक्ष्मण बोल उठे कि—

कुण्डले नैव जानामि नैव जानामि कङ्कणे।
नूपुरावेवजानामि नित्यंपादाभिवन्दनात्॥

मैं कुण्डल नहीं जानता और माता के कङ्कण भी नहीं जानता क्योंकि मैंने कभी ऊपर को दृष्टि नहीं डाली, मैं नित्य

प्रति माता के चरणों का अभिवन्दन करता था इस कारण नूपुर (पैरों के जेवर) को जानता हूं ।

अब यह स्पष्ट होगया कि विधवा के दूसरे पति को कोई भी वेद-शास्त्र, स्मृति-दर्शन. इतिहास पुराण देवर नहीं कहना और देवर बड़े भाई से विवाह हुई भौजाई से विवाह नहीं कर सकता, फिर 'कुहस्विद्दोषा' इस मंत्र में विधवाविवाह कैसा ? क्या कोई वेदज्ञाता मंत्र में से विधवा विवाह निकाल सकता है ? मंत्र और निरुक्त में विधवा विवाह का जिक्र नहीं अपने मन में भरे हुये व्यभिचार को निरुक्त का आश्रय लेकर वेद के मंत्र से निकाला जाता है, यह अत्याचार कभी भी सफल नहीं होगा । जब निरुक्त मनु से मिल कर देवर को विधवा का पुत्र लिखता है तब माता पुत्र का विवाह जोशी जी के ही वेद में होगा ? अभी क्या है, अभी तो विधवाविवाह वाले मां बेटे का विवाह करवाते हैं कोई दिन में भाई बहिन और बुआ भतीजे को विधवाविवाह वेदोंसे निकालेंगे यही इन की धार्मिकता है, इन्हें लज्जा भी नहीं आती ? कौन कहता है कि निरुक्त में विधवाविवाह है ? जिसमें हिम्मत हो लेखनी उठावे देखो फिर नानी याद आती है कि नहीं ।

कई एक मनुष्य यह कहेंगे कि निरुक्त में तो विधवा विवाह नहीं और वेद मंत्र में भी विधवाविवाह नहीं है यह भी हमने समझ लिया किन्तु 'विधवेव देवरम्' का क्या अर्थ है यहां पर दो उपमा दी गई हैं पहिली उपमा 'मर्यं योषा इव' है

अर्थात् जैसे कोई स्त्री रात को अपने पति की शय्या पर रहे ऐसे तुम दोनों रातको कहां रहे? यह उपमा सुख भोग की प्राप्ति में है अर्थात् तुमने ऐसा सुख कहां प्राप्त किया? दूसरी उपमा 'विधवेव देवरम्' है, तुम रात को इस भांति कहां रहे जैसे विधवा देवर की शय्या पर रहे? यहां पर सेवा द्योतक है। जब विधवा देवर की शय्या पर सोवेगी तो देवर उसकी सेवा करेगा, भौजाईकी सेवा करना ही देवरका धर्म है अर्थात् जैसे भौजाई की देवर सेवा करे और वह देवर की शय्या पर सोवे ऐसे तुम कहां सोये तथा तुम्हारी सेवा किसने की असली यह अर्थ है। कई एक हुज्जत बाज यह कहेंगे कि नहीं विधवा का देवर के साथ शय्या पर सोना है; इस के उत्तर में हम यही कहेंगे कि वेद मंत्रमें यह नहीं है अपनी तरफ से जोड़ा जाता है। दुर्जन तोष न्याय से हम इसको मान भी लें तो फिर वही विधवा लेंगे कि वाग्दान के अनन्तर और विवाह के पहिले जिस का पति मर गया है तथा उसका विवाह देवर से हो गया है। यदि पहिले पति से विवाह हो गया है तो फिर वह न तो देवर से विवाह कर सकती है और न शय्या पर सो सकती है। निरुक्तकार ने यह नहीं लिखा कि विवाह होने के अनन्तर जिसका पति मरे वह विधवा है किन्तु 'विधवेव देवरम्' इस का निर्वचन करते हुये निरुक्तकार लिखते हैं कि "धव इति मनुष्य नाम तद्वियोगाद्विधवा" धव नाम है पति का उसका वियोग होने से विधवा कहलाती है। वाग्दान के

अनन्तर पति का वियोग हुआ है इस कारण निरुक्त ने इस स्त्री को विधवा लिखा है।

कई एक मनुष्य अड़ियल टट्टू की भांति अड़ ही जावें कि हमतो ऐसी विधवा लेंगे, विवाह के बाद जिसका पति मरा हो इसके लिये हम इतना ही उत्तर देंगे कि "कुहस्विद्दोषा" इस मंत्रमें विधवाविवाह की विधि तो है नहीं, मंत्र ये तो कहता नहीं कि तुम विधवा का विवाह किया करो? मंत्रमें तो केवल 'विधवेव देवरम्' उपमा है। वैदिक साहित्य में स्त्री के विवाह पश्चात् विधवा होने पर विवाह लिखा ही नहीं? अब विवाह के बाद पति मर गया जिसका ऐसी स्त्री का देवर के साथ सोना ही नहीं बनेगा? यह उपमा ही वेद विरुद्ध हो जावेगी इस कारण मनु और निरुक्त के कथनानुकूल तुम को उपमा बैठानी पड़ेगी नहीं तो उपमा वेदशास्त्र के विरुद्ध होजावेगी? फिर तुम क्या करोगे? क्या कुरान और बाईबिलसे विधवा विवाह करके उपमा ठीक बिठलाओगे? पहिले वेदों से विधवा सिद्ध कर लो तब मन गढ़न्त उपमा बिठलाओ—नहीं तो मूर्ख बनकर भटकते फिरो? बस वेद, निरुक्त और उपमा तीनोंही ने विधवा विवाह पर पानी फेर दिया तथा अब जोशी जी विद्वन्मण्डली में मुख दिखलाने लायक नहीं रहे।

चौवे गये छब्बे होने, दुबे होकर आये।

जोशी जी 'कुहस्विद्दोषा, इस मंत्र से विधवा विवाह सिद्ध करने चले थे, वेद, निरुक्त और मनुने विधवा विवाह तो सिद्ध

नहीं करने दिया तथा जोशी जी अपनी चालाकियों से इतना नीचा देख गये कि अब वे पंडितों के सामने कभी भूलकर भी इस मंत्र से विधवा विवाह का मण्डन न करेंगे।

कोई कोई सज्जन यह पूछा करते हैं कि पंडित जी जोशी जी ने अपनी चालाकी से संसार को अंधा क्यों बनाया ? धर्म को छोड़कर अत्याचार पर जोशी जी क्यों उतरे ? इसके उत्तर में हम पबलिक के आगे एक दृष्टान्त रखते हैं।

दृष्टान्त यह है कि एक मास्टर स्कूल में लड़कों को पढ़ाता हुआ एक लड़केसे बोला कि हमने तुमको गधे से आदमी बना दिया, तुम हम को फिर भी प्रणाम नहीं करते ? मदरसे के बाहर खड़े हुये कुम्हार ने इस कथन को सुना, कुम्हार सीधा था उसने यही समझा कि वास्तव में यह मास्टर गधे को आदमी बना देता है। उस समय तो कुम्हार अपने घर चला गया किन्तु सायंकाल वह कुम्हार मास्टर के घर पर आया और मास्टर से कहने लगा कि क्या मास्टर साहब आप गधे का आदमी बना देते हैं ? मास्टरने कहा हां। कुम्हार बोला कि मेरे कोई लड़का नहीं; मैं आप को गधा दे जाऊं आप उस को आदमी बना दें। मास्टरने कहा कि गधा दे जा और साथमें सौ रुपये दे जा वर्ष रोज में आइये फिर हमारे पास से आदमी ले जाना। कुम्हारने कहा कि मास्टर साहब! वर्ष दिन तो बहुत है हमारे ऊपर दया करके छः ही महीने में बना दें, मास्टर बोले कि बहुत अच्छा। कुम्हार घर गया और घर से सौ रुपये एवं एक

गधा लेकर मास्टर को दे गया तथा अब रोज दिन गिनने लगा, छः महीने पूरे होने पर कुम्हार आया और मास्टर से प्रणाम करके आदमी मांगने लगा। मास्टरने कहा कि आज तीन रोज हुये तुम्हारा गधा आदमी बन गया, यहां से थोड़ी दूर पर एक बंगला है उस बंगले के पश्चिम की तरफ बैठा हुआ कुछ लिख रहा है कुम्हार बंगले पर गया वहां एक बाबू साहब बैठे हुये कुछ लिख रहे थे, कुम्हारने उनकी तरफ को देखा किन्तु वे कुछ न बोले, फिर कुम्हारने दुगड्डा और बोरा दिखलाया, बाबू बोले कि क्या ? कुम्हार बोला अब क्या क्या करते हो इस बोरेको नहीं देखते जो तुम्हारी कमर पर लादा जाता था और इस डण्डे से तुम्हें पीटा जाता था, मैंने सौ रुपये खर्च करके तुम्हें गधे से आदमी बनाया अब कहते हो कि क्या है ? बाबूजी भी मिजाजके बड़े तेज थे उन्होंने कुम्हारको खूब पीटा, कुम्हार रोता हुआ मास्टर साहबके यहां पहुँच सब इतिहास सुनाने लगा मास्टर बोले कि यदि वर्ष दिनमें बनता तब तो बहुतही अच्छा बनता किन्तु तुमने कहा कि छःही महीनेमें बनाओ, जल्दीके कारण मसाला तेज लग गया अब वह स्वामी होने पर भी तुम्हें कुछ नहीं समझता। बस अंग्रेजी शिक्षा का मसाला जोशी जी के दिमाग में बहुत तेज लग गया अब वे वेद और धर्मशास्त्र को कुछ नहीं समझते वरन् दोनोंको पीट पाट कर उन्हीं से विधवा विवाह निकाल रहे हैं इसी कारण से 'कुहस्विद्दोषा, इस मंत्रसे जोशी जी ने विधवा विवाह निकाला है।

इसके आगे उपाध्याय जी विधवा विवाह की पुष्टि में एक मंत्र और देते हैं वह यह है।

अदेवृ घ्न्यपतिघ्नी हेधि,

शिवा पशुभ्यः सुयमाः सुवर्चाः।

प्रजावती वीरसूर्देवृकामा,

स्योनेममग्निं गार्हपत्यं सपर्य॥

अथर्व० कां० १४ अ० २ मं० १८।

देवर और पति को दुःख न देने वाली स्त्री! तू इस गृहाश्रम में पशुओं के लिये कल्याण करने वाली अच्छे प्रकार नियम में चलने वाली शुभ गुण युक्त उत्तम संतान वाली शूर वीर पुत्रों को उत्पन्न करने वाली देवर की कामना करने वाली सुखवाली प्राप्तहो इस गृहपति अर्थात् गृहाश्रम सम्बन्धी अग्नि अर्थात् हवन करने के योग्य अग्नि को सेवन किया करे।

इस मंत्र और मंत्रार्थ में कोई झगड़ा नहीं और न मंत्रार्थ ही में विधवा विवाह है। झगड़ा केवल 'देवृकामा, पद पर है, जिसका अर्थ उपाध्याय जी ने भी 'देवर की कामना करनेवाली लिखा। 'देवृकामा, इसका अर्थ तो यही है कि 'मेरे देवर हो' इसका अर्थ विधवा विवाह कैसे कर लिया? यदि ऐसे ही अंड बंड अर्थ होने लगे तो फिर गजब हो जायगा, शास्त्रों में स्त्री के लिये 'पुत्रकामा' और पुरुष के लिये 'पुत्रकामः। पद कई स्थान में आये हैं जैसे 'पुत्रकामा पतिं गच्छेत्, और 'पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु, इनका सीधा अर्थ यह है कि

पुत्र की कामना रखने वाली स्त्री पति के पास जावे और पुत्र की कामना रखने वाला पुरुष युग्म रात्रियों में स्त्री के पास जावे। जब तुम 'देवृकामा' का यह अर्थ करोगे कि 'देवर से विधवा विवाह की कामना रखने वाली, तो फिर 'पुत्रकामा, का अर्थ होगा कि 'पुत्र से विधवा विवाहकी इच्छा रखनेवाली इसी प्रकार 'पुत्रकामः, का अर्थ होगा कि 'पुत्र से विधवा विवाह की इच्छा रखने वाला पुरुष, अच्छे २ अनर्थ होंगे एवं 'धनकामः'–अश्वकामः–भूकामः; आदि पदों का भी यही अर्थ होगा कि 'धन से विधवा विवाह की इच्छा रखने वाला' तथा घोड़े से और पृथ्वी से विधवाविवाह की इच्छा रखने वाला, 'वस्त्रकामः'का अर्थ होजायगा कि'कपड़ों से विधवाविवाह करने वाला उपाध्यायजीने अच्छा अर्थ किया पुरुप-पुरुष तथा स्त्रीपुरुष एवं पशु–मनुष्य और जड़—चेतन में परस्परमें विधवा विवाह करवा दिया। क्या कोई विचारशील मनुष्य 'देवृकामा, का 'देवरसे विधवाविवाह की इच्छा रखनेवाली, अर्थ कर सकता है पद तो 'देवृकामा' है इसमें 'विधवा' कहां और 'विवाह पद कहां ? किन अक्षरों का अर्थ विधवा विवाह होगा ? मालूम होता है कि ईश्वर की भूल उपाध्याय जी ठीक कर रहे हैं; यदि ऐसे अर्थ किये जावेंगे तो फिर बड़े बड़े अनर्थ होंगे—जैसे उपाध्यायय जी ने 'देवृकामा' में 'विधवा, और 'विवाह' ये दो पद अपने दिमाग से निकाल कर अर्थ में मिलाये हैं ऐसे ही दूसरे लोग अपने मनसे अनेक पद मिलाकर मन माने सैंकड़ों

अर्थ कर लेंगे। कोई मनुष्य यह अर्थ करेगा कि 'देवर से धन की इच्छा रखने वाली, कोई यह अर्थ करेगा कि'देवर से पति के मृत्यु की इच्छा रखने वाली, कोई २ यह भी अर्थ कर देंगे कि 'देवर से मल मूत्र उठवाने की इच्छा रखने वाली, जैसे उपाध्याय जी को यह स्वत्त्व है कि 'देवृकामा, के अर्थ में दो पद अपनी तरफ से मिला दें-क्या यह हक दूसरों को नहीं है? उपाध्याय जी 'देवृकामा' का अर्थ नहीं लिखते-साधारण मनुष्यों की आंखों में धूल झोंक कर जबर्दस्ती से विधवा विवाह निकाल रहे हैं। 'देवृकामा' का सीधा अर्थ यह है कि 'देवर की इच्छा रखने वाली, यह अर्थ ठीक भी है, सभी स्त्रियां चाहती हैं कि हमारे देवर हो या हमारे देवर रहे-इसमें से विधवा विवाह कहां से निकला? निकाले कोई वीर? हम चैलेंज देते हैं। सामने आना बहुत कठिन है, कोई भी मनुष्य 'देवृकामा, का 'देवर से विधवा विवाह की इच्छा रखने वाली' अर्थ करने को सात जन्म तो क्या सात लाख जन्म में भी सामने न आवेगा।

उपाध्याय जी एक इसी प्रकार का 'अघोरचक्षुः' ऋग्वेद का मंत्र देते हैं इस मंत्र में और मंत्र के अर्थ में कोई झगड़ा नहीं, झगड़ा वही 'देवृकामा' पद पर है, यहां पर उपाध्याय जी 'देवृकामा' का अर्थ करते हैं कि 'दूसरे पति को चाहने वाली' यहाँ पर उपाध्याय जी ने 'देवर' का अर्थ 'दूसरा पति' किया है, यह अर्थ उनके मन का है, अपने २ मनका सब को

अखतियार है जो चाहे 'जूते' का अर्थ 'रोटी' बनाले, 'माता' का अर्थ 'औरत' करले 'ऊंट' का अर्थ 'खीरा' करले, 'घुइयाँ' का अर्थ भैंस करले किन्तु विद्वानों की दृष्टि में यह अर्थ-अर्थ नहीं है अनर्थ है। जैसे 'जूते' का अर्थ 'रोटी' और 'माता' का अर्थ 'औरत' एवं 'ऊंट' का अर्थ 'खीरा' तथा 'घुइयां' का अर्थ 'भैंस' कभी नहीं हो सकता इसी प्रकार हजार बार शिर पटकने पर भी, खोपड़ी फोड़ डालने पर भी 'देवर' का अर्थ 'दूसरा पति' नहीं हो सकेगा। मंत्र, ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक, कल्प, स्मृति, अंग, इतिहास, पुराण, काव्य-कोश, चम्पू नाटक प्रभृति किसी संस्कृत के ग्रन्थ में भी 'देवर' का अर्थ 'दूसरा पति' नहीं है, उपाध्याय जी ने विधवा विवाह रूपी जालमें फांसने के लिये यह अनोखा अर्थ बनाकर तैयार किया है, यह है अंग्रेजी शिक्षा का असर, शास्त्र विरुद्ध बनावटी अर्थ बनाकर विधवा विवाह चलाना? यहां पर भी 'देवृकामा' का अर्थ 'देवर की इच्छा रखने वाली' और 'देवर' का अर्थ 'पति का छोटा भाई' है।

जोशी जी वेद की फिलासफी मनुष्यों के आगे रखते हुये एक स्त्री के दश पति बतलाते हैं, दश पति की पुष्टिमें जो मंत्र दिया है वह यह है।

उत यत्पतयो दश स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः।
ब्रह्मा चेद्धस्तमग्रहीत्स एव पतिरेकधा॥

अथर्व ५।४।१७।८

इस मंत्र का अर्थ जोशी जी बड़े जायके का लिखते हैं जरा उसको भी सुनलें, सुनते ही तबियत उछल पड़ेगी अर्थ यह है।

'यदि पहिले किसी स्त्री के अब्राह्मण दश पति भी हों, ब्राह्मण यदि एक भी हाथ पकड़े तो वह सच्चा पति है'।

इस अर्थ में यह पता नहीं लगा कि इस मंत्र के कौन भाग से विधवा विवाह टपक पड़ा? जब मंत्र में से विधवा विवाह न निकला तब जोशी जी ने टीका टिप्पणी का आरम्भ कर दिया, उसको भी देखिये।

'इस से सिद्ध है कि पूर्वकाल में पतिके मरने पर ही नहीं किन्तु जीवितावस्था में भी स्त्रियां दूसरा पति कर सकती थीं और अब्राह्मण अन्य पतियों की पत्नी होते हुये भी कोई स्त्री ब्राह्मण की पत्नी बन सकती थी'।

क्या मजा रहा, जोशी जी बड़े मजे के आदमी हैं विधवा विवाह सिद्ध करने चले थे आपने विधवा के साथ साथ सधवाओं के भी दूसरे विवाह सिद्ध कर दिये। जोशी जी का मतलब यह है कि विधवा विवाह की कथा कौन कहे वेद तो पति वाली औरतों को भी विवाह करने की आज्ञा देता है। फिर विवाह भी कितने एक दो नहीं, पूरे ग्यारह। दश पति तो और जातियों के और एक पति जोशी जी की बिरादरी का? अच्छा है। तथा एक और उत्तमता कि जब जोशी जी की बिरादरी का मनुष्य पति हो जावे तो बाकी के सब पति अपने आप छूट जायं। यह बिरादरी वाला पति बहुत प्रबल बनाया

गया, इसकी सूरत देखते ही अन्य पतियोंमें भगदड़ पड़ जाय, दश भी मिलकर तो इसको नहीं गिरा सकते? वाह जोशी जी! आपने अच्छा इंसाफ किया, अन्य जाति के दश पतियों को तो कमजोर बनाया, और अपनी बिरादरी के पति को पहलवान्? क्यों न हो घुटने पेटों की ही तरफ झुकते हैं। ऐसे विवाहों में स्त्रियों की आमदनियाँ भी बहुत अच्छी रहेंगी एवं स्त्रियों की स्वतंत्रता का भी बड़ा मजा है, जो पति जरा गुस्सा हुआ कि स्त्री फौरन दूसरे पतियों से पिटवा कर सीधा कर देगी।

जोशी जी को मंत्र भी कैसा मिला मानों साक्षात् तत्व पदार्थ की पुड़िया मिल गई। एक पंडित १६ वर्ष काशी जी में अध्ययन करते रहे, एक दिन पंडित जी एक वैद्यराज के पास पहुँचे और कुछ देर बैठे रहे, बैठे २ क्या देखते हैं कि वैद्यराज के पास जितने रोगी आते हैं वैद्य प्रायः सभी को प्रथम जुल्लाब दिया करते हैं, पंडित जी ने सोचा कि अगर संसार में कोई तत्व पदार्थ है तो यही जुल्लाब है। बस पंडित जी वैद्यराज से दो तीन जुल्लाब कोई सनाय का, कोई अरण्डी के तेलका, कोई जमाल गोटे का सीख अपने घरको चले आये, इनके गाँवमें आते ही यह हल्ला मचगया कि अमुक पंडित १६ वर्ष काशी से पढ़कर लौटा है और इधर पंडित जी ने भी ग्राम वालों से यह कह दिया कि हम एक ऐसी तत्व पदार्थकी पुड़िया सीख आये हैं कि उससे दुनियांके सभी काम सिद्ध हो

जाते हैं अतः ग्रामवासियों ने यह भी जान रक्खा था, एक दिन उसी ग्रामके एक धोबी का गधा खोगया, धोबी बड़ा हैरान था इतनेमें उस धोबीकी स्त्रीने कहा कि "तू इतना हैरान क्यों होता है क्यों नहीं उस पंडित के पास जाकर जो काशी में १६ वर्ष पढ़ा है एक तत्त्व पदार्थ की पुड़िया ले आता" धोबी ने वैसा ही किया, धोबी पडित जी के पास जा हाथ जोड़ बोला कि महाराज! मेरा गधा खोगया है, पंडित जी बोले तू क्यों नहीं हमारे पास से एक तत्त्वपदार्थ की पुड़िया ले जाता कि जिससे तेरा गधा मिल जाय। पंडित जी ने धोबी को सनाय के जुलाब की एक पुड़िया दी, धोबी को पुड़िया खाने के कुछ देर बाद पाखाना लगा और धोबी अपने गांव में एक तालाब पर जो गांव के मकानों के पीछे था, पाखाने गया। वहां उसका गधा चर रहा था, धोबी गधा पा बड़ा प्रसन्न हुआ और उस को सच्चा विश्वास होगया कि तत्वपदार्थ की पुड़िया बड़ी अच्छी है। कुछ दिन के बाद उस गांव के राजा के ऊपर एक फौज चढ़ी आती थी, राजा साहब इस दुःखसे बहुतही दुःखित थे और यह विचार नित्य ही राज-सभा में प्रविष्ट रहता था। एक दिन यह धोबी राजा साहब के कपड़े धोकर लेगया और बहुत काल तक बैठा रहा, किसी ने इससे कपड़े न लिये तो धोबी ने राजा साहब के खिदमतगारों से कहा कि 'भाई साहब! कपड़े ले लो मुझे और काम है'। राजा के भृत्यों ने कहा 'तुझे कपड़ों की पड़ी है राजा साहबके

ऊपर अमुक राजा की फौज चढ़ी आती है सो यहाँ आफत मची है तू अपनी निराली ही गाता है। तब तो धोबी नें कहा राजा साहब उस पंडित को जो कि १६ वर्ष काशी में पढ़ा है बुलवा कर क्यों नहीं तत्वपदार्थ की पुड़िया ले लेते जो दुश्मन की सेना अपने आप फतह होजाय। भृत्यों ने जाकर राजा से कहा कि यह धोबी यह कहता है, राजाने धोबी को बुलवाकर पंडित जी की व्यवस्था पूछी। धोबीने कहा अन्नदाता! पंडित जी के पास एक तत्वपदार्थ की ऐसी पुड़िया है कि उससे सब काम सिद्ध होजाते हैं, एक बार मेरा गधा खो गया था, मैं पंडित जी के पास जाकर तत्व पदार्थ की पुड़िया ले आया और उसे खाई कि फौरनही गधा मिलगया। राजाको निश्चय आगया अतः राजा साहबने पंडितजी को बुलवा बड़ी प्रतिष्ठा की और पीछे हाथ जोड़ कर पूछा कि महाराज पंडित जी! हमारे ऊपर अमुक राजा की फौज चढ़ी आती है तथा उस राजा की सेना बड़ी प्रबल है सो क्या उपाय करें? पंडित जी ने कहा महाराज, हम आप की सेना को एक ऐसी तत्वपदार्थ की पुड़िया देंगे जिस से कि शीघ्र ही शत्रु का पराजय और आप का विजय होगा लेकिन आप हमें दो मन जमालगोटा मंगा दीजिये। राजा साहब ने वैसा ही किया, पंडित जी ने कूट पीस तैयार कर रक्खा, जब राजा पर शत्रु की सेना चढ़ आई और इस राजा की सेना भी लड़ाई के लिये वर्दी पहिन शस्त्र ले तैयार हुई, तब राजा साहब ने काशी के पंडित को बुलाकर कहा महाराज, अब आप कृपा कर अपनी सेना को

तत्व पदार्थ की पुड़िया दीजिये। पंडित जी ने सब सेना का मय राजा के जुलाब दे दिया, जिस समय इस राजा की सेना शत्रु सेना के सन्मुख पहुँची तो सारी सेना को दस्त आने शुरु हो गये, सौ सिपाही पाखाने से आते हैं तो दो सौ पाखाने बैठे हैं और पांच सौ लोटा लेकर पाखाने को भाग रहे हैं, कुछ पाखाना जाने के लिये तैयार हो रहे हैं, सुबह से शाम तक पाखाने की कतार ही बन्द नहीं होती। विपक्षी राजा ने देखा कि ओ हो! हजारों आदमी तो हर दम पाखाने बैठते हैं नहीं मालूम इसकी सेना कितनी है? मंत्रियों को बुलाया और बुलाकर विचार किया कि सुबह से साम तक लक्षों सिपाही तो पाखाने आते हैं, मालूम होता है कि इस राजा की सेना १० लाखसे कमनहीं है। अब क्या करें तथा हमारे पास कुल १५ हजार फौज है तो इतनी फौज के सामने १५ हजार सिपाहियों की फौज क्या करेगी? अन्त में निश्चय किया और वह राजा रात ही को भाग गया। प्रातःकाल जब शत्रु का मैदान खाली देखा तो यह राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और लगा बड़ाई करने कि पंडित हो तो ऐसा हो तथा तत्वपदार्थ की पुड़िया हो तो ऐसी हो। पंडित जी को बुलाकर उनका पूजन किया और और वस्त्र, आभूषण देकर साथ में असंख्य रुपया भी दिया। अब तो पंडित जी बड़े प्रसिद्ध हो गये, पंडित के घर पुड़िया माँगने वालों के समूह के समूह आने लगे, और सब के काम होने लगे।

दृष्टान्त बनावटी मालूम देता है तो भी तत्व पदार्थ की पुड़िया ने गजब कर डाला। जोशी जी को जो 'उतयत्पतयः' वेद मंत्र मिला है, वेद मंत्र क्या है मानो साक्षात् तत्वपदार्थ की पुड़िया है। इस मंत्र से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं देखिये तो (१) इसी मंत्र से विधवा विवाह सिद्ध हुआ (२) और इसी मंत्र से सधवा स्त्रियों का पुनर्विवाह निकल आया (३) एवं इसी मंत्र से जाति पाँति बंधन टूट गया क्यों कि एक स्त्री के दश पति तो अन्य जाति के रहेंगे और एक ब्राह्मण रहेगा (४) इसी मंत्र से डाक्टर गौर का तलाक बिल बन गया क्यों कि जो स्त्री ने ब्राह्मण पति से विवाह किया कि अन्य जातियों के दश पति फौरन ही ऐसे भागे जैसे धुएं से मच्छर भाग जायं। मंत्र क्या मिल गया पारस की पथरी या कीमिया अथवा तत्व पदार्थ की पुड़िया ही मिलगई। अभी तो जोशी जी ने इसका पूरा अर्थ नहीं किया, जब जोशी जी इस मंत्रका पूरा अर्थ करेंगे तब तो आर्यों का तिब्बत से आना या सृष्टि के आरंभ में मनुष्य स्त्री आदि के जोड़े ऊपर से टपकना प्रभृति समस्त विज्ञान इसी मंत्र से निकल आवेगा।

हम तो इसी चक्कर में पड़े रहे कि जोशी जी का अर्थ सही है या गलत किन्तु अक्ल के पहाड़ सुधारक और लीडरों ने जोशी जी के अर्थको फौरन जांच लिया कि सर्वथा सत्य है। अब भारतवर्ष के सुधारक इसका उद्योग कर रहे हैं कि उनके

कुटुम्ब में जितनी भी बहू-बेटियां हैं उन के "उतयत्पतयः" इस वेद मंत्र की आज्ञानुसार पूरे एकादश विवाह होने चाहिये, किसी किसी कुटुम्ब में दयालु लीडरों ने कुछ ऐसे विवाह कर भी दिये और कई एक ने ऐसे विवाह करने का आरम्भ किया है, ईश्वर ने चाहा तो वर्ष दो वर्ष में ही सब सुधारक वैदिक धर्मी कंजर तथा समस्त सुधारकों की स्त्रियां वारांगना बन जावेंगी, क्यों न हो जोशी जी के वेद विज्ञान का चमत्कार है।

मुझे नहीं मालूम सुधारक और लीडर जोशी जी की लिखी 'विधवोद्वाह मीमांसा' को कैसे सत्य मानते हैं। हो सकता है कि इन के ऊपर ईसाई होने का भूत सवार है किन्तु जोशी जी ने जो संसार को धोखे में डालने के लिये यह जाल रचा है इस का क्या मतलब है? यह हमारी समझ में नहीं बैठा। हाँ-हम इतना कह सकते हैं कि जिस प्रकार का जाल जोशी जी ने रचा है, उस प्रकार का जाल मनुष्यत्व पर दृष्टि डालता हुआ कोई भी मनुष्य बना नहीं सकता। जरा जोशी जी के न्याय, निर्णय, विद्वत्ता, धर्म धुरीणता और मनुष्यत्व पर दृष्टि डालिये एवं 'उतयत्पतयः' मंत्र का ठीक अर्थ देखिये।

(उत) और (स्त्रियाः) स्त्री के (यत्) जो (पूर्वे) पहिले (अब्राह्मणाः) ब्राह्मण से भिन्न (दश पतयः) दशपति होते हैं (चेत्) जब (ब्रह्मा) ब्राह्मण (हस्तमग्रहीत्) मंत्र पूर्वक पाणिग्रहण करे तो (स एव) वही (एक धा) एक (पतिः) पति होता है।

इस मंत्र में जो दश पति कहे हैं वे मनुष्य नहीं हैं-देवता हैं। वेदमें पहिले तो सोम गन्धर्व, अग्नि इन तीन देवों को स्त्री के पति कहा गया है, उन के साथ विवाह नहीं होता, वे स्त्री द्वारा सन्तान भी पैदा नहीं करते, शरीर की रक्षा करते हुये शरीर और शारीरिक गुणों की उत्कर्षता करते हैं, इसी से उन को पति कहा गया है।

"इमांत्वमिन्द्र मीढ्वः" इस मंत्र से पाणिग्रहण के समय स्त्री ईश्वर से प्रार्थना करती है भगवन्! ऐसी कृपा करिये कि मेरे दश तो पुत्र हों और एक यह पति बना रहे। इस में कहे हुये दश पुत्र, दश देवों की कृपा से स्त्री उत्पन्न करती है, पुत्र देने के कारण उन दश देवों को वेद ने पति कहा है। उन्हीं दश देवों को "उतयत्पतयो दश" मंत्र के द्वारा पति और उन की संख्या दश बतलाई है।

वेद के दूसरे मंत्रों में उन दश देवों के नाम भी गिनवाये गये हैं, उन नाम गिनवाने वाले मंत्रों को जोशी जी ने छिपा लिया। दो मंत्र चुराये, एक को पबलिक के आगे रक्खा। इस घृणित चोरीसे जोशी जी ने प्रत्येक औरतके ग्यारह पति सिद्ध किये हैं। वेद का न मानना पाप है, जो ११ पति न करे वह स्त्री पापिनी है, यह भाव यहां निकलता है किन्तु हम को शोक के साथ कहना पड़ता है कि पं० बदरीदत्त जैसे मनुष्य वेद के दो मंत्र चुरा और एक मंत्र पबलिक को दिखला इस निन्दनीय चालाकी से संसार की आँख में धूल झोंक प्रत्येक स्त्री के ११

पति बतला रहे हैं। इस प्रकार के कपटी और छली मनुष्यों का धर्म के निर्णय में कोई अधिकार नहीं, फिर नहीं मालूम संसार या कुछ मनुष्य इन की बनाई पुस्तक को क्यों हाथ में लेते हैं।

स्त्री के दश पति तो जोशी जी ने बतला दिये और उन दश पतियों का नाम वेद से हम बतलाते हैं सुनिये—

ते वदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्विषे,
कूपारः सलिलो मातरिश्वा।
वीडुहरास्तप उग्रं मयोभू-
रापो देवीः प्रथमजा ऋतस्य ॥ १ ॥
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां,
पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसी-
दग्निर्होता हस्तगृह्यानिनाय ॥ २ ॥

अथर्व ५। ४। १७।

सोम, अकूपार, सलिल, मातरिश्वा, मयोभू, आपः, वरुण मित्र, अग्नि, और बृहस्पति ये दश देवता शरीर रक्षक, तथा संतान दायक होने से पति हैं। इसी से विवाह सम्बन्धी मंत्रों में "मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः" ऐसा लिखा है। ऋग्वेद के तीन देवताओं के अन्तर्गत ये दश देवता आते हैं।

जब वेद ने पूर्व के दशपतियों के नाम गिनवा कर बतला।

दिया कि ये स्त्री के रक्षक दश पति देवता हैं, तब वेद विरुद्ध दश पतियों को मनुष्य बतलाना यह जोशी जी का वेदों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है। वेद चाहे कुछ भी कहे, चाहे जितना चिल्लावे किन्तु जोशी जी एक न सुनेंगे और वेद को मार कूट कचूमर निकाल इसी वेद से जबर्दस्ती विधवाविवाह निकाल देंगे क्यों कि आज सुधारक समुदाय वेद का निर्णय नहीं चाहता-विधवा विवाह चाहता है। फिर जोशी जी ने सुधारकों की इच्छापूर्ति न की तो मनुष्य शरीर धारण करने का क्या लाभ? श्रोताओं! इस प्रकार के अत्याचारों द्वारा आज विधवा विवाह सिद्ध किया जाता है और तुम कुंभकर्णी नींद में गाफिल हो कर घरांटे ले रहे हो फिर हम धर्म निर्णय किस को सुनावें—

जिस पातिव्रत धर्म की रक्षा के लिये भारतीय देवियों ने संसार को अचंभे में डाल दिया आज सुधारक लोग उसी तुम्हारे प्राण प्यारे धर्म को पैरों से कुचल कर व्यभिचार को वैदिक धर्म सिद्ध कर रहे हैं। याद रक्खो पछताओगे, मिश्रियों के बदले बराबर के पैसे मत खरीदो, कीमती जवाहिरात देकर उनके बदले तुल्य तोल में कौड़ियां लेने का इरादा मत करो नहीं तो पछताओगे? दीन हीन भारत, गुलाम भारत, विदेशियों के पैरों के नीचे कुचला हुआ भारत, आज भी ऊंचे को शिर उठा रहा है। तो स्त्रियों के एक पतीत्व रूपी अलौकिक धर्म से उठा रहा है, पातिव्रत धर्म की शक्ति मामूली शक्ति नहीं—इस

शक्ति के आगे समस्त शक्तियों को शिर झुका देना पड़ता है, इसकी पुष्टि में हम आपके आगे एक इतिहास रखते हैं।

पवित्र भारत में महाभारत का संग्राम चल रहा था सत्रह दिन संग्राम हो चुका था. इसी रात्रि को दुर्योधन शिविर से चल अपनी माता गांधारी के पास आया, माता के चरण छुए प्रणाम किया, माता ने आशीर्वाद दिया। गांधारी ने पूछा कि बेटा दुर्योधन है? दुर्योधन ने कहा माता हां! गांधारी ने प्रश्न किया बेटा कैसे आया? दुर्योधन बोल उठा कि जननि! मैं अंतिम प्रणाम करने आया हूं, कल महाभारत का अठारवां दिन है मेरा और भीम का गदा युद्ध होगा उसमें भीम मुझे मार लेगा, मैंने यह उचित समझा कि मरने से पहिले एकवार माता को और प्रणाम कर लूं।

गांधारी ने पूछा भीष्म कहां हैं? दुर्योधन ने उत्तर दिया कि घायल होकर शर शय्या पर पड़े हैं। गांधारी ने फिर प्रश्न किया द्रोणाचार्य, कर्ण, शल्य, दुःशासन प्रभृति वीर क्या कर रहे हैं? दुर्योधन ने कहा कि माता ये सब लोग दिव्य पराक्रम दिखला कर वीर गति को चले गये। गांधारी ने समझ लिया कि समस्त सेना मरगई अब दुर्योधन का कोई रक्षक नहीं है यह समझ गांधारी बोली कि बेटा! मैं तुझे जीवत रहने का एक उपाय बतलाती हूं, यदि तुम उस उपाय को करोगे तो फिर मर न सकोगे। उपाय यह है कि महाराज युधिष्ठिर प्रबल धार्मिक और दयालु हैं, यदि तुम उनके पास जाकर अपने बचने

की प्रार्थना करो वे तुम्हें अवश्यही बचनेका उपाय बतलावेंगे।

दुर्योधन मरने से डर रहा था उसने माता की आज्ञा को स्वीकार किया और तत्काल युधिष्ठिर के पास पहुँच उनके चरणों में गिर गया। राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन को उठा कर छाती से लगाया और दो चार खरी खोटी सुनाई कि तुमको इतना नहीं मालूम। वेदोक्तविधि से तुम्हारे मस्तक पर राज तिलक हुआ है और तुम हमारे चरणों पर गिरते हो?राजतिलक पाकर मनुष्य साधारण नहीं रहता उसमें देवशक्तियां आजाती हैं, वह ब्राह्मणों को छोड़कर अन्यके चरणोंमें नहीं गिर सकता, तुमने बुरा किया, तुम घबरा गये, अच्छा बोलो क्या चाहते हो? दुर्योधन ने कहा कि कल भीमसेन के साथ मेरा संग्राम होगा और यह निश्चयहै कि भीमसेन मुझे मार लेगा, मैं आपकी सेवा में आया हूँ, मृत्यु से बचने का कोई उपाय बतलाइये?

इसका नाम है धर्म। जिस दुर्योधन ने जहरमिश्रित लड्डू खिलाकर भीम को गंगा में डाल दिया और जिस दुर्योधन ने पाण्डवों को फूंकने के लिये लाक्षा मण्डल में आग लगा दी, जिस दुर्योधन ने जुये में कपट करके जबर्दस्ती हार बतलादी, जिस दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी को नग्न करना चाहा, जिसके उत्पात से बारह बरस का बनवास और एक वर्ष का गुप्त वास भोगा। आज दुर्योधन के समस्त दुष्ट व्यवहारों को भूलकर उसी शत्रु दुर्योधन को मृत्यु से बचने का उपाय युधिष्ठिर बतला रहे हैं।

युधिष्ठिर बोले दुर्योधन! तुम जानते हो कि तुम्हारी माता गांधारी सच्ची पतिव्रता है। विवाह के समय आप की माता ने देखा कि मेरे पति अंधे हैं। विचार किया जब मेरे पति संसारके किसी पदार्थको नहीं देखते तो फिर मेरा भी कोई सत्व नहीं कि मैं संसार के पदार्थों को देखूं। यह समझ कर तुम्हारी माता ने अपने नेत्रों पर पट्टी बांध ली आज तक वह पट्टी ज्यों की त्यों बंधी है। इस उच्च श्रेणी की पतिव्रता स्त्रियों में अलौकिक शक्ति होती है, यह हमने व्यास जी से सुना है। यदि तुम सर्वथा नग्न हो कर अपनी माता के सामने चले जाओ और वह एक दृष्टि से तुमको देखले तो तुम्हारा शरीर वज्र से भी मजबूत हो जावेगा। एक भीम की कथा कौन कहे सहस्रों भीम भी तुमको युद्ध में नहीं मार सकेंगे।

युधिष्ठिर के इस कथन को सुन और युधिष्ठिर को प्रणाम कर दुर्योधन माता के समीप चल दिया, रास्ते में 'कालिया' मिल गये. कालिया ने पूछा कि राजन्! कहां गये थे? दुर्योधन ने उत्तर दिया युधिष्ठिर से मिलने गया था। अनुमान किया कि युधिष्ठिर ने कुछ न कुछ काम अवश्य ही बिगाड़ा होगा यह समझ कर कालिया बोले तुमको मालूम है मरते हुवे द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को शाप दे गये हैं कि "विकलो भव धर्मज,, युधिष्ठिर तू पागल हो जायगा। अब तीन दिन से युधिष्ठिर पागल होगया। जो जी में आता है बका रहता है तुमसे तो कुछ नहीं कहा? बतलाइये तो क्या क्या बातें हुई?

दुर्योधन बोला मुझसे यह कहा है कि तुम अपनी माता के सामने नग्न होकर चले जाओ, यदि तुम्हारी माता एक दृष्टि से तुम्हें देख दे तो तुम्हारा शरीर वज्र का होजाय और फिर तुम शत्रु के मारे न मरो।

इसको सुन कर कालिया बोले अरे राम राम ! दुश्मन पागल होने पर भी शत्रुता ही करता रहता है, कैसी वेइज्जती करना चाहता है, भला इतना बड़ा लड़कों का बाप दुर्योधन ! तू जननी के सामने नग्न होकर कैसे जा सकेगा ? बस युधिष्ठिर को तो तुम्हारी वेइज्जती से काम है, सच तो बतलाइये कि यह दुष्ट व्यवहार तुम्हारी समझ में आगया ? दुर्योधन ने कहा हमारी समझ में नहीं आया, इससे वे इज्जती वहुत है किन्तु राजा युधिष्ठिर सच बोला करता है संभव है उसकी यह भी बात सत्य हो, इसको मानकर हमारी इच्छा है कि हम माता के सामने नग्न होकर पहुँच जावें। कृष्ण बोले एक काम करो फूलों के गजरों का जांघिया बना और गुह्य स्थान को ढांक तुम माता के सामने चले जाओ, अब कैसे वेइज्जती होगी ? दुर्योधन वहुत अच्छा कह कर चल दिया।

माता के स्थान पर पहुँच फूलों से गुह्यस्थान को ढांक माता के सामने गया और युधिष्ठिर का समस्त कथन सुना दिया, सुन कर माता ने कहा कि

यथावदुक्तं किल धर्मराज-

-स्तथैव पुत्रात्र समागतः किम्।

बेटा ! राजा युधिष्ठिर ने तुमसे जैसे कहा क्या तुम वैसे ही आये हो ? सुन कर दुर्योधन ने कहा हाँ । गांधारी वार वार अन्तःकरण में पतिके चरणों का ध्यान किया और कुछ शोक करने लगी कि पुत्र के शरीर की रक्षा के लिये आज हमको अपने नियमका उल्लंघन करना पड़ा,अन्तमें आंखसे पट्टी खोली और एक दृष्टि से दुर्योधन को देख फिर पट्टी को नेत्रोंसे बांध लिया, कुछ विचार कर बोली कि-

मार्गे त्वया सम्मिलतोऽधुनाकिं-
कृष्णः किमूचे वचनं वदस्व ।

क्या रास्ते में कृष्ण मिल गये थे और उन्होंने तुझसे क्या कहा ? इस कथन को सुन कर दुर्योधन चकित होगया और विचार करने लगा कि कृष्ण के मिलने का ज्ञान माताको कैसे हुआ,विचारके पश्चात् दुर्योधनने माता से कृष्णका मिलना बतलाया और साथ ही साथ यह भी प्रश्न किया कि कृष्ण के मिलने का ज्ञान आपको कैसे हुआ ? इस प्रश्न को सुन कर गांधारी बोली कि-

योगेन शक्तिः प्रभवेन्नराणां ।
पातिव्रतेनापि कुलाङ्गनानाम् ॥

जो शक्ति मनुष्यों को योग द्वारा प्राप्त होती है वही शक्ति कुलाङ्गनाओं को पातिव्रत धर्म से मिलती है । मैंने दिव्य दृष्टि से कृष्ण का मिलना जान लिया, तेरा और तो समस्त शरीर

वज्र से भी मजबूत हो गया किन्तु जितने शरीर पर तुमने फूलों के गजरे लगाये हैं। वह कच्चा रह गया, यदि वहां पर शस्त्र लगेगा तो तुम मर जावोगे। कृष्ण ने तुम्हारे मरने के हेतु से ही गुलाबों पर मेरी दृष्टि का अवरोध करा दिया। इसको सुन कर दुर्योधन बोला कि मातः! अब मैं सर्वथा नग्न हुआ जाता हूँ आप समस्त शरीर पर दृष्टि डाल दें।

माता ने दुर्योधन से कहा कि बच्चा! अब वह भव्य शक्ति जाती रही अब दृष्टि में इतना महत्व नहीं रहा कि उसके पात से मनुष्य शरीर वज्र सम हो उठे। दुर्योधन चुप रह गया किन्तु गांधारी को कृष्ण पर क्रोध आया और शाप देने को तैयार हो गई, कवि लिखता है कि-

> इत्थं वदन्ती भुवनं दहन्ती,
> गृह्णन्ति तोयं किल सव्यपाणौ।
> कृष्णा त्वया मे निहिताश्च पुत्रा-
> नश्यन्तु ते यादवयूथसंघाः॥

इस प्रकार बातें करती हुई मानो समस्त भुवन को भस्म कर देगी, क्रोध युक्त गांधारी ने सव्य हाथ में जल लेकर कृष्ण को शाप दिया कि मेरे पुत्रों को तैने ही मरवाया है याद रख मेरे इस शाप से तेरे कोटि कोटि यादव परस्पर में लड़ कर नष्ट हो जावेंगे।

यह शाप किसी साधारण पुरुष को नहीं हुआ, यह उस

भगवान् कृष्ण को हुआ है जिसके रोम रोम में कोटि कोटि ब्रह्माण्ड घूमते हैं। कवि लिखता है कि-

अनेकब्रह्माण्डविसर्गकर्ता,
हर्तापि भर्ता च तथैव तेषाम्।
अस्यास्तु शापं पतिदेवताया,
न चान्यथा कर्तुमधीश्वरोऽभूत्॥

भगवान् कोटि कोटि ब्रह्माण्डों को रचते हैं तथा उनकी पालना करते हुये संहार कर देते हैं उनमें समस्त शक्तियां विद्यमान रहते हुये भी यह शक्ति न हुई कि गांधारी के शाप को हटा कर अपने यादव वंश को बचा लेते—यह है पातिव्रत धर्म का गौरव।

एक तरफ वेद-धर्मशास्त्र, पुराण-इतिहास तुमको यह शिक्षा देते हैं कि स्त्रियों की रक्षा करो, पवित्र शिक्षा द्वारा जाने हुए धर्मानुष्ठान से उनको पतिव्रता बनाओ-तो दूसरी तरफ नर पशु सुधारक वेदों का गला घोट, धर्मशास्त्र का कचूमर निकाल, इतिहास, पुराण को कुचल तुमको यह समझाते हैं कि समस्त संस्कृत साहित्य में स्त्रियोंके लिये गंधर्व की भाँति व्यभिचार ही मोक्षदाता कहा गया है। हमने दोनों पक्षों के भाव आपके आगे रख दिये आप जिस पक्ष को कल्याण कारक समझें उसी का अवलम्बन करें इतना कहते हुये आज हम अपने इस व्याख्यान को यहां पर ही समाप्त करते हुये आप से प्रार्थना करते हैं कि एक वार बोलिये प्रभु कृष्णचन्द्र भगवान् की जय! हरिः ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

॥ श्रीहरिश्शरणम् ॥

वेद विवेचन ।

यं योगिनो योगबलेन साध्यं,
कुर्वन्ति तं कः स्तवनेन स्तौति ।
अतः प्रमाणेन सुसिद्धिदोऽस्तु,
तमेकदन्तं शरणं व्रजामः ॥१॥
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं,
गवेन्द्रादिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्करं भस्मना भूषिताङ्गं,
भवानीकलत्रं भजे पंचवक्त्रम् ॥२॥

मा ननीय सभापति ! एवं पूज्य विद्वन्मण्डलि !! तथा आदरणीय सद्गृहस्थ वृन्द !!! मनुष्य के स्वरूप की रक्षा और सुख शांति एवं मोक्ष की प्राप्ति ये समस्त लाभ धर्मानुष्ठान से होते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि सुख, प्रतिष्ठा, राज्य, उन्नति प्रभृति किसी लोभ से भी धर्म में शिथिलता न करे। जरासी शिथिलता आजाने पर फिर वह शिथिलता संभाली नहीं संभलती वरन् शिथिलता में शिथिलता आकर

धर्म से पतन हो जाता है। जरा सा चूकने पर कुछ का कुछ हो जाता है इसके दो तीन दृष्टान्त आपके आगे रख में अपने व्याख्यान का आरंभ करूंगा।

प्रथम दृष्टान्त यह है कि एक बार एक पुरुष कुछ बीमार था उसने एक वैद्य के पास आकर अपना इलाज पूछा, वैद्य-राज ने कहा कि तुम प्रथम जुलाब लो तब हम तुम्हारी दवा करेंगे। जुलाब की दवा देकर वैद्यराज ने कहा कि खिचड़ी खाना। यह मनुष्य मूर्ख था.इसने कहा वैद्यराज! आपने खाने को क्या बतलाया? वैद्यराज ने कहा 'खिचड़ी'। यह जान वह बीमार पुरुष वैद्यराज को प्रणाम कर अपने घर चल दिया, लेकिन थोड़ी दूर चल कर खिचड़ी भूल गया फिर लौट कर वैद्यराजसे पूछा वैद्यराज! आपने खाने को हमें क्या बतलाया था? वैद्यराज बोले 'खिचड़ी'। अब यह पुरुष खिचड़ी शब्द को रटता हुआ घर को चल दिया और शीघ्र शीघ्र खिचड़ी खिचड़ी कहते जा रहा था परन्तु शीघ्र शीघ्र खिचड़ी खिचड़ी कहने में वह पुरुष खिचड़ी के स्थान में खाचिड़ी रटने लगा। यह खाचिड़ी खाचिड़ी रटता हुआ जा रहा था कि मार्ग में एक काश्तकार ने जो अपने खेत से चिड़ियां उड़ा रहा था इस के मुख से खाचिड़ी खाचिड़ी शब्द सुन इसे खूब पीटा और कहा कि मैं तो चिड़ियां उड़ा रहा हूं और तू कहता है खाचि-ड़ी खाचिड़ी? इसने कहा तो फिर क्या कहूं? काश्तकार बोला कहो उड़चिड़ी उड़चिड़ी। अब यह पुरुष उड़चिड़ी उड़चिड़ी

रटता हुआ आगेको चला, कुछ दूर पर एक बहेलिया चिड़ियाँ पकड़ रहा था। यह पुरुष उधर ही से उड़चिड़ी उड़चिड़ी कहता हुआ जा निकला। बहेलिया ने क्रोध में आकर कहा देखो तो इस बदमाश को, हम तो पकड़ रहे हैं और मुश्किल से एक एक चिड़िया पकड़े मिलती है पर यह कहता है कि उड़चिड़ी उड़चिड़ी। उसने भी इसे खूब पीटा, इसने रोते रोते बहेलिया से पूछा कि भाई, फिर क्या कहूँ? बहेलिये ने बतलाया कि कहो आवत जाव फंस फंस जाव आवत जाव फंस फंस जाव, अब यही रटते हुये यह पुरुष आगे चला, एक स्थान में चोर चोरी कर रहे थे इतने में यह जा निकला और यह रटता था कि आवत जाव फंस फंस जाव, आवत जाव फंस फंस जाव। चोरों ने कहा यह बड़ा पाजी है, देखो हम लोगों ने तो बड़ी कठिनता से सेंध लगा पाई है और यह कहता है आवत जाव फंस फंस जाव, आवत जाव फंस फंस जाव। उन्हों ने इसे बहुत पीटा यह बिचारा फिर रोने लगा और चोरों से पूछा अच्छा अब हम क्या कहें? चोरोंने कहा लै लै जाव धरि धरि आव, लै लै जाव धरि धरि आव। अब इसेही रटता हुआ यह पुरुष आगे चला तो चार मनुष्य एक मुर्दा लिये हुये जा रहे थे, यह अपनी ध्वनिमें रट रहा था कि लै लै जाव धरि धरि आव, लै लै जाव धरि धरि आव। यह शब्द सुनते ही उन चारों पुरुषों ने मुर्दे को रखके इसे खूब दुरुस्त किया और कहा कि अबे उल्लू हमारा तो नाश होगया और तू कहता है कि लै लै जाव धरि

धरि आव, लै लै जाव धरि धरि आव। इस पुरुष ने रोते हुये उन चारों से पूछा तो महाराज, फिर हम क्या कहें? उन्हों ने कहा कि तुम कहा राम करै ऐसा दिन कबहूँ न होय, राम करै ऐसा दिन कबहूं न होय, अब यही रटते हुये यह एक राजा के ग्राम से जा निकला, वहां तमाम उम्र में राजा साहब के पहिले ही लड़का हुआ था जिसकी प्रसन्नता में कहीं बाजे बज रहे थे, कहीं बंदूकें तोपें छूट रही थीं, कहीं यज्ञ-होम हो रहे थे ऐसे समय में यह पुरुष यह कहते हुये कि 'राम करै ऐसा दिन कबहूं न होय' राम करै ऐसा दिन कबहूँ न होय' निकला और यह शब्द राजा के कान तक पहुँचा राजा साहब ने इस की हड्डी हड्डी ढीली करवा दी और कहा क्यों रे मक्कार, तमाम उम्र में हमारे लड़का हुआ, तमाम गांव प्रसन्नता मनावे और तू कहता है कि राम करै ऐसा दिन कबहूं न होय? इस पुरुष ने रोते हुये फिर राजासे पूछा अच्छा महाराज,तो हम क्या कहें? राजा साहबने बतलाया कि राम करै ऐसा दिन नित उठ होय, राम करै ऐसा दिन नित उठ होय। अब इसीको रटते हुये यह पुरुष चला कि एक गांव में आग लगी हुई थी, गांव वाले सभी विचारे आपत्ति में थे यह पुरुष यह कहते हुये कि राम करै ऐसा दिन नित उठ होय राम करै ऐसा दिन नित उठ होय, जा निकला, लोगों ने इसे खूब मारा। इस प्रकार जहाँ यह गया वहां इसकी दुर्दशा हुई।

दृष्टान्त गवांरू है परन्तु भाव अच्छा है। यदि यह पुरुष

"खिचड़ी" को याद रखता तो आपत्ति में न पड़ता। जिस प्रकार अपने ध्येय पदार्थ खिचड़ी को भूल कर संकट भोगना पड़ा इसी प्रकार ध्येय "धर्म के लक्ष्य" को भूल कर मनुष्य आपत्ति में पड़ जाते हैं। इस विषय में योगिराज भर्तृहरि ने गंगा का उदाहरण दिया है। गंगा अपने स्थान से च्युत हुई इसका विवेचन यह है।

शिरः शार्वं स्वर्गात्पतति,
शिरसस्तत्क्षितिधरम्।
महीध्रादुत्तुङ्गादवनि-
मवनेश्चापि जलधिम्॥
अधोधो गाङ्गेयं पद-
मुपगतास्तोकमथवा।
विवेकभ्रष्टानां भवति,
विनिपातः शतमुखः॥

गंगा-स्वर्ग से गिर कर शंकर की जटा में आई, वहां भी न रह सकी, फिर पतन हुआ हिमालय पर्वत पर गिरी, हिमालय पर्वत से गिर कर पृथ्वी पर आई यहां भी नहीं ठहर सकी, गिरती गिरती समुद्र में पहुँची वहां पर अपने नाम और रूप का अस्तित्व मिटाकर समुद्र बन गई।

जो जाति अपने ध्येय धर्म से किञ्चित् भी गिर जाती है

फिर वह भावुक नहीं रहती उसका गिरना बराबर आरंभ रहता है और अन्त में गंगा की भांति अपने नाम तथा रूपको मिटाकर किसी अन्य जातिके साँचेमें ढल जाती है।

कुछ दिन की बात है स्वा० दयानन्द जी ने हिन्दुओं के वेद को नवीन सांचेमें ढाला, इन सिद्धान्तोंके मानने के लिये कुछ मनुष्य समुदाय तैयार हुआ, यह प्रथम पतन है। इस मनुष्य समुदाय का नाम स्वामी जी ने "आर्यसमाज" रक्खा किन्तु स्वामी जी ने कई एक विषय वेदों के अपने ग्रंथों में ज्यों के त्यों रक्खे जैसे "विधवा विवाह का खण्डन" स्वर्गीय देवताओं का मानना, द्विजों का उपनयन कर आचार्य कुल में वेद पढ़ाना, शूद्रों को विना उपनयन गुरुकुल भेज वेद का मंत्र भाग छोड़ अन्य ग्रंथ पढ़ाना, मुसलमान, ईसाई, भंगी, चमार के भोजन का निषेध, ईश्वर की नित्य परिक्रमा और मृतक पितरों का श्राद्ध तर्पण, नित्य वेदाध्ययन, असत्य का त्याग। स्वामी जी के ये सिद्धान्त आर्यसमाज मानती रही किन्तु पतन आरंभ हो गया था अतएव फिर पतन हुआ और उपरोक्त सिद्धान्त आर्यसमाज ने छोड़ दिये। पतन बराबर जारी रहेगा तथा अन्त में आर्यसमाज ईसाई सांचे में ढलकर अपने नाम और रूप को खोदेगी।

अब शेष हिन्दुओं का भी पतन आरंभ हुआ है। यद्यपि खान पान, जाति भेद में गड्डम गड्डा करने का व्यवहार भी पतित का लक्षण है किन्तु द्विजों में विधवा विवाह चलाना

इस प्रकार का पतन है जो थोड़े ही काल में द्विजत्व स्वरूपको संसार से विदा कर देगा । जो द्विज विधवा विवाह का नाम सुन कर चिढ़ उठते थे और गालियां देने लगते थे, आज वे ही विधवा विवाह का "श्रीगणेशायनमः" कर रहे हैं । इन्हीं द्विजों में कुछ मनुष्य ऐसे भी हो गये हैं जो विधवा विवाह रूपी व्यभिचारको वैदिक धर्म बतलाने के लिये पुस्तकें लिखते हैं । उन्हीं में से पं० बदरीदत्त जी जोशी हैं । आपका कथन है कि वेदोंमें विधवा विवाह मौजूद है, इसकी पुष्टि में जोशी जी एक मंत्र देते हैं वह यह है ।

इमा नारीरविधवाः सुपत्नी,
राञ्जनेन सर्पिषा संविशन्तु ।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना,
आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे ।

ऋग्वेद ७ । ६ । २७

इस मंत्रका सायण भाष्य यह है । (अविधवाः-जीवतभर्तृकाः) जीता है पति जिनका [सुपत्नीः-शोभनपतिकाः] सुन्दर है पति जिनका [इमा नारीः-एता नार्यः) ये स्त्रियां [आञ्जनेन-सर्वतोञ्जन साधनेन] अंजन साधन से [सर्पिषा घृतेनाक्तनेत्राः सत्यः] आँखों में घृत लगाकर [संविशन्तु गृहान्प्रविशन्तु] घरों में प्रवेश करें [तथा अनश्रवः अश्रुवर्जिताः] आंसू रहित [अनमीवाः-अमीवा रोगस्तद्वर्जिता

मानसदुःखरहिता इत्यर्थः] शरीर के दुःख और मानसिक क्लेश रहित [सुरत्नाः-रत्नैरलंकृताः] रत्नोंसे अलंकृत [जनयः जनयन्त्यपत्यमिति जायाः] संतानोत्पन्न करने वाली स्त्रियां [अग्रेसर्वेषां-प्रथमत एव] सबसे पहिले [योनिम्-गृहम्] घरमें [आरोहन्तु आगच्छन्तु] आवें ।

वेद मंत्र और सायण भाष्य हमने दोनों ही सुना दिये, न तो मंत्र के अक्षरों में विधवाविवाह है और न वेद भाष्यकार सायण ने ही यह लिखा है कि इस मंत्र में विधवाविवाह है। इस मंत्रका अभिप्राय तो यह है कि स्त्रियाँ वस्त्र आभूषणों से विभूषित होकर आनन्द से रहें। जोशी जी को भी इस मंत्र में विधवा विवाह न मिला, मंत्र के टटोलने पर भी जब मंत्र से विधवा विवाह न निकला तब जोशी जी ने विधवाविवाह सिद्ध करने के लिये अनुमानका घोड़ा दौड़ाया जोशीजी का अनुमान यह है।

"पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का हृदय कोमल होता है उन पर शोक या हर्ष का प्रभाव अधिक और शीघ्र पड़ता है उससे बचाने के लिये ही उन्हें शोक और विलाप से रोका गया है। इस मंत्र में जो स्त्रियों के विशेषण दिये गये हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि उस समय का पुरुष समाज इनको इस भयानक दशा में जिसमें आजकल लाखों बाल विधवायें अपना दुःखमय जीवन व्यतीत करती हैं देखना पसन्द नहीं करता था"।

भाव जोशी जी का यह है कि फौरन विधवाविवाह कर देते थे, जोशी जी का यह अनुमान वैसा ही है जैसा सभा में

प्रवेश करते हुये दुर्योधन ने थल में जल का और जल में थल का अनुमान करके गहरी चोट खाई और कपड़े भिगो डाले थे या यों कहिये कि जोशी जी का अनुमान लालबुझक्कड़ से कम नहीं।

एक गांव में लालबुझक्कड़ रहते थे एक दिन वे अपने बहुतसे शिष्यों को साथ लेकर किसी अन्य गाँवको चले चलते चलते रास्ते में एक गांव आया उस गांव के किनारे पर ऊख से रस निकालने का एक पत्थर का कोल्हू पड़ा था, इन लोगों ने कोल्हू न कभी देखा था और न सुना था। उसको देखकर ये चकित हो गये और विचार करने लगे कि यह क्या है? बहुत विचारा किन्तु बुद्धि ने काम न दिया अन्त में गुरुजी लाल बुझक्कड़ से प्रश्न किया गुरु जी महाराज! यह क्या है? गुरूजी ने भी कभी कोल्हू नहीं देखा था अनुमान दौड़ाने लगे कि यह है तो क्या है? थोड़ी देर में अनुमान ने सफल मनोरथ कर दिया। गुरू जी तत्काल बोल उठे-

लाल बुझक्कड़ बूझ कर, और मत बूझो ज्ञानी।
आसमान से टूट पड़ी, खुदा की सुरमादानी॥

गुरूजी समझते हैं कि जैसे तुम आँखोंमें लगाने के लिये सुरमा सुरमेदानी में रखते हो इसी प्रकार आसमान में रहने वाला खुदा भी सुरमेदानी रखता है, उसी का नीचे का भाग यह टूटकर जमीन पर गिर पड़ा। सब कहने लगे वाह गुरूजी वाह, अच्छा बतलाया। बस जोशी जी का अनुमान इस अनुमान से

कुछ कम नहीं है वेद कहता है स्त्रियों को सत्कार से खुश रक्खो जोशी जी अनुमान करते हैं कि विधवा हो जाने पर दूसरा विवाह कर देते थे। झगड़ू धोबी ने एक और ही अनुमान लगाया वह कहता है कि साधारण मनुष्य स्त्रियों को इस प्रकार के कपड़े और आभूषण दे नहीं सकता था अतएव अनुमान है कि एक स्त्री बीस विवाह कर लेती थी तब उसे उत्तमोत्तम वस्त्र तथा रत्न जटित आभूषण मिल जाते थे यही वेद मंत्र का भाव है।

बुद्धू काश्तकार कहता है हमको तो यह अनुमान होता है कि पुराने जमाने में स्त्रियां तो घर में घसी रहती थीं और मनुष्य जंगलमें पहुँच हल जोतने आदि का काम करते थे बस इस वेद मंत्र में पर्दे का वर्णन है।

तुल्सी वैश्य कहता है हमारा दूसरा अनुमान है यह मंत्र उस समय की दशा कहता है जब गर्मी के दिनों में रात को चोर आ जाया करते थे। जेवर और कपड़े वाली युवा औरतों को मकान में धंसाओ वे भीतर की साँकल लगा लेंगी एवं तुम बाहर चोरों से लड़ो।

विश्वम्भर ब्राह्मण बोल उठा हमारे अनुमान में तो यह आया कि उत्तम कपड़े और जेवर वाली जवान स्त्रियों को मकान में धंसाओ और किसी प्रकार का दुःख न दो तथा मकान के दरवाजे तुम चूल्हा बना भोजन तैयार करो औरतें भोजन बनावेंगी तो उनको दुःख होगा।

हमने झगड़ू-बुद्धू, तुलसी-विश्वम्भर से कहा कि तुम्हारा अनुमान बिल्कुल गलत, उन्होंने कहा क्यों ! वे इन्साफी क्यों करते हो ? हमारा अनुमान गलत और जोशी जी का सही ? यह हम नहीं मानेंगे। या तो सबके अनुमान गलत-नहीं तो सबके सही।

जब जोशी जी वेद से विधवाविवाह सिद्ध नहीं कर पाये तब पाश्चात्य शिक्षासे शिक्षित दिमाग का अनुमान उठा लिया और वह भी सर्वथा झूठा। जोशीजी ! उस जमाने में अंग्रेजी नहीं थी धर्म को छोड़कर कोई जीवित रहना भी नहीं चाहता था, उस समय के अनुमान से काम लेते ! आपने अच्छा अनुमान लिया वेद का मंत्र और बाइबिल का अनुमान ! इस मंत्र का स्पष्टी करण करते हुये मनुजी लिखते हैं कि-

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥५५॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥५६॥

मनु० अ० ३।

कल्याण की इच्छा रखने वाले पिता भ्राता पति देवर स्त्रियों को आभूषण और वस्त्रों से विभूषित कर सत्कार से रक्खें॥५५॥ जहां स्त्रियों का सत्कार होता है उस घर में देवता विहार करते हैं और जहां स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ समस्त क्रिया निष्फल हो जाती हैं॥ ५६ ॥

मनुजी ने 'इमा नारी' इस मंत्र का यह स्पष्टी करण किया है। हमें विश्वास है कि जोशी जी तथा सुधारक लोग मनुका अनादर करके फर्जी जोशी जी के दूषित अनुमान को ही सत्य मानेंगे अतएव अब हम जोशी जी की ऐसी नश पकड़ते हैं कि जिससे जोशी जी और सुधारकों की चीचपट ही बन्द होजाय।

'इमा नारी' इस मंत्र में जो स्त्रियों का अञ्जन लगाना और उत्तमोत्तम वस्त्र आभूषण पहिनना कहा गया है वह जीवित पतिवाली स्त्रियों का कहा गया है। इसमें सबूत यह है कि मंत्र में "अविधवाः" पद पड़ा है। 'अविधवा' पद का आ जाना सिद्ध करता है कि इस मंत्र में कहा हुआ आचरण सधवा स्त्रियों का ही होसकता है विधवाओं का नहीं हो सकता। वेद ने सधवाओं का कर्तव्य तो बतला दिया किन्तु विधवाओं का बतलाना शेष रहा, अब 'इमा नारी' इसके आगे के मंत्र "उदीर्ष्वनारी" में वेद विधवाओं के कर्तव्य को बतलाता है। वेद ने 'उदीर्ष्व नारी' मंत्र में बतलाया कि स्त्री पति मरने के शोकको छोड़कर अपने बाल बच्चों का पालन करे और ब्रह्मचर्य से रहे 'उदीर्ष्व नारी' मंत्र के अर्थ का स्पष्टी करण प्रथम व्याख्यान में हो चुका है। जोशी जी का यह कार्य कि 'एक मंत्रको छिपाना और एक को बतलाना, सधवाओं के कर्तव्यों को विधवाओं में लगाना कौन कहता है चालबाजी नहीं है? चालबाजी, पौलसी, धोखा, संसार को अंधा बनाना यह अत्याचार है, इतने अत्याचार करने पर भी लज्जा नहीं आती यह

भयङ्कर शाक है। कहिये श्रोताओं? 'इमानारी, क्या इस मंत्र में विधवाविवाह है?

विधवा विवाह की पुष्टिमें दो मंत्र और दिये जाते हैं वे ये हैं–

या पूर्वं पतिं वित्वाथान्यं विन्दते परम्।
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः॥२७॥
समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति॥२८॥

अथर्व० का० ९ अनु० ३ सू० ५

इन मंत्रों के अर्थ उपाध्याय जी इस प्रकार लिखते हैं। जो स्त्री पहिले पतिको पाकर उसके पीछे अन्य दूसरेको प्राप्त होती है वे दोनों पाँच भूतों को सींचने वाले ईश्वर को अर्पण होते हुये न अलग हों। बराबर स्थान या दर्जावाला होता है पुनर्भू अर्थात् उस स्त्री के साथ जिसका पुनर्विवाह हुआ है दूसरा पति, जो पांच भूतों के सींचने वाले परमात्मा को दान किया है। ज्योति जिसकी ऐसे को अर्पण करता है।

इस स्थलमें विधवाविवाह सिद्ध करनेके लिये उपाध्यायजी ने वेदों पर वह घोर अत्याचार किया है कि जिस अत्याचार को पतित हिन्दू भी नहीं कर सकता। हिन्दू क्या, इतना अत्याचार तो वेदों पर औरंगजेब और चंगेज खाँ ने भी नहीं किया। जब हम सोचते हैं एक ब्राह्मणके द्वारा वेदों पर घोर अत्याचार कैसे हुआ? तब हमको यही पता लगता है कि यह डायन

अंग्रेजी शिक्षा का फल है। हिन्दुओ! तुम लार्ड मेकाले के बहकाये हुये आज वेदों का कतल कर रहे हो, संसार में इससे अधिक बेशर्मी तुम्हारे लिये क्या होगी?

यहां पर न सधवाके विवाह का जिक्र है और न विधवाके विवाहका, तथा न इन दोनों मंत्रों का विधवा विवाह देवता ही है। यहां पर तो अनुवाक् के आरंभ से पंचौदन अजयाग चल रहा है। अजयाग की विधिका ही वर्णन नहीं वरन् उसकी पवित्रता का भी वर्णन है। यह याग बड़े बड़े पापियों को पवित्र करता है, यह यज्ञ पापोंके प्रायश्चितके लिये किया जाता है। इस यज्ञ के करने से पापियों को भी सुख साध्य समस्त सामिग्री मिलती है इतनाही नहीं किन्तु नरक जानेवाले मनुष्य को भी स्वर्ग की प्राप्ति होती है। "या पूर्वं" इस मंत्र के पहिले के दो मंत्र सुनिये उन से यह सब स्पष्ट हो जावेगा।

पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा-
पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणा ज्योतिषं ददाति ॥२५॥
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति-
वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति।
स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं-
पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २६ ॥

अथर्व० ६।३।५

जो पञ्चौदन यज्ञ करके स्वर्ण दक्षिणा देता है उसको पांच प्रकार के सुवर्ण, पाँच नवीन वस्त्र और इच्छाओं की पूर्ति करने वाली पांच कामधेनु प्राप्ति होती हैं। २५। जो मनुष्य पञ्चौदन यज्ञ करके स्वर्ण की दक्षिणा देता है उसके शरीर में सुवर्ण की ज्योति और उसके शरीर में अभेद्य वर्म (कवच) तथा वस्त्र होते हैं एवं वह मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है।

इन दो मंत्रों ने यह स्पष्ट कर दिया कि-इस प्रकरण में पञ्चौदन यज्ञ के महत्व का वर्णन है। इन्हीं दोनों मंत्रों के आगे "या पूर्वं पतिं वित्वा" और इसके आगे "समान लोको भवति" यह मंत्र है अब इन मंत्रों का अर्थ सुनिये।

जो स्त्री पहिले पति को प्राप्त होकर दूसरे पति को प्राप्त होती है यह स्त्री और इसका दूसरा पति वे दोनों मिल कर यदि पञ्चौदन याग करें तो फिर इनका वियोग नहीं होता, पुनर्भू स्त्री का दूसरा पति समान लोक को जाता है यदि वह पञ्चौदन यज्ञ करके सुवर्ण दक्षिणा दे।

पञ्चौदन यज्ञ पाप के दूर करने के लिये है और इस यज्ञके करनेसे पापियोंको भी स्वर्ग की प्राप्ति होतीहै इसको "पञ्चरुक्मा ज्योतिरस्मै" मंत्र में स्पष्ट कर दिया है। स्त्री का दूसरा पति ग्रहण करना पाप है, तथा पुनर्भू का पति बनना मनुष्य के लिये पाप है। ये स्त्री पुरुष समान लोक हैं, दोनों ही एक सी गतिको प्राप्त होते हैं। यदि ये दोनों अजयाग करेंगे तो इनका कभी वियोग नहीं होगा और ये दोनों सुवर्ण

ज्योति शरीर वाले; नवीन दृढ़ कमन्त्र तथा वस्त्रों को प्राप्त हो स्वर्ग में जायेंगे, यह अजयाग का फल है। जो ये दोनों न करेंगे तो इनका वियोग होगा और समान लोक होने से दोनों ही नरक में गिरेंगे। वियोग होना एवं नरक में गिरना यह उसी पाप का फल है जो स्त्री ने दूसरा पति किया है और पुरुष पुनर्भू स्त्रीका पति बना है—यह इस प्रकरणका मतलब है।

प्रायश्चित-पापका ही होता है। जैसे मलीन वस्त्र ही धोबी को धुलने के लिये दिया जाता है, साफ वस्त्र कोई नहीं देता क्योंकि वस्त्र धुलने का फल यही है कि उसमें मैल न रहे—इसी प्रकार पापों के दूर करने के लिये धर्मशास्त्र ने प्रायश्चित्त बतलाये हैं। जो पवित्र है, जिसके पाप नहीं, उसके लिये कोई प्रायश्चित नहीं।

यदि स्त्री का दूसरा पति करना और पुरुष का पुनर्भू का पति बनना पाप न होता तो फिर पाप के दूरीकरणार्थ इन दोनों को अजयाग क्यों बतलाया जाता है तथा वेद यह क्यों लिखता कि अजयाग के करने से दोनों का वियोग नहीं होता और वे अजयाग के प्रभाव से स्वर्ग को जाते हैं? सिद्ध हो गया कि स्त्री का दूसरा पति स्वीकार करना तथा पुरुष का पुनर्भू स्त्री को ग्रहण करना पाप है और यह पाप प्रायश्चित्त रूप पंचौदन अजयाग करने से दूर हो जाता है।

जिस कर्म के ऊपर प्रायश्चित्त बतलाया गया हो उसको कर्तव्य करने योग्य कैसे मान लिया जावेगा। भूल से या प्रमाद से किसी धार्मिक मनुष्य के हाथ से गौ का मृत्यु हो

आवे, जिसकी भूल और प्रमाद से गौ का मृत्यु हुआ है उसके लिये जो प्रायश्चित है उसको सुनिये

उपपातकसंयुक्तो गोघ्नो मासं यवान्पिबेत् ।
कृतवापो वसेद्गोष्ठे चर्मणा तेन संवृतः ॥१०८
चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणं मितम् ।
गोमूत्रेणाचरेत्स्नानं द्वौ मासौ नियतेन्द्रियः ॥१०९
दिवानुगच्छेद्गास्तास्तु तिष्ठन्नूर्ध्वं रजः पिबेत् ।
शुश्रूषित्वा नमस्कृत्य रात्रौ वीरासनं वसेत् ॥११०
तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेत्तु व्रजन्तीष्वप्यनुव्रजेत् ।
आसीनासु तथासीनो नियतो वीतमत्सरः ॥ १११
आतुरामभिशस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः ।
पतितां पङ्कमग्नां वा सर्वोपायैर्विमोचयेत् ॥११२
उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् ।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्तितः ॥११३
आत्मनो यदि वान्येषां गृहे क्षेत्रेऽथवा खले ।
भक्षयन्तीं न कथयेत्पिबन्तं चैव वत्सकम् ॥११४
अनेन विधिना यस्तु गोघ्नो गामनुगच्छति ।
स गोहत्याकृतं पापं त्रिभिर्मासैर्व्यपोहति ॥११५

मनु० अ० ११ ॥

उपपातक से संयुक्त गौ का मारने वाला एक मास पर्यन्त यवों को पीवे, मुण्डन किया हुआ और गौ के चर्म से वेष्टित होकर गोष्ठ में रहे। १०८। इन्द्रियों को वश में करता हुआ दो मास पर्यन्त गो मूत्र से स्नान किया करे एवं खारी लवण वर्जित हविष्य अन्न का चौथे काल में थोड़ा भोजन किया करे।१०९। दिनमें उन गायोंके पीछे चले और खुरसे ऊपर उड़ी धूल को खड़ा हुआ पीवे एवं सेवा तथा अन्नसे सत्कार करके रात को वीरासन हो कर पहरा देवे। ११०। मत्सरता रहित नियम पूर्वक दृढ़ होकर बैठी हुई गौके पीछे बैठ जावे और चलती हुईके पीछे चले तथा खड़ी हुईके साथ खड़ा रहे।१११। व्याधियुक्ता एवं चोर व्याघ्रादि के भयों से आक्रान्ता और गिरी तथा कीचड़ में फंसी हुई गौ को सब उपायों से छुड़ावे। ११२। उष्णकाल, शीत, वर्षा एवं अधिक वायु के चलने में यथा शक्ति गौ का बचाव न करके गो हत्यारा अपना बचाव न करे। ११३। अपने वा दूसरे के घर में वा खेत में अथवा खलियान में भक्षण करती हुई गौ को और दूध पीते हुये उस के बच्चे को प्रसिद्ध न करे ११४। इस विधानसे जो गोहत्या वाला गौ की सेवा करता है वह उस गो हत्याके पाप को तीन महीने में दूर कर देता है। ११५।

इस प्रायश्चित्त का क्या अभिप्राय है। क्या इसका यह मतलब है कि गोहत्या करना धर्म है और तुम किया करो? सभी मनुष्य यह कहेंगे कि प्रायश्चित्त का यह प्रयोजन नहीं है,

इसका मुख्य उद्देश्य तो यह है कि गो हत्या पाप है और भूल से हुई गोहत्या का यह प्रायश्चित्त है। जब सभी प्रायश्चित्तों का यह मतलब है तो फिर स्त्री के दूसरे पति स्वीकार करने पर जो प्रायश्चित्तरूप पंचौदन याग बतलाया तो फिर दूसरा पति स्वीकार करना पाप क्यों नहीं? क्या स्वार्थी सुधारकों के पास इसका कोई उत्तर है? जिसके ऊपर प्रायश्चित्त है वह कभी धर्म हो ही नहीं सकता किन्तु जोशी जी को इस निर्णय से क्या काम? उनका मुख्य उद्देश्य तो यह है कि हज़ार चालाकियां, लक्ष पाप करने पर भी यदि धोखा देकर विधवाविवाह सिद्ध हो सकता हो तो उसकी सिद्धि अवश्य करना। भला जब जोशी जी विधवा विवाह चलाने पर कमर बांधलें तो फिर किसकी ताकत है जो विधवा विवाह को रोक दे।

इसके ऊपर तो हमको दर्जियों का दृष्टान्त याद आ गया एक बार एक गांव में दो दर्जियों में परस्पर लड़ाई हुई, उसने अपनी सुई उठाई और उसने अपनी सुई उठाई। वह उसके सामने सुई उठा कर कहता था कि क्या साले नहीं मानेगा? और वह उससे कहता था क्या साले नहीं मानेगा? इतने में एक स्त्री आ गई और बोली कि परमेश्वर खैर करे, आज शूर वीरों ने शस्त्र उठाये हैं। बस आज फार्सी के विद्वान् अंग्रेजी के कुछ शिक्षक जोशी जी ने वेदों में से धर्म निर्णय का लंगा लगाया है, वाहरे साहस। हमको कहना पड़ता है कि

मंत्र नहीं जाने विच्छू का, साँप के बिल में हाथ।
काट खाय तो रोते रोते, हाथों पीटे माथ॥

वेद विज्ञान शून्य अंग्रेजी पढ़े हुये वेदों का अर्थ करेंगे तो ऐसा ही करेंगे। किसी मंत्र से विधवा विवाह निकालेंगे तो दूसरे मंत्र से बिसकुट, तीसरे से होटल भोजन, चौथे से हैट धन्य है जोशी जी को जिनको वेदों में भी पाश्चात्य शिक्षा दीखती है।

विधवा विवाह के ठेकेदार एक भी मंत्र विधवाविवाह की पुष्टि में नहीं दे सके और न आगे को दे सकते हैं। ये जो कहते हैं कि अमुक मंत्र विधवा विवाह की पुष्टि करता है सर्वथा झूठ है आप देख चुके न तो किसी मंत्र का विधवाविवाह देवता है और न किसी मंत्र से विधवा विवाह ही सिद्ध होता है इनको विधवा विवाह चलाना इष्ट है इस कारण ये लोग वेद का धोखा दे रहे हैं। इन ढपोलसंखों की बात में आकर कोई धार्मिक धोखे से धर्म को तिलाञ्जलि न दे नहीं तो पीछे से पछताना पड़ेगा। जितने भी विधवा विवाह विधायक पुस्तकों के लिखने वाले हैं ये समस्त वेदानभिज्ञ हैं अंग्रेजी के विद्वान् अंग्रेजी शिक्षाके पंजे में पड़ कर भारतको योरुप और हिन्दुओं को ईसाई बनाना चाहते हैं ऐसे ढपोलसंखों के जाल में फंसकर आप अपना सर्वस्व नाश न करें। एक मनुष्य ढपोल संख के जाल में फंस गया था अन्त में उस को बड़ी भारी हानि सहनी पड़ी, उसकी कथा इस प्रकार है।

एक वार एक ब्राह्मण घरसे धन की खोज में निकले परन्तु चारों ओर संसार पर्यटन कर आये कहीं पर धन का ठीक न

लगा। अनायास एक महात्मा से इनकी मुलाकात हो गई और इन्होंने दण्ड प्रणाम के बाद अपनी सारी व्यवस्था कह सुनाई महात्मा ने ब्राह्मण को विशेष दुखी देख एक छोटा शंख जिस का नाम 'पद्मशंखिनी' था दे दिया तथा ब्राह्मणसे बतला दिया कि जब तुम उत्तम रीति से इसका पूजन कर चुको तब इससे द्रव्य मांगा करो यह तुमको चार रुपये रोज दिया करेगी। ब्राह्मण पद्मशंखिनी ले साधु को प्रणाम कर घरको चल दिया दूसरे दिन रास्ते में स्नान कर ब्राह्मण ने पद्मशंखिनीका पूजन किया, पूजन की समाप्ति में शंखिनी से द्रव्य मांगा अपने आप शंखिनी के नीचे चार रुपये दीखने लगे, ब्राह्मण ने ले लिये। ब्राह्मण नित्य शंखिनी का पूजन कर अन्त में चार रुपये पा जाता था, चलते चलते एक दिन किसी गांव में आकर कुये पर स्नान किया और शंखिनी का पूजन कर उस से द्रव्य मांगा, शंखिनी ने नित्य की भाँति चार रुपये दे दिये। कुए के समीप में एक वैश्य की दूकान थी, उसने सोचा कि हम सब दिन दुकान पर धरे रहते हैं तथा रुपया भी लगाते हैं फिर भी हम को नित्य पाँच चार आने की प्राप्ति होती है किसी प्रकार ब्राह्मण से शंखिनी लो तो चार रुपये नित्य मिलाकरें। ब्राह्मण कुछ जलपान करके चलने लगा, वैश्य ने पैर पकड़ लिये और और बोला कि महाराज! आज तो मेरा घर पवित्र करना होगा, मेरे घर पर पधारिये वहां सब सामान तैयार है भोजन बनाइये एवं प्रातःकाल उठ कर चले जाइये। ब्राह्मण बार बार

इन्कार करता था किन्तु अन्त में वैश्य की नम्रता ने विवश कर दिया, ब्राह्मण ठहर गया, भोजन बनाया खाया और उस दिन वहां ही रह गया। रात्रि को सेठ जी ने वह 'पद्मशंखिनी' तो पंडित जी के आसन से निकाल ली एवं एक छोटा सा शंख अपने घर का पंडित जी के आसन में रख दिया, इस कर्तव्य को पंडित जी ने नहीं जाना, प्रातःकाल ब्राह्मण वहां से चल दिया चार पांच कोश चल कर स्नान संध्या से निवृत्त हो शंखिनी का पूजन कर द्रव्य मांगने लगा, साम तक मांगा किन्तु उसने छदाम न दिया, ब्राह्मणने समझ लिया कि साधु ने हमारे साथ धोखा किया, फिर ब्राह्मण साधु के पास लौट आया और समस्त समाचार कह सुनाया, साधु ने कहा कि बच्चा वह शंखिनी वनिये ने रख ली, अब हम तुम्हें दूसरा शंख देते हैं। यह शंख देता तो एक कौड़ी नहीं—यही कहता चला जाता है 'इतने रुपये तो थोड़े हैं'। तुम उसी वैश्य के यहां ठहरो, शंख की करामात दिखलाओ, लोभ वश वह सेठ उस शंखिनी को तुम्हारे आसन में बांध देगा और इसको रखलेगा, फिर तुम सीधे घर को चले जाना तथा रास्ते में न तो शंखिनी से रुपये मांगना और न किसी के यहां ठहरना। ब्राह्मण ने प्रणाम किया और चल दिया। चलते २ फिर सेठ जी की दुकान के पास वाले कुंए पर आया, स्नान से निवृत्त हो शंख का पूजन कर उससे द्रव्य मांगा, कहा कि शंख देव! पाँच रुपये दो, शंख बोला दश लो, ब्राह्मण ने कहा

द्रश ही दो, शंख ने कहा बीस लो, ब्राह्मण बोला अच्छा घर चलकर ले लेंगे। वनिये ने सोचा कि यह शंख है वढ़िया, इस को लेना चाहिये। वैश्य ने अत्यन्त नम्रता के साथ ब्राह्मण को अपने यहां रक्खा, पहिलेसे भी अधिक सुन्दर भोजन वनवाया रात्रि को वैश्य ने पंडित जी का आसन खोला, यह शंख तो निकाल लिया और इस के स्थान में 'पद्मशंखिनी' बांध दी। ब्राह्मण देवता तो प्रातःकाल चल दिये, दिन निकलते ही सेठ जी दिशा गये फिर स्नान कर शंख का पूजन किया पश्चात् द्रव्य मांगने लगे। सेठ जी बोले कि शंखदेव! पचीस रुपये दो शंख बोला पचास लो। वैश्य ने कहा पचास ही लाओ, शंख बोल उठा सौ ले लो। वैश्य जितने रुपये मांगे शंख उस से दूने वढ़ जाय, वढ़ते वढ़ते एक लक्ष पर नौवत आगई। वैश्य ने कहा कि शंखदेव! तुम ऊपर को ही वढ़ने चले जाओगे या कुछ देने की भी कृपा करोगे? इस को सुन कर शंख बोल उठा कि—

वेदमुद्रा प्रदात्री च गता सा पद्मशंखिनी।
प्राप्तो ढपोलशंखोऽहं न ददामि वदामि च॥

सेठ जी! चार रुपये देने वाली पद्मशंखिनी' तो चली गई, अब मैं ढपोलशंख आया हूँ, कहूँगा वहुत कुछ, देने को मेरे पास छदाम नहीं।

यह दृष्टान्त है। धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष ये चार रुपये देने वाली धर्म व्यवस्था रूप पद्मशंखिनी को तो आप अपने घर से

विदा किये देते हैं और इन ढपोलसंखों से प्रेम करते हैं। ये धर्म धर्म चिल्लाते हुये भी तुमको धर्म का एक अक्षर भी न सिखलावेंगे-इस कारण इन ढपोलसंखों से बचो नहीं तो ये तुम्हारे देश और घर का सर्वस्व नाश कर देंगे।

विधवा विवाह निषेध।

वेद में विधवा विवाह की विधि नहीं वरन् विधवा विवाह का निषेध है। आज हम निषेध विधायक श्रुतियों को आप के आगे रखते हैं आप ध्यान से सुनिये कि वेद की श्रुतियां क्या कह रही हैं।

> यदेकस्मिन्यूपे द्वे रशने परिव्ययति,
> तस्मादेको द्वे जाये विन्देत ।
> यन्नैकां रशनां द्वयोर्यूपयोः परिव्ययति,
> तस्मान्नैका द्वौ पती विन्दते ॥
> तैत्तिरीय संहिता । ६ । ६ । ४

जैसे एक यूप में दो रस्सियां बांधी जाती हैं वैसे ही एक मनुष्य दो स्त्रियों से विवाह कर सकता है और जैसे एक रसना से दो यूप नहीं बंधते वैसे ही एक स्त्री दो पतियों से विवाह नहीं कर सकती।

यहां पर वेद स्वतः ही एक स्त्री के दो पति होने का निषेध करता है फिर कोई भी मनुष्य यह कैसे मानले कि वेद में विधवा विवाह है? विधवा विवाह के सर्वथा निषेध को

छिपाने के लिये जोशी जी लिखते हैं कि "जैसे पुरुष एक साथ दो स्त्रियों से विवाह कर लेता है ऐसे एक स्त्री एक साथ दो पुरुषों से विवाह नहीं कर सकती"। क्यों जोशी जी? यह गड़बड़ी कैसी? आप तो 'उनयत्यतयः' मंत्र पर लिख आये हैं कि 'स्त्री दश पुरुष अन्य जाति के और एक ब्राह्मण जाति का विवाह सकती है तथा जब ब्राह्मण से विवाह हो जावेगा तब वे अन्य जाति के, दशपति छूट जावेंगे'। पूंछना यह है कि वे जो छूट जावेंगे, वे जीवित हैं या मुर्दा? यदि मर गये हैं तब तो वे मर कर ही छूट गये फिर ब्राह्मण से विवाह होने पर अन्य जाति के दश पति छूट जावेंगे, यह आप का लिखना कैसा? एक स्थान में आप ही एक स्त्री के एक दम ११ पति लिख दें और दूसरे स्थान में यह कह दें कि 'एक दम तो एक स्त्री का एक ही पति होगा, यह होश का लिखना है या वेहोशी का? पूछो वेदज्ञ जोशी से जी।

यहां पर यूप का और रशनाओं का दृष्टान्त है। यूपों का रशनाओं से बंधना यज्ञ में होता है। एक रशना जो किसी यूप में बंध चुकी है वह यज्ञ में उच्छिष्ट समझी जाती है अतएव वह दूसरे यूप में नहीं बंध सकती। जब वेद ने यूप और रशना का दृष्टान्त दिया है तथा रशना से दूसरी वार दूसरे यज्ञ में दूसरा यूप बंध ही नहीं सकता, फिर पति मरने पर स्त्री दूसरा पति कैसे करलेगी? इसका भी कुछ विचार किया है? या जबर्दस्ती ही लिख दिया कि पति के मरने पर स्त्री विवाह कर सकती है?

एक ही श्रुति पर निषेध की समाप्ति नहीं है ऋग्वेद का दूसरा मंत्र लिखता है कि—

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ ४० ॥

ऋग्वेद० ८ । ३ । २७

प्रथम कन्या पर सोम (चन्द्र) का अधिकार होता है, सोम के पश्चात् फिर, गंधर्व का, गंधर्व के पश्चात् अग्निदेव का फिर चतुर्थ मनुष्यपति कन्या का होता है अर्थात् तीन देवता क्रम से शरीर रक्षक होकर कन्या के अंगों को पुष्ट करते हैं फिर चतुर्थ पति यह मनुष्य संतान है जिसको कन्या के पिता ने दान करके कन्या दी है।

इस मंत्र में वेद ने कन्याके चार पति बतलाये, तीन देवता हैं और एक मनुष्य है। चार बतलाने से अब पांचवां पति हो ही नहीं सकता फिर विधवा विवाह कैसा ?

पं० बद्रीदत्त जी जोशी ने इस मंत्र को उठाया ही नहीं, इस मंत्र से जान चुरा गये। किन्तु कोई २ व्याकरणानभिज्ञ यह कहा करते हैं कि "मनुष्यजाः" यह बहुवचन है इस लिये एक स्त्री के कई मनुष्य पति हो सकते हैं। ऐसा वही कहते हैं जो शास्त्र चुम्बक हैं। 'मनुष्यजाः' बहुवचन नहीं है किन्तु 'विश्वपाः विडौजाः' की भांति एक वचन है। फिर 'मनुष्यजाः' का 'तुरीयः' एक वचन विशेषण है। विशेष्य और विशेषण में सर्वदा समानाधिकरण रहता है। जब 'तुरीयः' एक वचन

है तब 'मनुष्यजाः, का बहुवचन वहां बतलादेंगे कि जिन्हों ने स्वप्न में भी कभी व्याकरण नहीं देखा।

उपाध्याय जी यहाँ दूसरा जाल आरंभ करते हैं, वे स्वा० दयानन्द जी के सर्वथा मिथ्या अर्थ को सत्य मानकर वेवकूफों की आँख में धूल झोंक संसार के गुरु बनने को तैयार हैं। इनका कथन है कि सोम, गंधर्व, अग्नि ये तीनों ही पति मनुष्य हैं और 'मनुष्यजाः, भी मनुष्य है।

उपाध्याय जी-इस बात का प्रमाण नहीं दे सके कि सोम, गन्धर्व, वन्हि ये तीनों ही मनुष्य हैं और इनका मनुष्य होना अमुक वेद मंत्र में लिखा है? जब इनको सोम, गंधर्व, वन्हिके मनुष्य होने का प्रमाण न मिला तब हुक्म लिख दिया कि ये चारों मनुष्य हैं। उपाध्याय जी अपने मनमें अपनेको ईश्वर से भी बड़ा मान रहे हैं, ये समझते हैं कि जैसे ईश्वर की आज्ञा वेद प्रमाण है उसी प्रकार संसारको हमारा यह लेखभी प्रमाण होगा कि "ये चारों मनुष्य हैं"। यह उपाध्याय जी की नास्तिकता है। उपाध्याय जी! आप किस आधार पर सोम, गंधर्व, अग्नि को मनुष्य बतला रहे हैं? आपतो क्या, आपकी सात पीढ़ी भी यह सिद्ध नहीं कर सकतीं कि सोम, गन्धर्व, वन्हि, ये तीनों मनुष्य हैं फिर आपने किस आधार पर लिखा यह तो वही बात हुई, एक मनुष्य ने पूछा पहाड़, हाथी और शुतरमुर्ग किसको कहते हैं? दूसरे ने जवाब दिया कि ये तीनों ही जूते हैं। जैसे पहाड़ हाथी शुतरमुर्ग जूते नहीं हो सकते

इसी प्रकार सोम, गंधर्व अग्नि भी मनुष्य नहीं हो सकते? आपको उत्तर नहीं आता था तो चुप ही रह जाते, आपने तो यहाँ लज्जा की धज्जियां उड़ाकर मन माना अर्थ कर डाला? आप एम० ए० हैं अतः आप के लिये यह अयोग्य है।

यदि ऐसा होता, ये तीनों ही मनुष्य होते, तो केवल चतुर्थ को ही मनुष्यजाः क्यों लिखा जाता। जब चतुर्थ मनुष्य से पैदा हुआ है तो तीन तो अपने आप मनुष्य से भिन्न होगये? उपाध्याय जी का काम चालबाजी करना और हमारा काम है चालबाज की चालबाजी को तोड़ कर उसके बनाये जालको पबलिक के आगे रख देना। अब हम एक ऐसा प्रमाण देंगे जिससे उपाध्याय जी की चालबाजी प्रत्यक्ष आकर नग्न नाच दिखलावेगी, प्रमाण यह है।

सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो ददद्ग्नये।
रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ४१

ऋग्वेद ८। ३। २८

विवाह के समय में वर कहता है कि इस कन्या को सोम ने गंधर्व को दिया था और गंधर्व ने अग्नि को दिया तथा अग्नि ने इस कन्या में होने वाले भावी पुत्रों सहित इस कन्या को मुझे दिया है।

यह तो पहिला विवाह है। पहिले ही विवाह में वर कह रहा है कि यह कन्या सोमने गन्धर्व को दी थी और गन्धर्व ने अग्नि को दी एवं अग्नि ने मुझे दी। कन्या का जब पहिला

विवाह है तो फिर ये तीन मनुष्य पति कब हुये? पहिले जन्म में हुये या स्वप्न में अथवा विवाह से पहिले कन्या ने तीनोंको व्यभिचारके पति बनाये थे? यहां, उपाध्यायजी क्या करेंगे? इस मंत्र के अर्थ को कैसे ठीक बिठलावेंगे? पहिले विवाह से पूर्व ही मनुष्य तीन पति कैसे होंगे? पहिले जन्म के पति भी असंभव, स्वप्न वाले भी असंभव, संभव है उपाध्याय जी व्यभिचार करने वालों को पति मान लें और यह अर्थ करदें कि 'यह कन्या नानां पतियों से व्यभिचार कर आई है अब मैं इससे विवाह करता हूँ'।

विवाह से पहिले व्यभिचार होने में कोई दोष नहीं—इसको वे ही मानेंगे कि जिनके शिर पर अंग्रेजी शिक्षा का दुष्ट भूत चढ़ गया है। साधारण मनुष्य को जब यह ज्ञान होगा कि कि यह कन्या तीन मनुष्यों से कुश्ती कर चुकी है तो फिर इसके साथ विवाह को कोईभी तैयार नहीं होगा और यह मंत्र सभी कन्याओं के विवाह में पढ़ा जायगा तो क्या संसार की समस्त कन्याएं तीन पतियों से गुलछर्रे उड़ाकर चतुर्थ से विवाह करती हैं? उपाध्याय जी जरा विचारो, होश में आओ संसार भर पागल नहीं है?

फिर मंत्र कहता भी क्या है कि सोम गांधर्व को देता है और गन्धर्व अग्नि को तथा अग्नि मुझे। यदि ये मनुष्य होंगे तो यह अर्थ लगेगा कि सोम नामक पहिले पति ने किसी कन्या से विवाह करवाया और कुछ दिन मजा उड़ाया तथा

फिर सोम ने वह कन्या गंधर्व को देदी, गन्धर्व भी कुछ दिन उछल कूद मचाये रहे बाद में यह कन्या इन्होंने अग्नि को देदी, अग्नि ने भी कुछ दिन मजा लूटा पश्चात् यह कन्या वर को देदी। बड़ा मजा है, पति ही अपनी औरत दूसरों को दे देता है। उपाध्याय जी, यह पत्नी दान आपको कौन वेद में मिला? क्या विधवा विवाह लिखने वाले और मानने वालों में यह परिपाटी है कि कुछ दिन औरत को रख फिर अपनी औरत दूसरों को दे दें? अच्छी अनोखी भांति से सोमादिक देवताओं को मनुष्य बनाया कि जिस तुम्हारे अनोखे वेद ज्ञान से संसार भर की स्त्रियाँ व्यभिचारिणी बन गईं। क्यों उपाध्याय जी! इसी व्यभिचार का नाम वैदिक धर्म है? स्वतः उपाध्याय जी को और विधवा विवाह वालों को इस अनोखी वेद फिलास्फी पर आंसू बहाने चाहिये।

हम कितना भी कहें उपाध्याय जी के पास हमारे लेखका एक प्रबल उत्तर है वह क्या? कि चाहे कोई कुछ भी निर्णय करे और कुछ भी समझावे किन्तु किसी की बात न सुनना तथा यह कहते जाना कि 'वेदों में विधवा विवाह है, वेदों में विधवा विवाह है, अच्छा निर्णय निकाला?

'सोमो दददगन्धर्वाय' इस में वर यह कहता है कि इस कन्या को अग्निने मुझे दिया है। यहां पर 'मुझे' अर्थ को कहने वाला 'मह्यम्' एक वचन पद है, इस से सिद्ध है कि कन्या का

मनुष्य पति एक ही होता है, दूसरे मनुष्य को विवाह करने का अधिकार ही नहीं ? यह कन्या पहिले पति को तो अग्निदेव ने दी है, दूसरे मनुष्य पति को कौन देगा ? इस का भी तो पता चले, ये सब मंत्र तो विधवाविवाह के निषेध में हैं ?

उपाध्याय जी ने इस में कई मंत्र दिये हैं। सब में सोम, गन्धर्व, अग्नि ये तीनों देव हैं, उपाध्याय जी देवताओं को मारकूट मनुष्य बना रहे हैं। अत्रि स्मृति का श्लोक भी लिखा है वह यह है—

पूर्वं स्त्रियः सुरैर्भुक्ताः सोमगन्धर्ववन्हिभिः ।
भुञ्जते मानवाः पश्चान्नता दुष्यन्ति कर्हिचित्॥१९८॥

पहिले स्त्रियोंका भोग सोम गंधर्व तथा वन्हि देवता करते हैं और पीछे से मनुष्य करते हैं। देवताओं के भोग से स्त्रियां दूषित नहीं होतीं।

इस श्लोक पर उपाध्यायजी को कुछ भी सूझ नहीं सूझी, यह लिख गये कि "तुम देवताओं पर व्यभिचार का दोष लगाते हो और तुम्हारे देवता तो स्त्रियों सहित हैं जैसे इन्द्र के लिये इन्द्राणी, शिवके लिये पार्वती, विष्णु के लिये लक्ष्मी" ये हमारे देवता हैं। अब हम को मालूम हो गया उपाध्यायजी वे आर्यसमाजी हैं कि जिन के श्राद्ध के पितर 'अग्निदग्धा' सुनार, लुहार, भड़भूजा और इञ्जनों के ड्राइवर हैं। यदि उपाध्याय जी आर्यसमाजी न होते तो 'तुम्हारे देवता' ये शब्द

कभी न लिखते। वाह उपाध्यायजी, स्वामी दयानन्दजी विधवा-विवाह का खण्डन करें, और आप मण्डन करें, क्या आप लीडर के लीडर हैं ? मालूम होता है कि स्वामी दयानन्द जी को बेवकूफ बनाकर आप आर्यसमाज के गुरु बनना चाहते हैं, यह आपकी अनधिकार चेष्टा है। अच्छा नियम स्वीकार किया "लज्जामेकां परित्यज्य त्रैलोक्यविजयी भवेत्" आप तो 'उदीर्ष्व नारी' पर सायण की डुग्गी पीटते थे किन्तु 'सोमः प्रथमो विविदे०—सोमो ददद्गन्धर्वाय' इन दोनों मंत्रों में सायण ने सोमादिकों को देवता लिखा है, आप सायणके विरुद्ध मनुष्य कैसे मानते हो ? क्या जब सायण ने 'उदीर्ष्व नारी' का भाष्य किया था तब सायण विद्वान था और जब इन दो मंत्रों पर भाष्य किया तब सायण मूर्ख हो गया ? कहीं सायण को मानना और कहीं पागल बनाना यह स्वार्थ सिद्ध करना है ? सोमादिकों को वेदके दश मंत्रोंमें देवता माना गया है, तुम्हारी इतनी हुज्जत से कि "देवताओं को क्यों कलंकित करते हो, उनके तो स्त्रियां हैं" वेद के मंत्र झूटे हो जावेंगे ? और वेद के रचने वाला ईश्वर बेवकूफ बन जावेगा ? एवं तुम विद्वान् ठहरोगे, इस का क्या जवाब है ?

एक मनुष्य ने हम से कहा कि तुम ईश्वर ईश्वर चिल्लाया करते हो ईश्वर है ही नहीं ? हम को हंसी आई, हम ने पूछा ईश्वर के खण्डन में क्या सबूत ले आये ? इस को सुन कर उस ने उत्तर दिया कि हमारे पास ऐसा सबूत है जिस का

उत्तर संसार में है ही नहीं। हम ने कहा सुनाईये तो? उसने बतलाया कि यदि ईश्वर होता तो नाक के पास दो आंखें न लगाता, एक आँख तो इसी स्थानमें लगा देता, जहाँ पर आंखें लगी हैं और एक आंख को गर्दनमें पीछे लगा देता, इस प्रकार दो आंख लगाने से आगेका भी दीखता एवं पीछेका भी दीखता एक ही जगह आँख लगाने से जान पड़ता है कि ये अपने आप ही लग गई होंगी। क्या इस तर्क से ईश्वर उड़ सकता है? यदि नहीं उड़ सकता तो फिर 'देवता व्यभिचारी हैं और उन के धर्मपत्नियां हैं' इस तर्क से सोमादिक देवताओं का अस्तित्व एवं स्त्रियों का पति होना कैसे उड़ जावेगा?

उपाध्याय जी, वेद से अनभिज्ञ हैं, वेद तत्त्व को नहीं समझते इसी से वेद को कुचल रहे हैं। ऐसे मनुष्यों के विषय में लिखा है कि—

विभेत्यल्पश्रुताद्वेदो ।
मामयं प्रहरिष्यति॥

अल्पश्रुत मनुष्य जब वेदों का विचार करने लगता है तो वेद घबरा कर कह उठता है कि 'यह विचार क्या करेगा' मेरे शरीर पर छुरे चलावेगा।

अब हम पहिले यह प्रमाण देते हैं कि सोमादिकों को वेद ने देवता माना है।

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या

देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पति-र्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।

यजु॰ १४ । २० ।

अग्नि देवता, वायु देवता, सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, वसु देवता, रुद्र देवता, आदित्य देवता, मरुत देवता, विश्वे-देवा देवता, बृहस्पति देवता, इन्द्र देवता, वरुण देवता ।

इस मंत्र में 'सोम' और 'अग्नि' को देवता माना है; साह-चर्य से गन्धर्व भी देवता हैं। सोमादिक देवता हैं इस की पुष्टि हम कर चुके, अब हम यह दिखलावेंगे कि देवता केवल कन्या के ही पति नहीं हैं किन्तु स्थावर जंगम और जड़ चेतन के पति हैं इन्हीं की रक्षा करने से स्थावर जंगमों का शरीर पुष्ट होता है। खेती और वृक्षों पर यदि सूर्य की किरणें न आवें तो उन की वृद्धि नहीं हो सकती, सूर्य अग्नि देकर वृक्षलताओं को बढ़ाता है, चन्द्रमा मधुर रस देकर फल शक्ति को उत्पन्न करता है इसी कारण सूर्य चन्द्र पौधों के पति हैं।

ऋग्वेदके पवमान सूक्तमें लिखा है कि "सोमो गौरी अधि-श्रितः" आठ वर्ष की उम्र में कन्या की गौरी संज्ञा होती है और उस समय कन्या के ऊपर चन्द्र का आधिपत्य होता है। चन्द्र "रै" को बढ़ाता है, 'रै' और प्राण का वेदों में विस्तृत वर्णन है, 'रै' के बढ़ने से कन्या में चन्द्र के गुण चंचलता और लावण्य तथा पवित्रता अष्ट वर्ष में कन्या को प्राप्त होते

हैं। नवम वर्ष के आरम्भ में चन्द्रमा अपने विशेषाधिकार को समाप्त कर देता है तथा इस समय से गन्धर्व का विशेषाधिकार आता है। इस वर्ष में कन्या का कण्ठ सुस्वर वाणी मधुर बनती है, यदि सिखलाया जावे तो राग रागनियां गन्धर्व के गुण कन्या में बहुत शीघ्र आ जाते हैं। दशम वर्ष के आरम्भ से कन्या पर अग्निदेव का विशेषाधिपत्य होता है, इस वर्ष में कन्या का रुधिर प्रबल हो कर अग्नि गुण से 'आर्तव' की पैदायश और अंगों की पवित्रता होती है तथा उदर के पुष्प का विकाश होता है ये समस्त अग्नि के धर्म हैं। इसी को धर्मशास्त्र लिखता है कि—

सोमः शौचं ददौ तासां,
गंधर्वाश्च तथाङ्गिराः । १३७ ।
पावकः सर्वमेध्यं च,
मेध्यं वै योषितां सदा ॥१३८॥

अत्रि स्मृति

चन्द्रमा गन्धर्व और अगिरा (बृहस्पति) ने उन स्त्रियों को शौच (शुद्धता) तथा अग्नि ने सब अगों की पवित्रता दी है, इसी से स्त्रियों को सदा पवित्रता है।

दशम वर्ष की समाप्ति पर अग्नि अपने विशेषाधिकार की समाप्ति करता है। इस के पश्चात् कन्या विवाह के योग्य हो जाती है। ग्यारहवें वर्ष के आरम्भ से और रजस्वला होने के पूर्व कन्या का विवाह संस्कार अवश्य ही हो जाना चाहिये।

ग्यारह वर्ष के आरम्भ से पहिले जो कन्या के साथ विवाह करता है उस को तथा कन्या को सोम, गन्धर्व, अग्नि ये तीनों देवता आघात पहुँचाते हैं। किन्तु जो ब्रह्मचारी अग्निहोत्र के लिये चौबीस वर्ष की उम्र में विवाह करता है वह यदि आठ वर्ष की कन्या से भी विवाह करे तो ये देवता आघात नहीं पहुँचाते, कारण इस का यह है कि यह विवाह भोग के लिये नहीं, भोग तो शास्त्रों ने ऋतु धर्म के पश्चात् ही लिखा है। यह विवाह केवल अग्निहोत्र द्वारा देवताओं को हव्य देने के लिये है। देवता हव्य खा कर प्रसन्न होते हैं इस कारण अग्नि-होत्र वाले को छोटी कन्या से विवाह करने में देवता आघात नहीं पहुँचाते।

यह सोमादिक देवताओं द्वारा कन्या का भोग है किन्तु इस को उपाध्याय जी नहीं समझे। उन्हों ने समझा कि जैसे मनुष्य स्त्रियों से भोग करते हैं ऐसे ही देवता करते होंगे तभी तो देवताओं को व्यभिचार का कलंक लगाया है। बतलाइये, वेद के कथनानुसार देवताओं को किस प्रकार कलंक और कन्याओं को किस प्रकार पाप लगेगा? यदि उपाध्याय जी वेद जानते होते तो व्यभिचार की शंका ही न करते। इसीसे वेद ने कहा है कि जो थोड़ा सा लिख पढ़ कर मेरे विषय में लेखनी उठाते हैं वे मुझे ही कतल करते हैं इस कारण अनभिज्ञों से मैं बहुत घबड़ाता हूं।

उपाध्याय जी वेद के निर्णय को हरगिज नहीं सुनेंगे क्यों

कि इस निर्णय से विधवा विवाह उड़ता है और उपाध्याय जी का विधवा विवाह चलाना है। इनका लक्ष्य वेद मानना नहीं है विधवा विवाह सरीखे घोर पाप का प्रचार करके भारत को योरुप एवं हिन्दुओं को ईसाई बनाना है। भला ये वेद की आवाज को क्यों सुनेंगे? यदि वेद विधवा विवाह के विरुद्ध कहेगा तो फिर उपाध्याय जी वहरे से कुछ कम दर्जे पर नहीं रहेंगे।

वहरे से एक मित्र मिले। मित्र ने पूछा आप आनन्द से हैं? वहरा बोल उठा कि वैंगन ले आये हैं। वहरे से फिर प्रश्न किया बाल बच्चे अच्छे हैं? वहरे ने उत्तर दिया कि सब का भरता बनेगा। फिर वहरे से पूछा गया तुम्हारे भाई की क्या हालत है? वहरे ने कहा पिसाधरा है, भरता में न डालेंगे तो भरता का मजा ही न आवेगा। पूछने वाला खूब चिल्लाया किंतु वहरे ने इसकी बात न सुनी और अपनी ही कहता रहा— ऐसे ही उपाध्याय जी दूसरे की बात सुनने का अहद कर चुके हैं, हरगिज न सुनेंगे और यही कहते रहेंगे कि वेदों में विधवा विवाह लिखा है धन्य है ऐसे निर्णेता को एवं हजारवार धन्य है उनको जो विना विवेचन किये आँखों पर पट्टी बांध उपाध्याय जी के लेख को धर्म निर्णय समझ वैठे हैं।

वस "यदेकस्मिन् यूपे, सोमो ददद्गन्धर्वाय, सोमः प्रथमो विविदे" ये तीन श्रुतियां विधवा विवाह का सर्वथा निषेध करती हैं चाहे लाख वार शिर फोड़े किन्तु विधवा

विवाह के ठेकेदारों के पास इन श्रुतियों का कोई भी उत्तर नहीं है।

देवता कन्या को एक ही पुरुष के लिये देते हैं यह हम मनुष्यजाः और मह्यम्, एक वचनान्त दो पदों से दिखला चुके हैं। विधवा विवाह वालों के पास इसका कोई उत्तर नहीं।

जब उपाध्याय जी को कोई उत्तर न मिला तब अपने सड़ियल दिमाग की फिलास्फी से सोम, गन्धर्व, वन्हि इन तीन देवताओं को मनुष्य लिख दिया, यह चोरी और सीना जोरी कब तक चलेगी? वेद भी वह गौरव की वस्तु है जो लोगों के बनावटी जालमें एक दम दिया सलाई लगादेता है। उपाध्यायजी के जाल को भस्मीभूत करने के लिये वेद विवाह प्रकरण के मंत्रों को लिखता है सुनिये।

येनाग्निरस्या भूम्या हस्तं जग्राह दक्षिणम्।
तेन गृह्णामि ते हस्तं मा व्यथिष्ठा मया सह॥
प्रजया च धनेन च॥ ४८॥

देवस्ते सविता हस्तं गृह्णातु,
सोमो राजा सुप्रजसं कृणोतु।
अग्निः सुभगां जातवेदाः,
पत्ये पत्नीं जरदष्टिं कृणोतु॥ ४९॥

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं
मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।

भगो अर्यमा सविता पुरंधि-
र्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ ५० ॥

भगस्ते हस्तमग्रहीत्सविता हस्तमग्रहीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ॥ ५१ ॥

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति संजीव शरदः शतम् ॥५२

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं,
बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च
सूर्यामिव परिधत्तां प्रजया ॥५३॥

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा,
मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा।
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम,
इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु ॥५४॥

अथर्व० १४। १। १

जिस कारण से अग्निने भूमि का दक्षिण हस्त ग्रहण किया था उसी कारण से मैं तेरे दक्षिण हस्त को ग्रहण करता हूं मेरे साथ में रहकर तू प्रजा और धन के क्लेश को मत भोगे ।४८। देव सविता तेरे हाथ को ग्रहण करे अर्थात् तुझे सौभाग्य-

वती रक्खे, सोम राजा तुझे उत्तम प्रजावाली करे और जातवेदा अग्नि तुझे मुझ पति के लिये सौभाग्यवती रखता हुआ वृद्धा करे अर्थात् मेरी और तेरी आयु को बढ़ावे। ४६। मैं सौभाग्यवती बनाने के लिये तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ तू मुझ पति के साथ सुख पूर्वक रहती हुई वृद्धावस्था को प्राप्त हो। मैं ने अपने आप तुझको नहीं ले लिया किन्तु भग, अर्यमा, सूर्य, पुरंधि देवताओंने गार्हपत्य के लिये तू मुझको दी है।५०। भग देवता ने तेरे हस्त को ग्रहण किया फिर सूर्य ने तेरा हस्त ग्रहण किया, तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं धर्म से तेरा पति हूं। ५१। तू मुझसे पालनीय है। बृहस्पति ने तुझ को मुझे दिया है, मेरे साथ प्रजावाली होकर तू सौ वर्ष तक जीती रह। ५२। त्वष्टा ने तुझे शुभ वस्त्र दिये हैं और बृहस्पति कवि ने तुझे जल एवं आशीर्वाद दिया है, इस कारण से तुझ को सविता, भग सूर्या की भांति प्रजा से पूर्ण करे। ५३। इन्द्राग्नी, द्यावापृथ्वी, मातरिश्वा, मित्रावरुण भग, अश्विनौभा, बृहस्पति मरुत, ब्रह्म, सोम ये देवता मेरी इस नारी को प्रजा द्वारा बढ़ावें ॥ ५४ ॥

ये विवाह विधि के मंत्र हैं इन में 'येनाग्निः' इस मंत्र से आगे आगे वर देवताओं से प्रार्थना करता है कि मैं और मेरी वधू दोनों ही कुशल से रहैं एवं हमारे सन्तान हो। यह प्रार्थना मनुष्यों से नहीं की गई, उन्ही देवों से की गई है जिन का जिक्र 'सोमः प्रथमो विविदे' प्रभृति मंत्रों में है, अब एक उपाध्याय

जी क्या दो हजार विधवा विवाह के ठेकेदार भी मिल कर यह सिद्ध नहीं कर सकते कि ये मनुष्य हैं।

विधवा विवाह विधि का एक मंत्र और हम श्रोताओं के आगे रखते हैं। वह यह है।

अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत।

स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः॥

पारस्करगृह्य० कां० १ कं० ६

कन्या प्रथम सूर्य और अग्नि को वर प्राप्ति के लिये यजन करती है, यजन किया हुआ सूर्य कहता है कि यह कन्या पितृ-कुल को छोड़ दे और पति के कुल को कभी न छोड़े। वर कहता है कि कन्या जिस सूर्य का यजन करती है वह सूर्य इस कन्या को मुझ से कभी न छुड़ावे।

ये विवाह विधि के मंत्र हैं। 'सोमः प्रथमो विविदे' इस में 'मनुष्यजाः' एक वचन स्त्री को एक ही पति की आज्ञा देता है, 'सोमो ददद्गन्धर्वाय' इसमें 'मह्यम्' एक वचन सिद्ध करता है कि कन्या जिस वर को दी गई है देवताओं ने केवल उसी के लिये दी है, अन्यके लिये नहीं। 'येनाग्निः' इस मंत्रमें दिखलाया है कि जैसे अग्निने पृथ्वी का हस्त ग्रहण किया, जैसे वह पृथ्वी एक अग्नि की ही स्त्री है उसी प्रकार मैंने तेरा हस्त ग्रहण किया है तू मेरी ही स्त्री है, अन्य की नहीं हो सकती। 'देवस्ते' इस मंत्र में कहा है कि तू मेरे यहां ही वृद्धा हो, इस का मतलब यही है कि अन्य पुरुष तेरा पति नहीं हो सकता। 'गृह्णामिते'

इस मंत्र में स्पष्ट कर दिया है कि देवताओं ने गृहस्थधर्म के लिये तू मुझे ही दी है। 'मह्यम्' इस एक वचन से दूसरे पति का निषेध है। 'भगस्ते' इस मंत्र में स्पष्टीकरण है कि धर्म से मैं ही तेरा पति हूँ, अन्य को स्वीकार करेगी तो पापिनी बन जायेगी। 'ममेयमस्तु' इस मंत्र में यह कहा है कि बृहस्पति ने तू मुझ को ही दी है 'मह्यम्' इस एक वचन से वेद एक ही पति की आज्ञा देता है। 'त्वष्टा वासो' इस मंत्र में यह दिखलाया गया है कि जैसे 'सूर्या' एक पतिवाली है वैसे तू भी एक ही पति वाली रहे। 'इन्द्राग्नी' इस मंत्र में वर प्रार्थना करता है कि मंत्र में कहे हुये दश देवता मेरी सन्तान से तुझे बढ़ायें, यहां भी एक ही पति की आज्ञा है। 'अर्यमणम्' इस मंत्र में सूर्य कन्या के गोत्रादिक सम्बन्ध को छुड़ाता है और पतिकुल सम्बन्ध कभी न छूटे यह सूर्य से प्रार्थना है। सर्वदा के लिये पतिकुल सम्बन्ध का रहना अन्य पति का निषेध कारक है।

इन समस्त मंत्रों में स्त्री को दूसरे पति का निषेध है, विधवा होने पर भी स्त्री अपना सम्बन्ध किसी अन्य पुरुष से नहीं जोड़ सकती क्यों कि इकरारनामे में एक पति का ही प्रण हुआ है। नहीं मालूम सुधारकों ने अक्ल को कौन बाजार में नीलाम किया है जो विधवा विवाह को वैदिक बतलाने की अनधिकार चेष्टा करते हैं।

कई एक मनुष्य यह कहेंगे कि विवाह विधि के मंत्रों में

विधवा विवाह का निषेध है, यह तुम्हारी मिथ्या कल्पना है। इस के उत्तर में हम यही कहेंगे कि तुम्हारा यह कथन सर्वथा झूठ है, तुम लोग नरपशु हो और संसार से वेदों को मिटाकर इंजील के सहारे से विधवा विवाह का प्रचार कर रहे हो। हमने यह दिखलाया है कि विवाह विधिके मंत्रोंमें विधवाविवाह का निषेध है, यह मिथ्या कल्पना नहीं है। जो हमने लिखा है, वही,मनु जी लिखते हैं कि

नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित्।
न विवाहविधावुक्तं विधवावेदनं पुनः ॥ ६५॥

मनु० अ० ६

विवाह के मंत्रो में कहीं पर भी नियोग करना नहीं है और विवाह विधायक मंत्रोंमें विधवाके पुनः विवाहकी विधि नहीं है॥

इसी के ऊपर मनुस्मृति के समस्त टीकाकारोंने विधवा विवाह का निषेध लिखा है। हम समस्त टीकाओं में से कुल्लूक भट्ट के टीका को आप के आगे रखते हैं।

" अर्यमणं नु देवम् , इत्येवमादिषु विवाहप्रयोग जनकेषु मंत्रेषु क्वचिदपि शाखायां न नियोगः कथ्यते। न च विवाहविधायकशास्त्रेऽन्येन पुरुषेण सह पुनर्विवाह उक्तः।

'अर्यमणम्' प्रभृति विवाह प्रयोग के उत्पादक मंत्रों में कहीं भी किसी शाखामें भी नियोग नहीं कहा और न विवाह विधायक मंत्रों में ही दूसरे पुरुष के साथ विधवा का विवाह कहा है।

क्या ही मजा रहा। विवाह विधायक मंत्रों ने विधवा विवाह को वैदिक लिखने वाले मनुष्यों की नाक काट ली और ऊपर से काला मुख कर दिया. अब ये लाख लाख जन्म में भी विधवा विवाह सिद्ध नहीं कर सकते। यह दूसरी बात है कि विधवा विवाह की सिद्धि में कौओं की भांति 'कां कां' करें या कुत्तों की भांति भूंकते फिरें। अब कौन कह सकता है कि 'कि वेदों में विधवा विवाह की आज्ञा है?

मुझे नहीं मालूम धार्मिक मनुष्य अंग्रेजी शिक्षित नास्तिक लोगों के द्वारा प्रचलित होने वाले विधवा विवाह का घोर विरोध क्यों नहीं करते? विचार करने पर पता चलता है कि धार्मिक लोगों के आत्मा बड़े कमजोर हो गये हैं इसी से ये दब्बू बन गये। अब चाहे कोई इनके हक छीन ले, चाहे इनको पीट ले और चाहे इनके धर्म का मटिया मेट करदे किन्तु इनके मुख से आवाज न निकलेगी।

याद रक्खो यदि हिन्दू जाति मर गई तो फिर तुम शिर धुन धुन पछताओगे। क्या तुम पातिव्रत धर्म के महत्व को नहीं जानते? नहीं जानते हो तो एक कथा तुम हमसे ही सुनलो।

एक पतिव्रता स्त्री एक दिन धान कूट रही थी और उसके पास उसकी एक सहेलिन पड़ोसिन बैठी थी, इतने में धान कूटने वाली स्त्री का पति आगया उसने आकर कहा कि हमको पानी पिलाओ? धान कूटने वाली स्त्री का मूसल ऊपर था उसने मूसल ऊपर ही से छोड़ दिया, वह मूसल ऊपर ही टंगा

रह गया। स्त्री जल भर कर ले आई और पती को जल पिला ऊपर से मूसल पकड़ फिर धान कूटने लग गई—यह है पातिव्रत धर्म का महत्व कि जिस महत्व से लकड़ी का जड़ मूसल ऊपर टंग गया तथा पृथिवी की आकर्षण शक्ति मूसल को न खैंच सकी। ऐसे ऐसे अलौकिक पातिव्रत धर्म के महत्व महाभारत के शान्ति पर्व के पन्नों से सैकड़ों भरे हैं इसको आप भूलते हैं और अलौकिक शक्ति देने वाले पातिव्रत धर्म को कुचल कर स्त्रियों को कुलटा बनाते हैं? यह आपकी भूल है, तुम चावल देकर धान का छिलका खरीद रहे हो।

अब नकली पतिव्रता की कथा सुनिये। जो स्त्री पास बैठी थी उसने मूसल का ऊपर रुक जाना देखा और अचंभे में पड़ गई पूछने लगी बहिन यह तैंने क्या जादू कर दिया था जिससे मूसल ऊपर ही टंगा रह गया? पतिव्रता स्त्री ने उत्तर दिया कि यह पतिव्रत धर्म की महिमा है। इस स्त्री ने कहा अच्छा बहिन कल तू एक बजे दिन के हमारे घर आना मैं तुझे अपने पातिव्रत धर्म का महत्व दिखलाऊंगी। इतनी बात के पश्चात् यह स्त्री अपने घर आगई और पति से बोली कि मैं कल एक बजे से पहिले धान कूटने लगूंगी तथा एक मेरी बहिन आवेगी उसको मैं पतिव्रत धर्म का गौरव दिखलाऊंगी। तू कल कहीं जाना नहीं, बारह बजे दिन से यहां बैठ जाना? पति ने कहा अच्छा। औरत बोली अच्छा नहीं, कान खोलकर सुनले, बारह बजे से यहीं बैठना होगा—इसमें तुमने गड़ बड़ करी तो फिर

याद रख मूछें दोनों तरफ की उखाड़ लूंगी ? पति बोला याद रखूंगा। दूसरा दिन आया, इसने पति के लिये खटिया बिछादी उखलो में धान डाल कर कूटने लगी, थोड़ी देर में इसकी वह बहिन भी आगई किन्तु खटिया पर पड़े हुये पति देवता सो गये। इसको बड़ा गुस्सा भी आया कि यह कुंभकर्ण का दाऊ जी सो गया, अब पानी कौन मांगे। क्रोध में पैर उठा इसने अपने पति के बिछुआ मारा, बिछुआ के लगते ही वह जग उठा और चिल्लाने लगा कि 'पानी-पानी'। इस ने मूसल ऊपर ही छोड़ दिया, पानी लेने को चल दी। ऊपर से मूसल गिरा और पतिदेव के मस्तक में आकर बैठा, खोपड़ी खुल गई, पानी की कौन कहे खून की धारा चलने लगी-यह है नकली पतिव्रत धर्म का आदर्श। तुम सुधारकों के धोखे में आकर स्त्रियों को नकली पतिव्रताएं बनाते हो; दश घर की हवा भी खालें और पतिव्रता भी बनी रहें, यह कभी हो नहीं सकता। मनु जी ने स्पष्ट लिख दिया है कि एक पति से ही स्पर्श करना स्त्री का पातिव्रत धर्म है।

सज्जनो ! हम दिखला चुके कि वेदों में विधवाविवाह का नाम नहीं किन्तु विधवाविवाह का निषेध है और पतिव्रत धर्म से स्त्रियों में अलौकिक शक्ति आती है, इस पर आप खूब विचार करें, विचार के बाद विधवा स्त्रियों की रक्षा और उन

के पातिव्रत धर्म की रक्षा करने के लिये कमर बांध कर मैदान में उतर पड़ें, इसी में तुम्हारा कल्याण है तथा इसी में यश है। अब मैं अपने व्याख्यान को समाप्त करता हूँ और एक बार सच्चे प्रेम से बोलिये हर हर महादेव ! नर्मदे हर हर ॥

कालूराम शास्त्री।

तर्क निरोध

यतो वेदवाचोऽतिकुंठा मनोभिः,
सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति ।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं,
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ १ ॥
नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगा-
द्भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा
भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति ॥ २ ॥

काम क्रोध मदलोभ के, जे नर भये गुलाम ।
वेद तत्व जाना नहीं, हैं स्वारथ के धाम ॥ ३॥

सार में जितने भी विद्वान् होते हैं वे सभी वेद के जानने वाले नहींहोते, वेदज्ञों में भी ऐसे मनुष्य कम निकलेंगे जो वैदिक तत्व को जानते हों। वेद विज्ञान का जानना हंसी मसखरी या कढ़ी भात का खाना नही हैं। परमात्मा ने वैदिक विज्ञान को इतना गुप्त रक्खा है कि उस का मिलना असम्भव हो जाता है इसको हम एक दृष्टान्त से स्पष्ट करके आप लोगों के आगे रक्खेंगे ।

दृष्टान्त यह है। एक मनुष्य के जी में यह भावना पैदा हुई कि मुझको अमूल्य रत्नों का खजाना मिले। वह इस भावना में पड़ कर खजाने की खोज में भटकने लगा, भटकते भटकते बहुत समय वीत गया खजाना मिलना तो दूर किनार खजाने का पता भी न चला। लाचार होकर साधुओं की संगति करना आरंभ करदी, अनेक साधुओं की संगति करते करते किसी दिन एक शान्त, निःस्पृह, हर्षशोक रहित, मनमस्त साधुसे भेट हो गई, वस यह उन्हींके पास रहकर उनकी सेवा करने लगा, सेवा करते २ जब बहुत दिन वीत गये और साधु देशान्तर को चलने लगे तब इससे पूछा कि बेटा! अब हम तो चले जाँयगे तू क्या चाहता है, जो इच्छा हो कहो हम आपकी इच्छा को पूर्ण करेंगे। यह भी समझ चुका था कि इस साधु से की हुई प्रार्थना कभी खाली न जायगी, अपने विचार पर विश्वास रख इसने साधु से कहा भगवन्! बहुत दिनसे मेरी इच्छा है कि मुझको बहुमूल्य रत्नों का खजाना मिले, आप सर्वथा समर्थ हैं इस कारण मैं अपनी इच्छा को आपके आगे रखता हूँ कि मुझ गरीब पर कृपा हो और मुझे इच्छित रत्नों का भण्डार मिले। साधुने कहा अच्छा घबराओ मत मिलेगा। साधुने एक जगह बतला दी कि इस स्थान में खजाना है और एक कुदाल और खड्ग दे दिया। यह समझा दिया कि इस कुदाल से तुम जमीन खोदते जाओ और खोदते खोदते जमीन में से जो विघ्न कारक मनुष्य निकलते आवें उनका तुम इस तलवार से शिर काटते जाओ इतना कहकर महात्मा रवाने हुये

तथा दूसरे ही दिन से इस हजरत ने जमीन खोदने का लग्गा लगा दिया। छः हाथ जमीन खुदी थी इतने में उस जमीन में से हाथ पैर झाड़ते हुये एक चिल्लड़दास निकल बैठे। इस गरीब ने प्रश्न किया हजरत आप कौन हैं? चिल्लड़दास ने उत्तर दिया कि हम काम हैं, इतना सुनते ही इस गरीब ने खड्ग उठाया और काम की गर्दन धड़ से अलग कर दी। फिर खोदना आरम्भ कर दिया, खोदते २ जब छः हाथ और खोदा तो एक मुस्टण्डराम लाल आंखें किये होंठ फरफराते हुये निकले, गरीब ने यह भयंकर मूर्त्ति देखकर इनसे भी वही प्रश्न किया। इन्होंने कहा हम क्रोध हैं, इसने खड्ग से उसके भी दो टुकड़े कर दिये। फिर लगा खोदने, छः हाथ खोदा था कि एक धिंगड़नाथ चकमकाते हुये आ विराजे, गरीबने पूछा तुम कौन हो? जवाब मिला कि हम लोभ हैं, गरीब ने उस का शिर काट डाला। फिर जमीन खोदनी आरम्भ की, अठारह हाथ खुदने पर एक बुड्ढू और निकल पड़े, पूछा तुम कौन? उसने बतलाया कि हम मोह हैं इतना सुनते ही गरीब ने उसको मार डाला। फिर लगा खोदने. बीस हाथ खुदने पर एक मलंग और निकल पड़ा, गरीब ने पूछा कौन? जवाब मिला कि अभिमान। इतना कहते ही गरीब ने उस के प्राण पखेरुओं को विदा कर दिया। फिर खोदने लगा. थोड़ा ही खोदने पर वह खजाना मिला कि जिसके जवाहिरात की प्रशंसा कभी किसी के मुख से भी नहीं सुनी थी, यह है दृष्टान्त।

नहीं सकते। संसार में जितेन्द्रिय और विषयी होने का एक स्पष्ट उदाहरण है इसी उदाहरण को लेकर भगवान मनु लिखते हैं कि—

न जातुकाम: कामना-मुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥

[मनु० अ० २ श्लो० ६४]

कभी भी विषय के भोग से काम की तृप्ति नहीं होती क्या कभी अधिक हवि डाल देने से अग्नि शान्त हो जाती है। थोड़ी देर शान्त रहकर फिर वह अग्नि प्रबल रूप से बढ़ जाती है इसी प्रकार विषय से कामेच्छा थोड़ी देर शान्त होकर फिर वह उग्र रूप से बढ़ जाती है।

अब सिद्ध हो गया कि व्यभिचार की न्यूनता भोग से नहीं होती किन्तु पवित्र मन द्वारा इन्द्रियावरोध से होती है अतएव विधवाविवाह करके जो व्यभिचार की न्यूनता करना चाहते हैं वे लोग हिन्दू शास्त्र लौकिक दृश्य, काम का उद्वेग इन तीनों बातोंको ही नहीं जानते विधवाविवाह करके व्यभिचार का रोकना न हो सकेगा किन्तु व्यभिचार की वृद्धि होगी।

भ्रूणहत्या।

(२) यदि विधवाविवाह न किया जावेगा तो गर्भ पातादि भ्रूणहत्यायें होती रहेंगी इस पाप को मिटाने के लिये विधवा विवाह सर्वोत्तम उपाय है।

नास्तिकों का कथन है कि यदि विधवाविवाह हो जावे तो गर्भपातादि भ्रूणहत्यायें न हों। नास्तिक लोग पूर्ण रूप से आर्यसमाज के चेले हैं। जो नास्तिक बिलकुल धर्म कर्म को नहीं मानते समस्त वैदिक धर्म का सत्यानाश करके मन माने सिद्धान्त मानते हैं वे गर्भपात को भ्रूणहत्यायें क्यों मानते हैं! केवल इस कारण से मानते हैं कि इसको पाप बतला कर लोगों को भयभीत किया जावे और उससे विधवा विवाह चल जाय।

जो गर्भपात होते है इन गर्भपातों की जिम्मेदार स्त्रियां है या पुरुष! यदि आप कहें कि स्त्रियां ही हैं तब हम आपके इस कथन को न मानकर इसका घोर विरोध करेंगे। स्त्रियां जो गर्भधारण करती हैं क्या वे ईंट पत्थर, मकान, वृक्ष, पशु, पक्षियों से गर्भधारण कर लेती हैं? आप को यही मानना पड़ेगा कि नहीं नहीं स्त्रियां जो गर्भ धारण करती हैं वे तो पुरुषों से ही करती हैं। यदि पुरुष व्यभिचारी न हों तो फिर विधवायें न गर्भधारण कर सकती हैं और न गर्भपात कर सकती हैं। पुरुष समुदाय विधवाओं के साथ विषय करने में अपने को कृत्य २ समझता है। अब आप ही बतलावें कि इस गर्भधारण और गर्भपात की जिम्मेदार स्त्रियाँ हैं या पुरुष ? जब पुरुष योरोपीय शिक्षा से शिक्षित और दीक्षित होकर नित्य मदिरा पान तथा व्यभिचार की उन्नति करेंगे, फिर आप उन को डाटेंगे भी नहीं, सदाचारी भी नहीं बनावेंगे किन्तु उन की

नहीं सकने। संसार में जितेन्द्रिय और विषयी होने का एक स्पष्ट उदाहरण है इसी उदाहरण को लेकर भगवान मनु लिखते हैं कि—

न जातुकामः कामना—मुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

[मनु० अ० २ श्लो० ९४]

कभी भी विषय के भोग से काम की तृप्ति नहीं होती क्या कभी अधिक हवि डाल देने से अग्नि शान्त हो जाती है। थोड़ी देर शान्त रहकर फिर वह अग्नि प्रबल रूप से बढ़ जाती है इसी प्रकार विषय से कामेच्छा थोड़ी देर शान्त होकर फिर वह उग्र रूप से बढ़ जाती है।

अब सिद्ध हो गया कि व्यभिचार की न्यूनता भोग से नहीं होती किन्तु पवित्र मन द्वारा इन्द्रियावरोध से होती है अतएव विधवाविवाह करके जो व्यभिचार की न्यूनता करना चाहते हैं वे लोग हिन्दू शास्त्र लौकिक दृश्य, काम का उद्वेग इन तीनों बातोंको ही नहीं जानते विधवाविवाह करके व्यभिचार का रोकना न हो सकेगा किन्तु व्यभिचार की वृद्धि होगी।

भ्रूणहत्या।

(२) यदि विधवाविवाह न किया जावेगा तो गर्भ पातादि भ्रूणहत्यायें होती रहेंगी इस पाप को मिटाने के लिये विधवा विवाह सर्वोत्तम उपाय है।

नास्तिकों का कथन है कि यदि विधवाविवाह हो जावे तो गर्भपातादि भ्रूणहत्यायें न हों। नास्तिक लोग पूर्ण रूप से आर्यसमाज के चेले हैं। जो नास्तिक बिलकुल धर्म कर्म को नहीं मानते समस्त वैदिक धर्म का सत्यानाश करके मन माने सिद्धान्त मानते हैं वे गर्भपात को भ्रूणहत्यायें क्यों मानते हैं! केवल इस कारण से मानते हैं कि इसको पाप बतला कर लोगों को भयभीत किया जावे और उससे विधवा विवाह चल जाय।

जो गर्भपात होते हैं इन गर्भपातों की जिम्मेदार स्त्रियां हैं या पुरुष! यदि आप कहें कि स्त्रियां ही हैं तब हम आपके इस कथन को न मानकर इसका घोर विरोध करेंगे। स्त्रियां जो गर्भधारण करती हैं क्या वे ईंट पत्थर, मकान, वृक्ष, पशु, पक्षियों से गर्भधारण कर लेती हैं? आप को यही मानना पड़ेगा कि नहीं नहीं स्त्रियां जो गर्भ धारण करती हैं वे तो पुरुषों से ही करती हैं। यदि पुरुष व्यभिचारी न हों तो फिर विधवायें न गर्भधारण कर सकती हैं और न गर्भपात कर सकती हैं। पुरुष समुदाय विधवाओं के साथ विषय करने में अपने को कृत्य २ समझता है। अब आप ही बतलावें कि इस गर्भधारण और गर्भपात की जिम्मेदार स्त्रियां हैं या पुरुष? जब पुरुष योरोपीय शिक्षा से शिक्षित और दीक्षित होकर नित्य मदिरा पान तथा व्यभिचार की उन्नति करेंगे, फिर आप उन को डाटेंगे भी नहीं, सदाचारी भी नहीं बनावेंगे किन्तु उन की

कमर ठोंक कर उनको देशोद्धारक लीडर की पदवी दे देंगे और संसार से व्यभिचार उड़ाना चाहेंगे तो यह कभी हो नहीं सकता कि संसार से व्यभिचार उड़कर गर्भपातादि दोष मिट जावें इन्हीं भव्य उन्नति के ठेकेदार व्यभिचारियों की कृपा से कई एक श्यामा कुमारियों को गर्भपात के द्वारा भ्रूणहत्यायें करनी पड़ती हैं। इतने पर भी समाप्ति नहीं हैं। इन के व्यभिचार की वृद्धि से अदालतों में कई एक अभियोग प्रकृति विरुद्ध कार्य के भी आ जाते हैं। पुरुष जाति धर्म से गिर गई है। संसार में व्यभिचार से जितनी खराबियाँ होती हैं पुरुष जाति उन सबकी जिम्मेदार है किन्तु दौर्बल्य हृदय नास्तिक पुरुषों के दुराचारों को दूर नहीं कर सकते और उन के लिये शिक्षा देने का साहस नहीं पड़ता इस कारण गर्भपात का दोष स्त्रियों पर मढ़ दिया जाता है। अस्तु लीडर कहें या न कहें किन्तु इस खराबी की जिम्मेदार पुरुष जाति अवश्य है। धर्मशास्त्रों ने स्त्रियों के पवित्र रहने और इन दुष्ट पुरुषों के हथकण्डों से बचने का एक बड़ा अच्छा उपाय बतलाया है वह यह है—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥

मनु० अ० ६ श्लो० ३।

बाल्यावस्था में पिता और युवा अवस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करे स्त्री कभी भी स्वतन्त्र न की जावे।

भगवान् वेदव्यास जी का लेख है कि स्त्रियों को भिन्न पुरुषावलोकन करना भी निन्दनीय है।

द्वारोपवेशनं नित्यं गवाक्षेण निरीक्षणम्।
असत्यलापो हास्यं च दूषणं कुलयोषिताम्॥

दरवाजे पर बैठना, झरोखे से देखना, झूठ बोलना और हंसना यह कुलांगनाओं के दोष हैं।

स्त्री के शयन के विषय में मनु लिखते हैं कि-

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विवक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वान्समपकर्षति॥

माता, बहन, लड़की इनके साथ भी एकान्त में शयन न करे इन्द्रियों का समूह बड़ा प्रबल होता है यह विद्वान् को भी आकर्षित कर लेता है।

इत्यादि अनेक उपदेश लिखकर धर्मशास्त्रों ने स्त्रियों को पुरुषों की संगति करने से रोका था। धर्मशास्त्रकार यह जानते थे कि शराब वालेके पास बैठने से शराबी और अफीम भक्षक के पास बैठकर अफीमची तथा भक्त के पास बैठकर प्रेमी और धर्मशास्त्री के पास बैठ कर धार्मिक बनना सिद्ध है तो फिर व्यभिचारी मनुष्यों के पास बैठकर स्त्रियां भी व्यभिचारिणी बन जावेंगी यह नियम अटल है। संगति के दोष प्रायः सभी में आजाते हैं इसको सभी ने माना है। भगवान् कृष्णने भी तो गीतामें लिख दिया है कि-"संगात्संजायते

कामः” पहिले पदार्थ का संग होता है तब इच्छा होती है। स्त्रियों की विषयेच्छा रोकने के लिये स्त्रियों को मनुष्यों के संग से दूर रक्खा था और यह उपाय निस्सन्देह श्रेयस्कर था किन्तु आज वैदिक प्रथा घृणित-योरोपीय प्रथा साधु जान पड़ती है, स्त्रियों को सर्वथा स्वतन्त्र कर दिया है यह निश्चय मनुष्यों ने भूल की है। गर्भ और गर्भपात रोकने का शास्त्रोक्त उपरोक्त उपाय ऐसा है कि इसके आचरण से न व्यभिचार हो, न गर्भ हो; न गर्भपात हो।

विधवापहरण।

(३) आजकल एक यह प्रश्न खड़ा होगया है कि विधवाओं को मुसलमान भगा ले जाते हैं इससे मुसलमानों की वृद्धि हो रही है फिर उन विधवाओं के जो सन्तति होती है वह गोभक्षक और हिन्दू जाति की कट्टर विरोधनी होती है अतएव विधवा विवाह होना आवश्यकीय है।

वास्तव में अंग्रेजी शिक्षा से शिक्षित होने पर हिन्दुओं की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक तीनों शक्तियों का क्षय हो जाता है और ये निर्बल, अविवेकी, साहसहीन हो जाते हैं तभी तो पुरुषार्थ हीन क्लैब्यपने की बातें करते हैं। क्या मजे का विचार है मुसलमान विधवाओं को भगा ले जाते हैं इस कारण विधवा विवाह कर देना चाहिये। क्या आज हिन्दू जाति इतनी मृतक और लज्जा हीन होगई है कि जो अपनी स्त्रियों की रक्षा नहीं कर सकती। यदि यही बात सच है तब

फिर हिन्दू जाति संसार में कितने दिन जीवित रहेगी। आज यह प्रश्न है, कल को यह प्रश्न होगा कि अधिक रुपया मत कमाओ नहीं तो मुसलमान छीन लेजायंगे। फिर विवाह वन्द करने होंगे और यह घोषणा करनी होगी कि कोई विवाह न करे क्योंकि मुसलमान सौभाग्यवती स्त्रियों को भगा ले जाते हैं, कोई बाहर न निकले नहीं तो मुसलमान पीट डालेंगे। ऐसे ऐसे अनेक प्रश्न खड़े हो जावेंगे जिससे कि हिन्दू जाति का संसार में रहना असंभव हो जायगा मुझे मालूम नहीं है कि अत्यन्त भीरु सर्वथा क्लीव लोग हिन्दुओं के नेता क्यों बनाये गये हैं यदि ये कुछ रोज और बने रहे तो हिन्दू जातिको इतनी भीरु बना देंगे कि यदि दूसरी जातियां इसको पैरोंके नीचे भी कुचलें भी तव यह बोल नहीं सकेगी। मुसलमानोंसे स्त्रियों के वचाने का उपाय विधवाविवाह नहीं है किन्तु स्त्रियोंके वचाने का उपाय वीरता है। जिस समय कोई गुण्डा किसी स्त्रीको भगावे उस समय देखने वाले को यह आवश्यक है कि वह उस वदमाश के हाथ से स्त्री छीन ले, यदि चुराने वाला जवर हो तो उसके साथ संग्राम करके प्राण तक दे देना, कर्तव्य समझ पीछे नहीं हटना चाहिये। उसके मरने पर दूसरा देखे वह छुड़ाने का उद्योग करे, कुछ भी हो स्त्री को वचा लेना चाहिये। इस प्रकारसे साहसी वनके रक्षा करने वालोंकी स्त्रियों को भगाने की शक्ति न किसी में हुई है और न आगे को हो सकती है संसार में रक्षा का सर्वोत्तम यही उपाय है। किन्तु लीडर

विधवा विवाह करने से ही स्त्रियों का अपहरण रोकते हैं जो कभी रुक नहीं सकता। निर्वल मनुष्योंके माल छीनने को सभी तैयार रहते हैं। स्त्री अपहरण करने वालों को तो अपहरण से ही काम है। चाहे विधवा हो चाहे सधवा हो। मुझे शोक इस बात का आता है कि कमजोर और सड़ियल दिमाग के लोग अपने आप धर्मशास्त्री बन बैठे हैं और हिन्दू जाति अभी घर्राटे ही ले रही है यदि हिन्दू जाति अब भी नहीं चेती तो हिन्दू सभाओं के उद्योग से ही यह सर्वदा के लिये संसार से विदा हो जायेगी।

क्षय।

(४) विधवाओं का विवाह न होने के कारण बहुत से मनुष्यों को स्त्रियां नहीं मिलतीं अतएव वे सन्तान पैदा नहीं कर सकते इससे दिनों दिन हिन्दू जाति की संख्या घटती जाती है।

किसी भी जाति की वृद्धि कुछ भी मूल्य नहीं रखती सौ भेड़ बकरियों को बढ़ा कर यदि कोई दश हजार बनाले तो वे दश हजार एक शेर के सन्मुख अपना किंचित् भी प्रभाव नहीं दिखला सकतीं। इस समय भारतवर्ष में तेईस करोड़ हिन्दू हैं किन्तु उनके शासक लाख दो लाख ही हैं फिर इस अधिक संख्या का क्या प्रभाव हुआ? कोई भी जाति हो अधिक संख्या उसकी गौरवता नहीं रख सकती। जाति की गौरवता अधिक संख्या पर नहीं किन्तु वीरत्व पर है, जाति

में जितने विद्वान्, जितने वीर उत्पन्न होंगे उतना ही जाति का गौरव होगा इसको सभी संसार मानता है। राम, लक्ष्मण, पृथु, प्रियव्रत प्रभृति वीरों के गीत आज तक गाये जाते हैं। वीर प्रताप ने सहस्रों कष्ट सह कर हिन्दू जाति की नाक रखली है और गुरु गोविन्दसिंह जी ने डूबते हुये हिन्दू धर्मको बचा लिया और वीर शिवा जी ने हिन्दुओं की नष्ट होती हुई रोटी, बेटी, चोटी की रक्षा करके हिन्दू जाति को चिरंजीवनी बना दिया। आवश्यकता है कि हिन्दू जाति को पहिले वीरवती बनाओ और फिर संख्या पर विचार करो, जब तक हिन्दू जाति पूर्ण वीरवती न बन जावे तब तक संख्या वृद्धि का प्रश्न ही आगे मत रक्खो। यदि हिन्दू जाति को वीरवती न बनाया गया और संख्या वृद्धि करदी गई तो फिर ये दूसरी जातियों की गुलाम बनेंगी रेल के कुली, जहाजों के खलासी, स्टेशनों के पानी पाण्डेय, बाजारों के पल्लेदार, होटलों के चपरासी और बवर्ची बढ़ दूसरों के गुलाम बनकर हिन्दू जाति के गौरव को रसातल पहुँचादेंगे और संख्या वृद्धि से कोई लाभ न पहुँचेगा इस समय संख्या की न्यूनता होने में तो कारण दूसरा ही है वह यह है कि हिन्दू लीडर दिनों दिन हिन्दुओंके धर्म बन्धनों को ढीला कर हिन्दू धर्म के समस्त सिद्धान्तों को सर्वथा मिथ्या सिद्ध करते हैं। इस उद्योग से मनुष्य हिन्दूधर्म को पोप जाल समझ कर दूसरे धर्मों में चले जाते हैं।

समान स्वत्व।

(५) कई एक मनुष्यों का कथन है कि जब स्त्री और

पुरुष दोनों ही ईश्वर के बनाये हैं और दोनों ही के स्वत्व तुल्य हैं तो फिर यह क्या कारण है कि एक पुरुष तो कई एक विवाह करले किन्तु एक स्त्री एक ही विवाह करे, यह अन्याय है।

हिन्दू इतिहास से सिद्ध है कि एक पुरुष के अनेक विवाह हिन्दुओंमें होते आये हैं। यह सभी कोई जानता है कि कौशिल्या सुमित्रा, कैकेई राजा दशरथ के तीन स्त्रियां थीं और इन से भिन्न और भी रानियां थीं। इसी प्रकार उत्तानपाद के और महर्षि याज्ञवल्क्य के दो दो स्त्रियां थीं तो ये वेवकूफ थे और आज कल के हुज्जतवाज बुद्धिमान् हैं! महाराज दशरथ हिन्दू शास्त्रों के पूर्ण विद्वान् थे, उत्तानपाद चक्रवर्ती राजा विद्यामें किसी विद्वान् से कम नहीं थे। महर्षि याज्ञवल्क्य और उन की दोनों स्त्रियां कितनी विदुषी थीं उपनिषद् उठा कर देख लेना चाहिये, महर्षि याज्ञवल्क्यके द्वारा ही माध्यन्दिनी शाखा शुक्ल यजुर्वेद संसार में आया है। इन वेदज्ञाताओं ने तो धर्म को जाना नहीं किन्तु होटल, बोतल भोजी, हुज्जतवाज, संस्कृत शून्य, मनोबलहीन बाबुओं ने धर्म को जान लिया इस को तो कोई मूर्ख भी स्वीकार नहीं कर सकता? जब हिन्दुओं के यहां यह प्रणाली चली आती है कि एक मनुष्य कई विवाह करले और एक स्त्री एक ही विवाह करे फिर इस को बड़े २ विद्वानों ने भी माना, कौन कह सकता है कि यह धार्मिक प्रणाली नहीं है? निःसन्देह यह धार्मिक प्रथा है। कोई भी धार्मिक मनुष्य

धर्म कर्महीन हिन्दू नेताओंके कहनेसे इसको छोड़ नहीं सकता फिर इस को अन्याय कैसे कहा जा सकता है ?

कई एक सज्जन यह कह उठावेंगे कि एक स्त्री के भी तो कई पति होते थे द्रोपदी के ही पांच पति थे ऐसा कहने वालों को हम यही कह सकते हैं कि वे हिन्दू साहित्य से सर्वथा अनभिज्ञ हैं । मार्कण्डेय पुराण में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि द्रोपदी का केवल एक ही पति था, पांच पति नहीं थे, इस को हम आगे स्पष्ट करेंगे । मनु ने लिख दिया है कि स्त्री मरने के पश्चात् उस की अन्त्येष्टि क्रिया कर के द्विजाति पुरुष फिर विवाह करले, देखिये—

भार्यायै पूर्वमारिण्यै दत्वाग्नीनन्त्यकर्मणि ।
पुनर्दारक्रियां कुर्यात् पुनराधानमेव च ॥१६८॥

मनु० अ० ५

अर्थ—मृतक भार्या को अग्नि द्वारा अन्त्येष्टि (दाह) कर के पुनः विवाह करे और पुनः अग्न्याधान करे ।

भगवान् मनु ने पञ्चमाध्याय के अन्त में द्विजाति स्त्रियों का धर्म कहा, पति मरने के पश्चात् ब्रह्मचारिणी बनने का उपदेश अन्य पति का निषेध, द्वितीय पतिके स्वीकार करने से स्त्री का पतन, नरक प्राप्ति कह कर उसके साथ ही ऊपर का श्लोक लिख कर स्त्री मर जाने पर पुरुष को द्वितीय विवाह की विधि कही है । केवल मनु स्मृति में ही स्त्री के मरने पर पुरुष को द्वितीय विवाह नहीं लिखा और धर्मशास्त्रों में भी लिखा है ।

दाहयित्वाग्निभिर्भार्यां सदृशीं पूर्वसंस्थिताम्।
पात्रैश्चाथाग्निमादध्यात् कृतदारो विलम्बितः॥५

कात्यायन स्मृति।

अर्थ—अपने वर्ण की और पहिले जो मरी ऐसी स्त्री को स्थापित अग्नियों से पात्रों सहित जला कर के शीघ्र ही विवाह कर विधि पूर्वक अग्नि का फिर आधान करे।

पुरुष के मरने पर द्विजाति स्त्री को विवाहका निषेध और स्त्री के मरने पर द्विजाति पुरुष को विवाह की विधि धर्मशास्त्रों से सिद्ध हो गई, अब एक पुरुष को अनेक स्त्रियों के विवाह करने की विधि और एक स्त्री को एकही पुरुष के साथ विवाह करने की आज्ञा, इस के विरुद्ध एक स्त्री को कई एक पुरुषों के साथ विवाह करने का निषेध, इस विषय में वेद क्या कहता है सुनिये—

यदेकस्मिन्यूपे द्वेरशने परिव्ययति,
तस्मादेको द्वे जाये विन्देत।
यन्नैकां रशनां द्वयोर्यूपयोः परिव्ययति,
तस्मान्नैका द्वौ पती विन्दते॥

कृष्ण यजुर्वेद।

जैसे यज्ञ के एक यूप (खम्भ) में दो रस्सी बांधी जा सकती हैं इसी प्रकार एक पुरुष दो स्त्रियों को विवाह सकता है। जिस प्रकार एक रशना से दो यूप नहीं बांधे जा सकते

इसी प्रकार एक स्त्री भी दो विवाह नहीं कर सकती। इस को हम पीछे स्पष्ट कर आये हैं।

मन्वादि धर्मशास्त्र और वेद भगवान एक स्त्री और पुरुषों के समान स्वत्व को स्वीकार नहीं करते, फिर हम कौन न्याय से लीडरों के कहे हुये समान स्वत्व मान लें ? धार्मिक पुरुषों के लिये मनु और वेद से अधिक कोई प्रमाण ही नहीं है। जब दोनों ने हो स्त्री पुरुष के स्वत्व में भेदोत्पन्न कर दिया फिर तुल्य स्वत्व हो कैसे सकता है ? अब हम आपको यह दिखलाते हैं कि स्त्री और पुरुष के स्वत्वों में कानून कुदरत ने ही बड़ा भारी अन्तर डाल दिया। आप मनुष्य योनि ही में नहीं किन्तु पशु पक्षियों में भी देखें। नर की अपेक्षा मादा सर्वदा कमजोर रहती है, बैल की अपेक्षा गौ और बकरे की अपेक्षा बकरी, गधे की अपेक्षा गधी, और घोड़े की अपेक्षा घोड़ी इसी प्रकार मुर्गे की अपेक्षा मुर्गी और मेढ़े की अपेक्षा भेड़। इसी प्रकार मनुष्य की अपेक्षा नारी का शरीर कोमल और बलहीन होता है। यह जो अन्तर है यह कानून कुदरत का किया हुआ है या मेरा अथवा लीडरों का। इस के अलावा मुर्गे के शिर पर कलंगी किन्तु मुर्गी के शिर पर नहीं, चिड़े का मुंह काला चिड़िया का नहीं, बैल का ककुद ऊंचा गौ के ककुद ही नहीं। भैंसे का गला भैंस की अपेक्षा सर्वदा नीचे को और मोटा रहता है।

जो अन्न हम खाते हैं वही हमारी माता और बहनें भी

खाती हैं, जिस देश में हम रहते हैं उसी देश में हमारी माता बहिने लड़कियां भी रहती हैं। फिर यह क्या कारण है कि उन के मुख पर चर्बी का भाग अधिक और हमारे मुख पर कम जिस से हमारे तो मूछ और दाढ़ी निकले और उनके न निकले यह अन्तर किसने डाला किसी लीडरने या मैंने, मानना पड़ेगा कि कानून कुदरत ने।

फिर एक बात और भी देखिये। एक पुरुष जिसने दश या ग्यारह स्त्रियां विवाही हैं, और यदि ऋतु कालाभिगामी है तो वह समय पर सब को गर्भवती कर एक वर्ष में दश ग्यारह सन्तानोत्पत्ति करवा सकता है। और यदि कोई स्त्री दश या ग्यारह पति करले तो वह सब के गर्भों को एक साथ धारण नहीं कर सकती, गर्भ एक ही रहेगा। एक वर्ष में एक पुरुष अनेक पुत्र पैदा कर सकता है और स्त्री केवल एक ही, यह जो शक्ति का भेद स्त्री पुरुष में आया यह कानून कुदरत का दिया हुआ है या हमने अपने नियत कर लिया है ? इस के अलावा एक स्त्री दश पन्द्रह सन्तान अपने पेट में गर्भ धारण करके उत्पन्न करती है। इन बराबरीके दावा करने वालों और एक सत्व बतलाने वालों से पूछो कि क्या आप भी अपने पेट में नौ महीने गर्भ रख कर दो चार सन्तान उत्पन्न कर सकते हो ? यदि ये कहें कि नहीं, तो इन से पूछो कि क्यों ? सत्व तो तुल्य ही हैं। स्त्री के पेट में गर्भाशय का होना और मनुष्य के पेट में उस का न होना यह जो अन्तर है यह किसी वैद्य

डाक्टर ने डाला था कि कानून कुदरत ने। इन बातों का विचार न करते हुये स्त्री पुरुष के एक हक्क बतलाना कितनी भूल है। जब कि वेद स्मृति, सदाचार और कानून कुदरत चारों स्त्री पुरुष के स्वत्व में भेद बतलाते हैं तब एक हक्क मानना मूर्खता की पराकाष्ठा पर पहुँचना है ईश्वर न करे कि संसार में सबका एक हक्क होजावे ऐसा होने पर अनर्थ होने लगेंगे क्रोध में आकर मास्टर लड़के के एक थप्पड़ मार दे तो फिर लड़का दो थप्पड़ लगाकर कह देगा कि हक्क सब के बराबर हैं मजिस्ट्रेट किसी अपराधी को सुनावे हम तुम को तीन महीने की सजा देते हैं अपराधी कह उठेगा कि हम तुमको छः वर्षको जेलखाने भेजते हैं क्यों कि हमारा तुम्हारा हक्क बराबर है। कहीं ऐसा न हो कि घोड़ा सवार से कह बैठे कि तुम भी ईश्वर के बनाये और हम भी ईश्वर के बनाये इसी कारण से दोनों का हक्क समान है। छः महीने तुम हमारे ऊपर चढ़े अब छः महीने हम तुम्हारे ऊपर चढ़ेंगे। कृपा रखिये सबके एक हक्क न बतलाइये। एक स्वत्व संसार में स्त्री पुरुष का न अभी तक हुआ न आगे को हो सकता है ऐसी असंभव बातें वही कहा करते हैं जो सर्वथा ज्ञानशून्य मूलत-चंद हिन्दू लीडर कहलाते हैं। इनके ऐसे सड़ियल दिमाग की बातों में धार्मिक मनुष्यों को भी नहीं पड़ना चाहिये और निःशङ्क होकर वह उत्तर देना चाहिये जिससे इनकी जबान बन्द होजावे।

काम वृद्धि।

(६) कोई मनुष्य एक यह भी प्रश्न किया करते हैं कि मनुष्यों से स्त्री का काम शास्त्र ने अठगुना कहा है। जब थोड़े कामवाले पुरुष ही जितेन्द्रिय नहीं बन सकते तो फिर अधिक काम वाली स्त्रियां किस प्रकार जितेन्द्रिय हो सकेंगी?

दोनों बातें विचार शून्य हैं। कौन कहता है कि पुरुष जितेन्द्रिय नहीं हो सकता? क्या ब्रह्माके पुत्र नारद जितेन्द्रिय नहीं हैं? क्या ब्राह्मणों के सहस्रों कुमार जिनका उदाहरण मनु ने दिया है जितेन्द्रिय नहीं हुये? क्या क्षत्रियों में भीष्म आदि कई एक वीर क्षत्रिय जितेन्द्रिय नहीं थे? जो मनुष्य चाहता है वही जितेन्द्रिय हो सकता है फिर यह क्यों कहा गया कि मनुष्य जितेन्द्रिय नहीं हो सकते? अठगुना काम रहने पर भी स्त्रियां ब्रह्मचारिणी बन सकती हैं। बीसवीं शताब्दी से पहिले इसी भारतवर्ष में लक्षों विधवायें ब्रह्मचारिणियां बन कर रहती थीं। इस धर्म भक्षक जमाने में भी सहस्रों विधवायें ब्रह्मचारिणी वर्तमान हैं। फिर कौन कहता है कि स्त्रियां ब्रह्मचारिणी नहीं रह सकती। फिर यह प्रश्न तो उस जाति में हो सकता है जिसमें विवाह काम पूर्ति के लिये होता है। हिन्दू धर्म में तो विवाह स्त्री और पुरुष के लिये ऋतुकालाभिगामी होकर सन्तान उत्पन्न करने के लिये और संसार बंधन तोड़ने के लिये है इसको न समझ कर ही कहते हैं कि स्त्री कैसे रह सकती है। फिर रहने और न रहनेका धर्म

ने ठेका लिया है ? कल को चोर भी कह देंगे कि हम चोरी विना नहीं रह सकते, इतना कहने पर क्या गवर्नमेन्ट उनको सजा न देगी ? गवर्नमेन्ट यह कुछ नहीं सुनती चोरी करनेवाले को अवश्य ही जेलखाने भेजेगी। इस भांति एक पति धर्म को तोड़ने वाली द्विजाति स्त्री को भी ईश्वर दण्ड दिये विना न छोड़ेगा।

कल्पित कारण।

(७) आजकल कई एक लीडर हिन्दू सभा के स्टेज पर अपने व्याख्यानों में यह कहते फिरते हैं कि जिस कौममें चार२ वर्ष की लड़कियों का विवाह होता हो वह जाति विधवा विवाह को किस प्रकार रोक सकती है ?

हमने पंजाब, संयुक्त प्रान्त, विहार, बंगाल, मध्यहिन्द राजपूताना आदि समस्तप्रान्तों में घूमते हुये इस बातका निर्णय उठाया कि दो वर्ष और चार वर्ष की कन्याओं का तथा वर का विवाह क्यों किया जाता है? इसकी छान बीन करते समय हम इस फल पर पहुँचे कि छोटी उम्र में जो विवाह होते हैं वे विवाह उन्हीं लोगों के होते हैं जिनके यहां स्त्री पति मरने पर दूसरा पति कर सकती है। द्विजातियों के यहां ऐसे विवाह नहीं होते द्विजातियों के यहाँ तो आठ वर्ष से लेकर बारहवर्ष तक की कन्याओं के ही विवाह हुये पाये गये हैं। जो सर्वथा मन्वादि धर्मशास्त्र और ऋग्वेद की आज्ञानुसार हैं। फिर क्या इतना अन्याय होगा कि--छोटी उम्रमें विवाह करें अन्य

जातियां और उससे विधवा विवाह चलाया जावे द्विजातियों में ? यदि कोई यह कहे कि आपकी छान बीन में नहीं आया किन्तु हमारे गांव में चार वर्ष की एक द्विजाति लडकी का विवाह हुआ है ? इसके ऊपर हम यह कहेंगे कि वह कौन सा हिन्दू शास्त्र है जिसने चार वर्ष की अवस्था में विवाह बतला दिया। यदि शास्त्र ने नहीं बतलाया किन्तु लड़का लड़की के माता पिताने अपने आप ही कर दिया तब तो हम यही कहेंगे कि इन्होंने भूल की है। क्या इनकी भूल से द्विजाति मात्र में विधवा विवाह चल जावेगा। भूल का सुधार देना, आगे को चार वर्ष की अवस्था में विवाह न होने देना यह बहादुरी है या विधवा विवाह आरंभ करके वेद शास्त्रों को मिथ्या सिद्ध करना श्रेयस्कर है? आप सच पूछें तो विधवा विवाह में यदि कोई प्रधान कारण है तो वह यह है कि हिन्दुओं के लीडरों ने सर्वथा धर्म कर्म को त्याग कर अपने जीवन को पशु जीवन बना लिया है और अब वे समस्त संसार के जीवन को पशु जीवन बनाना चाहते हैं।

विधवाविवाह से हानि।

(८) कई एक मनुष्य यह कहा करते हैं हमने मान लिया वेदादि धर्म शास्त्रों में विधवा विवाह नहीं है और हमने यह भी माना कि दलीलों से भी विधवाविवाह सिद्धि नहीं होता किन्तु विधवा विवाहका प्रचार हो जावे तो इसमें क्या हानि है ?

वेद शास्त्रों की आज्ञा के विरुद्ध संसार भर के लिये

विधवा विवाह को प्रचलित कर देना वेद शास्त्रों को उखाड़ कर फेंक देना है, इस घोर अपमान को धार्मिक हिन्दू का अन्तःकरण सहन नहीं कर सकता। यदि इसी प्रकार वेदों के समस्त विषय ताक में रक्खे जाने लगे तो संसार से वैदिक धर्म विदा हो जावेगा, संसार में वैदिक धर्म रहे इस कारण विधवा विवाह का प्रचार रोका जाता है।

(२) यदि विधवा विवाह का प्रचार होगया तो फिर ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य ये तीन जातियां संसार से विदा हो जावेंगी। भूतल में खोजने पर भी एक ब्राह्मण या एक क्षत्रिय अथवा एक वैश्य न मिलेगा, तीनों ही जातियां मिटकर एक वर्णसंकर जाति बन जावेगी इसको श्रीमद्भगवद्गीता ने इस प्रकार लिखा है कि—

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्न-मधर्मोऽभिभवत्युत ॥
अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥
दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

भगवान्! इस युद्ध में कुल का क्षय हो जावेगा और और कुल के नाश से कुल के सनातन धर्म नष्ट होंगे; धर्माभाव में अधर्म फैलेगा। अधर्म के होने से कुल की स्त्रियां दुष्टा हो जावेंगी, दुष्टा स्त्रियों से वर्ण संकर सन्तान पैदा होगी। ये वर्णसंकर (हरामी पिल्ले) जिस समय मृतक श्राद्ध करेंगे उस समय मृतक पितर स्वर्ग से गिर नरक को जायंगे या पितरों की पिंड जल क्रिया का लोप हो जायगा। इन दोषों से जाति धर्म तथा कुलधर्म का नाश हो जावेगा और उसका पाप मुझे लगेगा।

संसार में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जाति का अस्तित्व बना रहे इस कारण से बड़े परिश्रम के साथ विधवाविवाह का रोकना ही श्रेयस्कर है।

विधवा विवाह के हेतु।

कई एक मनुष्य यह कहा करते हैं कि आज से पचास साठ वर्ष पहिले न इतना विधवा विवाह का आन्दोलन था और न स्त्रियां धर्म से ही गिरतीं थीं तथा न किसी के साथ भागतीं थीं। किन्तु अब तो घर घर में विधवा विवाह का आन्दोलन हो रहा है, स्त्रियां अपना धर्म नष्ट करने पर भी उतारू होगई हैं और भाग भी जाती हैं इसका कारण क्या है?

इसमें जितने भी कारण हैं उन समस्त कारणों को हम क्रमशः दिखलाते हैं सुनते जाइये।

(१) विधवा विवाह के प्रचार में पहिला हेतु अंग्रेजी

शिक्षा है। अंग्रेजी द्वारा हमको पढ़ाया जाता है कि तुम इस देश के रहने वाले नहीं हो उत्तरीय हिमालय से आये हो। वहां के कुछ लोग आर्यावर्त में आगये और कुछ यारुप की तरफ चले गये तथा तुम्हारे पूर्वज भेड़ बकरियाँ चराने वाले जंगली मनुष्य थे एवं वे जंगली मनुष्य जो गाया करते थे उनका नाम वेद है,। ऐसी पढ़ाईमें प्रथम तो हमारा स्वाभिमान और पवित्रता नष्ट हो जाती है। हमको यह ज्ञान होता है कि जो योरुप वालेहैं वही हम हैं, वे हमारे भाई हैं, उनके आचरण स्वीकार करने में एवं उनसे विवाहादि सम्बन्ध जोड़ने में क्या हानि? जब हमारे पूर्वज आर्य जंगली थे और उनमें नाम को भी मनुष्यत्व तथा गुण नहीं थे फिर हम दूसरों से मनुष्यत्व की प्राप्ति करें या गुण सीखें तो इसमें हानि क्या? और यदि हम योरुपीय स्वरूप धारण करलें तो इसमें क्या क्षति? जब वेद गड़रियों के गीत हैं तो उनके मानने की क्या जरूरत? हम योरुप से सभ्यता ग्रहण क्यों न करें? हमारे पूर्वजों में तथा हमारे धर्म ग्रंथों में तो सभ्यता का पता भी नहीं? इस अंग्रेजी शिक्षा से विविध कल्पनायें उठकर यह सिद्धकर देती हैं कि तुम जल्दीसे जल्दी जंगली हिन्दू धर्म और जंगली हिन्दू स्वरूपको नष्ट कर योरुपके आदर्श को लो, नहींतो तुम संसार के सामने मनुष्य कहलाने के ही हकदार न रहोगे? दूषित अंग्रेजीशिक्षा से हिन्दुओं के समस्त व्यवहार नष्ट हो रहेहैं। जब हिन्दुओं के समस्त व्यवहार नष्ट हो तो। फिर पातिव्रत

धर्म बचने की क्या आवश्यक्ता ? धर्म कर्म मूर्खों के ढंसकोले हैं, स्त्रियाँ क्यों कष्ट पावें, विधवा विवाह क्यों न करलें ? इस प्रकारके विचार विधवा विवाह के चलानेमें प्रथम हेतु है।

(२) आज कल विधवाओं के द्वारा बड़े बड़े लीडर और सुधारकों के रोजगार चल रहे हैं। प्रत्येक जिले में विधवा आश्रम खुल गये हैं, आश्रमों की तरफ से फीस भोगी स्त्रियां और पुरुष नौकर हैं वे मीठी मीठी बातों से या लोभ द्वारा गरीब हिन्दुओं की बहू बेटियों को उभाड़ लाते हैं फिर वे आश्रमों में रक्खी जाती हैं एवं उन के साथमें खूब व्यभिचार किया जाता है जैसा कि आज कल आर्यसमाज काशी का कच्चा चिट्ठा समाचार पत्रों में छप रहा है। फिर वे स्त्रियां हजार २ या पांच पांच सौ रुपये में बेच दी जाती हैं। इस रुपये से सुधारक लीडरों के मकान बनते हैं, मोटरें खरीदी जाती हैं, घर के और खर्चे चलते हैं। बाज बाज समय में ये रोजगारी लोग लोगों की अविवाहिता कन्याओं को उड़ा लाते हैं और विधवा कह कर बेच डालते हैं। सामान्य आश्रमों की बात कौन कहे, अविवाहिता कन्याओं को विधवा कह कर स्वामी श्रद्धानन्द ने भी बेची हैं जिस को पूरा विवरण इस विषय का देखना हो वह 'भारतधर्म राष्ट्रीय ग्रन्थमाला देहली' से 'समस्त हिन्दूनेताओं को खुला चैलेंज' नामक पुस्तक मंगवा कर पढ़लें। विधवा आश्रमों के द्वारा जो स्त्रियाएं बिकती हैं वे केवल पंजाबी हिन्दुओं के यहां ही नहीं जाती वरन् सिंध के

मुसलमानों के साथ बिकती हैं। अभी कई एक स्त्रियाएं ऐसी पकड़ी गई हैं और उन स्त्रियोंका चर्चा गत दिसम्बरके समाचार पत्रों में आया है।

इन व्यापारियों ने इस रोजगार को तरक्की पर ले जाने के लिये गहरा आन्दोलन चला रक्खा है।

[क] विधवा विवाह की छोटी छोटी पुस्तकें बनाई जाती हैं जिन में यह सिद्ध किया जाता है कि वेद-शास्त्र, पुराण इतिहास से विधवा विवाह धार्मिक है? स्त्रियों को दुःख देने के लिये कुछ निर्दयी पंडित अपनी मूर्खता से विधवा विवाह को अवैदिक बतलाते हैं, तुम इन मूर्खों के पंजे में मत फंसो। देखो विधवाओं को मुसलमान भगा ले जाते हैं और उन विधवाओं की औलाद गोभक्षक बनती है यदि तुम विधवा विवाह चला दोगे तो विधवाओं की संतान कम से कम गो रक्षक अवश्य रहेगी? इस प्रकार की चित्ताकर्षक पुस्तकें बना कर थोड़े मूल्य में बेची जाती हैं और वे आश्रमों की तरफ से या अन्य सोसाइटियों की ओरसे बिना मूल्य वितीर्ण की जाती हैं। स्त्रियों को वेद का ज्ञान नहीं, वे समझ जाती हैं देखो इस पुस्तक में साफ साफ बतलाया गया है कि दूसरा विवाह कर लेना धर्म है? यह समझ कर अनेक स्त्रियां इनके पंजे में पड़ जाती हैं।

[ख] सोसाइटियों की तरफ से कई एक शास्त्रानभिज्ञ, सर्वथा मूर्ख मनुष्यों को उपदेशक पद पर रक्खा जाता है, वे

देश में घूम घूम कर विधवा विवाह के प्रचार में व्याख्यान देते हैं, धर्म-कर्म, विद्याहीन ऐसे उपदेशकों से चाहे जैसा व्याख्यान दिलालो, इन को धर्म की वृद्धि और नाश से मतलब नहीं, मतलब केवल अपने वेतन से है, ऐसे उपदेशक अपठित जन समुदाय एवं धर्म कर्म हीन अंग्रेजी शिक्षितों में पंडित कहला कर विधवा विवाह पर व्याख्यान देते हैं, इन के व्याख्यान से साधारण मनुष्यों के मन में जम जाता है कि विधवा विवाह वेदों में न होता तो यह पंडित कैसे कहता कि वेदों में विधवा विवाह लिखा है ?

[ग] आज कल अधिक समाचार पत्रों के सम्पादक धर्म कर्म हीन हैं और उनके मन में यह भर गया है कि हिन्दुओं के पूर्वज सर्वथा मूर्ख थे, संसार में यदि कोई योग्य विद्वान् पैदा हुआ है तो योरुप जन समुदाय है। सम्पादक लोग योरुप की सभ्यता पर इतने लट्टू हो गये हैं कि वे अब अपने को साक्षात् योरुप की सन्तान मान हिन्दुओं की श्रुति-स्मृति और सभ्यता को मिटा भारत को योरूप बनाना चाहते हैं, वे सर्वदा अपने पत्रों में ऐसे लेख लिखते रहते हैं जिनसे हिन्दू जाति का अधः पतन हो कर भारत ईसाई बने। अपने इसी कर्तव्य को आगे रख समाचार पत्रों में विधवा विवाह के विस्तृत लेख लिखे जाते हैं तथा इन लेखों में दिखलाया जाता है कि हिन्दू जाति का अस्तित्व एवं देश की उन्नति और स्वराज्य की प्राप्ति तभी होगी; जब विधवा विवाह प्रचलित कर दिया जावेगा।

स्वराज्यका मिलना सभी भारतवासियोंको इष्ट है, जिन मनुष्यों ने अपनी अक्ल को भाड़ में झोंक सम्पादकों के लेख को ही अपना दिमाग बनाया है वे स्वराज्य के लोभ से समाचार पत्रों के जाल में फंस गीदड़ों की भांति 'विधवा विवाह-विधवा विवाह' चिल्लाया करते हैं।

यह हमने अपनी आंखों से देखा है कि एक चमार जाति की स्त्री को जोशी उड़ा लाया और दश पांच आर्यसमाजी गुण्डों ने उन दोनों से हवन करवा कर कह दिया कि वैदिक विधि से तुम्हारा पुनर्विवाह हो गया। इस की सूचना समाचार पत्रों में भेजी गई। कई एक समाचार पत्रों ने स्पष्ट लिखा कि छिद्दू ब्राह्मण की कन्या का विधवा विवाह पं० रामदयाल जी ब्राह्मण से हुआ है। यहां पर लड़की के बाप छिद्दू चमार को छिद्दू ब्राह्मण लिखा और तेल माँगने एवं निरक्षर रमदैआ डाकौत को पं० रामदयाल जी ब्राह्मण बना दिया गया। समाचार पत्रों की इस दुष्ट नीति से जन समुदाय को यह ज्ञान हो रहा है कि अब तो देश में ब्राह्मणों में भी विधवाविवाह होने लगे!

हम देख रहे हैं कि जो दुष्ट व्यभिचारी, पतित, नरपशु सुधारक दूसरों की बहू बेटियोंको उभाड़ कर उनसे व्यभिचार करते हैं-ऐसे पापियों के चरित्र को समाचार पत्र "वेदोक्त विधवाविवाह किया" छापते हैं पेट के कुत्ते इन नीच

सम्पादकों के लेखों से जनता धोखे में आकर समझ बैठती है कि अब तो विधवा विवाह चालू हो गया!

(घ) जातीय सभाओं में प्रायः अंग्रेजी शिक्षित समुदाय की बहुतायत रहती है, ये लोग बिरादरी के मनुष्यों को जाल में फांसने के लिये अपने को जाति भक्त और धार्मिक कहते हैं किन्तु वास्तव में ये लोग ब्राह्मण और भंगी, क्षत्रिय और शेष, वैश्य और ईसाई में भेद नहीं समझते, ये अखाद्य पदार्थों को खाकर अपने धर्म का सफाया कर चुके हैं एवं तरक्की के लोभ से हिन्दू सभ्यता इनको काँटे की भांति खटकती है। इसी सभ्यता को उड़ाने के लिये ये लोग जातियों की महती सभा में विधवा विवाह का प्रस्ताव रखते हैं, इस प्रस्ताव से जनता के मन बिगड़ कर विधवाविवाह रूपी व्यभिचार की तरफ खिंच जाते हैं।

(च) आजकल जो हिन्दुओं के लीडर बने हैं प्रायः ये लोग शैतान हैं इनके मनमें धर्म कर्म की वासना तक नहीं, ये लोग अपने को योरुप का इकलौता बेटा समझते हैं, इन को हिन्दू लीडर मानना संसार को धोखे में डालना है, इन्हीं लीडरों में से गोहत्यारा एक मिस्टर गान्धी भी लीडर है जो गोहत्या को धर्म बतलाता है। साधारण मनुष्य यह नहीं समझते कि यह पापी हिन्दुओं के लिये औरंगजेब का भी बाप है वरन् इसको महात्मा समझकर अपना शुभचिन्तक जान इसके व्याख्यान पर विश्वास करते हैं। यह रात दिन विधवा

विवाह चलाने के चक्कर में रहता है जब इसने मद्रास में यह कहा कि कोई भी विद्यार्थी अविवाहित कन्या से विवाह न करे सबको विधवाओं के साथ विवाह करना चाहिये तब इनके व्याख्यान से अनभिज्ञ लोग यह समझ बैठे कि विधवाविवाह के विना स्वराज्य ही नहीं मिलेगा।

मद्रास के व्याख्यान के पश्चात् मिथ्या भाषी गान्धी ने अपने लड़के का विवाह अविवाहिता कन्या से किया इस कृत्य से गान्धी के मुख पर स्याही अवश्य लग गई किन्तु इतने पर भी लज्जा को नाक में रख कर गान्धी विधवाविवाह के चक्कर में पड़ा हुआ इसी का व्याख्यान देता है। अक्ल को वेच खाने वाले मनुष्य समझते हैं कि विधवाविवाह के विना तो स्वराज्य ही नहीं मिलेगा?

(छ) स्वा० दयानन्द मनुष्योंको कुछ थोड़े से वेदबन्धनों में बांध गये हैं किन्तु अंग्रेजी शिक्षारूपी विकट भूत शिर पर सवार होने के कारण आज आर्यसमाज को ये बंधन कांटे की भांति खटकते हैं। आज आर्यसमाज चाहता है कि हम इन बन्धनों को भी तोड़ डालें ये बन्धन टूटें कब? जब कि स्वा० दयानन्द जी को मूर्ख, अयोग्य, देश शत्रु सिद्ध कर दिया जावे। स्वामीजी ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि प्रभृति अपने बनाये अनेक ग्रन्थों में विधवा विवाह का घोर खण्डन किया है। स्वा० दयानन्द को मिथ्यावादी, वेदानभिज्ञ, मूर्ख सिद्ध करने के कारण आज आर्यसमाज

अपने प्लेट फार्मों पर नित्य ही व्याख्यान देकर विधवा विवाह को वैदिक धर्म बतलाता है। साधारण मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि यह कार्य स्वा० दयानन्द को मूर्ख सिद्ध करने के लिये किया जाता है वरन् इसके विरुद्ध यह समझ बैठता है कि वेदों में विधवा विवाह है।

(ञ) आज देशमें हिन्दू सभाएं स्थापित हो गई हैं इन सभाओं का आधिपत्य प्रायः उन्हीं लोगों के हाथ में हैं जिन का रसोई घर होटल और जिनका पाठ पूजन मदिरा पान जिनका सच्चरित्र व्यभिचार एवं जिनकी उदारता चन्देके रुपये खा जाना है। संसार को समझाने के लिये ये अपने को हिन्दू कहते हैं किन्तु आचार विचार व्यवहारमें ये लोग योरुप से चार कदम आगे हैं, इनके मन रावण से कुछ कम नहीं, ये चाहते हैं और कहते हैं कि ब्राह्मणोंको वोरोंमें भरवा समुद्रमें डुवा दिया जावे, ये लोग कंस की भाँति वेदों पर अत्याचार करने के लिये तय्यार हैं ये स्पष्ट कह देते हैं अपने व्याख्यान में कि श्रुति-स्मृति में दियासलाई दिखलादो, समय के अनुकूल नवीन ग्रंथ बनालो यह इनके धार्मिक होने का नमूना है। 'धर्म ग्रंथ नवीन बनालो' इसके माने समझते हो? इसका अर्थ यह है कि 'अब बाइबिल को धर्म शास्त्र मान लो तब ही तरक्की कर सकोगे' निन्दा के भय से स्पष्ट रूप से बाइबिल का नाम नहीं ले सकते, अभिप्राय इनका बाइबिल से ही है। हिन्दुओं के परम शत्रु इन राक्षसों को हिन्दू लीडर वही

मानेगा जिसने अपनी अक्ल का इमामदस्ते में कूट कर चूर्ण बनाया है। ये अपने स्टेज पर विधवा विवाह का रेजुलेशन पास करते हैं उस पर व्याख्यान देते हैं साधारण जनता इनकी बातों में आ जाती है। हिन्दू सभ्यता को संसार में रखने के लिये प्रत्येक धार्मिक हिन्दू का यह कर्तव्य हो जाता है कि जहां तक हो सके हिन्दू सभाओं को नेस्त नाबूद करदे। हिन्दूसभा के जरिये से ही हिन्दू सभ्यता को मिटाने के लिये विधवा विवाह सरीखे घोर पाप का प्रचार होता है।

[झ] वर्णाश्रम धर्म को तोड़ने के लिये अमेरिका और योरुप से करोड़ों रुपया भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष आता है। उस रुपये का अधिक भाग अकर्मण्य, नामर्द सुधारकों के हाथ में फंसता है। उस रुपये से गुलछर्रे उड़ा कर सुधारक धर्म नाश करते हैं, बड़ी बड़ी रकमें भी खा जांय और दूध के धुले भी बने रहें-यह इनकी अनधिकार चेष्टा है,ये कृश्चियनों के गुलाम, हिन्दुओंके शत्रु पापी पेटके लिये धर्म पर छुरे चला रहे हैं। ये ही लोग देशोद्धार के बहाने से भंगी-ब्राह्मण और शुद्धि के बहाने से हिन्दू- मुसलमान को एक करते हैं। धर्म मिटाने में सर्वोत्तम उपाय इन्होंने विधवा विवाह सोचा है, इसी कारण से ये विधवा विवाह का व्याख्यान देते हैं और उसको सुन कर जनता विधवा विवाह को धर्म मान बैठती है यह है चालबाजों की चालबाजी?. ईसाइयों का रुपया भी हजम करलो और हिन्दुओं के लीडर भी बने रहो एवं धर्म

को कुचल डालो। इस निन्दनीय व्यापार से हिन्दुओं का सर्व नाश होरहा है। चाहे हिन्दू आज ही क्यों न मर जांय इन को इसकी फिक्र नहीं, फिक्र केवल टके कमाने की है, ऐसे नालायक परम शत्रुओं को लीडर मान कर हिन्दू जाति संसार में कितने दिन जीवित रहेगी? इसके ऊपर ध्यान देना प्रत्येक हिन्दू का काम है। सुधारकों के मुख से निकला हुआ विधवा विवाह मान कर ही संसार में विधवा विवाह का कोलाहल मच गया है।

[ट] शूद्रों में विधवा विवाह का प्रचार और वह पाप नहीं है, श्रुति स्मृति की आज्ञा है किन्तु शूद्र जाति के लीडर इसको बुरा समझते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय; वैश्यों में विधवा विवाह न हो और हम में हो? ऐसा विवाह करना नाक कटाना है, वे लोग अब शूद्र नहीं रहना चाहते, कोई क्षत्रिय बनना चाहता है और कोई ब्राह्मण। वे इस बातका भी अनुभव कर रहे हैं कि द्विजों में विधवा विवाह का न होना और हम में होना हमको शूद्र बना रहा है। इनकी इच्छा है कि किसी प्रकार द्विजों में विधवा विवाह चले इस कारण से शूद्र जाति के जितने भी लीडर हैं वे सब विधवा विवाह का प्रचार कर रहे हैं, जनता इस बात को नहीं समझती कि द्विजोंमें विधवा विवाह चलाकर ये लोग द्विज बनना चाहते हैं, जनता यही समझती है कि वेदों में विधवा विवाह है तभी तो ये लोग प्रचार करते हैं।

विधवा विवाह का प्रचार इस कारण से नहीं हो रहा कि वह धर्म या श्रुति-स्मृति में उस की आज्ञा है। इस का प्रचार तो पापी पेट के भरने के लिये और स्वार्थ सिद्धि के निमित्त हो रहा है। वेद शास्त्रों के ज्ञाता पंडित विधवा विवाह का प्रचार नहीं करते वरन् वे मूर्ख प्रचार कर रहे हैं कि जिनकी सात पीढ़ी ने भी वेद शास्त्र नहीं देखा।

सनातनधर्मी।

(३) कई एक सनातनधर्मी धर्म विरुद्ध आचरण बनाकर विधवा विवाह को सहायता दे रहे हैं ऐसे नीच पामरों को सनातनधर्मी कहना पाप है। स्वार्थी, बनावटी सनातनधर्मियों के कृत्य ये हैं।

[क] बूढ़े का विवाह करना। जो लोग यमराज के यहां निमंत्रित हो चुके हैं। जिनकी उम्र साठ सत्तर वर्षकी होचुकी है ऐसे यमराज के प्रेमी भी अपना विवाह कर बैठते हैं, नहीं मालूम ऐसे लोग विवाह करके क्या करेंगे? हमारी समझ में यह विवाह केवल पड़ोसियों के उपकार के लिये या सदावर्त लगाने को छोड़ कर और कोई अर्थ नहीं रखता कन्या का पिता रुपये के लोभ में अन्धा होकर कन्या का जीवन जान बूझ कर पाप मय बनाता है, इसके लिये जाति पंचायत का संगठन हो और उसके द्वारा ऐसे अनर्थकारी विवाहको अवश्य ही रोक दिया जावे।

[ख] बाल विवाह से भी विधवाओं की संख्या बढ़ रही

है। कन्या का विवाह ग्यारह वर्ष से आगे और रजस्वला होने के पूर्व एवं लड़कों का विवाह वीस वर्ष की अवस्था में होना ही श्रेयस्कर है।

[ग] आज कल जो स्त्रियां पढ़ गई हैं उनकी दृष्टि में जो उपन्यास आते हैं प्रायः उन उपन्यासों में व्यभिचार की भर मार रहती है इनका अवलोकन भी स्त्रियों के स्थिर चित्त को चंचल कर देता है।

[घ] वर्तमान समय में भारतवर्ष में नौटंकी की वृद्धि हो रही है। नौटंकीमें प्रायः आशिक माशूकों के ही स्वाँग रहते हैं, नौटंकी देखने वाली स्त्रियों को महाराज कामदेव सता कर धर्म से गिरा देता है।

[च] वाज वाज विधवा के घर वाले द्रव्यादि के लोभ से किसी अन्य पुरुष को अपने घर में आने जाने देते हैं ऐसे आदमी विधवाओंका धर्म विगाड़ देते हैं और गर्भकी स्थिति पर यह भेद खुल जाता है, इस दुर्दशा को देख कर विधवा विवाह की आवाज उठ जाती है।

[छ] वाज वाज विधवा के पति घराने के मनुष्य विधवाओंके साथ दुर्व्यहार करते हैं उसको भली प्रकार भोजन नहीं देते, कपड़ा नहीं देते, प्रत्येक क्षण भंयकर कोप से डाटा करते हैं, कभी २ मारभी वैठते हैं इस व्यवहारसे दुःखित होकर कई एक विधवायें प्राण खो देती हैं और कई एक भाग निकलती हैं।

[ज] कई एक घरानों में यह भी देखा जाता है कि पति के घराने के मनुष्य ही उस विधवा के धर्म को बिगाड़ते हैं गर्भ रहने पर गिराने का उद्योग करते हैं, उसको कहीं छोड़ आते हैं या बदमाश कह कर घर से निकाल देते हैं।

इन कारणों से देश में विधवा विवाह की आवाज उठी है। विधवा विवाह प्रेमी इन कारणों को तो छिपाते हैं और बनावटी उन कारणों को पबलिक के आगे रख देते हैं जिनका खण्डन कर आये हैं। भारत की जनता प्रायः अशिक्षित है उसको यह जाल में फांसने के लिये दिन का रात और रात का दिन बनाया करते हैं। धोखा देने वाले संसार में बड़ी २ चालाकियां चलते हैं। एक काश्तकार तीर्थों को जाने लगा उसके पास एक तीन सौ रुपये का घोड़ा था. वह किसी वैश्य के सपुर्द कर गया और कह गया कि ठीक समय पर दाना घास देते रहना, दाना घास के दाम हमारे नाम लिख लेना इतना कह कर वह तीर्थ यात्रा को चला गया। प्रयाग, अयोध्या, काशी, गया, वैजनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वर, द्वारका, बद्री नारायण प्रभृति तीर्थों में भ्रमण कर दो वर्ष के बाद आया। जब वह घर आया तो सेठ जी से अपना घोड़ा माँगा, सेठ जी ने उत्तर दिया कि तुम्हारा घोड़ा तो मर गया। इस ने सेठ की बात को सत्य मान लिया और चुप रह गया किन्तु दो चार मनुष्यों ने इस से कहा घोड़ा मर नहीं गया, सेठ जी ने ३२१) रुपये को बेंच लिया। यह सुन कर यह कास्तकार

फिर सेठ जी के पास आया और कहने लगा सेठ जी! तुम झूठ क्यों बोलते हो, घोड़ा मरा कब है, वह तो तुमने बेच लिया? इस को सुन कर सेठ जी बोले कि यह बनावटी बातें हमारे तुम्हारे लड़ाने के लिये चन्द मनुष्य कह रहे होंगे, तुम्हारा घोड़ा मर गया और उस के हाड़ों का ढांचा अब भी जंगल में पड़ा है, चलो हम तुम को दिखला दें। इतना कह कर सेठ जी इसे साथ ले जंगल को चले, बहुत ढूंढा किन्तु घोड़े का ढाँचा न मिला, एक स्थान में बैल के हाड़ पड़े थे, इन को देख कर सेठ जी बोले कि यह तुम्हारे घोड़े का ढांचा पड़ा है, उस को देख कर कास्तकार बोल उठा सेठ जी! आंखों में धूल मत झोंको, इसके तो सींग हैं, यह तो बैल का ढांचा है? सेठ जी बोल उठे कि यही तो इस के रोग हुआ था, कोई ऐसा रोग पैदा हो गया। जिससे रात भर में घोड़े के सींग निकल आये और प्रातःकाल मर गया। यहां पर सेठ जी ने अपनी चालाकी से कास्तकार की आंखों में धूल झोंकदी। इसी भांति से आज विधवाविवाह के प्रेमी संसार की आँख में धूल झोंक रहे हैं। कोई कहता है गर्भपात की हत्या होती है, हम से यह पाप देखा नहीं जाता कोई कहता है विधवायें भाग जाती हैं उन को मुसलमान रख लेते हैं उन के जो औलाद होती है वह गो भक्षक होती है। मानो द्वापर में राजा युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा हुये थे वैसे ही धर्मात्मा अब ये पैदा हुये हैं? सैकड़ों हत्यायें करने वाले बहु

बेटियों को बेचने वाले हिन्दू लीडर धर्मात्मा हो सकते हैं ? संसार को दिखाने के लिये गोहत्या पाप है किन्तु लीडर नरेश गान्धी तो गोहत्या को धर्म बतलाता है और कई एक दुष्ट लीडर होटलों में गोमांस को चट कर जाते हैं फिर ये धर्मात्मा कैसे ? वास्तव में विधवा विवाह की आवाज उठा कर गरीब लोगों की बहू बेटियों को बेच कर पेट भरना ही इनका लक्ष्य है, निन्दा के कारण ये अपनी नीचता को छिपा कर सेठ की भांति गर्भपात और गोभक्षक की आड़ में संसार की आंख में धूल झोंक रहे हैं, जब तक जनता इनके धोखों से एवं इनसे सावधान न होगी तब तक ये अनेक जाल बना कर धर्म का कतल करते ही रहेंगे। हमारा जनता से अनुरोध है कि हिन्दू लीडरों का एक दम काला मुंह कर दे और जब धर्म में कोई सन्देह हो तब संस्कृत के विद्वानों से पूछ लें।

(४) कई एक मनुष्यों का कथन है कि तुम्हारे वेद-शास्त्र जिस जमाने में बने हैं वे उस जमाने के लिये हित कर होंगे किन्तु अब इन का समय नहीं रहा, वर्तमान समय के उपयोगी नवीन वेद और धर्मशास्त्र बनाये जावें जिससे भारतवर्ष की उन्नति हो।

यह खूब रहा, हिन्दू लीडरों की इच्छा पूर्ति के लिये वेद शास्त्र भी नवीन बने ? यहाँ पर तो इच्छा पूर्ति ने धर्म की सफाई ही करदी। नये नये वेद-शास्त्र कैसे कैसे बनाये जावें ? एक लीडर कहेगा कि मैं मांस खाता हूं, नये वेदशास्त्रों में इस

को धर्म वतलाओ। दूसरा कहेगा मैं मुर्गी के अण्डे चट कर जाता हूँ-इस को मोक्षदायक लिखो। तीसरा कहेगा कि मैं शराव पीता हूँ-इस कार्य से जीव का ब्रह्म होना लिखो। चौथा वोल उठेगा मैं खूव व्यभिचार करता हूं-इस को सर्वोपरि परम धर्म वतलाओ। पाचवाँ वतलावेगा, मैं अंग्रेजोंका गुलाम हूँ-उन के वूट झाड़ता हूं-इस को स्वर्ग प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन लिख दो। छठा अपने मानसिक भावों को आगे रख सम्मति देगा कि चुटिया कटा कर जनेऊ उतार दो, इसी प्रकार के दुष्ट भाव नवीन वेद-धर्मशास्त्रों में भरे जावेंगे, यही अभिप्राय इन लीडरों का है। ये लोग इच्छानुसार खुलासा सव काम नहीं कर सकते इसी कारण नवीन धार्मिक ग्रन्थ वनाने का मार्ग वतला कर शान्त संसार को खूंख्वार जानवर वनाना चाहते हैं-ये नास्तिक हैं या आस्तिक? इस का विचार आप कीजिये।

इन के जाल का भी कुछ ठिकाना है। वात वात में चाल वाजियां और धोखा? नहीं मालूम अंग्रेजी शिक्षा ने इनको जाल वनाने के सिवाय और कुछ सिखलाया है या नहीं। इन का यह कथन कि उस समय के लिये वेद-शास्त्र हितकारी होंगे किन्तु वर्तमान समय के लिये वे उन्नति कारक नहीं है, इन की दृष्टि में प्राचीन समय जैसा था वैसा वर्तमान समय नहीं है, समय वदल गया। इन का यह कथन कि 'समय वदल गया' सर्वथा झूठ है, समय नहीं वदला, इन के मानसिक भाव वदल गये हैं।

जब हम समय बदलनेका निर्णय उठाते हैं तब पता लगता है कि जिन महीनों में पहिले शीत पड़ता था उन्हीं महीनों में अब भी शीत पड़ता है। जिन महीनों में पहिले गर्मी होती थी उन्हीं महीनोंमें अब भी होती है। जो महीने पहिले पानी बरसाते थे वे ही अब भी पानी देते हैं।

काश्तकारोंसे पूछने पर यह भी पता लगा कि जिन महीनों में धान, कपास, ज्वार, बाजरा पहिले बोया जाता था उन्हीं महीनों में अब बोया जाता है और जिन महीनों में कटता था उन्हीं महीनों में अब कटता है। चना, गेहूँ, जौ, मटर, अलसी सरसों जिन महीनों में पहिले बोया जाता था उन्हीं महीनों में अब बोया जाता है और जिन महीनों में पहिले कटता था अब भी कटता है।

आम, जामुन, नारंगी, अमरूद, आड़ू, अनार, नीबू, नीम्ब जिन महीनों में पहिले फलते और फूलते थे उन्हीं महीनों में अब भी फलते फूलते हैं। चमेली, गुलाब, केवड़ा, मोतिया प्रभृति जिन महीनों में पहिले फूल देते थे अब भी देते हैं।

जैसे पहिले बाल, युवा, वृद्ध होते थे समस्त प्राणी अब भी उसी प्रकार होते हैं। जो मौसमी हवा अपने अपने समय पर पहिले चला करती थी अब भी चलती है। पुराने जमाने में सूर्य पूर्व में उदय होता था, अब भी पूर्व में ही उदय होता है। पहिले जमाने में बैलों के सींग होते थे अब वे सींग गधों के शिर में नहीं निकलने लगे, फिर हम कैसे मानलें कि जमाना

बदल गया ? जमाना बिल्कुल नहीं बदला, अपनी राक्षसी वृत्तियों को पूर्ण करने के लिये हिन्दू लीडर जमाना बदलनेका संसार को धोखा दे रहे हैं।

रही धार्मिक ग्रन्थों की बात कि नवीन बनालो। कैसे बनालें ? धार्मिक ग्रन्थोंके विवेचनमें स्मृति लिखती है कि—

वेदार्थोपनिबद्धत्वात्प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम्।
मन्वर्थविपरीता तु या स्मृतिः सा न शस्यते॥

बृहस्पति।

मनु स्मृति समस्त स्मृतियों में प्रधान है क्यों कि इस के प्रत्येक श्लोक में वेद के मंत्रों का अर्थ लिया गया है, जो स्मृति मनुस्मृति के विपरीत है वह ग्राह्य नहीं हो सकती।

समस्त स्मृतियाँ मनुस्मृति के आधार पर बनी हैं, मनु स्मृतिके बदलने पर ही शेष स्मृतियां बदली जा सकती हैं और मनुस्मृति वेदार्थको लिये है जब तक वेद न बदले जावेंगे तब तक मनुस्मृति कभी बदल नहीं सकती। वेद किसी मनुष्य के बनाये नहीं हैं, वेदोंके रचयिता जगदीश्वर हैं, पहिला ईश्वर बदला जावे फिर हिन्दू लीडरों की आज्ञानुसार नवीन वेद बनावे तब स्मृतियां बदल सकती हैं। यह पंडितों के काबू की बात नहीं है। एक ईश्वर को मार दूसरा ईश्वर बनाना संभव है हिन्दू लीडरों का सड़ियल दिमाग इस काम में कामयाब हो सके, पंडितों का साहस इस विषय में एक भी कदम आगे

नहीं बढ़ता जब लीडर नया ईश्वर, नवीन दुनियां नये वेद तैयार कर लेंगे तब पंडित लोग नूतन स्मृतियां बनालेंगे। ईश्वर का तबदील करना मनुष्य के हाथमें नहीं फिर नये वेद और नई स्मृतियाँ कैसे बनें?

धार्मिक विषय में हिन्दू लीडर समझने तो कुछ नहीं किंतु जबर्दस्ती से अपनी टांग अड़ा देते हैं, यदि इन को यह मालूम होता कि समस्त धार्मिक रचना ईश्वराधीन है तब तो ये बद- लने का नाम ही न लेते वरन् जिन लोगों ने जन्म भर जी० ओ० गो० में खो दिया, जिन की सात पीढ़ियों में से एक पीढ़ी ने भी संस्कृत साहित्य नहीं देखा वे वेदादि सच्छास्त्रों का गौरव न समझ कर इन के बदलने की आवाज उठाते हैं क्या हम उनको बेवकूफ कहें तो हमारा यह कहना अनुचित है।

बदलने के माने क्या कि हिन्दू लीडर जो जो पाप और अत्याचार करें उन को धर्म की डिगरी दे दो, यह इन का बदलने से अभिप्राय है। कभी किसी देश में भी न ऐसा हुआ है, न हो सकता है। कल को चोर तथा डाकू कहेंगे कि सर- कारी कानून बदल दो, पुलिस को हटा दो, जेलखाने तोड़ दो, समय बदल गया है हम को चोरी करने दो, चोरों के इस कथन पर कोई मजिस्ट्रेट एवं कोई गवर्नमेण्ट अपने कानूनका सफाया न करेगी, फिर चन्द स्वार्थी चोरटे हिन्दू लीडरों के कहने पर ब्राह्मण या ईश्वर ईश्वरी कानून वेदादि सच्छास्त्रों को कैसे बदल देगा?

तर्क की निःसारता।

धर्म कर्म हीन हिन्दू सुधारक चाहते हैं कि हम हुज्जत बाजी से वेद का सफाया करदें, इसी कारण नई नई दलीलें बना वेद को बेवकूफों की किताब सिद्ध कर विधवा विवाह प्रचलित करवाने के लिये हमारे आगे दलीलें रखते हैं इन को समझ लेना चाहिये कि यह धर्म अन्य धर्मों की भांति दलीलों से गिरने वाला नहीं है, इसके आगे तो दलीलें अपने स्वरूप को खा बैठती हैं। निरक्षर हिन्दू लीडर क्या खाक दलीलबाजी करेंगे? इनके तो बाप दादाओंने भी दलील नहीं देखी? संसार के बड़े बड़े विद्वान् चार्वाक बृहस्पति और बुद्ध जिनके समस्त सिद्धान्त ही तर्कों पर प्रतिष्ठित थे तथा जिन को तार्किक होने का अभिमान था वे सब सनातनधर्म के आगे अपनी दलीलों को खो कर हार मान बैठे। इन से भी प्रबल कालवादी, स्वभाववादी, नियतिवादी, इत्तफाकवादी, तत्ववादी और पुरुषवादी जो चार्वाक-बृहस्पति-बुद्ध से भी विद्वान् थे ये सब अपनी दलीलों को छोड़ कर सनातनधर्म के आगे अपने स्वरूप को खो बैठे। यदि दलीलें सनातन धर्म को उड़ाने में समर्थ होतीं तब तो सनातनधर्म कभी का उड़गया होता? जिस सनातनधर्मने बड़े बड़े दलीलबाजों की दलीलों का चकना चूर कर दिया वह धर्म इन मूर्ख लोगों की दलीलों से उड़ सकता है? यदि ये दश लाख दलीलें बनाकर लावें तब तो सनातन धर्म का बाल बांका हो ही नहीं सकता। नहीं मालूम पांच सात दलीलों से

सनातनधर्म के प्रधान ग्रंथ वेद और धर्मशास्त्र कैसे वड़ जावेंगे।

आज कल के दलीलबाज दलील की निःसारता और प्रवृत्ति को नहीं समझते इसी कारण वेदों के मुकाबले में हुज्जत लेकर दौड़ पड़ते हैं। महाभारत इस तर्कके विषय में लिखता है कि—

तर्कोऽप्रतिष्ठः।

तर्क जो है वह अप्रतिष्ठ है स्थायी नहीं। एक मनुष्य जिस को यह अभिमान है कि मेरी तर्कें अकाट्य हैं वह जब अपने से अधिक विद्वान् के पास जाता है तब वह अधिक विद्वान् अपनी विशेष तर्कों से इसकी तर्क को काट डालता है। तर्क काटने वाले विद्वान् को जब उससे अधिक तार्किक मिलजाता है तब वह इस विद्वान् की तर्क को मिथ्या सिद्ध कर देता है। जैसे जैसे अधिक तर्क का विद्वान् मिलता जावेगा वैसे ही वैसे पहिले विद्वानों की समस्त तर्कें कल्पित बन जावेंगी। इसी के ऊपर वेदान्त दर्शन लिखता है कि—

तर्क प्रतिष्ठानात्।

तर्क की स्थिति सत्य नहीं है। तर्क मनुष्यों के दिमाग से निकला है और वेद ईश्वरीय ज्ञानका भण्डार है, फिर मनुष्यों की तर्क ईश्वर के विज्ञान को कैसे झूठा सिद्ध कर सकेगी? वेद में जिन तर्कों से काम लिया गया है उन तर्कों पर आज

कल के मनुष्यों का दिमाग नहीं पहुँच सकता, इस कारण शास्त्रों ने साधारण तर्क से वेद की जाँच करने का खण्डन कर दिया है। इसके ऊपर मनु जी लिखते हैं कि—

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ॥१०
योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः॥११

मनु० अ० २

वेद का नाम श्रुति और धर्मशास्त्र का नाम स्मृति है, समस्त धर्मों में इन्हीं दो का विचार करना क्यों कि धर्म इन्हीं से निकला है। जो मनुष्य तर्क का आश्रय लेकर धर्म मूलक इन ग्रंथों को उड़ाने का साहस करता है वह वेद निन्दक एवं नास्तिक है, सज्जन लोगों को चाहिये कि उसका कान पकड़ कर अपनी सोसाइटी से निकाल दें।

जब महाभारत तथा मनु और सूक्ष्म तत्वों का विवेचन करने वाला वेदान्त दर्शन धर्म के निर्णय में मनुष्यों की तर्कों को बच्चों का खिलौना समझता है फिर उन कमजोर तर्कों से वेद के उड़ाने का साहस करना क्या हिन्दू लीडरों की बेवकूफी नहीं है ?

मनुष्य अपने दिमाग से उन्हीं तर्कों को उठा सकता है जो दृश्य जगत् से पैदा हो सकती हैं और जो सूक्ष्म पदार्थ

दृश्य नहीं था इसके दिमाग में नहीं समाते उनके ऊपर क्या यह खाक दलीलें उठावेगा ? दृश्य होने के कारण पंचतत्व तक ही मनुष्यों की दलीलें जा सकती हैं ! इस के ऊपर नहीं, इसी को महाभारत कहता है कि—

अचिन्त्याः खलु ये भावा न तान्तर्केण योजयेत्।
प्रकृतिभ्यः परं यत्तु तदचिन्त्यस्य लक्षणम् ॥

जो भाव अतर्क्य हैं, जहां पर मनुष्य का दिमाग काम नहीं कर सकता उनको तर्कों से मत जांचो, प्रकृति से ऊपर जीव , ईश्वर, ब्रह्म, सृष्टिरचना क्रम, जिसमें पुराणों का नाम सर्ग है ये सब अतर्क्य हैं, यह तो महाभारत का कहना है किन्तु मैं एक छोटी सी दलील से यह सिद्ध कर दूंगा कि दलील कोई चीज ही नहीं? कल्पना करो दलीलवाजों के यहां का एक पुरुष विदेश को चला गया, उसका यह पता नहीं कि वह किस स्थान में ठहरा। अब लड़ाओ दलीलें वह पूर्व गया या पश्चिम उत्तर या दक्षिण, ? दिमागका कचूमर निकालने पर भी तर्क नहीं बतला सकती वह किस दिशा में है। वर्ष दिन के बाद वह बीमार होगया, उसके किसी दोस्त ने यहां पर चिट्ठी लिखी कि घासीराम बहुत बीमार है जल्दी आओ, यहां पर तैय्यारियां होने लगीं और तर्क उठी आज कल चातुर्मास्य है तथा मौसमी बुखार चल रहा है, चिट्ठी ग्यारह दिन में आई है, अब वह अच्छा होगया होगा

इस तर्क के आधार पर रवानगी स्थगित होगई। दूसरे दिन चिट्ठी आई कि घासीराम का शरीर छूट गया. बस चिट्ठी पढ़कर लगे रोने, कहाँ गई वह तर्क कि अच्छा होगया होगा. रोते क्यों हो? एक मनुष्य के लेख के आधार पर? लेख के आगे तर्कका खातमा हो जाता है। जब एक साधारण मनुष्य का लेख तर्क की अन्त्येष्टि कर देता है तो सर्वज्ञ जगदीश्वर के अकाट्य, परिपूर्ण ज्ञान को तुम्हारी तर्क कैसे उड़ा सकेगी? वेद और धर्मशास्त्र ने यह बतलाया कि जो स्त्री पति के साथ सती होती है वह अपने पति सहित साढ़े तीन करोड़ वर्ष स्वर्ग में वास करती है और जो पति मरने पर पतिव्रत धर्म का पालन करती है उसको पतिलोक मिलता है, इसके विरुद्ध जो स्त्रियाँ एक पति धर्म का नाश करके दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़ती हैं वे घोर नरक को जाती हैं। स्वर्ग और नरक है, या नहीं ये स्त्रियाँयें स्वर्ग-नरक में जाती हैं या नहीं जातीं, यह मनुष्यों ने आँखों से नहीं देखा, अब इनके ऊपर दलील कैसे उठेगी, क्या कोई दलील-बाज संसार में ऐसा है जो पतिव्रता के स्वर्ग मिलने को और पापिष्ठा के नरक जाने का दलील से खंडन करदे, यदि कोई कर सकता हो तो शीघ्रातिशीघ्र लेखनी उठावे। जो ये दोनों बातें तर्क से नहीं कट सकतीं तो ऐसी कमजोर तर्क का अवलम्बन वही हिन्दू लीडर करेंगे, शराब ने जिनकी बुद्धियों का चकनाचूर कर दिया हो।

सनातनधर्म इन तर्कों से नहीं डरता, इसने बड़े २ तर्कबाजों को ठिकाने लगा दिया इसको हम एक दृष्टान्त से स्पष्ट करेंगे। दृष्टान्त यह है कि पुराने जमाने में एक बड़ा विस्तृत और गम्भीर वन था, यद्यपि उस वन में हाथी, बघेरा, चीता प्रभृति अनेक प्रकार के जन्तु रहते थे किन्तु उसी वन में एक प्रबल शेर भी रहता था। समस्त प्राणी इससे डरते थे। दैवयोग से एक दिन यह शेर बीमार होगया, इसको बीमार देख वन के जानवरों की एक कमेटी हुई, उसमें प्रस्ताव रक्खा गया कि यह शेर विना अपराध हमको मारा करता है, आज यह बीमार होगया, मौका अच्छा है, इस समय इसको निपटा दो--यह रेजुलेशन पास होगया। सब से पहिले चीता शेर के मारने के लिये चला, जब यह शेर के समीप आया और उसके मारने का इरादा किया तो पड़े हुये शेर ने एक थप्पड़ चीते के ऐसा मारा कि वह थप्पड़ खाते ही परमधाम को चला गया। इसके पश्चात् तेंदू-शेर के प्राण लेने को शेर के पास पहुँचा, शेर ने उठकर तेंदू को पकड़ नीचे गिरा खतम कर दिया। बाद में एक मस्त हाथी घूमता हुआ शेर की तरफ को चला, इसका इरादा है कि मैं शेर के पेट पर एक पैर ऐसा रक्खूंगा जिसके रखने से शेर सीधा यमालय पहुँच जावे--यह इरादा करता हुआ जब हाथी शेर के पास पहुँचा कि शेर ने उस के आने के शब्द को सुन आंख

खोली, हाथी भागा और इतना डर गया कि वन छोड़ कर बाहर निकल गया।

अब गीदड़ों ने इरादा किया कि देखो शेर किसी से नहीं मरा, आओ हम कुछ भाई मिलकर चलें और शेर को मार लें। चलते २ जब गीदड़ शेर के पास आये उस समय शेर ने मुख से कुछ आवाज निकाली, आवाज सुनते ही गीदड़ जान बचाकर भागे एवं समझ लिया कि जान बची तो लाखों पाये यह एक दृष्टान्त है।

इसका दार्ष्टान्त समझिये, विस्तृत और गम्भीर वन कौन? भारतवर्ष! इसमें विविध धर्मों के प्राणी ही वन के जन्तु हैं, इस में प्रबल शेर कौन है? वह सनातनधर्म है, यह अपने विज्ञान बल से सबको गिरा देता है। दैवयोग से इस भारतवर्ष रूपी वनमें महाभारत का संग्राम हो गया, बड़े २ वीर एवं विज्ञानियों के इस युद्ध में मरने के कारण यह सनातनधर्म रूपी शेर बीमार होगया। अब सबने इसके मारनेका रेज़ुलेशन पास कर लिया, सब से पहिले चार्वाक रूपी चीता इस सनातनधर्म रूपी शेर को मारने के लिये पहुँचा किन्तु इसने एक ही थप्पड़ रूप शास्त्रार्थ में उसका काम तमाम कर दिया। बाद में बृहस्पति रूप तेंदू झपटा, इस धर्म ने उसको नीचे दबा कर ठिकाने लगा दिया। इन दोनों के समाप्त होने पर हाथी रूपी बौद्धधर्म सन्मुख आया किन्तु जब इसने कुमारिलभट्ट और जगद्गुरु शंकराचार्यरूपी दो नेत्र खोले तो हाथीरूप बौद्धधर्म इतना

घबरा गया कि वह भारतवर्ष छोड़ कर चीन और जापान में जाकर छिपा । जब इस शेर के आगे बड़े२ वीर हार गये तो दूसरों की मारी हुई शिकार खाने वाले, गिरोह बांध कर 'हां हां' करने वाले गीदड़रूपी हिन्दू लीडर इसका मुकाबिला कैसे कर सकेंगे ? जब तक यह शेर सोता है तब तक हाथ फटकार२ व्याख्यान दे लें और दुनियां का माल हजम कर लें किन्तु जिस दिन यह उठ बैठा उस दिन तो इन लीडरों का पता भी न लगेगा डर कर सब जमीन में जा छिपेंगे।

जब बड़े २ तार्किकों से सनातनधर्म नहीं घबराया तो फिर बेवकूफ हिन्दू लीडरों की पांच चार दलीलों से घबरा कर यह विधवाविवाह मान लेगा ? ये लोग न वेद जानते हैं न शास्त्र, न तर्क न वेदान्त । मूर्ख मनुष्यों को शिकार बनाने के लिये ये जबरन विद्वान् बन बैठते हैं। श्रोताओ ! तुम जागो, प्रमाण और दलीलों को समझ लो, फिर इन हिन्दू लीडरों के मुंह पर वह थप्पड़ लगाओ जिन थप्पड़ों से डर कर ये आगे को जाल बनाना भूल जाव, यदि तुम ऐसा न करोगे तो फिर हिन्दूधर्म नहीं बच सकता । इनके साथ संग्राम को तैयार हो सामने डट जाओ और इनके बनावटी जाल को तोड़ दो । जो तुम बिल्ली की भांति मुर्दा होकर "म्याऊं-म्याऊं" करते रहोगे तो भारतवर्ष में ईसाई झंडा खड़ा हो जायगा, संभलो, संभलो, संभलो, बस इतनी प्रार्थना कर मैं अपने व्याख्यान को समाप्त करता हूं एक बार बोलिये श्री राधाकृष्ण की जय ।

कालूराम शास्त्री ।

* श्रीहरिश्शरणम् *

नष्टेमृते मीमांसा

चलल्लोलकल्लोलकल्लोलिनीशि--
स्फुरन्नक्रचक्रातिवक्त्राम्बुलीनः ।
हतो येन मीनावतारेण शंखः
स पायादपायाज्जगद्वासुदेवः ॥१॥

धर्मेण स्वर्गमाप्नोति धर्मेणामृतमश्नुते ।
संसाररक्षको धर्मो यस्तं हन्ति स नार्किकः ॥२॥

वलप्रताप सभापति ! पूज्यविद्वन्मण्डलि !! आदरणीय सद्गृहस्थवृन्द !!! महाभारत के संग्राम में विज्ञान सुनते समय अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी से प्रश्न किया था कि—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥३६

वार्ष्णेय ! किसी भी मनुष्य की पाप करने की इच्छा नहीं है फिर मनुष्य पाप करता है इस विषय में ऐसा मालूम

देता है कि कोई मनुष्य की गर्दन दबा कर जबर्दस्ती से पाप करने में मनुष्य को लगा देता है जिसके पंजे में पड़कर यह मनुष्य पाप करता है वह पाप करवाने वाला कौन है।

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥३७॥
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्वेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥३८॥
आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥
तस्मात्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१

श्रीमद्भग० अ० ३।

अर्जुन के इस प्रश्न पर भगवान् कृष्ण उत्तर देते हैं कि काम मन की इच्छा और क्रोध गुस्सा ये दोनों रजोगुण से उत्पन्न हुये हैं। काम महाशन है इसकी पूर्ति कभी नहीं होती तथा क्रोध महापापी है इनको तुम परम शत्रु समझो ॥३७॥ जैसे अग्नि को धुआं आच्छादित कर देता है और जैसे शीशे को मल एवं जिस प्रकार गर्भ को जेर ढांक लेती है

वैसे ही यह काम क्रोध आत्मा को आच्छादित करता है। ३८। इस काम क्रोध ने ज्ञानी आत्मा के ज्ञान को घेर लिया है यह काम हवश की ज्वाला है, इस की कभी पूर्ति ही नहीं होती। ३९। इन्द्रियाँ तथा मन और बुद्धि इस के रहने के स्थान हैं, यह इन स्थानों में बैठ कर इस आत्मा को इन्द्रिय मन बुद्धि के जरिये से अपने काबू में कर लेता है। ४०। इस कारण अर्जुन तुम इन्द्रियों को अपने काबू में करो और फिर ज्ञान विज्ञान के नाश करने वाले इस पापी काम को मार डालो ॥ ४१ ॥

बात सोलह आने सच है, धर्म को दियासलाई दिखलाकर जबर्दस्ती से पाप करवाने वाली संसार में यदि कोई शक्ति है तो वह काम है और क्रोध है। आज यह दुष्ट इच्छा ही सुधारकों को बन्दर की भांति नचा रही है, विधवा विवाह का प्रचार इस कारण से नहीं होता कि वेद में इस की आज्ञा है या युक्ति युक्त है। आज कल के मनुष्यों की भावनायें दुष्ट हो गई, इन के मन में काम, व्यभिचार प्रबल रूप से धंस बैठा इसी हेतु से द्विजों में विधवा विवाह की आवाज उठ बैठी, अब यह किसी की दबाई न दबेगी, इस के दबाने का एक ही मार्ग इन्द्रियों को काबू में करना भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा है उस को सुधारक कर नहीं सकते इस कारण उठते बैठते सोते खाते इन के मन में व्यभिचार उठता रहेगा और उस की पूर्ति इन्हों ने विधवा विवाह से समझी है अतएव विधवा विवाह पर लम्बी चौड़ी पुस्तकें लिखी जाती हैं।

विधवा विवाह की सिद्धि के लिये सबसे प्रथम सुधारक एक दौड़ वेदों पर लगाते हैं, जब वेद विधवा विवाहकी सिद्धि में इन्कार कर देते हैं तब इन की एक दौड़ हुज्जतबाजी पर लगती है. जब ये वहां से हतोत्साह हो जाते हैं तब विधवा विवाह की सिद्धि में स्मृतियों को टटोलते हैं।

स्मृतियों का वेदानुकूलत्व।

इन को इतना भी तो ज्ञान नहीं कि जब वेदों में ही विधवा विवाह नहीं तो फिर इस व्यभिचार पाप को स्मृतियां किस प्रकार धर्म बतला देंगी? स्मृति तो वेदानुकूल बनती हैं, वेद का जो अर्थ होगा उसी को स्मृतियां स्पष्ट करेंगी। इसके ऊपर समस्त शास्त्र और विद्वान् यही मानते आये हैं कि—

श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।

स्मृति सदा श्रुति के साथ साथ चलती है। यदि कहीं पर स्मृति वेद से विरोध कर जावें तो फिर वह स्मृति अमान्य हो जाती है। इसकी पुष्टि में प्रमाणों को सुनिये।

श्रुति स्मृतिपुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते।
तत्र श्रौतं प्रमाणं तु तयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा॥

महाभा० शान्ति पर्व।

श्रुति-स्मृति और पुराण जहां इन में विरोध हो वहां श्रुति का प्रमाण मुख्य है तथा स्मृति और पुराण के विरोध में स्मृति श्रेष्ठ है।

अन्यत्र भी लिखा है कि—

स्मृतिर्वेदविरोधे तु परित्यागो यथाभवेत्।
तथैव लौकिकंवाक्यं स्मृतिबाधे परित्यजेत्॥

वेद से विरोध होने पर जैसे स्मृति त्याज्य है ऐसे ही स्मृति से विरोध होने पर लौकिक,वाक्य त्याज्य हैं।

तृतीय प्रमाण।

देशधर्मजातिधर्मकुलधर्मान्-
श्रुत्यभावादब्रवीन्मनुः॥

वसिष्ट।

श्रुति का प्रमाण न मिलने पर मनु की दृष्टि में देश,जाति कुल धर्म प्रमाण हैं। चतुर्थ प्रमाण—

विरोधे त्वनपेक्ष्यं स्यादसति ह्यनुमानम्।

पूर्व मीमांसा २। ३। ३।

श्रुति के विरोध में स्मृति त्याज्य है और जहां पर वेद विधि नहीं एवं साथ ही साथ वेद का निषेध भी नहीं वहां पर अनुमान करना होगा। जैसे षोडस संस्कार, इन संस्कारों का गृह्यसूत्र और स्मृतियों में विस्तृत वर्णन है किन्तु वेद में न इनके नाम हैं न इनकी विधि है-ऐसे अवसर पर अनुमान से काम लेना होगा। जब वेदने 'इयंनारी' इस मन्त्रमें विधवा स्त्री को सती होना और 'उदीर्ष्व नारी' इस मन्त्र में ब्रह्मचर्य रख कर जीवन बिताना,लिखा है एवं विवाह विधायक मंत्रों

में विधवा विवाह का निषेध है तो फिर स्मृतियों में विधवा विवाह कहाँ से आजावेगा? हमने यह भी दिखला दिया है कि वेद ने जो विधवा स्त्रियों के लिये सती होना तथा ब्रह्मचर्य से रहना बतलाया है स्मृतियां भी इन्हीं दो बातों को कहती हैं। इस प्रकरण में हमने तीन स्मृतियों के प्रमाण भी दिये किन्तु विधवाविवाहके ठेकेदार इतने परभी स्मृतियोंमें विधवाविवाह टटोलते हैं यह इन की शास्त्रानभिज्ञता है। एक सुधारक तो क्या बीस हज़ार सुधारक पांच सौ वर्ष स्मृतियां टटोलें तब भी इन को स्मृतियों में विधवा विवाह की विधि न मिलेगी वरन् खण्डन ही मिलेगा। सुधारक लोग इस बात को खूब समझते हैं किन्तु संसार को धोखे में डाल स्मृतियों से विधवा विवाह बतलाया करते हैं। आज हम इन की चालाकी और धूर्तता को स्पष्ट रूप से संसार के आगे रखते हैं जिस को पढ़ कर कोई भी मनुष्य इनके हतकण्डे में न आसकेगा।

स्त्री भेद।

स्मृतियों में स्त्रियों के चार भेद किये हैं (१) जिन का वाग्दान तो हो गया है अर्थात् जिस को दुनियां में सगाई या फलदान कहते हैं वह तो हो गया, लड़की के बाप ने यह अपने मुंह से कह दिया कि मैं अपनी लड़की इस लड़के से विवाहूंगा किन्तु विवाह नहीं हुआ इस मध्य में जो लड़का मर जावे तो उस कन्या के देवर या किसी दूसरे मनुष्य के साथ विवाह कर दिया जावे, यह धर्मशास्त्र की आज्ञा है। सुधारक लोग

यहां पर अपना जाल बिछा देते हैं वाग्दान से उत्तर और विवाह से पहिले पति मरने पर जो स्मृतियों में अन्य के साथ विवाह करने की आज्ञा जिन श्लोकों में दी है उन श्लोकों को लेकर विधवा विवाहकी सिद्धि करते हैं ऐसा करना स्मृति के असली भावको दबाना, यह सुधारकों की प्रथम जाल साजी है (२) पूर्ण विवाह होने के बाद धर्मशास्त्रों ने द्विजों की स्त्रियों के दूसरे विवाह या विधवा विवाह का घोर खण्डन किया है उन श्लोकों को सुधारक छिपा लेते हैं, यदि कोई मनुष्य विधवा विवाह निषेधक श्लोकों का चर्चा चलावे तो कहते हैं कि आप के मन्तव्यों से हमारे मन्तव्य भिन्न हैं, फिर मन्तव्यों में मेल कैसे होगा, (३) जहाँ पर पुनर्भू (पति व्रत धर्म छोड़ने वाली पतित) स्त्रियों का वर्णन आता है उन श्लोकों से ये विधवा विवाह सिद्ध करते हैं (४) प्रायश्चित्त विधायक श्लोक और स्त्री को व्यभिचारिणी बतलाने वाले श्लोकों को लेकर ये लोग विधवा विवाह का समर रचते हैं यह इन की चतुर्थ चालाकी है। हम वाग्दान और पुनर्भू, व्यभिचार एवं विधवा विवाह निषेध इन चार विषयों पर व्याख्यान देकर सुधारक गुण्डोंकी धूर्तता संसारके आगे रक्खेंगे श्रोता खूब ध्यान से सुनें और मनन करें।

वाग्दान

विवाह करने के लिये श्रौत स्मार्त लोगों के यहां सब से प्रथम कन्या का वाग्दान होता है। इस वाग्दान को किसी देश

में मंगनी, किसी में सगाई और किसी में सगुन तथा किसीमें फलदान के नाम से याद किया जाता है। कन्या का पिता हाथ में जल लेकर यह कहता है कि मैं अपनी इस कन्या को अमुक वर को दूंगा। इस के पश्चात् कुल मर्यादानुसार कुछ वस्त्र, आभूषण या किसी किसी देश में केवल रुपया लड़के के यहाँ भेज दिया जाता है इतना करने से लड़का पक्का होगया, स्मृतियों में इस का नाम वाग्दान है, यह कृत्य विवाह का अङ्ग है, यहांसे विवाह आरम्भ होजाता है और विवाह की समाप्ति सप्तपदी के अन्त में होती है। धर्मशास्त्रों का मत है कि वाग्दान हो गया हो और सप्तपदी न हुई हो, बीच में लड़का मर जावे तो कन्या को दूसरे के साथ विवाह दो किन्तु सप्तपदी की समाप्ति पर विवाह की परिपूर्णता मानी है, सप्तपदी हो जाने पर फिर कन्या का विवाह नहीं होता, भाव शास्त्र का यह है कि वाग्दान, मधुपर्क, कन्यादान ये बीच में होते रहते हैं इन के होने पर भी पूर्ण विवाह नहीं होता, सप्तपदी के अन्त में जहां लड़का यह बोलता है कि "मामनुव्रता भव" तू मेरी सहगामिनी हो, बस वहां पर पूरा विवाह होगया इसके ऊपर मनु जी लिखते हैं कि—

पाणिग्रहणिका मंत्रा नियतं दारलक्षणम्।
तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ॥२२७॥

मनु० अ० ८।

पाणिग्रहण के मंत्र निश्चय दार (स्त्री) हो जाने के लक्षण

हैं, उन मंत्रों की समाप्ति सप्तपदी के सातवें पद में विद्वानों को जाननी चाहिये।

मनु के इस फैसले पर यम स्मृति लिखती है कि—

नोदकेन न वा वाचा-कन्यायाः पतिरिष्यते।
पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वं सप्तमे पदे॥

जल से या वाणी से कन्याका पति नहीं होता, पाणिग्रहण संस्कार से सप्तपदी होने पर पति होता है।

इस की पुष्टि में नारद स्मृति लिखती है कि—

स्त्रीपुंसयोस्तु संबन्धे वरणं प्राग्विधीयते।
वरणाद्ग्रहणं पाणेः संस्कारो हि द्विलक्षणः॥२
तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं दोषदर्शनात्।
पाणिग्रहणमंत्राश्च नियतं दारलक्षणम्॥३॥

नारद अ० १२।

स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध में पहिले वरण अर्थात् वाग्दान करके पीछे पाणिग्रहण होता है इस प्रकार विवाहरूपी संस्कार दो प्रकारका है। २। इनमें से वरण होने पर दोष देख पड़नेसे वरण असिद्ध हो जाता है, कन्या वर की भार्या नहीं होती किन्तु पाणिग्रहण के मंत्रों से कन्या का पाणिग्रहण होने पर स्त्रीपन का निश्चय होता है। ३।

नारद स्मृति ने भी यही बतलाया कि सप्तपदी पर विवाह पूर्ण होता है, साथ ही साथ यह भी बतला दिया कि वरण के

पश्चात् और सप्तपदी से पहिले वर छूट सकता है क्योंकि अभी पूर्ण विवाह नहीं हुआ। पूर्ण विवाह होने पर यदि पति मर जावे तो फिर विवाह न हो सकेगा इस की व्यवस्था देते हुये मनु लिखते हैं कि—

नान्यस्मिन्विधवानारी नियोक्तव्या द्विजातिभिः।
अन्यस्मिन्हि नियुञ्जाना धर्मं हन्युः सनातनम् ॥

मनु० अ० ६। श्लो० ६४

द्विजाति लोग विधवा स्त्री को अन्य पुरुष से नियुक्त न करें, यदि वे ऐसा करेंगे तो सर्वदा से चला आया जो सनातन धर्म पतिव्रत है उस का नाश हो जावेगा।

श्रोत्रिय वर्ग! आपने समझ लिया होगा कि वाग्दान से सप्तपदी के बीच में वर के मर जाने पर या छूट जाने आदि आपत्तियों में कन्या का विवाह अन्य पुरुषके साथ होसकता है किन्तु सप्तपदी के पश्चात् फिर स्त्रियों के लिये विवाह का सर्वथा निषेध है। विधवा विवाह के ठेकेदार धर्मशास्त्र की इस व्यवस्था में घपला मचा कर वाग्दान के पश्चात् और सप्तपदी के पूर्व के समय में विवाह विधायक धर्मशास्त्रों के वचनों को सप्तपदी के बाद विधवा होने पर लगा कर विधवा विवाह की सिद्धि करना चाहते हैं। साधारण मनुष्य इन के पेंच को परख नहीं सकते इस कारण इन के वाग्जालमें फंस कर अपने पैर पर अपने आप कुल्हाड़ा मार बैठते हैं अर्थात् विधवाविवाह नामक व्यभिचार को धर्म समझ द्विजत्व का नाश कर रहे हैं।

विधवा विवाह की पुष्टि में जितने प्रमाण दिये जाते हैं उन समस्त प्रमाणों में जिस को पुष्ट समझा जाता है वह यह है।

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु, नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥३२॥
पाराशर अ० ४।

पति के खोने, मरने, संन्यासी, नपुंसक या पतित होने आदि पांच आपत्तियों में स्त्रियों को दूसरा पति करने की विधि है।

यह श्लोक वरण के पश्चात् और सप्तपदी से पहिले स्त्री का विवाह बतलाता है किन्तु श्लोकके असली भावको गायब करके विधवा विवाह के ठेकेदारों ने सप्तपदी के पश्चात् विवाह करने में लगाया है ऐसा करना यह इन लोगों की धूर्तता है।

पाराशर स्मृति का प्रमाण।

इस श्लोक पर बड़े २ जाल बनाये गये हैं, सब से प्रथम यह जाल बनाया गया है कि इस श्लोकके प्रकरणमें पाराशर स्मृति की अत्यन्त प्रशंसा लिख और समस्त स्मृतियों को इस से नीचे गिराया है इस का कारण यह है कि दूसरी स्मृतियां जब विधवा विवाह का निषेध करेंगी तब हम कह देंगे कि कलियुग में तो यही स्मृति मान्य है तथा अन्य स्मृतियां इस के महत्व को नहीं पा सकतीं। यद्यपि विधवा विवाह लेखकों के अन्तःकरण में पाराशर स्मृति का किंचित् भी गौरव नहीं तो भी लोगों को धोखा देने के लिये पाराशर स्मृति को वेद के

तुल्य गौरव दे दिया है, यह इन की प्रथम भूलना है। ये ही लोग पाराशर स्मृति के गौरव को कुछ भी नहीं मानते इनके आचारण में कुरान की गौरवता पाई जाती है और पाराशर स्मृति को ये लोग सर्वदा पैरों के नीचे कुचला करते हैं इस विषय के कुछ प्रमाण मैं आपके सन्मुख रखता हूं आप गंभीरता से उन प्रमाणों पर विचार कीजिये।

(१) गंगाप्रसादजी उपाध्याय 'विधवाविवाह मीमांसा' में लिखते हैं कि 'जो लोग भिन्न भिन्न युगों में भिन्न भिन्न स्मृतियां मानते हैं उनको पाराशर स्मृति पर भली प्रकार ध्यान देना योग्य है, इस लेख से सिद्ध है कि उपाध्याय जी स्वतः भिन्न २ युग में भिन्न २ स्मृतियां नहीं मानते, जो लोग भिन्न भिन्न युग के लिये भिन्न २ स्मृतियाँ मानते हैं उपाध्याय जी ने उन्हीं के लिये यह लेख लिखा है। उपाध्याय जी के मन्तव्य के विरुद्ध पाराशर स्मृति ने ही लिखा है कि-

कृते तु मानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः ।२४
द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥२५
पाराशर० अ० १

सतयुग में मनुस्मृति के कहे धर्म, त्रेता में गौतम और द्वापर में शंख लिखित एवं कलियुग में पाराशर स्मृति के कहे धर्म विशेष मान्य हैं।

अब यहां पर विवेचन करना है कि यह श्लोक उपाध्याय जी को प्रमाण है या नहीं ? जो लोग भिन्न भिन्न युगों में

भिन्न भिन्न स्मृतियाँ मानते हैं, उपाध्याय जी के इस लेख से यह सिद्ध है कि उपाध्याय जी ऐसा नहीं मानते अतएव उनको "कृते तु मानवा धर्माः" यह श्लोक बेवकूफों का बनाया हुआ जान पड़ता है जिस पाराशर ने ऐसी अज्ञता की कि स्मृतियों को युग परत्व कह दिया फिर उसी पाराशर स्मृति का "नष्टे मृते प्रव्रजिते" यह श्लोक कैसे प्रमाण हो सकता है? एक श्लोक को मानना और एक को न मानना यह स्वा० दयानन्द कैसी चालाकी उपाध्याय जी को मतलबी सिद्ध कर रही है। जब "कृते तु मानवा धर्माः" पाराशर का यह श्लोक प्रमाण नहीं फिर उसी ग्रंथ का "नष्टे मृते" यह श्लोक कैसे प्रमाण मान लिया? इसका कुछ भी उत्तर उपाध्याय जी के पास नहीं, केवल यह उत्तर हो सकता है कि "नष्टे मते" इस श्लोकमें विधवा विवाह कहा है और विधवा विवाह उपाध्याय जी को इष्ट है इस कारण इस श्लोक को मान लिया। सिद्ध होगया कि सुधारकों को पाराशर स्मृति प्रमाण नहीं, अपने मन की मिथ्या कल्पना ही प्रमाण है।

(२) पाराशर स्मृति में लिखा है कि-

श्वपाकं चापि चाण्डालं विप्रः संभाषते यदि।
द्विजैः संभाषणं कुर्यात्सावित्रीं च सकृज्जपेत् ॥ २२
चाण्डालैः सह सुप्तं तु त्रिरात्रमुपवासयेत्।
चाण्डालैकपथं गत्वा गायत्रीस्मरणाच्छुचिः॥२३

चाण्डालदर्शने सद्य आदित्यमवलोकयेत् ।
चाण्डालस्पर्शने चैव सचैलं स्नानमाचरेत् ॥२४॥
चाण्डालखातवापीषु पीत्वा सलिलमग्रजः ।
अज्ञानाच्चैकनक्तेन त्वहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥२५॥
चाण्डालभाण्डसंस्पृष्टं पीत्वा कूपगतं जलम् ।
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्राच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥२६॥

पाराशर० अ० ६

यदि श्वपाक और चाण्डाल इनके संग ब्राह्मण संभाषण करे तो ब्राह्मणों के साथ संभाषण करके एक बार गायत्री जपे।२२। जो ब्राह्मण चाण्डाल के संग सोवै तो तीन दिवस उपवास करने से और चाण्डाल के संग एक मार्ग में चले तो गायत्री के स्मरण से शुद्ध होता है।२३। चाण्डाल का दर्शन करे तो शीघ्र ही सूर्य का दर्शन करे और चाण्डाल का स्पर्श करे तो सचैल स्नान करे।२४। चाण्डाल की खोदी बावड़ी व कुआं में अज्ञान से ब्राह्मण जल पीवे तो एक रात भर एवं जान कर पीवे तो एक दिन रात व्रत करने से शुद्ध होता है।२५। जिस कूप में चाण्डाल के बर्तन का स्पर्श हुआ हो उस कुएं का जल पिया हो तो गो मूत्र और कुलत्थ को खाकर एक दिन रात व्रत करने से शुद्ध होताहै।२६।

अस्पृश्यों के विषय में आप पाराशर स्मृति के लेख को सुन चुके और उपाध्याय जी या जोशी जी प्रभृति जितने भी

विधवा विवाह के चलाने वाले हैं चाहे वे सुधारक या विगाड़क हों; लीडर या फ्लोडर हों सभी अछूतोद्धार में शामिल हैं। जब हम अछूतोद्धारका खण्डन करते हुये पाराशर स्मृति को इन लोगों के आगे रखते है तब इनको कोई उत्तर नहीं सूझता, स्पष्ट रूप में यह कह देते हैं कि 'ऐसी स्मृतियों को दियासलाई दिखला दो' जो लोग जिस ग्रंथको अपना शत्रु समझते हों और फिर उसी ग्रंथ को विधवा विवाह में प्रमाण मानकर आस्तिक बनने का दावा कर बैठें ऐसी दो तरफी गवट्टी खेलना क्या इनकी यह दूसरी धूर्त्तता नहीं है? पाराशर स्मृति चाण्डालादिकों के छूने पर स्नान का प्रायश्चित बतलाती है और मुसलमानों की धर्म पुस्तक चाण्डालादिक को छूने की आज्ञा देती है-अब बतलाइये इनको कौन पुस्तक प्रमाण? इन छिपे हुये मुसलमानों के पंजे में पड़कर यदि हिन्दू अपना धर्म खो बैठेंगे तो उनको सर्वदा के लिये पश्चात्ताप करना पड़ेगा? अच्छा सिद्धान्त निकाला कहीं पर तो पाराशर स्मृति फूंकने के योग्य होगई और कहीं पर प्रमाण मानली-क्या सुधारकों की इस चालाकी को समझने वाला संसार में एक भी मनुष्य नहीं रहा? समस्त संसार ही बेवकूफ बन गया।

(३) आजकल सुधारकों ने देश में विप्लव खड़ा कर दिया है। उपाध्याय, जोशी जी प्रभृति जितने विगाड़क हैं ये सब चाहते हैं कि कन्या का विवाह चौदह वर्ष की उम्र के

पश्चात् हो। बड़ी उम्र में कन्या का विवाह होने पर दो लाभ हैं एक तो मनुष्यों को अविवाहिता कन्याओं से विषय करने का अवसर मिलेगा जो सुधारकों के जीवन का लक्ष्य है दूसरे अविवाहित कन्याओं के सन्तान पैदा होकर धर्म का पचड़ा हट जावेगा, इन दो लक्ष्यों से सुधारकों ने देश में युवति कन्याओं के विवाह का आन्दोलन उठाया, जब जनता ने इनके चिल्लाने को न सुना तब माननीय हरविलाश शारदा आर्यसमाजी ने इसका बिल व्यवस्थापिका सभा में रक्खा जिसकी आज कल जांच हो रही है। इस विषय पर जब सुधारकोंसे वादाविवाद होता है तब हम कहा करते हैं कि हम इसको न होने देंगे, यह धर्मशास्त्रों के विरुद्ध है और इस विरुद्धता में हम प्रमाण दिया करते हैं कि-

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥६॥
प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति।
मासि मासि रजस्तस्याः पिबन्ति पितरः स्वयम्॥७॥
माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च।
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥८॥

पाराशर० अ० ७।

आठ वर्ष की कन्या को गौरी, नौ वर्ष की रोहिणी और दश वर्ष की को कन्या ही कहते हैं तथा दश वर्ष से ऊपर

रजस्वला कोटि में गिनी जाती है॥ ६॥ जो मनुष्य १२ वर्ष की कन्या का विवाह नहीं करता उसके पितर महीने २ में उस लड़की के रज को पीते हैं॥ ७॥ माता पिता और जेठा भाई ये तीनों रजस्वला कन्या को देख २ कर नरक में जाते (पाप के भागी होते) हैं।

इन श्लोकों को सुनकर कोई २ सुधारक कह उठता है कि पाराशर की अक्ल पर पत्थर पड़ गये, कोई कहता है कि पाराशर स्मृति में तो बेवकूफों कैसी बातें भरी हैं-हम ऐसी स्मृतिको प्रमाण नहीं मानते? खास उपाध्यायजी और जोशी जी ने भी युवति होने पर कन्या का विवाह लिखा है एवं पाराशर के इन श्लोकों पर जरा भी ध्यान नहीं दिया, फिर हम कैसे मानलें कि पाराशर स्मृति इनको प्रमाण है? सच पूछिये तो उपाध्याय जी और जोशी जी प्रभृति समस्त बिगाड़क घोर नास्तिक हैं न ये वेद मानते हैं न धर्मशास्त्र, न दर्शन न पुराण, संसार को धोका देने के लिये ये लोग ग्रंथों के प्रमाण लिख देते हैं वास्तविक में तो अंग्रेजों का आचरण ही इनका धर्म है, ऐसे लोगों को क्या स्वत्व है कि वे 'नष्टे मृते' इस श्लोक को प्रमाण में रक्खें?

व्याकरण।

'नष्टे मृते' इस श्लोक में कुछ व्याकरण का भी विवेचन है 'पतितेऽपतौ' यहां पर 'पतिते पतौ' भी हो सकता है और 'पतिते अपतौ, भी हो सकता है। 'अपतौ' के अकार का

'एङः पदान्तादति' इस सूत्र से पूर्व रूप हो कर 'पतितेऽपतौ' बन जाता है। अब विचार यह करना है कि यहां पर 'पतौ' है या 'अपतौ,। इस निर्णय में हमको व्याकरण बतलाता है कि 'पतौ' शब्द ही व्याकरण से नहीं बन सकता क्योंकि महर्षि पाणिनि ने नियमार्थक सूत्र लिखा है कि-पतिः समास एव। १।४।८। पति शब्द की यदि घिसंज्ञा होगी तो समास में ही होगी अन्यत्र हो ही नहीं सकती? महर्षि पाणिनि के इस नियम से केवल पति शब्द की घि संज्ञा होती ही नहीं इस कारण केवल पति शब्द का 'पतौ, रूप ही नहीं बनता 'पत्यौ, बनता है। जो लोग पति शब्द का 'पतौ' बनाते हैं वे विधवा विवाह चलाने के लक्ष्य से आंख में धूल झोंक संसार को अंधा बना जबर्दस्ती से विधवा विवाह सिद्ध करते हैं, जब तक संसार में व्याकरण है तब तक कोई भी सुधारक 'पतौ' सिद्ध नहीं कर सकता। फिर व्याकरण के विरुद्ध 'पतौ' शब्द बनता है स्वार्थियों के इस कथनको विचार शील मनुष्य कैसे मान लेंगे? मूर्ख मनुष्य सुधारकों के धोखे में आसकते हैं व्याकरणज्ञाता नहीं आ सकते; और जिस समय हम नकार के साथमें पति शब्द का समास करेंगे "न पतिः अपतिः" उस समय समास होने के कारण, पतिः समास एव। १।४।८। इस सूत्रसे घि संज्ञा हो जावेगी और अच्च घेः। ७। ३।११९। इस सूत्र से ङि को औत् होकर 'अपतौ' बनजाता है। सुधारक लोग जिस प्रकार वेद और धर्मशास्त्र के गले घोटते

हैं उसी प्रकार यहां व्याकरण का भी खून कर रहे हैं। जब व्याकरण से 'पतौ' शब्द की सिद्धि नहीं होती तब ये लोग चाहते हैं कि किसी प्रकार व्याकरण के नियम भी दुनियां से उड़ जावें ये समझ रहे हैं कि जब तक संसार में व्याकरण है तब तक 'पतौ, शब्द नहीं बनेगा और जो 'पतौ' शब्द नही बनेगा तो फिर "नष्टे मृते प्रव्रजिते" इससे विधवाविवाह भी सिद्ध न होगा; यह समझकर सुधारक लोग व्याकरण के नियमों को तोड़ देना चाहते हैं किन्तु हमारा दावा है कि वर्त्तमान काल के समस्त सुधारक लीडर और प्लीडर एवं इनकी सात पीढ़ी ये सब मिलकर सात लाख जन्म धारण करें तब तो ये "पतिः समास एव । १ । ४ । ८ । इस सूत्र को असत्य बना ही नहीं सकते।

एक दो सुधारक सूत्र की असत्यता क्या सिद्ध करेंगे? हमारा चैलेञ्ज है सुधारक और बिगाड़क, लीडर और प्लीडर उपाध्याय और जोशी को कि यदि तुम में दम है तो "पतिः समास एव । १ । ४ । ८ । सूत्र की असत्यता सिद्ध करो, अवसर आगया है हजार कोशिश करो किन्तु इस सूत्र को उडाओ, हमारे चैलेञ्ज को सुनकर चूड़ियां पहिन कर औरतों की भांति अपने घोंसलों में मत धंसो, कटती हुई नाक को बचालो नहीं तो तुम्हारी यह 'पतौ, वाली चाल संसार में खुल जावेगी और तुम दगाबाज सिद्ध हो जाओगे। हमें विश्वास है कि इतने उभाड़ने पर भी सुधारकों की लेखनी

न उठ सकेगी, झूठ में साहस कहां? धोखेवाज मुकावला कैसे कर सकते हैं?

उपाध्याय जी ने यहां पर एक कार्य ऐसा किया है जो हिन्दू मनुष्य के लिये कलंक है। आपने तत्ववोधिनी देकर "पतिः समास एव" की असत्यता सिद्ध की है। 'पतिः समास एव,, इस सूत्र के निर्माण करने वाले पाणिनि जी महर्षि हैं। 'पतिः समास एव' इस सूत्र को सर्वथा सत्यमान महर्षि पतंजलि ने इस सूत्र पर भाष्य लिखा है। वार्तिककार महर्षि कात्यायनि ने इस सूत्र को प्रमाण माना है। व्याकरण में तीन ही ऋषियों का प्रमाण माना जाता है और प्रमाण भी कैसा? 'यथोत्तरमुनीनां प्रामाण्यम्' यथोत्तर मुनित्रय प्रामाण्य हैं अर्थात् पहिले पाणिनि प्रमाण और पाणिनि के पश्चात् पाणिनि से अधिक महर्षि पतञ्जलि प्रमाण तथा महर्षि पतञ्जलि से भी अधिक कात्यायनि प्रमाण। कात्यायनि ने जहां २ त्रुटि देखी हैं वार्तिक वना दिये हैं इन तीन ऋषियों को छोड़कर व्याकरण में चौथा कोई प्रमाण नहीं; जो अन्य लोग शाकल्य और शाकटायन प्रभृति ऋषि प्रामाणिक हैं उनके प्रमाणों को महर्षि पाणिनि ने सूत्रों में ले लिया है इस कारण व्याकरण में मुनित्रय का लेख स्वतः प्रमाण है एवं इनके मुकावले में अन्य किसी का लेख प्रामाणिक नहीं है किन्तु स्वार्थवश उपाध्याय जी ने तत्ववोधिनीकार के लेख को सत्य मान "पतिः समास एव,, इस सूत्र की असत्यता

दिखला मुनित्रय का अपमान किया है कौन कहता है कि तत्वबोधिनी कार व्याकरण में मुनित्रय से अधिक प्रामाणिक हैं? तत्वबोधिनी कार के लेख की तो आजकल के पण्डित धज्जियां उड़ा देते हैं? इसका तो कोई भी प्रमाण नहीं मानता? इसका लेख तो महाभाष्यादि की अनुकूलता पर ही प्रमाण हो सकता है? और विरुद्ध होने पर तो तत्वबोधिनीकार का लेख ऐसे फेंक दिया जाता है जैसे घर का कूड़ा बाहिर फेंका जाता है। उपाध्याय जी ने इन बातों को दबाया और तत्वबोधिनीकार के लेख को प्रमाण-मान सूत्र की असत्यता सिद्ध की इस अयोग्य कृत्य से उपाध्याय जी ने अपनी लेखनी तथा अपने को कलंकित करडाला क्या करें स्वार्थी तो ठहरे? कितना भी पाप हो, कितना भी धोखा हो किन्तु स्वार्थ तो सिद्ध हो, किसी प्रकार विधवा विवाह चल जाय तो मनसा पूर्ण होजावे ऐसे मनुष्यों को धर्म विवेचन में लेखनी उठाने का अधिकार नहीं और ऐसे स्वार्थियों के लेख को कोई भी विचार शील अच्छी दृष्टि से नहीं देखता।

पाणिनि, पतंजलि, कात्यायनि ये तीनों महर्षि हैं, इनके सिद्धान्त को तत्वबोधिनीकार साधारण मनुष्य के लेखसे उड़ाना पाप है। एक दिन हम से और जोशी जी से राठ जिला हमीरपुर में विधवा विवाह पर शास्त्रार्थ हो रहा था, हमने प्रमाण दिया कि वेद विधवा विवाह का खण्डन करता है।

इसके उत्तर में बद्रीदत्त जी जोशी बोल उठे कि ईश्वरचंद विद्यासागर ने विधवा विवाहको धर्म बतलाया है। हमने कहा क्या ईश्वरचन्द विद्यासागर के लेख से आप वेदों को झूठा समझ लेंगे? ईश्वरचन्द का लेख मान्य और वेदों के मंत्र अमान्य हो जावेंगे? हमारी इस बहस को सुन कर जोशी जी के छक्के छूट गये " भइ गति सांप छछूंदर केरी " यदि ईश्वरचन्द के लेख पर वेद मंत्रों को असत्य कहते हैं तो छः हजार मनुष्यों में नास्तिक बनाये जाते हैं और यदि वेद मन्त्रों को मानते हैं तो विधवाविवाह का खण्डन गले में बंधता है, अन्त में जोशी जी को चुप होजाना पड़ा ?

जिस प्रकार जोशी जी ईश्वरचन्द के लेख से वेदों को उड़ाते थे उसी प्रकार उपाध्याय जी तत्वबोधिनीकार के लेख से मुनित्रय के लेख को उड़ा रहे हैं, उपाध्याय जी! आपके इस अयोग्य लेख को बिना लिखे पढ़े, धर्म के दुश्मन सुधारक भले ही मान लें या बिना लिखा पढ़ा कोई मनुष्य आपके धोखे में भलेही आजावे किन्तु वैय्याकरण लोग तो आपके इस लेख को इस प्रकार बाहर फेंक देंगे जैसे मल मूत्र फेंका जाता है।

तत्वबोधिनीकार के लेख से मुनियत्र के लेख को झूठा बनाना ऐसा है जैसा कि ईसामसीह और मोहम्मद के लेख से व्यास के लेख वेदान्त सूत्रों का उड़ाना ? यह आस्तिकता उपाध्याय जी की संसार के आगे आती है धन्य है उपाध्याय

जी आपकी लेखनी को, एवं धन्य हैं उन लोगों को जो आपके जाल में फंस कर तत्वबोधिनीकार के लेख से मुनित्रय के सिद्धान्त को मिथ्या समझ लेते हैं।

श्लोकार्थ।

उपाध्याय जी और पंडित बद्रीदत्त जोशी ने जो 'नष्टे मृते प्रव्रजिते' श्लोक का अर्थ किया है वह व्याकरण विरुद्ध है, व्याकरण के अवलम्बन से यह अर्थ होगा कि 'यदि अपति नष्ट और मृतक तथा संन्यासी एवं क्लीव अथवा पतित हो गया हो तो इन पाँच आपत्तियां में स्त्रियों को दूसरा पति कहा है'। यहां पर 'अपतौ' शब्द का अर्थ 'पतिभिन्न, पति सदृश' होगा। 'पति भिन्न, पति सदृश' वाग्दान के पश्चात् और और सप्तपदी के पहिले ही हो सकता है, सप्तपदी के पश्चात् 'अपति' व्यवहार हो ही नहीं सकता? फिर आप लोगों ने इस श्लोक से विधवा विवाह कैसे मान लिया? इसका उत्तर देने वाला संसार में कोई सुधारक है?

(२) इन पांच दशाओं में विधवाओं का विवाह कहने वाला वेद-धर्मशास्त्र, इतिहास-पुराणमें यह एक ही श्लोक है, और किसी ग्रन्थमें भी ऐसा नहीं लिखा? यही मानना पड़ेगा कि बस यही एक श्लोक है, पाराशर स्मृति में यही है और नारद स्मृति में भी यही है। इस श्लोक को छोड़ कर संस्कृत साहित्य में कोई ऐसा श्लोक ही नहीं जो पांच आपत्तियों में विधवा विवाह सिद्ध कर दे।

अच्छा अर्थ किया। यदि हम यह प्रश्न कर बैठें कि 'नष्टे मृते' इस श्लोक का जो तुम ने अर्थ किया है इस अर्थ को सृष्टि के आरंभ से और संवत् १६२० तक किसीने लिखा है? तुम्हारे अर्थ की सचाई में ऋषि-महर्षि, आचार्य पंडित कोई साक्षी है? कहना पड़ेगा-नहीं। फिर तुम्हारे बनावटी लेखकी सत्यतामें क्या प्रमाण है? इस प्रश्न पर समस्त विधवा विवाह चलाने वालों की लेखनी बन्द, जबानें बन्द; चालबाजियां बन्द उपाध्याय जी इलाहाबाद के किले की तरफ को झांकते हैं, और जोशी जी अल्मोड़ा के पहाड़ की तरफ को, जवाब कुछ नहीं सूझता, आखिर बनावट कहां तक चलेगी? किसी दिन तो भण्डा फोड़ होगा ही? ऐसे झूठे अर्थ करके ही विधवा विवाह चला दोगे? शावास है, अच्छी चेष्टा कर रहे हो?

कई एक मनुष्य यह कहेंगे तुम ने इस श्लोक का अर्थ यह किया कि वाग्दान के पश्चात् और सप्तपदी के पहिले ये पांच आपत्तियां आ जावें तो स्त्री के लिये दूसरे पति से विवाह करवाने की आज्ञा है? तुमने भी तो उपाध्याय एवं जोशी जी की भांति अपने अर्थ की पुष्टि में कोई प्रमाण नहीं दिया? जब तुम ही अपने अर्थ की पुष्टि में कोई प्रमाण नहीं देते तो फिर तुम्हारा क्या हक है कि उपाध्याय जी और जोशी जी से उन के अर्थ की पुष्टिमें प्रमाण मांगो? पहिले तुम तो प्रमाण दो-तुम्हारे अर्थ की पुष्टि में क्या प्रमाण है? जो लोग हमारे अर्थ को बनावटी समझते हैं उनके संतोष के लिये हम कुछ प्रमाण यहां पर आपको सुनाते हैं ध्यान से सुनिये

(१) भट्टो जी दीक्षित कृत ' चतुर्विंशतिमतसंग्रह , में लिखा है कि 'दुष्टे तु पूर्ववरे वाग्दत्तापि वरान्तराय देया। तथा च पाराशरः नष्टे मृते प्रव्रजिते॰अस्यार्थः वाग्दानानन्तरं पाणिग्रहणात्प्राक् पतौ संभावितौत्पत्तिकपतित्वे पूर्वस्मिन्वरे नष्टे सति लक्षणया दूरदेशगमनेनापरिज्ञातवृत्तान्ते सति।

चतुर्विंशतिमतसंग्रह पृ० ८७

यदि पूर्व वर में कोई दोष हो तो वाग्दत्ता कन्या भी दूसरे वर को देना उचित है। इसी बात को पराशर कहते हैं 'नष्टे मृते प्रव्रजिते, इस श्लोक में। श्लोक का अर्थ यह है कि वाग्दान के अनन्तर और पाणिग्रहण से पूर्व संभावित औत्पत्तिक पति के हो जाने पर भी यदि पूर्व पति गुम हो जावे अर्थात् दूर देश में चला जावे एवं उसका कोई समाचार न मिले इत्यादि पांच दशाओं में अन्य पति ग्रहण करना उचित है। यह भट्टोजी दीक्षित का लेख हैं यहाँ पर भट्टोजी दीक्षितने स्पष्ट लिख दिया है कि वाग्दान के पश्चात् और पाणिग्रहण से पहिले हमने 'नष्टे मृते, इस श्लोक को वाग्दत्ता परक लगाया था, वाग्दत्ता परक ही भट्टो जी दीक्षित लगाते हैं यह हमारे लेख की पुष्टि में पहिला प्रमाण है।

(२) पाराशर स्मृति की टीका विद्वन्मनोहरा में 'नष्टे मृते प्रव्रजिते , इस श्लोक को वाग्दत्ता परक लगाया है अर्थात् विद्वन्मनोहरा के टीकाकार लिखते हैं कि पांच आपत्तियों में वाग्दत्ता का ही अन्यपति हो सकता है। जो अर्थ 'नष्टे मृते'का

हमने किया है वही विद्वन्मनोहरा के टीका में लिखा है, हमारे अर्थ की सच्चाई में यह दूसरा प्रमाण है।

(३) हमने 'नष्टे मृते' इस श्लोक को वाग्दत्ता कन्या में लगाया है, पाराशर स्मृति के धर्मरत्न टीकाकार ने भी वाग्दत्ता कन्या परक किया है। इसमें लिखा है कि आपत्ति पंचक में वाग्दत्ता का विवाह अन्य पति से हो सकता है विधवा का नहीं धर्मरत्न टीका हमारे अर्थ से मिलकर चलता है यह हमारे अर्थ की सच्चाई में तीसरा प्रमाण है।

(४) पाराशर स्मृति में श्लोक इस प्रकार लिखे हैं

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥३२
मृते भर्त्तरि या नारी ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता।
सा मृता लभते स्वर्गं यथा ते ब्रह्मचारिणः ॥३३
तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटी च यानि लोमानि मानवे।
तावत्कालं वसेत्स्वर्गे भर्त्तारं याऽनुगच्छति ॥ ३४
व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते बिलात्।
एवं स्त्री पतिमुद्धृत्य तेनैव सह मोदते ॥ ३५ ॥

पाराशर अ० ४

जिससे सगाई हुई हो वह पति नष्ट (परदेश में गया हो और खबर न हो) हो जाय वा मर जाय अथवा संन्यासी हो जाय व नपुंसक निकले; पतित हो जायतो इन पांच आपत्तियों

में दूसरा पति कहा है अर्थात् सगाई हुये पीछे दूसरे के संग सगाई करके विवाह कर देवे। ३२। पति के मरे पीछे जो स्त्री ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित रहती है वह मर कर स्वर्ग में इस प्रकार जाती है जैसे वे ब्रह्मचारी गये। ३३। जो स्त्री पति के संग अनुगमन (सती होना) करती है वह साढ़े तीन करोड़ मनुष्य के शरीर में जो लोम हैं उतने ही वर्ष तक स्वर्ग में वसती है। ३४। सांपको पकड़ने वाला जैसे बिलमें से साप को निकाल लेता है ऐसे ही वह स्त्री भी नरक से अपने पति का उद्धार करके उस पति के संग ही स्वर्ग में आनन्द भोगती है। ३५।

पाराशर स्मृतिमें ये ४ श्लोक क्रमशः लिखे हैं 'नष्टे मृते, इस ३२ के श्लोक में तो द्वितीय पति की आज्ञा बतलाई। इसके पश्चात् "मृते भर्त्तरि या नारी" इस श्लोक में पतिव्रत धर्म का महत्व दिखला कर विधवा स्त्री को जितेन्द्रिय रहने का विधान किया। फिर तिस्रः कोट्योर्धकोटी च, प्रभृति दो श्लोकों में सती होने के उत्कृष्ट महत्व को दिखला कर विधवा स्त्री को सती होने को आज्ञा दी. जब पाराशर स्मृति विधवा स्त्रियों के लिये ब्रह्मचर्य से रहना या सती होजाना लिखतीहै तोफिर तुमको मानना पड़ेगा कि 'नष्टे मृते' इस श्लोक में वाग्दत्ता को ही अन्य पति का अधिकार दिया गया है; इतना अंधेर नहीं हो सकता कि 'मृते भर्तरि या नारी, इत्यादि तीन श्लोकोंको दियासलाई दिखला

दें और नष्टे मृते, इस श्लोक का अर्थ विधवा विवाह परक करलें। विधवा स्त्रियों के लिये जितेन्द्रिय रहना या सती हो जाना इस विधान से 'नष्टे मृते, यह श्लोक वाग्दत्ता परक अर्थ देगा यह हमारे अर्थ की सत्यता में चतुर्थ प्रमाण है।

विधवा विवाह के ठेकेदार नहीं मालूम कैसा चश्मा लगाये हैं जिस चश्मे से इनको पाराशर स्मृति में 'नष्टे मृते, यह श्लोक तो दीखता है किन्तु 'मृते भर्तरि, इत्यादि तीन श्लोक नहीं दीखते ?

जब कोई पंडित इनके आगे 'मृते भर्तरि, इत्यादि श्लोक रख देता है तब इन सुधारकोंको कोई उत्तर नहीं आता-फौरन इस प्रकरण को छोड़ देते हैं और अन्यत्र अन्यत्र भाग कर कोई कहता है द्रौपदी के पाँच पति थे, कोई कहता है दिव्या देवी के इक्कीस विवाह हुये थे। यदि कोई इनकी गर्दन पकड़ने वाला पंडित मिल जाता है एवं वह कह बैठता कि अभी द्रौपदी और दिव्या देवी की कथा को छोड़ो, पहिले पाराशर स्मृति से विधवा विवाह सिद्ध करो ? तब ये शास्त्रार्थमें घबरा जाते हैं, शरीर इनका कांपने लगता है, जबान बंद होजाती है किसी बहाने से शास्त्रार्थ को छोड़ बैठते हैं-चालाकी का यही फल होता है ? पाराशरजी तो विधवा स्त्रियोंके लिये ब्रह्मचर्य और सती होना बतलावें किन्तु लीडर इन तीनों श्लोकों को छिपा कर संसार की आँख में धूल झोंक 'नष्टे मृते, इसका मन माना अर्थ कर विधवा विवाह चलावें-आज कल इसी

का नाम तो धर्मनिर्णय है ? अच्छा धर्म निर्णय उठाया, संसार भर को चाल बाजी में फंसाने के लिये तैयार ही होगये ?

हमने अपने अर्थ की पुष्टि में 'चतुर्विंशतिमतसंग्रह' 'विद्वन्मनोहरा' और धर्मरत्न तथा ' मृते भर्त्तरि, इत्यादि पाराशर के प्रमाण दिये, यह हमारे अर्थ की सत्यता है। इस सत्यता को कोई भी मनुष्य कभी भी मिटा नहीं सकता।

सचाई छिप नहीं सकती बनावट के असूलों से ।
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से ॥

जैसे हमने अपने अर्थ की सत्यता में चार अकाट्य प्रमाण दिये हैं. क्या इसी प्रकार विधवा विवाह के लेखकों में कोई पुरुष ' नष्टे मृते, के विधवा विधायक अर्थ में किसी ऋषि महर्षि विद्वान् पंडित का प्रमाण दे सकता है ? कि अमुक पंडित ने ' नष्टे मृते, श्लोक से विधवा विवाह करना माना है। हम यह मानते हैं कि संवत् १९२० के पश्चात् अंग्रेजी शिक्षा से बहकाये हुये, धर्म के शत्रु ईसाई बनाने के लिये ' नष्टे मृते, इस श्लोक में से विधवा विवाह निकालने लगे हैं किन्तु जब हम यह पख लगा देंगे कि सृष्टि के आरंभ से संवत् १९२० के पहिले होने वाले विद्वानों में से किसी को गवाही में रक्खो तब तो इनको आकाश पाताल एक सूझेगा हाथ पैर पटकने और शिर फोड़ने पर भी कोई साक्षी नहीं मिलेगा तब तो विधवा विवाह की पुस्तक लिखने वालों को बगलें झांकनी पड़ेंगी एवं जबान बंद करके नीचे को मुख

करना होगा,हम दावे से कहते हैं कि 'नष्टे मृते' इसमें विधवाका विवाह नहीं तथा विधवाविवाह विधायक अर्थ में कोई साक्षी नहीं फिर बनावटी, निर्मूल, प्रमाण शून्य अर्थ को कोई विचार शील मनुष्य कैसे सत्य मानेगा और जिन्हों ने जाली अर्थ बना कर विधवा विवाह निकाला है क्या उन के लिये ये शब्द न कहेगा कि ये लोग हिन्दुओंको ईसाई बनाने के लिये पाराशर स्मृति को ईसाई व्यवहार के सांचे में ढाल रहे हैं। हम को एक भी मनुष्य भूतल पर ऐसा दिखलाई नहीं देता जो 'नष्टे मृते' से विधवाओं का विवाह सिद्ध कर दे, यदि कोई हो तो कृपा कर इस लेख के खण्डन में अति शीघ्र लेखनी उठावे।

कई एक मनुष्य यह कहते हैं कि वाग्दत्ता को कन्या कहते हैं, जब तक विवाह नहीं होता तब तक स्त्री को कन्या कहा जाता है और विवाह होने पर फिर वह कन्या नहीं रहती, उस को स्त्री या नारी कहने लगते हैं। पाराशर के 'नष्टे मृते' इस श्लोकमें 'नारी' शब्द आया है इस कारण इस श्लोक में विधवाओं का ही विवाह है।

ठीक है. यह कल्पना उन्हीं लोगों की है कि जिन्हों के पड़ोसियों ने भी वेद-धर्म शास्त्र और व्याकरण नहीं देखा। 'नारी' शब्द एवं इस के पर्याय स्त्री आदि शब्द ये जाति वाचक शब्द हैं, स्त्री जाति को कहेंगे चाहे स्त्री कन्या हो या युवति अथवा वृद्धा। जातिवाचक शब्द उम्र नहीं देखता, जब बड़े २ कामों में स्त्री और पुरुष मजदूरी करने को लगते हैं

तब मजदूरों में दो भेद होते हैं एक मर्द और दूसरा औरत, बालकों की गिनती मर्दों में: एवं बालिकाओं की गिनती औरतों में हो जाती है। मर्दुम शुमारी के नक्शे में मर्द-औरत ये दो खाने होते हैं, छोटी २ कन्यायें औरतों में गिनली जाती हैं, और छोटे २ बालक मर्दों में क्यों कि मर्द औरत ये दोनों शब्द जाति वाचक हैं। धर्मशास्त्रों में भी, स्त्री आदि जाति वाचक शब्दों में कन्या, युवति, वृद्धा तीनों का ही ग्रहण होता है अर्थात् कन्या को भी स्त्री-नारी शब्द में ले लेते हैं, प्रमाण सुनिये—

> द्वारोपवेशनं नित्यं गवाक्षेण निरीक्षणम्।
> असत्प्रलापो हास्यं च नारीणां दूषणानि च॥

दरवाजे पर बैठना, झरोखे से देखना, झूट बोलना और हंसना नारियों के ये दूषण हैं।

> बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने।
> पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतंत्रताम्॥

बाल्यावस्था में पिता के वश में रहे, और युवावस्था में पति के, जब पति मर जाय तो पुत्रों के आधीन रहे. स्त्री कभी भी स्वतन्त्र न हो।

ये दोनों ही श्लोक धर्मशास्त्र के हैं और धर्मशास्त्रों ने इन श्लोकों में कन्याओं को भी नारी एवं स्त्री शब्द से याद किया है फिर पाराशर ने कन्याओं के लिये 'नारी' लिख दिया तो कौन

गजब कर दिया। यहां नारी शब्द से कन्या का ग्रहण है और कन्या का ही दूसरा पति हो सकता है।

मनु-पाराशर की एकता।

अब हम मनु के लेख से यह दिखलावेंगे कि वेद के मंत्रों में जो विवाह कहा गया है वह विवाह कन्याओं का ही होता है अकन्याओं का नहीं होता, किन्तु पहिले एक हौव्वा दूर कर दें। मनु का नाम लेने हो कई एक सज्जन यह कह देंगे कि मनुस्मृति का धर्म तो सतयुग के लिये है, कलियुग के लिये तो पाराशर स्मृति ही प्रमाण हैं मनु नहीं? चालबाज लोगों ने साधारण मनुष्यों के डराने के लिये यह एक हौव्वा बना लिया है पहले इसको दूर कर देना हम आवश्यकीय समझते हैं। मनु स्मृति केवल सतयुग में ही प्रमाण हैं कलियुग में नहीं इस बात को वे लोग कहते हैं जो मनुष्यों को धोखे में फांस विधवा विवाह चलाना चाहते हैं, इन के इस धोखे को संसार से निर्मूल कर देने के लिये महर्षि पाराशर क्या कहते हैं जरा उन के कथन को भी सुनें। "अपृष्ट्वा चैव भर्त्तारं या नारी कुरुते व्रतम्। सर्वं तद्राक्षसान्गच्छेदित्येवं मनुरब्रवीत् ॥ ४ ॥ १६ ॥ मेध्यामेध्यं स्पृशन्तो ये नोच्छिष्टान्मनुरब्रवीत् ॥ ७ ॥ ३३ ॥ भुक्तोच्छिष्टं तथा स्नेहं नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ ७ ॥ ३४ ॥ पाराशर" । सुधारक देखें और मन को स्थिर कर के समझ लें कि महर्षि पाराशर अपनी स्मृति की पुष्टि में स्थान स्थान पर मनु का प्रमाण देते हैं। अपने लेख को मनु

से मिलाते हुये सत्य सिद्ध करते हैं। जब पाराशर जी स्वयं मनु स्मृति को प्रधान मानते हैं फिर कोई मनुष्य कैसे कह सकता है कि कलियुग में पाराशर स्मृति ही प्रधान है मनु प्रधान नहीं ?

सुधारक वेद शास्त्र से अनभिज्ञ हैं और "कलौ पाराशराः स्मृताः" इस के अर्थ को नहीं समझते, इसी कारण कह दिया करते हैं कि तो पाराशर का यह लिखना कि "कलौ पाराशराः स्मृताः" मिथ्या हो जावेगा ? इस के उत्तर में हम यह कहेंगे कि पाराशर का लेख मिथ्या नहीं है तुम्हारी समझ मिथ्या है। पाराशर स्मृति में ब्राह्मणादिकों के लिये कलियुग में कृषि करना आदि कई एक ऐसे धर्म कहे हैं जिन का स्पष्ट रूप से मनु स्मृति अनुमोदन नहीं करती, विचार शीलों को यहाँ संभ्रम होगा कि मनु में जिन का पूर्ण अनुमोदन नहीं हैं उनको हम धर्म कैसे मानें ? इस संभ्रम को दूर करने के लिये पाराशर जी ने लिखा कि "कलौ पाराशराः स्मृताः" कलियुग के लिये जो पाराशर जी ने विशेष धर्म कहे हैं उन पर यह व्यवस्था है किन्तु जिन धर्मों का वर्णन मनु ने किया उनको पाराशर जी सर्वांश में सत्य एवं माननीय मानते हैं।

इस विवेचन को न समझ कर सुधारक मन्वादि समस्त स्मृतियों को उड़ाकर कलियुग में एक पाराशर स्मृति ही रखना चाहते हैं यह इनकी या तो शास्त्रानभिज्ञता है या धूर्तता। 'मनु मान्य, है हमारे इस विवेचन से यह हौव्वा भाग गया कि कलियुग में 'मनुस्मृति नहीं मानेंगे,। स्मृतियों

में प्रधान सर्वमान्य मनुस्मृति विधवाओं के विवाह पर लिखती है कि-

पाणिग्रहणिका मन्त्राः कन्यास्वेवप्रतिष्ठिताः।
नाकन्यासु क्वचिन्नृणां लुप्तधर्मक्रिया हि ताः॥२२६

मनु० अ० ८।

विवाह के जो वेद मन्त्र हैं वे कन्या के ही विवाह करने को कहते हैं अकन्या में उनकी प्रवृत्ति ही नहीं और गांधर्व-विवाहादि से अन्यत्र जो पुरुष संगम कर चुकी है उनमें भी वेद मन्त्रों की प्रवृत्ति नहीं है।

"कन्या अग्निमयक्षत,, इत्यादि वैवाहिक वेद मन्त्रों में साक्षात् 'कन्या, पद आता है। वेद मन्त्रों की प्रवृत्ति विवाह करवाने के लिये कन्या में ही होगी, कन्या से भिन्न में हो ही नहीं सकती, फिर 'नष्टे मृते' इस श्लोक में वेद विरुद्ध विधवा का विवाह कैसा? स्पष्ट होगया कि वेद मन्त्रों से कन्याओं का ही विवाह होता है विधवाओं का नहीं? वेद के हुक्म को भाड़ में झोंक कर कोई भी विचारशील मनुष्य विधवाविवाह नामक व्यभिचार को तैयार न होगा।

हम अपने मित्र उपाध्यायजी और जोशीजी को सम्मति देते हैं कि विधवाविवाह चलाने के लिये आप लोग संसार की आंख में धूल झोंकते हैं, धूर्तता करते हैं, वेद और धर्म शास्त्रोंके अर्थ बदलते हैं इस प्रकार अनेक कष्ट उठाकर विधवा विवाह चलानेका प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु फिर भी वेद तुम्हारे

कर्त्तव्य पर पानी फेर देता है इस कारण आप इस कष्ट को तो छोड़ दें एवं सच्चे अन्तःकरण से यह कहने लगें कि वेद शास्त्र में कोई सार नहीं, बाइबिल सर्वोत्तम पुस्तक है, वह हमको प्रमाण है उसमें विधवाविवाह लिखा है इस कारण विधवा विवाह कर लेना प्रत्येक स्त्री का धर्म है।

पंडितो! इतना अन्धेर मत करो, वेदों में से बाइबिल का धर्म मत निकालो, आखिर तुमको भी मरना है। तुम्हारी दृष्टि में ईश्वर नहीं है, यदि ईश्वर का होना सच है तो धोखेबाजी, धूर्तता, अर्थ बदलना इनका आपको दण्ड अवश्य मिलेगा। आप नरकों में निवास का उद्योग क्यों कर रहे हैं, इतने पर भी आपका चलाया विधवा विवाह न चलेगा इस कारण इस व्यर्थ उद्योग को छोड़ दें।

श्रोताओ! हम नहीं कह सकते कि हमारी इस प्रार्थना को विधवा विवाह के लेखक सुनेंगे या नहीं। हां – हम यह दावा करते हैं कि 'नष्टे मृते' इस श्लोक से विधवा विवाह सिद्ध करने वाला कोई माई का लाल संसार में पैदा ही नहीं हुआ। तुम लोग वेद शास्त्रों को नहीं पढ़े इस कारण इनके धोखे में फंस जाते हो। हमारा बनाया 'विधवा विवाह निर्णय' ग्रंथ पढ़ो, आप लोगों को ज्ञान हो जायगा कि वेद-शास्त्र, इतिहास-पुराण में कहीं पर भी विधवा विवाह की विधि नहीं है, सब जगह खण्डन ही खण्डन है। इतना कहकर मैं अपने व्याख्यान को समाप्त करता हूं एकबार बोलिये श्री सनातन धर्म की जय!

कालूराम शास्त्री।

* श्रीहरिश्शरणम् *

सप्तपदी प्राग्विवाहनिर्णय.

उदग्रे रदाग्रे सगोत्रापि गोत्रा,

स्थिता तस्थुषः केतकाग्रे षडंघ्रे ।

तनोति श्रियं सश्रियं नस्तनोतु,

प्रभुः श्रीवराहावतारो मुरारिः ॥१॥

दुरापारसंसारसंहारकारी,

भवत्यश्ववारः कृपाणप्रहारी ।

मुरारिर्दशाकारधारीह कल्की,

करोतु द्विषां ध्वंसनं वः स कल्की ॥२॥

सी दिन यह भारतवर्ष वेद विज्ञान का भण्डार था, उस समय यह भूतल का गुरु और पूज्य कहलाता था इस कारण प्रत्येक जन ज्ञान, भक्ति, कर्म काण्ड का आदर्श बन कर नित्य श्रौत, स्मार्त्त धर्म के पालन में कटिबद्ध रहता था, उस समय धर्म विरुद्ध आवाज उठाने का किसी व्यक्ति का साहस ही नहीं हो सकता था। दुर्भाग्यवश इस पवित्र देश में दुर्योधन का जन्म हुआ और उस के स्वार्थाधिक्य ने भारतवर्ष में फूट का बीज बोया

जिस का फल महाभारत संग्राम एवं उस के द्वारा भारतवर्ष का अधः पतन सिद्ध हुआ। धीरे २ वीर भारत विदेशियों के पंजे में फंस अपने गौरवान्वित वेद, शास्त्र प्रभृति ग्रंथों को तिलाञ्जलि दे योरूपीय सभ्यता का आदर्श बन गया। आज इस की दृष्टि में यदि कोई विज्ञान है तो वह विधवा विवाह है। आज शिक्षित समुदाय ईश्वर का भक्त नहीं विधवा विवाह का भक्त है। आज इस की दृष्टि में यागादि कर्मकाण्ड स्वर्ग का हेतु नहीं वरन् विधवाविवाह स्वर्गदायक है आज शिक्षित समुदाय को उठते, बैठते, खाते, सोते, चलते, फिरते विधवा विवाह याद रहता है 'धार्मिक बनने का जरिया, देशोन्नति का परम साधन, स्वराज्य मिलने का सुगमोपाय विधवा विवाह ही जान पड़ता है, जैसे नशेबाज नशे के बिना व्याकुल होजाते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी शिक्षित समुदाय विधवाविवाह के विना व्याकुल हो गया है, आज इन को वेद शास्त्र के प्रत्येक पन्ने में विधवा विवाह दिखलाई देता है। विधवा विवाह के प्रेमी विधवा विवाह की पुष्टि में जो अनेक प्रमाण देते हैं उन में से एक प्रमाण यह है।

अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतादौ वरो यदि।
न च मंत्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा ॥६४॥
बलाच्चेत्प्रहृता कन्या मंत्रैर्यदि न संस्कृता।
अन्यस्मै विधिवद्देया-यथा कन्या तथैव सा॥६५॥

पाणिग्राहे मृते बाला केवलं मंत्रसंस्कृता।
साचेदक्षतयोनिः स्यात्पुनः संस्कारमर्हति ॥६६॥

वसिष्ठ० अ० १७

हाथ में जल लेके वा वाणी मात्र से टीका लगन सब हो गई हो अथवा कन्या दान भी पिता ने कर दिया हो परन्तु मंत्रों के साथ पति ने पाणिग्रहण न किया हो तथा सप्तपदी न हुई हो ऐसे अवसर में यदि वर पति मर जावे तो वह पिता की अविवाहित कुमारी कन्या ही मानी जायगी, इस दशामें पिता अन्य वर के साथ उसका विधिपूर्वक विवाह कर देवे । ६४ । मंत्रों द्वारा विवाह संस्कार होने से पहिले यदि किसी ने बलपूर्वक कन्या को हर लिया हो तो विधिपूर्वक वह कन्या अन्य वर को दे देनी चाहिये क्यों कि जैसी कन्या होती वैसी ही वह है । ६५ । और यदि पाणिग्रहण तक भी मंत्रों द्वारा संस्कार हो गया हो किन्तु सप्तपदी न हुई हो एवं उसने किसी के साथ संग भी न किया हो वा किसी ने बलपूर्वक दूषित भी न की हो तो उसका अन्य वर के साथ विवाह संस्कार हो सकता है । ६६ ।

जोशी जी को इन श्लोकों में विधवा विवाह दीख पड़ा, कैसे दीखा 'अद्भिर्वाचा' तथा 'बलाच्चेत्प्रहृता' इन दो श्लोकों को तो ले लिया और " पाणिग्राहे मृते बाला " इसको छोड़ दिया, इस अनोखी चालबाजी से झट - विधवाविवाह दीखने लगा। हमको तो इन दो श्लोकों में भी विधवा विवाह नहीं

दीखता, नहीं मालूम जोशी जी को क्यों दीखा, मालूम होता है कि हमारी आँखों पर भारतीय चश्मा है और जोशी जी योरूपीय चश्मा लगाये हैं। चश्मों के भेद से ही यह हुआ है हमको इन श्लोकों में विधवा विवाह नहीं दीखता एवं जोशी जी को दीखता है। इन श्लोकोंमें विधवा विवाह दीखना जोशी जी का गुण नहीं योरूपीय चश्मे का गुणहै, यदि यह चश्मा जोशी जीके नेत्रो में कुछ दिन और लगा रहा तो हमें विश्वास है कि जोशी जी को गणित, वैद्यक, भूगोल, पदार्थ, दर्शन प्रभृति समस्त ग्रंथों में विधवा विवाह दीखेगा?

आप लिखते हैं कि "वसिष्ठ इन पद्यों में वाग्दत्ता ही नहीं किन्तु उदक स्पर्शिता कन्या के भी पुनर्विवाह की आज्ञा देता है और स्पष्ट कहता है कि जब तक मंत्रोच्चारण पूर्वक पाणिग्रहण संस्कार न हो तब तक वह कन्या है उसका दूसरे के साथ विवाह कर देना चाहिये।

यहां पर जोशी जी को "अद्भिर्दत्ता" दीख पड़ा अर्थात् जल से दी हुई कन्या। जोशी जी ने समझा कि जल से तो विवाह में ही दी जाती है, यह समझ कर इन श्लोकों में से विधवा विवाह निकाल दिया, खूब समझे। एक बहरा किसी अंग्रेज के यहां नौकर हुआ, यह बिना लिखा पढ़ा था, वर्ष दो वर्ष नौकर बना रहा, यहाँ पर हर समय अंग्रेजी बोली जाती थी यह हजरत भी दो डेढ़ वर्ष में अंग्रेजी बोलना सीख गया किन्तु सीखा केवल "यस" यही एक शब्द। एक दिन इसने

कमरे को साफ नहीं किया, साहब क्रोधित होकर बोले तुमने गन्दगी क्यों फैलाई ? साहब की इस अंग्रेजी बोलचाल को यह समझा नहीं, बिना समझे ही कह दिया कि, यस । फिर साहब ने कहा तुम इस कमरे को कभी साफ नहीं करोगे ? बहरा बोल उठा कि 'यस' । साहब—क्या तुम नौकरी नहीं करोगे ? बहरा यस । साहब—हम तुम्हारी सब तनख्वाह काट लेंगे ? बहरा यस । साहब-हम तुमको बर्खास्त करदेंगे ? बहरा-यस, अन्त में साहब ने सब नौकरी जब्त करली और इसको कान पकड़ कर निकाल दिया, 'यस' ने बहरे की दुर्दशा करदी. बहरा यस, तो समझता था किन्तु उसका मतलब नहीं समझता था इसी प्रकार जोशी जी जलसे दीहुई कन्या तो समझते हैं किन्तु उसका मतलब नहीं समझते । जिस समय कन्या का वाग्दान होता है कन्या का पिता हाथ में जल लेकर वाग्दान करता है कि गोवर्धनशर्मणो ज्येष्ठपुत्राय रामस्वरूपाय दुर्गानाम्नीं स्वीयां कन्यां दास्यामि ; गोवर्धनशर्मा के ज्येष्ठ पुत्र रामस्वरूप को मैं अपनी दुर्गानाम वाली कन्या को दूंगा क्या जोशी जी इस को नहीं जानते या यह समझते हैं कि हाथमें जल नहीं लिया जाता और कोरे हाथ से सूखा संकल्प किया जाता है । या तो जोशी जी जानते नहीं या जानबूझ कर असली बात को छिपा हिन्दुओं को ईसाई बनाने का मार्ग साफ करते हैं ।

हम दुर्जनतोषन्यायसे यह भी मानलें कि वाग्दानके समय कन्या का पिता हाथ में जल नहीं लेता तो कन्यादान के समय

तो जल के द्वारा ही संकल्प होता है। और शास्त्र कहते हैं कि सप्तपदी जब तक न हो तब तक विवाह पूरा नहीं होता न पूर्णरूप से वर पति बनता एवं नहीं पूर्णरूप से कन्या वर की पत्नी बनती है सप्तमपद में जब वर यह कहता है कि "त्वं मामनुव्रता भव" तू हमारी सहगामिनी हो तब पूर्णविवाह होता है। सप्तपदी से पहिले यदि वर का मृत्यु हो जावे तो अन्य पुरुष के साथ विवाह हो सकता है क्योंकि पहिले वर के साथ विवाह पूरा नहीं हुआ और पूर्णरूप से पति पत्नी भाव नहीं आया इसको जोशी जी दबाते हैं एवं कपट जाल रचकर विधवा विवाह चलानेका उद्योग कर रहे हैं। शास्त्र का कथन तो यह है कि सप्तपदी के पश्चात् पति मरने पर दूसरा विवाह नहीं होता मालूम होता है जोशी जी सप्तपदी के पश्चात् जल द्वारा कन्या का दान मानते हैं नहीं तो "अद्भिर्दत्ता" इस पद से विधवा विवाह कैसे सिद्ध करते।

"अद्भिर्वाचा च दत्तायाम्" इस में यह भी लिखा है कि "न च मन्त्रोपनीता स्यात्" अर्थात् "अर्यमणंनुदेवम्" इनमंत्रों से विवाह न होगया हो। जिस समय विवाह का समस्त कृत्य हो लेता है और सप्तपदी अवशिष्ट रहतीहै उस समय वैवाहिक मंत्रों से कन्या एवं वरका कुछ इकरारनामा होता है, यह श्लोक कहता है कि वह इकरारनामा न हो गया हो इस इकरारनामे के हो जाने पर स्वयं श्लोक अन्यपति ग्रहणका निषेध करता है जोशीजी इसको दबाते हैं। "नच मंत्रोपनीता स्यात्" श्लोकके

इतने अक्षरों को दवाना सिद्ध करता हैं कि जोशी जी किसी स्वार्थ से वेद मंत्रों को तोड़ मरोड़ उनका असली भाव गायव कर विधवा विवाह चलाते हैं। दूसरा श्लोक कहताहै कि यदि कन्या को कोई हर ले गयाहो और मन्त्रों द्वारा विवाह संस्कार न हुआ हो उस कन्या को उस पुरुष से छीन कर किसी अन्य को विधिपूर्वक दे दें क्यों कि कन्या में और उसमें कोई फर्क नहीं है। भोग हो जाने पर धर्मशास्त्र अन्य व्यवस्था देगा यहाँ पर केवल इतना है कि कन्या को कोई हर ले गया हो एवं उस से विषय न किया हो और न विवाह हुआ हो तब तुम अपनी इच्छानुसार विधि पूर्वक किसी दूसरे को दे सकते हो।

"वलाच्चेत्प्रहृता कन्या" इस श्लोक में ही लिखा है कि "मंत्रैर्यदि न संस्कृता,, यदि मंत्र द्वारा विवाह संस्कार न हुआ हो तब दूसरे को विवाह दो जब श्लोक में यह पख लगादी है कि "मंत्रों से विवाह न हुआ हो तब इस श्लोक से विधवा विवाह सिद्ध करना प्रवल अन्याय और अत्याचार है, नहीं मालूम जोशी जी का आत्मा इस बनावटी एवं जाली व्यवस्था को कैसे स्वीकार करता है।

यह तो वही बात हुई। एक रईसने कोई अपने यहां सईस को नौकर रक्खा, सईस काम करने लगा, जिस पर नौकर रक्खा गया वह घोड़ा रंग का सुफेद, कावुली, वहुत वढ़िया घोड़ा था। इधर सईस भी हजरत था इसके मनमें यही आया किसी प्रकार यह घोड़ा उड़ावें, एकदिन दिन छिपे रईस वोला

कि सईस ! तुमने आज घोड़ा नहीं मला ? सईस ने कहा नहीं मला। इतना सुन रईस गुस्से में भर आया, कहने लगा कि अभी मलो ? सईस मलने लगा, रईस साहब कह गये कि जब तक हम घरसे न आवें तुम मलते ही रहना ? इतना कह कर रईस चला गया और फिर रात को न आ सका। सईस ने घोड़े को खूब मला, अब इच्छा हुई कि घोड़े को आज उड़ाओ इशारे में सईस का भाई लगा हुआ था वह आ गया, उसने एक खरगोश तो इसको देदिया और घोड़ा लेकर चलता हुआ सईस सो गया रईस के आने से एक घंटा पहिले सईस उठा एवं खरगोश को मलने लगा। थोड़ी देर में रईस आया उसने पूछा घोड़ा कहां है ? सईस ने खरगोश को बतलाया कि यह है रईसने कहा हम खरगोशको नहीं पूछते घोड़ा पूछतेहैं ? सईस बोला हजूर यह खरगोश नहीं वही आप का घोड़ा है, मैं दिन छिपे से मलने लगा हूँ मलते मलते यह घिस कर इतना रह गया है यदि आप घंटाभर और न आते तब तो मैं इसको भी घिस डालता फिर कुछ भी न रहता; आपकी तकदीर बड़ी जबर्दस्त है, इसी से आप एक घंटा पहिले आ गये और यह आपको देखने को मिल गया।

जिस चाल से सईस ने घोड़ेका खरगोश बना दिया उसी चाल से जोशी जी वाग्दत्ता के विवाह को विधवा विवाह बनाते हैं किन्तु जोशी जी को याद रखना चाहिये कि आपकी इस चाल में वे ही निरक्षर, धर्म के परम शत्रु सुधारक फंसेंगे

जिनकी सात पीढ़ी ने भी धर्मशास्त्र नहीं देखा किन्तु जो धर्म शास्त्र को जानते हैं वे आपके जालमें न फंस कर आपकी बनावटी चालबाजी पर आंसू बहा रहे हैं। ओझियवर्य ? वाग्दान होने के पश्चात् और सप्तपदी से पहिले वर के मर जाने पर या दूषित वर को छोड़ कन्या का विवाह अन्य के साथ कर देना सभी धर्मशास्त्रों ने लिखा है, अन्य धर्मशास्त्रों की भांति वसिष्ठ ने भी इन श्लोकों में वाग्दत्ता का विवाह अन्य पुरुष के साथ करना लिखा, फिर इसमें विधवा विवाह कहां! विचार करो क्या कोई मनुष्य इन श्लोकों में से विधवा विवाह निकाल सकता है? जिन श्लोकों में से त्रिकाल में भी विधवाविवाह नहीं निकल सकता उन से विधवाविवाह सिद्ध करना क्या जोशी जी के मस्तक पर कलंक का टीका नहीं लगा रहा है?

यहां पर धर्मशास्त्रोंका निर्णय नहीं है विधवाविवाह चलाना है शिकारी कांटे में आटा लगा कर मछली के लिये छोड़ते हैं क्या इस का मतलब यह है कि शिकारियों को मछली पर दया है, हरगिज नहीं? इस कार्य से तो मतलब यह है कि आटे के लोभ से मछली कांटे में विंध जाय और फिर यारों के मजे उड़ें. इसी प्रकार सुधारकों का मतलब यह नहीं है कि धर्मशास्त्र का निर्णय हो वरन् यह मतलब है कि धर्मशास्त्र के लोभ से धार्मिक हिन्दू हमारे जाल में फंस कर विधवाविवाह करने लगें, इस से द्विजत्व और धर्म का पचड़ा भी छूट जावे एवं हमारे गुलछर्रे भी उड़ें, सुधारकों का यही अभिप्राय है

उसी अभिप्राय ने जोशी जी को मजबूर कर लिया जिस से न्याय तथा धर्म का गला घोट वसिष्ठ स्मृति के श्लोकों से विधवा विवाह सिद्ध कर बैठे। सच तो यह है कि स्वार्थी मनुष्य क्या क्या अन्याय नहीं कर सकता, क्या अपने इस अन्याय पर जोशी जी कभी पश्चात्ताप करेंगे ? नहीं करेंगे। पश्चात्ताप तो अवश्य करते किन्तु अब तो योरूपीय आदर्श न करने देगा।

वसिष्ठ और विधवा विवाह।

जोशी जी जिस वसिष्ठ स्मृति के श्लोकों को लेकर संसार में विधवा विवाह चलाना चाहते हैं वह वसिष्ठ स्मृति तो विधवा विवाहका घोर खण्डन करती है। वसिष्ठ स्मृति द्विजों से कहती है कि विधवा विवाह व्यभिचार है, इस से स्त्री की उच्चगति मारी जाती है और अधोगति मिलती है। फिर वसिष्ठ स्मृति ने द्विजों से यहभी कहा कि कोई भी द्विज ऐसी स्त्री से विवाह न करे जो किसी दूसरे पुरुष से स्पर्श कर चुकी हो। क्रमशः दोनों प्रमाणों को सुनिये—

पतिव्रतानां गृहमेधिनीनां,
सत्यव्रतानां च शुचिव्रतानाम्।
तासां तु लोकाः पतिभिः समाना,
गोमायुलोका व्यभिचारिणीनाम् ॥१४॥

वसिष्ठ अ० २१।

शुद्ध पवित्रता से रहने, सत्य बोलने और पतिव्रता होने

से घरको पवित्र करने वाली स्त्रियों को अपने पतियों के सहित स्वर्ग प्राप्त होना एवं व्यभिचारिणी स्त्रियों को शृगाल योनि मिलती है।

यह है वसिष्ठ स्मृति का फैसला। कई एक मनुष्य यह कह देंगे कि वसिष्ठ स्मृति ने तो व्यभिचारिणी स्त्रियों को शृगाल योनि लिखी है, विधवा विवाह वालियों को नहीं लिखी? इस के उत्तर में हम बड़े जोर के साथ कह सकते हैं कि विधवा विवाह स्मृतियों की दृष्टि में व्यभिचार है यहांपर वसिष्ठ स्मृतिने व्यभिचारिणी स्त्रियों को शृगाल योनि की प्राप्ति लिखी है और मनुस्मृतिने विधवा विवाह वाली स्त्री को शृगालयोनि की प्राप्ति लिखी है, जो फल व्यभिचार पाप का है वही फल विधवा विवाह नामक व्यभिचार का है, जब दोनों का फल एक है तो फिर विधवाविवाह और व्यभिचार कभी भी दो नहीं हो सकते, दो बतलाने वाले संसार की आंख में धूल झोंकते हैं। जब स्मृतियां एक फल बतला रही हैं तब फिर वह कौन पुरुष है जो विधवा विवाह तथा व्यभिचार को दो बतला दे। स्मृतियों ने एक पत्नीत्व धर्म को ही पतिव्रत माना है, दो पति स्वीकार करने वाली स्मृतियों की दृष्टि में कभी भी पतिव्रता कहलाने की हकदार नहीं है? सुनिये मनु—

आसीतामरणात्क्षान्ता नियता ब्रह्मचारिणी।
यो धर्म एकपत्नीनां काङ्क्षन्ती तमनुत्तमम् ॥१५८

मनु० अ० ५।

क्षमायुक्त, नियम वाली, एक पति वाली स्त्रियों का जो धर्म है उस की इच्छा रखती हुई, ब्रह्मचर्य धारण कर मरण पर्यन्त सर्वोत्तम एक पति धर्म में रहे।

यहां पर मनु ने स्त्री के लिये एक ही पति बतलाया है दूसरा नहीं, चाहे वह जिये या मरे। मरने पर भी दूसरे पति का निषेध कर दिया है "न द्वितीयश्च साध्वीनां कचिद्भर्त्तोपदिश्यते" श्रेष्ठ स्त्रियों को कभी भी दूसरा पति नहीं कहा। एक पति वाली ही पतिव्रता होती है। मनु ने विधवा विवाह वाली स्त्रियों को शृगाल योनि की प्राप्ति लिखी और वसिष्ठ ने उसी विधवा विवाह को व्यभिचार बतला कर शृगाल योनि की प्राप्ति बतलाई, अब कोई भी विचार शील यह नहीं कह सकता कि विधवा विवाह करने वाली स्त्री पतिव्रता होती है ? यदि कोई कहेगा तो वही कहेगा जिसने अपनी अक्ल को बाजार में बेंच कर योरुप की अक्ल खरीदी है।

विधवा विवाह वाली स्त्री को शृगाल योनि की प्राप्ति बतलाने वाला मनु का श्लोक यह है।

व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति निन्द्यताम्।
शृगालयोनिं प्राप्नोति पापरोगैश्च पीड्यते ॥१६४॥

मनु० अ० ५।

पाणिग्रहण करने वाले पुरुष से अन्य पुरुष के साथ समागम व्यभिचार करनेसे स्त्री निन्दाको प्राप्त होती है और मरने के पश्चात् वह शृगाल योनि में जाती एवं उस पाप से उत्पन्न हुये रोगों से पीड़ित होती है।

कई एक मनुष्य यह कहेंगे कि इस श्लोकमें भी व्यभिचार पद है इस कारण जो स्त्री व्यभिचार करती है वह शृगाल योनि में जाती है किन्तु जो विधवा विवाह कर लेती है वह नहीं जाती, ऐसा वही कह सकता है जिसने मनु के इस पूरे प्रकरण को नहीं देखा। मनु ने यहां पर साफ साफ कहा है कि स्त्री शरीर को सुखादे, भूखी मर कर प्राण छोड़ दे किन्तु पति मरने पर अन्य पुरुष से सम्बन्ध न जोड़े। फिर मनु ने यह भी शंका उठाई कि सन्तान के अभाव में मोक्ष न होगा? समाधान में कहा कि पति मरने पर स्त्री ब्रह्मचारिणी रहे, ब्रह्मचर्य के प्रभाव से ही उत्तम गति को जायगी। इसी प्रकरण में यह भी कहा कि एक पति से ही विवाह करना धर्म है दूसरे पतिसे विवाहादिक सम्बन्ध करना व्यभिचार है उस व्यभिचार का फल "व्यभिचारात्तु" इस श्लोकमें दिखलाया फिर कोई कैसे कह सकता है कि विधवा विवाह व्यभिचार नहीं? विधवा विवाह को व्यभिचार मानकर वसिष्ठ स्मृति और मनु स्मृतिने स्त्रीका अधःपतन माना है अतएव यह पाप है। वसिष्ठ स्मृति में विधवा विवाह से शृगाल योनि की प्राप्त बतलाने वाला " पतिव्रतानां " यह श्लोक जोशी जी को वसिष्ठ स्मृति में दीखा ही नहीं, नहीं मालूम जोशी जी कैसा चश्मा लगाये हैं जिससे विधवा विवाह की निन्दा करने वाले श्लोक दीख ही नहीं पड़ते।

मनुष्योंको अनन्य पूर्विका स्त्री से विवाह करनेकी आज्ञा

धर्म शास्त्र ने दी है अर्थात् जिस स्त्री का पहिले विवाह न हुआ हो या किसी के साथ भ्रष्ट न हो गई हो ऐसी स्त्री से विवाह करना द्विजों को धर्मशास्त्र की आज्ञा है। इसी बात को वसिष्ठ स्मृति लिखती है कि—

गृहस्थो विनीतक्रोधहर्षो गुरुणाऽनुज्ञातः स्नात्वाऽसमार्षामस्पृष्टमैथुनां यवीयसीं सदृशीं भार्यां विन्देत ॥ १ ॥

वसिष्ठ० अ० ८

गृहस्थ क्रोध हर्ष का त्याग करता हुआ, रागद्वेष रहित होके जिसका किसी पुरुष से संग न हुआ हो, जो अपने गोत्र की न हो ऐसी युवति अपने तुल्य सम्पत्ति आदि वाली स्त्री से विवाह करे।

श्रोताओ! वशिष्ठ स्मृति साफ साफ कह रही है कि जिस स्त्री ने पुरुष का संग किया है उसके साथ कभी भी विवाह न करे। धर्म शास्त्र के विरुद्ध अपने शिर पर पाप की गठरी लाद कोई भी द्विज विधवा स्त्री से विवाह नहीं कर सकता। हां—वे कर सकते हैं कि जिन को वेद-शास्त्र सांप की भांति शत्रु दिखलाई देते हैं और जिनके मन में बाइबिल का धर्म बस गया है, जो संसार को धोखा देने के लिये नाम के हिन्दू बने हैं। जब वसिष्ठ स्मृति अनन्यपूर्विका स्त्री से विवाह करने की आज्ञा देती है तब वसिष्ठ स्मृति में विधवा विवाह का मण्डन है या घोर खण्डन? इसके ऊपर विचार करो।

जोशीजी ! क्या कहीं वसिष्ठ भंग पी गये थे जो पहिले विधवा विवाह लिख दिया और फिर खण्डन लिखा ? जोशी जी धर्मशास्त्रोंका निर्णय करते हैं या संसार को अन्धा बनाते हैं ? फिर अत्यन्त प्रशंसा की बात यह है कि "पतिव्रतानां" और "गृहस्थः" ये दो प्रमाण जो विधवा विवाहका खण्डन कर रहे हैं ; जोशीजी को वसिष्ठ स्मृति में दीखे ही नहीं ? दीखें तो उसको जो धर्मशास्त्र का निर्णय करे ? जोशीजी को निर्णय नहीं करना है संसार को धोखे में डाल, बेवकूफ बना अन्धा करना है ? धन्य है ऐसे पाण्डित्य को एवं धन्य है ऐसे विवेचन को । क्या ही अच्छा किया ।

जाफर जटल्ली ने ऐसा किया ।
मक्खी को मतमल के भैंसा किया ॥

विधवा विवाह के निषेध करने वाले प्रमाणों को तो दबाया और वाग्दत्ता के विवाह विधायक प्रमाणों को आगे रख जबर्दस्ती से उनसे विधवा विवाह निकाला ; क्या जोशी जी ! आप की चोरी और सीना जोरी को संसार नहीं समझता ? एवं आप जो यह निन्दनीय दगाबाजी कर रहे हैं इस कर्तव्य से आपको किञ्चित् भी लज्जा नहीं आती ? यदि आपको अपने इस कर्तव्य पर पश्चात्ताप नहीं है या आपको लज्जा नहीं आती तब तो हम यही कहेंगे कि–

लज्जामेकां परित्यज्य,
त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।

अब जोशीजी लज्जा को दियासलाई दिखला सुधारस मार्तण्ड बनना चाहते हैं।

अब छत्रपति श्री १०५ सुधारक राज चक्रवर्ती जोशी जी विधवाविवाह को अभेद्य,अजेय, फौलादी किला बनाने के लिये एक प्रमाण और लिखते हैं वह यह है।

वरयित्वा तु यः कश्चित्प्रणश्येत्पुरुषो यदा।
ऋत्वागमांस्त्रीनतीत्य कन्यान्यं वरयेद्वरम् ॥
स तु यद्यन्यजातीयः पतितः क्लीव एव वा।
विकर्मस्थः सगोत्रो वा दासो दीर्घमयोपिवा ॥
ऊढापि देया सान्यस्मै सहाभरणभूषणा।

(पराशरभाष्योद्धृतकात्यायनवचन)

श्रोत्रिय गण! श्लोक आपने सुन लिये, अब जोशी जी के अर्थ पर भी दृष्टि डालें। अर्थ यह है कि "यदि कोई पुरुष कन्या को वर कर नष्ट हो जावे तो वह कन्या तीन ऋतुकालों के उपरान्त अन्य वर को वरण करे। यदि वर विजातीय हो पतित व नपुंसक हो, चरित्र भ्रष्ट हो, सगोत्र हो, दास हो, अथवा दीर्घ रोगी हो तो इन सात अवस्थाओं में ब्याही हुई भी वह वस्त्राभरण सहित अन्य को दे देनी चाहिये"।

इस समय ये श्लोक किसी भी स्मृति में नहीं मिलते, संभव है उस समय हों और अब छापे खानोंकी असावधानी से रह गये हों। अब जरा विवेचन सुनिये। एक मनुष्य ने

अपने दोस्त से पूछा तुम नैपाल गये थे? उसने कहा हां गये थे। दोस्त ने फिर प्रश्न किया कि नैपाल में तुमने हाथी देखे उसने उत्तर दिया हां हाथी तो हमने देखे, देखे ही नहीं वरन् एक दिन खाये भी हैं। खाने की बात सुन कर पूछने वाले चौंक उठे कि क्या हाथी खाये भी जाते हैं? वह बोला नैपाल में खाये जाते हैं एक हाथी एक पैसे को आता है और बिल कुल लाल होता है नहीं मानो तो हम दिखलादें, हमारी गठरी में अभी एक बंधा है। पूछने वालों ने कहा दिखलाओ? इसने गठरी खोली और गठरी में से एक संतरा निकाल कर दिखलाया और कहने लगा कि यह है नैपाल का हाथी। देखने वाले ने कहा यह हाथी नहीं है संतरा है? वह बोला संतरा नहीं है हाथी है हाथी। दोनों में बोल चाल हुई उसको सुन कर पचास साठ मनुष्य आगये, सभी समझाने लगे कि यह तो संतरा है, बार बार कहा किन्तु इसने न माना, वह हाथी ही कहता रहा।

जैसे इस मनुष्य ने अपनी जबर्दस्ती से सन्तरे को हाथी बना दिया इसी प्रकार जोशी जी 'वरयित्वा' का अर्थ 'विवाह करके' करते हैं। 'वरयित्वा, का अर्थ 'विवाह करके' न आज तक हुआ और न आगे को हो सकता है किन्तु जोशी जी की जबर्दस्ती को क्या किया जावे, वे चाहे गोवर का अर्थ हलुआ कर दें। उन को ठीक विवेचन करना होता तो हम मना देते किन्तु उन को तो शास्त्रों के गले

घोट विधवा विवाह चलाना है इस कारण 'वरयित्वा' का अर्थ 'विवाह कर के' लिखते हैं, लिखें, है अर्थ सोलह आने झूठ। झूठ ही नहीं वरन् चण्डूखाने की गप्प है। 'वरयित्वा' का अर्थ तो 'वरणं कृत्वा' होगा अर्थात् 'वरण कर के' इस का स्पष्टीकरण 'वाग्दान कर के' है। जोशी जी को विधवा विवाह चलाना है इस कारण संस्कृत पद के साथ अन्याय ठान 'विवाह कर के' अर्थ करते हैं।

यदि हम जोशी जी से यह पूछ बैठें कि आपने जो 'वरयित्वा' श्लोक से विधवा विवाह लिखा है, आपके इस कपोल कल्पित अर्थ में कोई प्रमाण है? सृष्टि के आरम्भ से संवत् १६२० तक किसी भी विद्वान् ने 'वरयित्वा' श्लोक का "विधवा विवाह" अर्थ किया है? बस इस प्रश्न के उत्तर में जोशी जी का दिवाला निकल जावेगा।

यह बात हमारी समझ में नहीं आती कि जब तक भारत वर्ष में अंग्रेजी शिक्षा नहीं आई थी तब तक इन श्लोकों के अर्थों में वाग्दत्ता कन्या के विवाह का वर्णन पंडित गण क्यों लिखते रहे और अंग्रेजी शिक्षा के फैलते ही ये समस्त श्लोक विधवाविवाह की आज्ञा देने वाले कैसे बन गये, क्या हम यह माने कि संस्कृत के बड़े बड़े विद्वान् सब मूर्ख थे एवं जो अंग्रेजी के विद्वान् संस्कृत से सर्वथा अनभिज्ञ हैं वे धर्म शास्त्र के पूर्णभाव को समझने लगे? यह तो कोई भी नहीं मान सकता, सभी को मानना पड़ेगा कि अंग्रेजी शिक्षा ने ज्ञान-भक्ति

धर्म-कर्म का स्वाहा कर लिखे पढ़े मनुष्यों को उच्च श्रेणी का नास्तिक बनाया है और उन के दिल में यह र दिया है कि हिन्दू सभ्यता मूर्ख मनुष्यों की कल्पना की हुई निन्दनीय तथा योरूपीय सभ्यता अक्ल के पुतलों की बनाई हुई सर्वोच्च सुख-दायक सभ्यता है अतएव हिन्दूसभ्यता को मारकर भारत को योरुपीय सभ्यता का भक्त बनाना प्रत्येक अंग्रेजी पढ़े लिखे मनुष्य का काम है। इस हेतु से जोशीजी प्रभृति योरुप के गुलामों की दृष्टि में ये श्लोक विधवा विवाह के बतलाने वाले हैं जो सत्यवादी, धार्मिक, संस्कृत के धुरंधर प्राचीन विद्वानों ने वाग्दत्ता परक लगाये हैं।

जोशी जी चाहे जितना उछलें कूदें किन्तु उन का अर्थ इतना झूठा है कि जिस की पुष्टिमें एकभी प्रमाण नहीं मिलता जोशी जी समझते हैं कि पबलिक संस्कृत से अनभिज्ञ है, वह क्या जाने कि संस्कृत शब्दों का जो हमने भाषा किया है वह गलत है या सही, संस्कृत न समझने के कारण वह हमारे अर्थ को सही मान लेगी बस विधवाविवाह चल जायगा इसी हिम्मत के ऊपर जोशी जी चील का अर्थ रीछ करते हैं ? जैसे चील का अर्थ रीछ और अंगूर का अर्थ शेर लिखे पढ़ों की दृष्टि में बिल्कुल गलत है उसी प्रकार 'वरयित्वा' का अर्थ 'विवाह कर के' लिखना सर्वथा मिथ्या है। हम आगे इन श्लोकों का अर्थ करेंगे और उस अर्थ की पुष्टि में अनेक प्रमाण देंगे।

इस स्थान पर अब यह विचार करना है कि "स तु यद्य-न्यजातीयः" इस डेढ़ श्लोक में विधवा विवाह है या सधवा विवाह, क्रमशः सुनिये, जो वर (कि जिस के साथ विवाह हुआ है) विवाह के बाद अन्य जातिका निकले तो वह कन्या उस से छीन कर किसी अन्य से विवाह दे। यहाँ पर तो विधवा विवाह का नाम भी नहीं? पहिले पति के जीते ही दूसरे के साथ विवाह बतलाया है? और जो पतित हो तो उस की स्त्री छीनकर किसी अन्य को देदे, इसी प्रकार नपुंसक की स्त्री छीन अन्य से विवाह दें, एवं जो चरित्र भ्रष्ट हो तो उस की स्त्री किसी दूसरे को दे, दूसरा भी चरित्र भ्रष्ट हो जाय तो तीसरे के साथ विवाह कर दे, , चरित्र भ्रष्ट होते ही फौरन स्त्री छीन लेनी चाहिये तथा जो वर कन्या के गोत्र का निकल आवे तो उस की स्त्री छीन कर किसी औरको विवाह दे यह जोशी जी की विलायती व्यवस्था सर्वथा धर्म शास्त्र से विरुद्ध मनगढ़न्त है। इस के ऊपर धर्मशास्त्र लिखता है कि यदि वर कन्या का एक ही गोत्र हो और विवाह करने के पश्चात् इस का ज्ञान हो तो फिर—

अथ समानार्षगोत्रजाविवाहे प्रायश्चित्तम्।

परिणीय सगोत्रान्तु समानप्रवरान्तथा।
त्यागं कुर्याद् द्विजस्तस्यास्ततश्चान्द्रायणं चरेत्॥

त्यागश्चोपभोगस्यैव न तु तस्याः।

समानप्रवरां कन्यामेकगोत्रामथापि वा।
विवाहयति यो मूढस्तस्य वक्षामि निष्कृतिम्।
उत्सृज्य तान्ततो भार्यां मातृवत्परिपालयेत्॥
इति शातातप स्मृतेः॥

पारस्कर गृ० कां० १ गदाधर भाष्य।

अब समानार्षगोत्रोत्पन्न कन्या के साथ विवाह का प्रायश्चित्त कहते हैं समान गोत्रा और समान प्रवरा कन्या से विवाह करके द्विज उस कन्या का त्याग कर दे, त्याग का अर्थ आगे आवेगा त्याग के पश्चात् प्रायश्चित्त में चान्द्रायण व्रत करे। त्याग भोग का है, स्त्री का नहीं। समान प्रवरा और समानगोत्रा कन्या को जो विवाह ले उसकी निष्कृति कहते हैं उसको भार्यापद से दो अलग करदे और जन्म भर माता की भाँति उसका पालन करे।

धर्मशास्त्र कहता है कि यदि समानगोत्रा कन्या से विवाह हो जावे और विवाह होने पर यह पता लगे कि इसका और हमारा एक गोत्र है तो उसके साथ में भोग त्याग दे एवं माता की भांति उसका पालन करे। जोशी जी धर्मशास्त्र की इस व्यवस्था को उड़ाकर अन्य से विवाह करना लिखते हैं फिर धर्मशास्त्र के इस फैसले की क्या गति होगी? इसके ऊपर भी तो विचार करना चाहिये था? विचार तो वे करें जो धर्मशास्त्र के कायल हों; उसको मानते हों जोशी

जी का यह काम नहीं। जोशी जी का कर्तव्य है कि वेद शास्त्र को बूट से कुचल भारत को योरूपीय सांचे में ढाल धर्म कर्म हीन नास्तिक बना दिये जावें इसी सिद्धान्त से "पालयेज्जननीमिव" धर्मशास्त्र की इस व्यवस्था को स्याहसाई दिखलाई है ऐसे अनर्थ करने वाले जोशी जी को हम हिन्दुओं का परमशत्रु औरंगजेब का दादा चंगेजखां का ताऊ कहदें तो क्या हमारा कहना मिथ्या है।

जोशी जी लिखते हैं कि जो कन्या दास को विवाही हो उसको छीन ले और किसी भिन्न मनुष्य को विवाह दे। मार लिया बेचारे मुलाजिमों को, नौकरी करना दास वृत्ति है अब जोशी जी सब मुलाजिमों की स्त्रियों को छीन छीन दूसरों को विवाहने फिरेंगे, नौकर पेशा सब रण्डुवे ही रहेंगे मालूम होता है किसी नौकर ने जोशी जी का दिल दुखाया है उसी के बदले में जोशी जी सबकी स्त्रियां छीनना चाहते हैं अच्छा है।

जोशी जी ने लिखा है कि जो दीर्घ रोगी हो उसकी स्त्री छीन कर निरोग से विवाह करदे? यह भी मजा है एक मनुष्य का हुआ विवाह, विवाह के बाद तपेदिक की हो गई बीमारी, बस अब क्या था फौरन स्त्री छिन गई उस स्त्री को किसी और पुरुष से लगा दिया उसको आने लगी मिर्गी, मिर्गी वाले से छीन कर किसी तीसरे को दी गई तीसरा कुछ दिन तो अच्छा रहा बाद में उसके

हो गया कुछ अब चौथे से विवाह हुआ। नित्य नये विवाह नित्य नये मंगलगान जोशी जी के नवीन अर्थ से खूब हो सके, कुछ भी हो इस खेद श्लोक से जोशी जी ने विधवा विवाह की पुष्टि नहीं की वरन् विधवा विवाह के धोखे से सधवाओं के पुनर्विवाह करवा डाले। ठीक है स्वार्थान्ध मनुष्य को आगा पीछा कुछ भी नहीं दीखता जोशी जी को यह खबर न पड़ी कि हम विधवाओं के विवाह करवा रहे हैं या जीवित पति जिन स्त्रियों का है उन के विवाह की आज्ञा दे रहे हैं।

'वरयित्वा, प्रभृति श्लोकों का अर्थ यह है कि वरण वाग्दान होने के पश्चात् यदि वर मर जावे तो फिर तीन ऋतु धर्म के अनन्तर कन्या अन्य वर से अपना विवाह करले। यह कब होगा जब रजस्वला होने तक भी पिता विवाह न करे तब तीन वार रजस्वला होने के बाद कन्या अपना विवाह अपने आप करले। वाग्दान होने के अनन्तर यदि वर अन्य जाति का निकले या पतित अथवा क्लीव दुराचारी या सगोत्री, दास अथवा दीर्घ रोगी हो तो कन्या का विवाह दूसरे वर से करना धर्म शास्त्र की यह व्यवस्था वाग्दान के पश्चात् और सप्तपदी के पूर्व की है सप्तपदी होने के बाद की नहीं—यह हमारा अर्थ है।

जोशी जी का अर्थ नया था इस कारण हजार वार

खोजने पर भी उनको अपने अर्थ की सत्यता में कोई प्रमाण न मिला प्रमाण के न मिलने से हमने जोशी जी के अर्थ को बनावटी और जाली लिख दिया "अन्धेन नीयमाना यथान्धाः" के न्याय से जोशी जी के पीछे चलने वाले मनुष्य यह कह उठावेंगे कि तुमने अपने अर्थ की सत्यता में क्या प्रमाण दिया ? उन लोगों के तोष के लिये हम आज इस बात का प्रमाण देते हैं कि पूर्व समय के पंडितों ने भी इन श्लोकों को वाग्दत्ता परक लगाया है उनका कहना है कि सप्तपदी होने के पश्चात् ये श्लोक स्त्री के विवाह को नहीं कहते वरन् वाग्दान के बाद और सप्तपदी के पहिले श्लोकों में कही हुई कोई आपत्ति आजावे तो कन्या का विवाह अन्य पुरुष से हो सकता है यह कहते हैं।

(१) पारस्कर गृह्यसूत्र का गदाधर भाष्य लिखता है कि-

अथ वाग्दानोत्तरं वरमरणे विशेषः।

अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतोर्ध्वं वरो यदि।
न च मन्त्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा॥

देशान्तरगमने तु कात्यायनः।

वरयित्वा तु यः कश्चित्प्रवसेत्पुरुषो यदा।
ऋत्वागमांस्त्रीनतीत्य कन्यान्यं वरयेत्पतिम्।

याज्ञवल्क्यः'।

दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत् ।

वसिष्ठ ।

कुलशीलविहीनस्य षण्ढादिपतितस्य च ।
अपस्मारि विधर्मस्य रोगिणां वेषधारिणाम् ॥
दत्तामपि हरेत्कन्यां सगोत्रोढान्तथैवच ॥

जिस प्रकार हमने "वरयित्वा" प्रभृति श्लोकों को वाग्दानानन्तर और सप्तपदी से पहिले कन्याके विवाह करने में लगाया था हू ब हू उसी प्रकार गदाधरभाष्य ने लगाया है यह हमारे अर्थ की सत्यता में प्रथम प्रमाण है ।

(२) इन्हीं तीन श्लोकों को निर्णयसिन्धु ने वाग्दत्ता विवाह परक लगाया है । निर्णयसिन्धु लिखता है कि "वाग्दानोत्तरं वरमरणे" इसके नीचे तीनों श्लोक लिखे हैं जैसे हमने वाग्दानोत्तर वर मरण इन श्लोकों को लगाया है इसी प्रकार निर्णयसिंधु ने भी लगाया है-यह हमारे अर्थकी सत्यता में दूसरा प्रमाण है । यही अर्थ (३) अपरार्का (४) पराशर माधव (५) वीरमित्रोदय (६) बालंभट्टी ने किया है, हमारे अर्थ की सचाई में छः प्रमाण हैं । जोशी जी के अर्थ में प्रमाण ढूंढ़ने के लिये चाहे समस्त सुधारक ग्रंथों के पन्ने उथल डालें, दिमाग का गुद्दा निकाल डालें एक भी प्रमाण न मिलेगा, फिर हम जोशी जी के जाली और बनावटी अर्थ विधवा के विवाह को किस आधार पर सत्य मानें ? श्रोत्रिय

वर्ग ! ऐसी ऐसी मिथ्या बनावटी चालों से आज विधवा विवाह सिद्ध करने वाले तुम्हारी आंखों में धूल झोंक रहे हैं शोक है कि आप इतने पर भी सावधान नहीं होते, याद रक्खो यदि तुम घोर निद्रा में पड़े रहे तो ये लोग तुमको ईसाई बनाकर छोडेंगे।

कई एक सज्जन विधवा विवाह के प्रमाण में एक और श्लोक दिया करते हैं वह यह है।

सकृत्प्रदीयते कन्या हरंस्तां चोरदण्डभाक्।
दत्तामपि हरेत्पूर्वां श्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत्॥

याज्ञ० १। ६५

कन्या एक ही बार दी जाती है उसको जो चोर चुराता है वह अपराधी है किन्तु यदि कोई श्रेष्ठ वर मिल जावे तो फिर दी हुई कन्या पहिले वर से छीन कर इस श्रेष्ठ के साथ विवाह दी जाय।

मजा है, हिये के अंधे इस श्लोक को विधवा विवाह में लगाते हैं; कहाँ है इसमें विधवा विवाह ? इस श्लोक में तो पति के जीते हुये उससे कन्या छीन कर दूसरे को देना लिखा है, यह तो लिखा नहीं कि पहिले पति को मार डाले तब दूसरे को दे दे, फिर विधवा विवाह कैसा ?

अच्छा अर्थ किया। कल्पना करो कि एक कन्या किसी ने कास्तकार को विवाह दी, विवाह के बाद थानेदार आगया अब उस कन्या को कास्तकार से छीन कर थानेदार को दिया

गया, दो एक दिन बाद कोई बड़ा जमींदार आया अब थाने-दारसे छीन कर जिमींदारको दे दी, पांच सात दिन बाद कोई तहसीलदार आ पहुँचा अब श्लोककी आज्ञानुसार जमींदार से छीन कर तहसीलदार को दे दी इसी प्रकार जैसे जैसे श्रेष्ठ मनुष्य मिलते जायंगे वैसे ही वैसे पहिले पतियों से छीन कर कन्या दूसरों को दे दी जावेगी। नित्य विवाह, नित्य नया दूल्हा, यहाँ पर तो सुधारकों ने तरक्की में फ्रांस की नाक काट ली फ्रांस में सात दिन, पन्द्रह दिन, एक महीनेके विवाह होते हैं किन्तु सुधारकोंको धर्मशास्त्रमें प्रत्येक दिवसके विवाह मिल गये। कहिये धर्मशास्त्रों से धर्म का निर्णय किया जाता है या धर्मशास्त्र को मार कूट चटनी बना उससे योरुप के सिद्धान्त निकाले जाते हैं ?

इस श्लोक के पूर्वार्द्धमें स्पष्ट कहा है कि कन्या का दान एक ही बार होता है, फिर यह भी दिखलायाकि जो जबर्दस्ती से कन्या का अपहरण करले वह दण्डनीय है। श्लोक के उत्तरार्ध में यह कहा कि यदि कन्या दत्ता वाग्दान से दी हुई हो और जिसको दी गई है उससे श्रेष्ठ वर मिल जावे तो जिस वर के साथ वाग्दान हुआ है उसको छोड़ श्रेष्ठ के साथ उसका विवाह कर दिया जावे, विधवा विवाह के प्रेमियों ने वाग्दत्ता को छोड़ कर विधवा विवाह में लगा लिया और अपने अर्थ की पुष्टि में एक भी प्रमाण नहीं दिया। अर्थ क्या किया हुक्म चढ़ा दिया कि यदि श्रेष्ठ वर आजावे तो कन्या

पहिले घर से छीन कर दूसरे को दे दो। इन्हों ने अपने मन में समझ लिया कि हम निराकार ईश्वर के भी बड़े चाचा हैं इस कारण संसार हमारे हुक्म को मानेगा, हमको अपने अर्थ की पुष्टि में प्रमाण की क्या आवश्यक्ता है? फिर इस श्लोक में कन्या पद पड़ा है, विवाह होजाने पर कन्या पद छूट जाता है यह नहीं सोचा कि जब हम इस श्लोक से विधवा विवाह कहते हैं तो फिर श्लोक में आये हुये कन्या पद की क्या गति होगी? यह धर्म निर्णय करना नहीं है अन्धेर मचाना मनमाने फैसले देना है। इतना अन्धेर, इस पर हमको एक दृष्टान्त याद आगया।

किसी देशके एक हिस्से के राजा की आदत खराब होगई वह दिन भर तो सोवे और रात भर जगे। कुछ दिन के बाद उसने अपने समस्त राज्यमें ढोल पिटवा दिया कि सूर्य निकले सब सो जाओ और सूर्य डूबने पर चारपाइयां छोड़ कर अपने अपने काम में लगो जो ऐसा न करेगा उसको पांच वर्ष की सजा होगी। प्रजा ने बहुत प्रार्थना की किन्तु हठी राजा ने कुछ न सुना तथा अपना हुक्म बहाल रक्खा. अब तो दण्ड के भय से प्रजा राजा का हुक्म पालन करने लग गई, जो सूर्य निकले कि फौरन सब लोग अपने २ घर में सो जावें और सूर्यास्त होते ही सब चारपाइयां छोड़ कर अपने २ काम में लगें, कास्तकार हल जोतें; पंडित लोग पूजा पाठ करें; बाजार वाले दुकान खोल दें, हाकिम कचहरियां करें; इस

बेवकूफ राजा ने दिन की रात और रात का दिन बना दिया। किसी रोज एक विदेशीय मुसाफिर दिन में इसकी राजधानी के पास से निकल रहा था उसकी इच्छा हुई कि बाजार से कुछ भोजन लेकर खा लें और फिर आगे बढ़ें। वह इसी निमित्त बाजार में पहुंचा इसको समस्त बाजार बंद मिला, यह वहां से लौट रहा था इतने में कानिस्टेबिल ने आवाज दी कि कौन है रात को बाजार में फिरता है? यह खड़ा हो गया; कानिस्टेबिल ने इसको पकड़ कर कहा कि तुम चोर हो, रात को बाजार में फिरते हो? इस मुसाफिर ने बहुत कहा कि सूर्य निकला हुआ है, धूप चमक रही है अब रात कहां? किन्तु कानिस्टेबिल ने एक न सुनी, पकड़ कर ले गया।

जैसे इस राजा ने दिन की रात और रात का दिन बना कर अन्धेर मचा दिया उसी प्रकार धर्म शास्त्रों को ईसाई आचरण के शास्त्र बना कर सुधारक अन्धेर मचा रहे हैं। विधवा विवाह की चाल ईसाई मुसलमान जाति में है वह विधवाविवाह की विधि इनको हिन्दुओंके शास्त्रमें मिल जाती है अब यह सन्देह हो जाता है कि ये धर्मशास्त्र हिन्दुओं के हैं या मुसलमान ईसाइयों के?

ये लोग स्वतः अन्तःकरण से पूर्ण ईसाई हैं; हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिये धर्म शास्त्रों से विधवा विवाह सिद्ध करते हैं, इन मूर्खों के अन्धेर से हिन्दुओं को बचना आवश्यकीय है नहीं तो हिन्दू जाति की पूर्णाहुति हो जावेगी।

"सकृत्प्रदीयते कन्या" इस श्लोक में विधवा विवाह नहीं है वाग्दत्ता का विवाह है, हमारे इस कथन में (१) मिताक्षरा (२) अपरार्का (३) स्मृतितत्व (४) न दत्वा कस्यचित्० ६।७१ मनु० की राघवानन्द कृत टीका (५) पाणिग्रहणिका मंत्रा० ८। २२७ मनु० के इस श्लोक पर मेधातिथि टीका (६) पारस्कर गृह्यसूत्र का गदाधर भाष्य (७) शब्द कल्पद्रुम कोष (८) वीर मित्रोदय (६) पराशर माधव (१०) विधान पारिजातक प्रभृति अनेक ग्रन्थ साक्षी हैं इन सब ने इस श्लोक को वाग्दत्ता परक माना है फिर कैसे मान लिया जावे कि इस श्लोक में विधवा विवाह है।

व्यवस्था।

विवाह में सब से प्रथम कन्या का वाग्दान होता है इस के ऊपर धर्मशास्त्र लिखता है कि—

स्त्रीपुंसयोस्तु सम्बन्धाद्वरणं प्राग्विधीयते।
वरणाद् ग्रहणं पाणेः संस्कारोऽपि विचक्षणैः॥२

नारद अ० १२।

स्त्री पुरुष के (सम्बन्ध) विवाहसे वरण (सगाई) प्रथम होता है वाग्दान के आगे पाणिग्रहण संस्कार विद्वानों ने कहा है। वाग्दान की विधि यह है।

'अथवाग्दानविधिः। ज्योतिःशास्त्रोक्ते शुभे काले द्वौ, चत्वारोऽष्टौ वा प्रशस्तवेषा वरपित्रादिना

सहिताः शकुनदर्शनपूर्वकं कन्यागृहमेत्य कन्यापितुः प्रार्थना कार्या। मत्पुत्रार्थं कन्यां प्रयच्छेति। अथ दाता भार्याद्यनुमतिं कृत्वा दास्यामीति चोच्चैर्ब्रूयात्। ततः कन्यादाता प्राङ्मुख उपविश्याऽऽचम्य देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाणविवाहाङ्गभूतं वाग्दानमहं करिष्ये तदङ्गंगणपतिपूजनं च करिष्य इति संकल्प्य गन्धादिदक्षिणान्तैर्गणपतिम्पूजयित्वा स्वस्थाने वरपितरं प्राङ्मुखमुपवेश्य स्वयं च तत्प्राच्यां प्रत्यङ्मुखमुपविश्य तं गन्धताम्बूलादिभिः पूजयित्वा हरिद्राखण्डपञ्चक दृढपूगीफलानि च गन्धाक्षतालंकृतानि गृहीत्वाऽमुकगोत्रोत्पन्नाममुकपुत्रीममुकनाम्नीमिमां कन्यां ज्योतिर्विदादिष्टे मुहूर्ते दास्य इति वाचा सम्प्रददे। इति चोक्त्वा, अव्यंगे पतिते क्लीवे दशदोषविवर्जिते। इमां कन्यां प्रदास्यामि देवाग्निद्विजसन्निधौ॥ इति पठेत्, ततो मंत्रान्तरं पठेत्॥

वाचा दत्ता मया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृता त्वया।

कन्यावलोकनविधौ निश्चितस्त्वं सुखी भव ॥

वर पिता च ब्रूयात् ।

वाचा दत्ता त्वया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृता मया ।
वरावलोकनविधौ निश्चितस्त्वं सुखी भव ॥

"भ्रात्रादौ स्वीकर्तरि भ्रातृमित्रार्थमित्याद्यूहः कार्यः ततो वरपित्रादिर्गन्धाक्षत शुभवस्त्रादि युग्मभूषणताम्बूलपुष्पादिभिः कन्यां यथाचारं पूजयेत् ततो ब्राह्मणा आशीर्मन्त्रान्पठेयुः । इति वाग्दानम्,, ।

इस प्रकार वाग्दान होने के पश्चात् वह कन्या उसी वर के साथ विवाही जानी चाहिये जिसके लिये वाग्दान हुआ है । इस विषय में धर्मशास्त्र लिखता है कि—

दत्तां न्यायेन यः कन्यां वराय न ददाति ताम् ।
अदुष्टश्चेद्वरो राज्ञा स दण्ड्यस्तत्र चोरवत् ॥ ३३ ॥

नारद० अ० १२ ।

जो मनुष्य न्याय से दी हुई वाग्दत्ता कन्या को उसी वरके साथ नहीं विवाहता वह राजा द्वारा दण्डित होना चाहिये, यदि वर दुष्ट है तो कन्या का पिता अन्य पुरुष से उस कन्या का विवाह कर सकता है ।

धर्मशास्त्र का अभिप्राय यह है कि वह कन्या उसी वर के

साथ विवाह देनी चाहिये जिसके साथ वाग्दान हुआ है किन्तु उस वर के मरने पर या उस वर के मूर्ख, अधर्मी, पतित, क्लीव, सगोत्री; दीर्घरोगी, विजातीय निकलने पर अथवा विदेश चले जाने और संन्यासी हो जाने पर वह कन्या किसी अन्य गुणवान् को विवाह देनी चाहिये। मनु जी लिखते हैं कि—

यस्या म्रियेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पतिः।
तामनेन विधानेन निजोविन्देत देवरः॥ ६९॥

मनु० अ०। ९।

वाग्दान होने के अनन्तर जिस कन्या का पति मर जावे उस कन्या को उसी विधान से देवर के साथ विवाह दे।

अग्नि पुराण में लिखा है कि—

मृते तु देवरे देया तदभावे यथेच्छया॥ ७॥

अग्नि पुराण अ०। १५४

वाग्दानोत्तर पति मर जाने पर कन्या का विवाह देवर से कर दे और देवर के अभाव में कन्या का विवाह जहां चाहे वहां करे।

मनु।

वाग्दत्ता के पति मरने पर मनु ने देवर के साथ विवाह बतलाया; अग्नि पुराण ने कहा कि देवर न हो तो किसी अन्य से विवाह दे।

पाराशर।

पाराशर स्मृति ने 'नष्टे मृते' इस श्लोक में कहा कि वाग्दानके अनन्तर यदि पति विदेश चला गया हो या मर गया हो अथवा संन्यासी होगया हो या क्लीव हो यद्वा पतित हो तो इन आपत्तियोंमें कन्याको किसी अन्यके साथ विवाह दे।

वसिष्ठ।

वसिष्ठ ने 'अद्भिर्वाचा. इत्यादि श्लोकों से कहा कि यदि वाणी और जल से कन्या का दान भी हो गया हो अर्थात् वाग्दान हो जाने पर पति मर जावे या कन्या को कोई अपहरण से ले जावे और इस दशा में अपहरण वालेने कन्या के साथ भोग न किया हो तो वह कन्या किसी अन्य को दे देनी चाहिये।

कात्यायन।

कात्यायन स्मृति ने 'वरयित्वा, प्रभृति श्लोकों में लिखा कि कन्या का वाग्दान होने के अनन्तर वर विदेश चला जावे या मर जावे अथवा वर अन्य जाति, पतित, क्लीव, दुष्टकर्मा सगोत्री, दास यद्वा दीर्घरोगी हो तो ऊढ़ा वाग्दान से विवाही हुई कन्या दूसरे के साथ विवाह के योग्य है।

याज्ञवल्क्य।

याज्ञवल्क्य ने 'सकृत्प्रदीयते कन्या, इस श्लोक में कहा कि मूर्ख के साथ वाग्दान होने पर यदि उत्तम वर मिल जावे तो उसके साथ विवाह कर देना चाहिये।

बौधायन ।

बौधायन ने लिखा कि—

बलादपहृता कन्या मंत्रैर्यदि न संस्कृता ।
अन्यस्मै विधिवद्देया यथा कन्या तथैव सा ॥

यदि कोई कन्या का अपहरण करके ले गया हो और अपहरण करने वाले के साथ कन्या का विवाह न हुआ हो तो वह कन्या अन्य के साथ विवाह देनी चाहिये ।

नारद ।

नारद ने कहा कि—

उद्वाहितापि सा कन्या न चेत्संप्राप्त मैथुना ।
पुनः संस्कारमर्हेत यथाकन्या तथैव सा ॥

कन्या का वाग्दान हो गया हो और धर्ममर्यादा से पति ने उसके साथ भोग न किया हो तो उस कन्या का संस्कार दूसरे के साथ हो सकता है यदि धर्ममर्यादा का उल्लंघन करके पति ने विवाह से पहिले मैथुन कर डाला तो फिर वह कन्या अन्य को नहीं दी जा सकती।

स्मृतियों में इस प्रकार के अनेक वचन हैं जो कन्या का दूसरा विवाह बतलाते हैं किन्तु उन सबका अभिप्राय यही है कि वाग्दान के अनन्तर और सप्तपदी के पहिले कोई आपत्ति आने पर वह कन्या अन्य के साथ विवाही जा सकती है । सप्तपदी के पश्चात् विवाह बतलाने वाला

एक भी वचन धर्मशास्त्रों में नहीं है सुधारक लोग जो श्लोक विधवा विवाह की पुष्टि में आप लोगों के आगे रक्खें आप लोग समझ जाना कि यह श्लोक सप्तपदी से पहिले ही कन्या के विवाह को कह रहा है।

सप्तपदी पर विवाह पूरा हो जाता है, पूरा होने पर धर्मशास्त्र फिर स्त्री का पुनर्विवाह या विधवा विवाह करने का घोर शत्रु है विधवा विवाह के निषेध में धर्मशास्त्रों के बहुत प्रमाण हैं उन सबको आज हम आपके आगे नहीं रख सकेंगे उन सब का एक व्याख्यान पृथक् बना है जो हम किसी दिन आपको सुनावेंगे आज तो हमने यही दिखलाया है कि सुधारक लोग हिन्दू धर्म तथा हिन्दू जाति को संसार से विदा करने के लिये एवं भारतवर्ष को योरुप और आपको ईसाई बनाने के लिये वाग्दत्ता पर आपत्ति आ जाने पर अन्य के साथ विवाह विधायक प्रमाणों को विधवाविवाह में लगा कर तुम लोगों को बेवकूफ बना विधवाविवाह का जाल बिछाते हैं आप सर्वदा इनके जाल में दियासलाई लगा कर हिन्दू स्वरूप एवं हिन्दू सभ्यता की रक्षा पर उतर पड़ें यदि तुमने ऐसा न किया तो चंद दिन में ये सुधारक हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म को संसार से विदा कर देंगे आपको सचेत होना चाहिये तथा इनके मुकाबले में डट जाना चाहिये बस इतना कह कर मैं अपने व्याख्यान बन्द करता हूँ एकबार बोलिये भगवान् कृष्णचन्द्र की जय।

कालूराम शास्त्री।

* इति प्रथमांशः *